Calcutta Sanskrit College Research Series No. LXXIX

# NAVYANYĀYA-BHĀṢĀPRADĪPAḤ

[ BRIEF NOTES ON THE MODERN *NYĀYA* SYSTEM OF PHILOSOPHY AND ITS TECHNICAL TERMS ]

*By*

MAHĀMAHOPĀDHYĀYA
MAHEŚA CHANDRA NYĀYARATNA

*Edited*

*With the Commentary 'Suprabhā' and Bengali Translation*
*By*

MAHĀMAHOPĀDHYĀYA
KALIPADA TARKĀCHĀRYA

*Formerly Assistant Professor of Nyāya,*
*Government Sanskrit College, Calcutta.*

SANSKRIT COLLEGE
CALCUTTA
1973

## OPINIONS

**Kavyaprakasa of Mammata**

"Congratulate Professor Bhattacharyya for his magnificent work."

*Louis Renou*

**Philosophy of Word and Meaning**

"I have nothing but praise for your scholarly work."

*P. L. Vaidya.*

**Studies in the Upanisads**

"The book is well-written and will be a useful publication."

*S. Radhakrishnan.*

"Evidences of a vast knowledge of Upanisadic literature."

*East and West, New Series, Rome 1961*

"Remarkably learned"—Statesman, 13.11.60.

**Jnana-laksana vicara rahasya**

"A valuable contribution to Indian Epistemology."

*G. H. Bhatt.*

সংস্কৃত সাহিত্যে হাস্যরস

"বইখানি সত্যই খুব ভালো হইয়াছে।"

ডক্টর নীহাররঞ্জন রায়

বেদ-মীমাংসা

"Master production of a mature mind."

*Mm. Dr. Gopinath Kaviraj.*

"An epoch-making Vedic work."

*Bhagavad Dutta*

**Studies in Nyaya-Vaisesika Theism**

"It furnishes clear evidence of the writer's hard labour in this field—especially of his logical acumen and critical discernment. ...As a pioneer work in the field it deserves to be properly appreciated."

*Mm. Dr. Gopinath Kaviraj*

**Kundamala**

"The editor has produced a text which is as satisfactory as possible on the basis of the available material, and further improvement would only be possible if new manuscripts were discovered."

*T. Burrow*

Calcutta Sanskrit College Research Series No. LXXIX

*Published under the auspices of the*
*Government of West Bengal*

STUDIES No. 55

महामहोपाध्याय श्रीमहेशचन्द्रन्यायरत्न-प्रणीत-

# नव्यन्याय-भाषाप्रदीपः

SANSKRIT COLLEGE
CALCUTTA
1973

*Calcutta Sanskrit College Research Series No. LXXIX*

Calcutta Sanskrit College Research Series No. LXXIX

# NAVYANYĀYA-BHĀṢĀPRADĪPAḤ

[ BRIEF NOTES ON THE MODERN *NYĀYA* SYSTEM OF PHILOSOPHY AND ITS TECHNICAL TERMS ]

*By*

MAHĀMAHOPĀDHYĀYA
MAHEŚA CHANDRA NYĀYARATNA

*Edited*

*With the Commentary 'Suprabhā' and Bengali Translation*

*By*

MAHĀMAHOPĀDHYĀYA
KALIPADA TARKĀCHĀRYA

*Formerly Assistant Professor of Nyāya,*
*Government Sanskrit College, Calcutta.*

SANSKRIT COLLEGE
CALCUTTA
1973

कलिकाता संस्कृतमहाविद्यालय-गवेषणाग्रन्थमाला—ग्रन्थाङ्कः ७६

महामहोपाध्याय-श्रीमहेशचन्द्रन्यायरत्न-प्रणीत-

# नव्यन्याय-भाषाप्रदीपः

कलिकाता-संस्कृतमहाविद्यालयस्य पाठशालाविभागीयाध्यक्षचरेण

महामहोपाध्यायपदलाञ्छनेन

श्रीकालीपद तर्काचार्येण

बिरचितया 'सुप्रभे'ति व्याख्यया समलङ्कृतः

१८९२ शकवत्सरे कलिकातानगर्यां प्रकाशितः

# মুখবন্ধ

সংস্কৃত কলেজের ভূতপূর্ব অধ্যক্ষ প্রাতঃস্মরণীয় স্বর্গত মহামহোপাধ্যায় পণ্ডিত মহেশচন্দ্র ন্যায়রত্ন প্রণীত সংস্কৃতভাষানিবদ্ধ ক্ষুদ্র নিবন্ধখানি (*Brief Notes on the Modern Nyāya System of Philosophy & Its Technical Terms*). ১৮৯১ খৃষ্টাব্দে প্রথম মুদ্রিত হইয়াছিল। দুরূহ ভারতীয় ন্যায়শাস্ত্রে—বিশেষতঃ নব্যন্যায়ে, প্রথম প্রবেশার্থিগণের দিকে দৃষ্টি রাখিয়াই গ্রন্থখানি বিশেষভাবে রচিত হইয়াছিল। নব্যন্যায়ের পরিভাষার সহিত পরিচয়ের অভাবে কোনও শাস্ত্রেরই পদার্থবিষয়ে পরিচ্ছন্ন ধারণা হওয়া সম্ভব হয় না। কেন না মহামনীষী গঙ্গেশোপাধ্যায়ের আবির্ভাবের পরবর্তীযুগে যে কোনও শাস্ত্রে গভীর আলোচনা নব্যন্যায়ের পরিভাষার সাহায্যব্যতিরেকে সম্পূর্ণ অসম্ভব হইয়া উঠিয়াছিল। ব্যাকরণ, অলংকার, স্মৃতি, বেদান্ত, মীমাংসা, বৈশেষিক প্রভৃতি বিভিন্ন শাস্ত্রীয় প্রস্থানে নব্যন্যায়ের বিচারশৈলী ও পারিভাষিক সংজ্ঞাগুলি আচার্যগণ যত্র তত্র সাবলীলভাবে প্রয়োগ করিয়া নিজ নিজ সিদ্ধান্ত স্থাপন ও প্রতিপক্ষসিদ্ধান্ত প্রতিক্ষেপণ করিবার জন্য যত্নশীল হইয়াছেন। সুতরাং ন্যায়শাস্ত্র-জিজ্ঞাসুগণের দৃষ্টিতেই শুধু নহে শাস্ত্রান্তরের সিদ্ধান্তসমূহও নির্ভুলভাবে জানিতে হইলে নব্যন্যায়ের পরিভাষা সম্বন্ধে সম্যগ্‌জ্ঞান অপরিহার্য। এই গ্রন্থখানি দীর্ঘকাল যাবৎ দুষ্প্রাপ্য হইয়াছিল। সংস্কৃত শাস্ত্রানুরাগী, শিক্ষার্থী, অধ্যাপক ও গবেষকগণের উপকার হইতে পারে ভাবিয়া আমি স্বর্গত মহামহোপাধ্যায় পণ্ডিত কালীপদ তর্কাচার্য মহাশয়ের উপর এই নিবন্ধটির বঙ্গানুবাদ, ব্যাখ্যা ও অপেক্ষিত টিপ্পণী প্রভৃতি যোজনার দ্বারা সম্পাদনের ভার অর্পণ করি। তিনিও তাঁহার উপর ন্যস্ত দায়িত্ব তাঁহার স্বভাবসুলভ ঐকান্তিক নিষ্ঠা ও আগ্রহ সহকারে পালন করিয়া গ্রন্থটি পুনর্মুদ্রণের জন্য পাণ্ডুলিপি আমার হস্তে অর্পণ করেন। ইহার কিয়ৎকাল পরেই তাঁহার পরলোকপ্রয়াণ ঘটে। মূল গ্রন্থটির সহিত এক্ষণে বঙ্গানুবাদ ও 'সুপ্রভা' নামে ব্যাখ্যা যুক্ত হওয়ায় বর্তমান ছাত্র ও অধ্যাপক সম্প্রদায়ের নিকট ইহার উপযোগিতা বৃদ্ধি পাইবে বলিয়া আশা করি। পণ্ডিত দীনেশচন্দ্র শাস্ত্রী মহাশয়, যিনি সংস্কৃত কলেজের প্রকাশন বিভাগের ভূতপূর্বক সম্পাদক ছিলেন, আমার অনুরোধক্রমে মূল গ্রন্থটির ইংরাজী ভূমিকাটির বঙ্গানুবাদ করিয়া দেন এবং তাহা হইতে স্বর্গত তর্কাচার্য মহাশয় সংস্কৃতে অনুবাদ করেন। মূল ইংরাজী ভূমিকাটির সহিত এই দুইটি অনুবাদও সংযোজিত হইল। সংস্কৃত কলেজ গ্রন্থাগারে সংরক্ষিত ৺মহামহোপাধ্যায় মহেশচন্দ্র ন্যায়রত্ন মহাশয়ের জীবনী বিষয়ে একটি ক্ষুদ্র রচনাও এইসঙ্গে পরিশিষ্টরূপে গ্রথিত হইল। আশা করি এইভাবে নূতন তথ্যাদির সংকলনের ফলে গ্রন্থখানি সাধারণের নিকট অধিকতর উপকারক বলিয়া পরিগণিত

হইবে। বর্তমানে সংস্কৃত শাস্ত্রের চর্চা যেভাবে অবসাদ প্রাপ্ত হইতেছে, তাহাতে মনে হয় যে একমাত্র মাতৃভাষায় যদি ঐ সকল দুরূহ গ্রন্থের অনুবাদ প্রচারিত হয় এবং বিভিন্ন শাস্ত্রের প্রাতিস্বিক পারিভাষিক শব্দগুলির সংকলন ও ব্যাখ্যানে যদি পণ্ডিতসম্প্রদায় ব্রতী হন, তবেই আগামী দিনের পাঠককুলের উদ্দেশে উহাদের সংরক্ষণ সম্ভবপর হইবে। অন্যথা সকলই বিস্মৃতির গর্ভে বিলীন হইয়া যাইবে বলিয়া আশঙ্কা।

সংস্কৃত কলেজ
কলিকাতা
জন্মাষ্টমী, ১৩৮০

শ্রীবিষ্ণুপদ ভট্টাচার্য
অধ্যক্ষ

ॐ

सम्पादकस्य

# प्राथमिक-भारती

प्रथमत एव वृन्दारकवृन्दप्रमुखवन्दनीयपदारविन्दां सकलकल्याणकल्पलतां भगवतीं भारतीं रतिमता मनसा प्रकामं नमस्कृत्य किञ्चिदपेक्षितमप्रपञ्चं निवेदयामः।

के वा नाभिजानन्ति विद्वज्जनसमाजे समासादितमहिमानं महामहोपाध्याय-पदलाञ्छनं कोविदकुलरत्नं संस्कृतविद्यासमृद्धये नियतमनुबद्धप्रयत्नं श्रीमन्महेशचन्द्र-न्यायरत्नम्, येन सुप्रसिद्धेन गीर्वाणवाणीनिबद्धविद्याबान्धवेन कलिकाता-राजकीय-संस्कृतमहाविद्यालयाध्यक्षपदमध्यासीनेन संस्कृतविद्यायाः सान्वयाभ्युदयप्रचयसाधनाय प्रवर्तिता संस्कृतशास्त्रेषु विद्यार्थिनां प्रथमपरीक्षा मध्यमपरीक्षा चेति सम्प्रति निःसम्परायं प्रचलद्रूपा प्राथमिक-संस्कृतपरीक्षाद्वयी, प्रवर्तितश्चोपाधिपरीक्षोत्तीर्णा-नामेकरूप एव तीर्थेत्युपाधिः शास्त्रविशेषाणां विशेषनामानुषङ्गेण। सुविश्रुतश्चास्य विद्वन्मुकुटमणेः श्रीमन्मम्मटकृत-काव्यप्रकाशीयमाहेशीसमाख्यव्याख्यासङ्कलनादि-सूचितो निरवद्यसंस्कृतविद्याविभवः। स एव न्यायादिदर्शनशास्त्रेष्वपि प्रेक्षावतां प्रवीणः शास्त्रान्तरविलक्षणनवीन-परिभाषानिबद्धनव्यन्यायशास्त्रे सुगमसरण्यानन्य-साधारण्या विद्यावनीयकानामबाधबोधसंसिद्धये न्यायतन्त्रीय-कतिपयपारिभाषिक-पदानां समयादिसमावेदकं कञ्चन नवीनग्रन्थं जग्रन्थ। यत्र प्रकृतग्रन्थकारेण तत्तत्-पारिभाषिकपदपरिभाषितानामर्थविशेषाणां तथा सरलसरण्या कृतं स्वरूपादिनिरूपणं यथा सुतरामल्पधियोऽप्यनायासेन तत्तदर्थेषु विशदं विज्ञानमासाद्य सद्य एव लब्धकामा भवितुमर्हन्ति।

किञ्चात्र निबन्धे निबन्धकारेण बहुत्रैव तादृशान्युदाहरणानि समुपन्यस्तानि, यानि लोकेष्वायतानि स्वल्पबुद्धिभिरपि शक्यानि सुखेनैव प्रतिपत्तुम्। तस्मादयं ग्रन्थस्तर्कशास्त्रीयविलक्षणपरिभाषासु विज्ञानशून्यानां तत्र तत्र विशेषज्ञानसञ्जननद्वारा तर्कतत्त्वसमीक्षण-सरण्यामनन्यसामान्यमुपकारं करिष्यतीत्यत्र नास्ति लेशोऽपि सन्देहस्य।

ग्रन्थोऽयं विद्यार्थिगणानुजिघृक्षया सुचिरात् पूर्वं ग्रन्थकृता न्यायरत्नेनैव

प्रथमं मुद्रापणमकारि। मुद्रापितस्य तस्य कतिचन खण्डाः कलिकाताराष्ट्रिय-संस्कृतमहाविद्यालये समुपलभ्यन्ते। तेऽपि स्वल्पमात्रा एव खण्डाः सुजीर्णप्रतिपत्राः कथञ्चिदेव रक्षितास्तद्ग्रन्थागाराधिकृतैः पुरुषैः। तेषां साम्प्रतमीदृशी दशा समजनि, यया नातिचिरादुत्तरमेव तेषां विलयः सम्भाव्यते। यदि तावदद्यापि सुतरां जीर्णपर्णानामशक्याक्षरपाठानां करतलस्पर्शमात्रमप्यसहमानानां तेषां साहाय्येन केनापि ग्रन्थस्यास्य पुनः संस्करणं कृतं स्यात् तदैवास्य न्यायविद्याप्रवेशार्थिनामत्युप-कारकस्य ग्रन्थस्य संरक्षणेन संस्कृतविद्या नितरामुपकृता स्यात्। तदेतत् सर्वं सावधानं परिचिन्त्य संस्कृतविद्यायामतिप्रसिद्धेन सुदीप्तप्रतिभानेन कोविदकुलपयोधि-सुधाकरेण श्रीमद्विष्णुपदभट्टाचार्येण कलिकाताराष्ट्रियसंस्कृतमहाविद्यालयाध्यक्ष-पदमधिष्ठितवता ग्रन्थस्य तस्य पुनः संस्करणे मनो व्यधायि। विद्यार्थिनां बोधसौ-कर्याय समादिष्टाश्च वयं वङ्गभाषया तदर्थविवरणार्थम्। वयमपि तदादेशवशीकृता एव ग्रन्थस्यास्य वङ्गभाषयैव यथामूलमनुवादं मूलरहस्यादिनिवेदनाय च तयैव भाषया 'सुप्रभा'समाख्यां काञ्चन व्याख्यां रचितवन्तः, यदुभयमस्मिन् संस्करणे समेषां दृष्टिपथमुपेयात्।

तत्र सुप्रभाख्यायां व्याख्यायां मूलाधिकारेणास्माकं विशेषतो वक्तव्यानि सर्वाणि वस्तूनि समुपन्यस्तानि। यथासम्भवं विषयविशेषेषु तत्तद्वस्तुसाम्यवैषम्यादि-निवेदनाय पूर्वाचार्यमतान्यपि संगृह्य सन्निवेशितानि। समुद्धृताश्च तत्र तत्र प्रकृतार्थ-पराः सन्दर्भविशेषाः पूर्वाचार्याणाम्। येन समीक्षकास्तत्तदर्थेषु निष्कम्पप्रत्यय-सम्पर्कं सम्प्राप्य परितृप्येयुः। प्रस्तुता चात्र संस्करणे काचन सुविस्तृता विषयसूची, यदवलम्बनेन समीक्षकाः स्वाभिमतं विषयमनायासेन प्रपद्येरन्।

अत्र ग्रन्थे मूलकारेण ये न्यायशास्त्रीयपारिभाषिकशब्दाः व्याख्येयत्वेन परिगृहीताः तद्व्यतिरिक्ता अपि केचन सुप्रसिद्धास्ते परिशिष्टप्रकरणरूपेण किञ्चित् स्वतन्त्रं प्रकरणं प्रकृत्य तत्रास्माभिः समासेन व्याख्याताः। यदनुषङ्गेण ग्रन्थस्यास्य साङ्गतासङ्गतिमूलो न्यूनतापरिहारः सम्भविता।

यद्यपि ग्रन्थकारेण ग्रन्थस्यास्य किमपि संस्कृतभाषामयं नाम नोपदिष्टं तथापि तदुक्तस्य 'Brief Notes on the Modern Nyaya System of Philosophy and its Technical Terms'—इत्याङ्गलभाषामय-वाक्य-विशेषस्यानुसारेण 'नव्यन्यायभाषा-प्रदीप' इत्येव संस्कृतभाषामयं नाम विहित-मस्माभिः, विवृतेरपि तदनुगतं नाम सुप्रभेति।

यद्यप्यत्र ग्रन्थे व्याख्यानार्थमुपात्तेषु पदेषु धर्मादयः केचन शब्दा न केवलं नव्यन्यायसम्बन्धिन एव तथापि तेषामर्थविवरणस्य नव्यन्यायनयमाश्रित्यैव कृतत्वेन 'प्राधान्यतो व्यपदेशा भवन्ती'ति न्यायेन च नास्य प्रकृतनामार्थसङ्गतिर्विघटते।

अत्र ग्रन्थसंस्करणकर्मणि गवेषणा विभागीयविद्वत्प्रवरेण श्रीमता दीनेशचन्द्र-तर्कतीर्थभट्टाचार्येण ग्रन्थस्यास्य प्रारम्भिकाङ्गलभाषामयं ग्रन्थकारकृतमावेदनं वङ्गभाषयानूद्य तथा ग्रन्थप्रकाशविभागीयविद्वद्वर-श्रीननीगोपालतर्कतीर्थ श्रीचित्तरञ्जन-तर्कतीर्थाभ्यां बहुधा कृतेन साहायकेन तेषां समीपे महत्या कृतवेदितया समावर्जिता वयं श्रीश्रीभगवत्पदान्तिके तेषां कल्याणं कामयामहे।

श्रीकालीपदतर्काचार्यस्य

## नव्यन्यायभाषा-प्रदीपस्य

### विषयसूची


| | विषयाः | पत्रसंख्या |
|---|---|---|
| १। | धर्मपदार्थप्रकरणम् ... | २ |
| २। | जात्युपाधिभेदादिप्रकरणम् ... | २ |
| ३। | सम्बन्धतद्भेदादिप्रकरणम् ... | ६ |
| ४। | पर्याप्तिसम्बन्धादिप्रकरणम् ... | २६ |
| ५। | सांसर्गिकप्रतियोगित्वादिप्रकरणम् ... | २३ |
| ६। | आधाराधेयादिप्रकरणम् ... | २४ |
| ७। | अभावीय-प्रतीयोगित्वादिप्रकरणम् .. | २७ |
| ८। | अभाववैलक्षण्यस्य तत्प्रतियोगितावैलक्षण्यप्रयुक्तत्वादिप्रकरणम् | ३० |
| ९। | अभावतत्प्रतियोगित्वादीनां मिथो निरूप्य-निरूपकभावादिप्रकरणम् | ३८ |
| १०। | अन्योन्याभाव-संसर्गाभावादिप्रकरणम् ... | ४३ |
| ११। | अवच्छेदकताप्रभृतीनामपि धर्मसम्बन्धावच्छिन्नत्वादिप्रकरणम् | ४६ |
| १२। | सविकल्पक-निर्विकल्पकज्ञानभेदादिप्रकरणम् | ५१ |
| १३। | सिद्धसाध्यविशेषणभेदादिप्रकरणम् ... | ५५ |
| १४। | संशयनिश्चयभेदादिप्रकरणम् ... | ५८ |


———

# नव्यन्यायभाषाप्रदीपः

—**—

[ महामहोपाध्याय-श्रीमहेशचन्द्रन्यायरत्नप्रणीतः ]

धर्मः;—ध्रियते तिष्ठति वर्त्तते यः, स धर्मः। आकाशादिकं विना सर्व एव पदार्था यत्र कुत्रचिदपि वर्त्तन्त इति सर्व एव धर्मा इत्युच्यन्ते। यत्र यो वर्त्तते, स तस्य धर्मः। यथा—द्रव्ये जातिगुणकर्माणि तिष्ठन्तीति जातिगुणकर्माणि द्रव्यस्य धर्माः। सूत्रादौ अवयवे पटादि अवयविद्रव्यं तिष्ठतीति द्रव्यमपि पटादि सूत्रादेर्धर्मः।

**অনুবাদ**

যাহা ( কোথায়ও ) থাকে, তাহাই ধর্ম। আকাশাদিভিন্ন সকল পদার্থই যে কোনও স্থানে থাকে, অত এব ( আকাশাদিভিন্ন ) ঐ সকল পদার্থই 'ধর্ম' বলিয়া কথিত হয়। যাহা যে পদার্থে থাকে, তাহা সেই পদার্থের ধর্ম। যেমন—দ্রব্যপদার্থে জাতি গুণ ও কর্ম থাকে বলিয়া জাতি গুণ ও কর্ম দ্রব্যের ধর্ম। সূত্র প্রভৃতি অবয়বে পটাদি অবয়বী দ্রব্য (সমবায় সম্বন্ধে) থাকে বলিয়া দ্রব্যও পটাদি

**সুপ্রভা**

ধর্মশব্দ আধেয়পদার্থের ন্যায় স্বর্গাদিকারণ শুভাদৃষ্ট ও তদধিষ্ঠাতৃদেবতাবিশেষেরও উপস্থাপক। অত এব উক্ত ধর্ম মাঙ্গলিক বলিয়া তদর্থক ধর্মশব্দদ্বারা গ্রন্থারম্ভে গ্রন্থকারের কর্তব্য মঙ্গলাচরণও সিদ্ধ হইয়াছে বলা যায়।

'ধৃঙ্‌ অবস্থানে' এইরূপে তুদাদিধাতুগণোক্ত 'ধৃ' ধাতু হইতে কর্তৃবাচ্যে 'ধর্ম' পদ নিষ্পন্ন ইহাই 'ধ্রিয়তে তিষ্ঠতি' এই দুইটী পদের উপাদানে সূচিত হয়।

যে পদার্থ যে সম্বন্ধে যে আধারে অবস্থিত হয়, সেই পদার্থ সেই সম্বন্ধেই সেই আধারের ধর্ম বুঝিতে হইবে। অন্য সম্বন্ধে তাহা উহার ধর্ম নহে। যেমন—দ্রব্যত্ব জাতি দ্রব্যে সমবায়সম্বন্ধে থাকে, কিন্তু সংযোগ বা দৈশিকস্বরূপসম্বন্ধে থাকে না, অত এব দ্রব্যত্ব সমবায়সম্বন্ধে দ্রব্যের ধর্ম, সংযোগ বা দৈশিকস্বরূপসম্বন্ধে দ্রব্যের ধর্ম নহে। অত এব 'যত্র যো বর্ত্ততে, স তস্য ধর্মঃ' এই স্থলে 'যাহা যে সম্বন্ধে যাহাতে থাকে, তাহা সেই সম্বন্ধে তাহার ধর্ম' এইরূপ অর্থ বুঝিতে হইবে।

'আকাশাদিকং বিনা' এই স্থলে 'আদি' পদে কাল দিক্‌ আত্মা মন ও ক্ষিতি অপ্‌,

পাত্রে জলং বর্ততে ইতি পাত্রস্য ধর্মো জলম্। আকাশাদিকন্তু ন কুত্রাপি বর্ততে ইতি আকাশং ন কস্যাপি ধর্মঃ। অত এব আকাশম্ 'অবৃত্তিপদার্থ' ইত্যুচ্যতে।

ধর্মশ্চ প্রথমতো দ্বিবিধঃ, জাতিরুপাধিশ্চেতি। যেন পরস্পরং বিভিন্নরূপাণামপি একজাতীয়দ্রব্যাণামেকশ্রেণ্যামন্তর্ভাবো ভবতি, স ধর্মো জাতিঃ। যথা—বিভিন্ন-

## অনুবাদ

সূত্র-প্রভৃতির ধর্ম। পাত্রে জল (সংযোগ সম্বন্ধে) থাকে বলিয়া জল পাত্রের ধর্ম। আকাশ প্রভৃতি পদার্থ কোথায়ও থাকে না, এ জন্য আকাশ কাহারও ধর্ম নহে। অতএব আকাশ 'অবৃত্তি পদার্থ' বলিয়া অভিহিত হয়।

ধর্ম প্রথমত 'জাতি' ও 'উপাধি' এই দুই প্রকার। যে ধর্মের বলে পরস্পর বিভিন্নরূপ একজাতীয় বস্তুসমূহ একশ্রেণীর অন্তর্গত হয়, সেই ধর্ম 'জাতি'।

## সুপ্রভা

তেজ এবং মরুৎ এই চারিটী দ্রব্যের পরমাণুস্বরূপ নিত্যদ্রব্যসমূহ গ্রাহ্য। মহামনীষী বিশ্বনাথের কারিকাবলী গ্রন্থে 'অন্যত্র নিত্যদ্রব্যেভ্য আশ্রিতত্বমিহোচ্যতে' এই কারিকাংশ দ্বারা উহাই সূচিত হইয়াছে।

'আকাশাদিকং বিনা' এই গ্রন্থাংশ হইতে আরম্ভ করিয়া 'আকাশম্ অবৃত্তিপদার্থ ইত্যুচ্যতে' এই গ্রন্থ পর্যন্ত যথাশ্রুত রূপে সম্বন্ধসামান্যেই আকাশাদি নিত্যদ্রব্যের অবৃত্তিত্ব প্রতিপাদন করে। ঐ মত সিদ্ধান্তলক্ষণ গ্রন্থের দীধিতি টীকায় রঘুনাথ শিরোমণিও গ্রহণ করিয়াছেন।

মতান্তরে আকাশাদি নিত্যদ্রব্যসমূহ সংযোগসমবায়াদি সম্বন্ধে অবৃত্তি হইলেও কালিক সম্বন্ধে বৃত্তিমান্। উক্ত সিদ্ধান্তলক্ষণ গ্রন্থের দীধিতি টীকায়ই 'স্বরূপেণ গগনাদের্বৃত্তিমত্ত্বে তু' ইত্যাদি গ্রন্থাংশদ্বারা এবং উক্ত গ্রন্থাংশের জাগদীশী টীকার 'কালস্য জগদাধারত্বপ্রবাদ-মনুসৃত্যাহ—'স্বরূপসম্বন্ধেনেতি কালিকবিশেষণতয়েত্যর্থঃ। গগনাদেরবৃত্তিত্বপ্রবাদস্তু সংযোগ-সমবায়পরঃ'। এই অংশ দ্বারা উক্ত মত সূচিত হয়। কারিকাবলী গ্রন্থের 'অন্যত্র নিত্যদ্রব্যেভ্য আশ্রিতত্বমিহোচ্যতে'—এই অংশের সিদ্ধান্তমুক্তাবলী টীকায় বিশ্বনাথও 'আশ্রিতত্বন্তু সমবায়াদিসম্বন্ধেন বৃত্তিমত্ত্বম্, বিশেষণতয়া নিত্যানামপি কালাদৌ বৃত্তেঃ' এই অংশ দ্বারা উক্ত মতের সূচনা দিয়াছেন। ঐ মতে 'আকাশাদিকন্তু' ইত্যাদি গ্রন্থাংশদ্বারা উপদিষ্ট আকাশ প্রভৃতি নিত্যদ্রব্যের অবৃত্তিত্ব সমবায়াদিরূপ কালিকবিশেষণতাভিন্ন সম্বন্ধেই জ্ঞাতব্য। কালের জগদাধারতাপ্রযোজক কালিকসম্বন্ধে গগনাদি নিত্যদ্রব্যও ধর্ম, ইহাই ঐ অংশের সিদ্ধান্ত।

পরে 'সখণ্ড ও অখণ্ড' ভেদে উপাধিরূপ ধর্মের প্রকারভেদ বর্ণিত হইবে, তাই ধর্ম 'প্রথমত জাতি ও উপাধি এই দুই প্রকার' ঐ অনুবাদের মূল বাক্যে 'প্রথমতঃ' এই কথা বলা হইয়াছে।

देशीया मनुष्या विभिन्नाकाररूपस्वभावा अपि एकया मनुष्यत्वजात्या एकश्रेण्या-मन्तर्भाविताः। जातिश्च सामान्यं नाम कणादोक्तश्चतुर्थः पदार्थः।

उपाधिरपि पुनः सखण्डोपाधिरखण्डोपाधिश्चेति द्विविधः। खण्डेन (अंशेन)

**অনুবাদ**

যেমন—বিভিন্ন দেশের মনুষ্যগণ বিভিন্নপ্রকার রূপ ও বিভিন্নপ্রকারস্বভাব—সম্পন্ন হইলেও এক 'মনুষ্যত্ব' জাতির বলে এক মনুষ্যশ্রেণীর অন্তর্গত বলিয়া গণ্য হয়। ঐ জাতি (বৈশেষিকদর্শনকার) কণাদের উপদিষ্ট 'সামান্য'নামক চতুর্থ পদার্থ।

উপাধিও আবার 'সখণ্ড উপাধি' ও 'অখণ্ড উপাধি' এই দুই প্রকার। 'খণ্ড'

**সুপ্রভা**

'একজাতীয়দ্রব্যাণাম্' এই স্থলে দ্রব্যপদটী দ্রব্য গুণ ও কর্ম এই ত্রিতয় বস্তুপর, কারণ প্রকৃত জাতি পদে কেবল দ্রব্যগত দ্রব্যত্বাদি জাতিই বিবক্ষিত নহে, কিন্তু গুণ ও কর্মগত গুণত্ব কর্মত্বাদি জাতিও বিবক্ষিত।

'যেন পরস্পরম্' ইত্যাদি মূলগ্রন্থ জাতির লক্ষণপর নহে, কারণ-উহা 'একজাতীয়ত্ব'—ঘটিত বলিয়া আত্মাশ্রয়াদি দোষ হয়। কিন্তু জাতির পরিচায়ক মাত্র। জাতিপদের অর্থ ধর্মমাত্র বলিলে উপাধিতে অতিব্যাপ্তি হয়। এই জন্যই আবার বিশেষরূপে মূলকার 'জাতিশ্চ' ইত্যাদি গ্রন্থদ্বারা জাতির স্বরূপ নির্দেশ করিয়াছেন।

প্রাচীন গ্রন্থকারগণ ঐ জাতির প্রকারান্তরে স্বরূপ বর্ণনা করিয়াছেন। যথা—'নিত্যমেকমনেকানুগতং সামান্যম্'। অর্থাৎ যে একটী ধর্ম নিত্য অথচ অনেক বস্তুতে (সমবায়সম্বন্ধে) বর্তমান, তাহাই জাতি। এবং 'নিত্যত্বে সতি অনেকসমবেতত্বম্ সামান্যত্বম্ (মুক্তাবলী)'। ইত্যাদি। অর্থাৎ যে ধর্ম নিত্য অথচ অনেকে সমবায়সম্বন্ধে থাকে, তাহা সামান্য বা জাতি।

সংযোগ ও বিভাগরূপ গুণ সমবায়সম্বন্ধে একাধিক প্রতিযোগী ও অনুযোগী দুইটী পদার্থেই থাকে, অত এব উহাতে অতিব্যাপ্তি বারণের জন্য প্রথমলক্ষণে 'নিত্যম্' এবং দ্বিতীয় লক্ষণে 'নিত্যত্বে সতি' এই অংশের নিবেশ করা হইয়াছে। গগনপরিমাণ প্রভৃতিতে অতিব্যাপ্তি বারণার্থ 'অনেক' পদ দেওয়া হইয়াছে। অত্যন্তাভাব ও অভাবত্ব প্রভৃতি ধর্মে অতিব্যাপ্তি বারণের জন্য সমবায়সম্বন্ধে বৃত্তিত্ব নিবেশ করা হইয়াছে।

মহর্ষি কণাদ যথাক্রমে 'দ্রব্য গুণ কর্ম সামান্য বিশেষ সমবায়' এই ষট্ পদার্থ বর্ণনা করিয়াছেন। ক্রমানুসারে তাহার মধ্যে সামান্য বা জাতি চতুর্থ পদার্থ। অত এব কণাদ—প্রোক্ত চতুর্থ পদার্থ জাতি এইরূপে অনায়াসেই জাতির স্বরূপ বর্ণনা করা যায়।

উক্ত সখণ্ড ও অখণ্ড—প্রকরণের নিষ্কৃষ্টার্থ এই যে,—অংশভেদে বিভাগযোগ্য ধর্ম

सह वर्तत इति सखण्डः। यश्च अंशतो विभक्तुं शक्यते स सखण्डोपाधिधर्म इति यावत्। यथा—पशुत्वम्। तद्धि लोमवल्लाङ्गूलवत्त्वम्। ततश्च तस्य लोम-लाङ्गूला-दयोऽंशा बहवो वर्तन्त इति द्रव्यरूपं पशुत्वं धर्मः सखण्डोपाधिः। एवं रूपवानयम् इत्यत्र गुणात्मकं रूपं धर्मः। स च सखण्डोपाधिः। रूपत्वजातेराश्रयो हि रूपम्। ततश्च रूपस्य रूपत्वजातिराश्रयश्चेति अंशद्वयमस्ति।

### অনুবাদ

অর্থাৎ অংশের সহিত যাহা থাকে, তাহা 'সখণ্ড'। (ইহা 'সখণ্ড' শব্দের ব্যুৎপত্তিগত অর্থ।) যাহা অংশানুসারে বিভাগযোগ্য তাহা সখণ্ডোপাধিরূপ ধর্ম ইহাই নিষ্কৃষ্টার্থ। উদাহরণ যথা—পশুত্ব। ঐ 'পশুত্বে'র স্বরূপ 'লোমবল্লাঙ্গূলবত্ত্ব।' সেই কারণেই উহার লোম ও লাঙ্গূলাদি বহু অংশ বর্তমান। অত এব দ্রব্যরূপ ঐ পশুত্বধর্ম 'সখণ্ডোপাধি'। এইরূপ 'রূপবান্ অয়ম্' এইস্থলে গুণস্বরূপ রূপপদার্থ ধর্ম। উহাও 'সখণ্ড উপাধি'। কারণ রূপ 'রূপত্ব'জাতির আশ্রয়, সেই কারণেই 'রূপত্ব' জাতি

### সুপ্রভা

সখণ্ড ধর্ম এবং অংশভেদে বিভাগের অযোগ্য ধর্ম অখণ্ড ধর্ম। কিন্তু ঐ রূপ স্বীকার করিলে দ্রব্যত্বাদি ধর্মও শব্দদ্বারা উহার উল্লেখ দশায় দ্রব্যত্বত্ব প্রভৃতি ধর্মবিশিষ্টরূপে প্রতীত হয়, তখন 'রূপবানয়ম্' এই মূল দর্শিত স্থলে রূপাদির ন্যায় উক্ত দ্রব্যত্বাদি ধর্মও দ্রব্যত্বত্ব ও দ্রব্যত্ব প্রভৃতি অংশভেদে বিভাগযোগ্য হওয়ায় সখণ্ড ধর্ম হইয়া পড়ে। অত এব সখণ্ড ও অখণ্ড ধর্মের উক্তরূপে স্বরূপনিরূপণ আপাততঃ সরল পদ্ধতিতে কথঞ্চিৎ সখণ্ড ও অখণ্ডের পরিচায়কমাত্র বলিতে হইবে।

এই স্থলে বিশেষ লক্ষণীয় বিষয় এই যে,—মূলস্থ অংশশব্দে প্রকার ও বিশেষ্য রূপ অংশভেদ আদান করিয়া 'শব্দদ্বারা অনুল্লিখিত দশায় যে ধর্মকে প্রকার ও বিশেষ্যরূপ অংশভেদে বিভাগ করা যায় না, তাহাই অখণ্ড ধর্ম, তদ্ভিন্ন ধর্ম সখণ্ড ধর্ম'—এইরূপ ব্যাখ্যা করিলে পূর্বোক্ত দোষের বারণ হইতে পারে। কারণ শব্দদ্বারা অনুল্লিখিত দ্রব্যত্বাদি ধর্মাংশে কোনও ধর্ম প্রকার না হওয়ায় উহা প্রকারত্ত বিশেষ্যরূপ অংশভেদে বিভাজ্য নহে বলিয়া উহা অখণ্ড কিন্তু তদ্ভিন্ন নহে। এই কল্প জগদীশাদি-মতের প্রায় তুল্য।

প্রাচীন আচার্যগণ সখণ্ড ও অখণ্ড ধর্মের প্রকারান্তরে স্বরূপ নিরূপণ করিয়াছেন। যথা—তত্ত্বচিন্তামণি—সামান্যলক্ষণা-প্রকরণের দীধিতিব্যাখ্যার টীকায় জগদীশতর্কালঙ্কার বলিয়াছেন,—'সখণ্ডং স্বরূপতো জ্ঞানপ্রকারীভূতভিন্নম্, অখণ্ডং স্বরূপতঃ প্রকারীভূতম্'। অর্থাৎ জ্ঞানে যে ধর্ম নিরবচ্ছিন্নরূপে প্রকারীভূত হয় না, সেই ধর্মই সখণ্ড ধর্ম। যে ধর্ম জ্ঞানে স্বরূপতঃ অর্থাৎ নিরবচ্ছিন্নরূপে প্রকারীভূত হয়, তাহা অখণ্ড ধর্ম। পশুত্ব ও রূপ প্রভৃতি ধর্ম কদাপি নিরবচ্ছিন্নরূপে জ্ঞানে প্রকারীভূত হয় না, সুতরাং ঐ সকল ধর্ম সখণ্ড ধর্ম।

यस्य अंशविशेषो नास्ति मनुष्यत्वद्रव्यत्वादिजातिवत्, यस्तु अंशतो विभक्तुं न शक्यते, अंशरहितत्वमेव यस्य स्वरूपमङ्गीक्रियते, सः अखण्डोपाधिः। यथा—

### অনুবাদ

এবং উহার আশ্রয় এই দুইটি উহার অংশ আছে। মনুষ্যত্ব দ্রব্যত্ব প্রভৃতি জাতির যেমন কোনও অংশবিশেষ নাই, সেইরূপ যে ধর্মের কোনও অংশবিশেষ নাই, যাহাকে অংশত বিভাগ করা যায় না; (অর্থাৎ) যাহার স্বরূপ অংশশূন্য

### সুপ্রভা

এস্থলে অনুল্লিখ্যমান জাতি ও অখণ্ডোপাধি হইতে ভিন্ন অপর পদার্থের ভান সপ্রকারকই হইয়া থাকে। অনুল্লিখ্যমান জাতিও অখণ্ড উপাধি জ্ঞানে স্বরূপতঃ অর্থাৎ নিষ্প্রকারক হইয়াই ভাসমান হয় এই নিয়মানুসারে 'দ্রব্যং ভাবঃ' ইত্যাদিরূপ প্রতীতিস্থলে দ্রব্যত্ব ও ভাবত্বাদি ধর্ম জ্ঞানে স্বরূপতঃ অর্থাৎ নিরবচ্ছিন্নরূপেই ভাসমান হয়। উহার অংশে কোনও ধর্ম বিশেষণরূপে ভাসমান হয় না। অত এব জগদীশোক্ত পূর্ব লক্ষণানুসারে দ্রব্যত্ব ও ভাবত্বাদি ধর্ম অখণ্ড ধর্ম। দ্রব্যত্ববান্ ভাবত্ববান্ ইত্যাদি রূপে উল্লিখ্যমান জাতিও অখণ্ডোপাধিস্থলে দ্রব্যত্বরূপ জাতি ও ভাবত্বরূপ উপাধি স্বরূপতঃ জ্ঞানে প্রকারীভূত না হইলেও অনুল্লিখ্যমানতাদশায় জ্ঞানে স্বরূপতঃ প্রকারীভূত ঐ ধর্মে ব্যাপ্যবৃত্তি তাদৃশ প্রকারীভূতভিন্নত্ব থাকিতে না পারায় ঐ সখণ্ডতার অতিপ্রসঙ্গ হইবে না। পরন্তু অনুল্লিখ্যমানতা দশার স্বরূপতঃ প্রকারত্ব লইয়া অখণ্ডত্বেরই উপপত্তি হইবে।

সামান্যলক্ষণাগ্রন্থের দীধিতিপ্রকাশ টীকায় ভবানন্দসিদ্ধান্তবাগীশ বলিয়াছেন,—'সখণ্ডম্—প্রত্যেকমনেকাবৃত্তিত্বে সতি অনেকবৃত্তিতাবচ্ছেদকানুগতরূপাবচ্ছিন্নং বহ্নিমত্ত্বাদিকম্। অখণ্ডম্ অনেকবৃত্তি একম্'। অর্থাৎ যে ধর্ম প্রত্যেক ব্যক্তিরূপে অনেক বস্তুতে থাকে না, অথচ অনেকবৃত্তিতাবচ্ছেদক অনুগতরূপাবচ্ছিন্ন হয়, সেই বহ্নিমত্ত্বাদি ধর্ম সখণ্ড ধর্ম। আর যে ঘটত্বাদিরূপ একই ধর্ম নানা অধিকরণে বর্তমান হয়, তাহা অখণ্ড ধর্ম। বহ্নিপ্রভৃতি ধর্ম ব্যক্তিগতভাবে বহু হইয়া বহ্নিত্বাদি একৈক অনুগত ধর্মরূপে অনেক অধিকরণে বর্তমান হয়, অত এব ঐ বহ্নিপ্রভৃতি ধর্ম উক্ত সখণ্ডলক্ষণাক্রান্ত। ঘটত্বজাতি এক অথচ অনেক ঘটে বর্তমান, অত এব উহা অখণ্ডলক্ষণাক্রান্ত। বহ্নিত্ব ঘটত্বাদিরূপ অখণ্ড ধর্মে উক্ত সখণ্ডলক্ষণের অতিব্যাপ্তিবারণার্থ উক্ত লক্ষণে 'প্রত্যেকমনেকাবৃত্তিত্বে সতি' এই সত্যন্ত ভাগ দেওয়া হয়। রূপত্রয়াদি স্বনিষ্ঠ ত্রিত্বাদিরূপ অনুগতরূপাবচ্ছিন্ন এবং প্রত্যেকত অনেকাবৃত্তি, অত এব ঐ রূপত্রয়াদি ধর্মে অতিব্যাপ্তিবারণার্থ অনুগতরূপাংশে 'অনেকবৃত্তিতাবচ্ছেদক' এই বিশেষণ দেওয়া হয়। একৈক তত্তদ্রূপব্যক্তিতে অখণ্ড লক্ষণের অতিব্যাপ্তিবারণার্থ অখণ্ড-লক্ষণে 'অনেকবৃত্তি' বলা হয়। বহ্নিপ্রভৃতি বহ্নিত্বাদিরূপে নানাব্যক্তিবৃত্তি হওয়ায় অতি-ব্যাপ্তিবারণার্থ 'একং' এই দল দেওয়া হয়।

भावत्वम्। तद्धि अभावत्व–विरोधी कश्चन धर्म इति। पशुत्वादिवत् भावत्वम् अंशतो विभक्तुं न शक्यते।

जातेरपि अंशविभागो नास्ति। किन्तु जातेः समवायसम्बन्धेन सत्त्वं नियतम्। अखण्डोपाधेस्तु न तथा। तस्य स्वरूपसम्बन्धेन सत्त्वमित्यनयोः पृथगुल्लेखः।

## অনুবাদ

বলিয়াই স্বীকৃত হয়, তাহা 'অখণ্ডোপাধি' যেমন 'ভাবত্ব'। ঐ 'ভাবত্ব' অভাবত্বরূপ ধর্মের বিরোধী কোনও ধর্মবিশেষ। পশুত্বাদি ধর্মকে যেমন অংশত বিভাগ করা যায়, 'ভাবত্ব'রূপ ধর্মকে সেরূপ অংশভেদে ভাগ করা যায় না।

( অখণ্ড উপাধির যেমন অংশবিভাগ নাই, তেমনই ) জাতিরও অংশবিভাগ নাই। কিন্তু জাতিরূপ ধর্মের সমবায়সম্বন্ধে বৃত্তিত্ব শাস্ত্রে অনুশিষ্ট বা নিয়মানুগত। কিন্তু অখণ্ড উপাধির সেরূপ নহে। উহা ( অখণ্ড উপাধি ) স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে। এইরূপ বৈষম্যনিবন্ধনই 'জাতি' ও 'অখণ্ডোপাধি' এই দুই

## সুপ্রভা

মূলকার ভাবত্বরূপ ধর্মকে 'অভাবত্ববিরোধী ধর্ম' বলিয়াছেন। ঐ স্থলে অভাবত্ব—পদের অর্থ ভাবভিন্নত্ব বুঝিতে হইবে। তাহা না হইলে যাহারা অত্যন্তাভাবের অভাবকে প্রতিযোগিস্বরূপ এবং অন্যোন্যাভাবের অভাবকে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকস্বরূপ বলিয়া লাঘবানুরোধে স্বীকার করেন, তাহাদের মতে ঘটাদিরূপ ভাবপদার্থের অত্যন্তাভাবের অভাব ঘটাদি ভাবপদার্থস্বরূপ এবং ঘটাদির অন্যোন্যাভাবের অভাব ঘটত্বাদি ভাবপদার্থস্বরূপ হওয়ায় স্বরূপসম্বন্ধবিশেষরূপ অভাবত্ব ভাবত্বের বিরোধী ধর্ম হইতে পারে না। অত্যন্তাভাবের অভাব এবং অন্যোন্যাভাবের অভাবকে যাহারা অতিরিক্ত অভাব পদার্থ বলিয়াই স্বীকার করেন তাহাদের মতে উক্ত রূপ বিরোধিত্ব উপপন্ন হইলেও উহা উভয় মত—সাধারণ হয় না, অত এব উক্ত অভাবত্বকে ভাবপদার্থে অবৃত্তি ভাবভিন্নত্বরূপই বলিতে হইবে। উহাতে উভয়মতেই উক্ত গ্রন্থের উপপত্তি হইতে পারিবে।

মূলোক্ত 'নিয়ত' শব্দের 'নিয়মানুগত' রূপ অর্থপক্ষে নিয়ম শব্দের অর্থ ব্যাপ্তি। ঐ ব্যাপ্তি জাতিত্বরূপ ধর্মে সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নবৃত্তিত্বের ব্যাপ্তি। অর্থাৎ সকল জাতিতেই সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিত্ব থাকে। এই জন্যই পূর্বাচার্যগণ 'নিত্যত্বে সতি অনেকসমবেতত্বম্' ইত্যাদিরূপ সমবেতত্ব, অর্থাৎ সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নবৃত্তিত্ব জাতিলক্ষণে নিবেশ করিয়াছেন।

মূলে 'অনুল্লিখ্যমানজাত্যখণ্ডোপাধ্যতিরিক্তপদার্থানাম্' এই অংশে অনুল্লিখ্যমানপদার্থ জাতি ও অখণ্ডোপাধির অংশে বিশেষণ। তাহার ফলে তাৎপর্য প্রতিপন্ন হয় এই যে,—জাতি ও অখণ্ডোপাধি অনুল্লিখ্যমান থাকিলে তদংশে কোনও ধর্ম প্রকাররূপে ভাসমান হয় না, পরন্তু উহা উল্লিখ্যমান হইলে উহার জ্ঞান তদংশে সপ্রকারক হইয়া থাকে।

जातेरखण्डोपाधेश्च प्रतीतावनुल्लेखे ( शब्देन अनुच्चारणे ) निरवच्छिन्ना ( तयोर्विशेषणप्रतीतिरहिता ) प्रतीतिर्भवति। यथा—'पटो भाव' इति प्रतीतौ पटत्वं जातिः, भावत्वं अखण्डोपाधिश्च पटपदार्थ-भावपदार्थान्तर्भावेणैव प्रतीयते, न तु

**অনুবাদ**

ধর্মের পৃথক রূপে উল্লেখ করা হইয়াছে। জাতি ও অখণ্ডোপাধি যদি প্রতীতিতে উল্লিখিত না হয়, অর্থাৎ শব্দ দ্বারা উচ্চারিত না হয়, তবে উহাদের ঐ প্রতীতি নিরবচ্ছিন্ন-বিষয়ক অর্থাৎ তদংশে বিশেষণরূপ বিষয়শূন্য হইয়া থাকে। যথা—'পটো ভাবঃ' এইরূপ প্রতীতিস্থলে পটত্বরূপ জাতি এবং ভাবত্বরূপ অখণ্ড উপাধি পটপদার্থ ও ভাবপদার্থের অন্তর্গত ( বিশেষণ ) রূপেই প্রতীত হয়, ( মুখ্যরূপে ) শব্দদ্বারা ( 'পটত্ব'শব্দ ও 'ভাবত্ব'শব্দ দ্বারা ) উহারা উল্লিখিত হয় না, অত এব ঐ প্রতীতিতে 'পটত্ব' ও 'ভাবত্বে'র অংশে কোনও বিশেষণের ভান হয় না। কিন্তু

**সুপ্রভা**

এখানে আশঙ্কা হইতে পারে এই যে,—'দ্রব্যং ভাবঃ' ইত্যাদিরূপ প্রতীতিস্থলে দ্রব্যত্বাদি জাতি ও ভাবত্বাদিরূপ অখণ্ডোপাধি ধর্ম শব্দদ্বারা উল্লিখিত না হওয়ায় উহাদের প্রতীতি স্বাংশে নিষ্প্রকারক এ কথা কিরূপে সঙ্গত হয়? কারণ 'দ্রব্যং ভাবঃ' ইত্যাদি জ্ঞান-স্থলেও দ্রব্যত্ব ও ভাবত্বাদি ধর্ম 'দ্রব্য' ও 'ভাব' এইরূপ শব্দদ্বারাই উল্লিখিত, অত এব উক্তস্থলীয় প্রতীতি দ্রব্যত্ব ও ভাবত্বাদি ধর্মাংশে নিষ্প্রকারক হইতে পারে না। তাহার উত্তরে বলা যায় এই যে,—দ্রব্যত্বাদি জাতি ও ভাবত্বাদি অখণ্ড ধর্ম শব্দদ্বারা বিশেষ্যরূপে উল্লিখিত হইলেই উহা স্বাংশে সপ্রকারক হইবে, অন্যথা নহে। দ্রব্য ও ভাব প্রভৃতি শব্দদ্বারা দ্রব্যত্ব ও ভাবত্বাদি ধর্ম বিশেষণরূপেই উপস্থাপিত হয়, বিশেষ্যরূপে উপস্থাপিত হয় না। কারণ দ্রব্যত্ববিশিষ্ট দ্রব্যাদিতেই দ্রব্যাদিশব্দের শক্তি কল্পিত। ইহার পরও আশঙ্কা হয় এই যে,—'দ্রব্যে দ্রব্যত্বম্' ইত্যাদিরূপ প্রতীতিস্থলে বিশেষ্যরূপে এবং দ্রব্যাংশে বিশেষণরূপে একই দ্রব্যত্বাদির ভান হয়। তথায় 'দ্রব্যত্ব'—শব্দদ্বারা দ্রব্যত্ব বিশেষ্যরূপে উল্লিখিত, সুতরাং উহা উল্লিখ্যমান জাতিভিন্ন না হওয়ায় দ্রব্যরূপ বিশেষণাংশে ভাসমান দ্রব্যত্বাংশে ঐ প্রতীতি কিরূপে নিষ্প্রকারক হইতে পারে। ইহার সমাধানকল্পে বক্তব্য এই যে,—বিশেষ্য-রূপে জাতিও অখণ্ডোপাধির উপস্থাপকশব্দপ্রযোজ্য বিষয়তাভিন্ন জাতি এবং অখণ্ডো-পাধিবিষয়তাই নিরবচ্ছিন্ন হয়। তাৎপর্য এই যে,—'দ্রব্যে দ্রব্যত্বম্' এই প্রতীতিস্থলে দ্রব্যত্বে দুইটী বিষয়তা বর্তমান. একটী বিশেষ্যতা ও অপরটী দ্রব্যনিষ্ঠ প্রকারতা নিরূপিত অবচ্ছেদকতা, ঐ দুইটী বিষয়তার মধ্যে দ্রব্যত্বনিষ্ঠ বিশেষ্যতারূপ বিষয়তাটীই বিশেষ্যরূপে দ্রব্যত্বরূপ জাতির উপস্থাপক দ্রব্যত্বশব্দপ্রযোজ্য, অবচ্ছেদকত্বাখ্য অপর বিষয়তাটী তদন্য, অত এব উহা নিরবচ্ছিন্ন হইতে কোনও বাধা নাই।

शब्देन ते उल्लिखिते इति न तयोः प्रतीतावत्र सविशेषणं भानम्, किन्तु पटत्वांशे भावत्वांशे च विशेषणभानरहितमेव निरवच्छिन्नं भानं जायते। यत्र तु तयोरुल्लेखः, तत्र तयोः प्रतीतिरपि सावच्छिन्ना (विशेषणप्रतीतिसहिता) भवति। यथा—'अस्मिन् द्रव्ये भावत्वं पटत्वञ्चास्ति' इत्यत्र पटत्वं भावत्वञ्च स्पष्टत एव शब्देन उल्लिखितमिति तयोरत्र यथाक्रमं पटत्वत्वेन भावत्वत्वेन च सावच्छिन्ना प्रतीतिः।

### অনুবাদ

'পটত্ব' ও 'ভাবত্বা'ংশে নির্বিশেষণক অর্থাৎ নিরবচ্ছিন্নবিষয়ক ভানই হইয়া থাকে। কিন্তু যে স্থলে ঐ জাতি ও অখণ্ড উপাধির শব্দ দ্বারা উল্লেখ হয়, তথায় ঐ দুইটির প্রতীতিও সাবচ্ছিন্ন বা সাবচ্ছিন্নবিষয়ক অর্থাৎ স্বাংশে সবিশেষণক হইয়া থাকে। যথা—'অস্মিন্ দ্রব্যে ভাবত্বং পটত্বঞ্চাস্তি' অর্থাৎ এই দ্রব্যে ভাবত্ব ও পটত্ব আছে, এইরূপ প্রতীতিস্থলে পটত্ব ও ভাবত্ব স্পষ্টভাবেই (মুখ্যরূপেই) শব্দ দ্বারা উল্লিখিত, এইজন্য ঐ স্থলে পটত্ব জাতি ও ভাবত্বরূপ অখণ্ড উপাধির যথাক্রমে 'পটত্বত্ব' ও 'ভাবত্বত্ব'রূপে সাবচ্ছিন্ন-বিষয়ক প্রতীতি হয়। এই কারণেই গ্রন্থকারগণ

### সুপ্রভা

এস্থলে একটী বিষয় বিশেষভাবে লক্ষণীয়, উহা এই যে, এই প্রকরণে মৌলিক সিদ্ধান্ত ইহাই প্রতিপন্ন যে,—জাতি এবং অখণ্ড উপাধিরূপ ধর্মের প্রতীতি তদংশে নিষ্প্রকারক, তদ্ভিন্ন ধর্ম স্বাংশে সপ্রকারক। কিন্তু ঐ জাতি ও অখণ্ড উপাধিরূপ ধর্ম যদি শব্দদ্বারা উপস্থাপিত হয়, তবে তাহার প্রতীতি স্বাংশে সপ্রকারকই হইয়া থাকে। উহার উদাহরণ পূর্বেই প্রদর্শিত হইয়াছে।

এখন গুরুতর একটী আশঙ্কা হইতে পারে এই যে,—'ন সোঽস্তি প্রত্যয়ো লোকে যঃ শব্দানুগমাদৃতে।' অর্থাৎ জগতে এমন কোনও জ্ঞান নাই, যাহা শব্দসম্পর্কশূন্য। এইরূপ শাব্দিক সম্প্রদায়ের সিদ্ধান্তের কথা বাদ দিলে অন্য কোনও মতেই শাব্দবোধভিন্ন অন্য জ্ঞান শব্দজন্য উপস্থিতিসাপেক্ষ নহে। অত এব 'ইদং দ্রব্যত্ববৎ' ইত্যাকার প্রত্যক্ষাদিজ্ঞানস্থলেও দ্রব্যত্বাদি শব্দদ্বারা অনুল্লিখ্যমান হওয়ায় ঐ জ্ঞানও দ্রব্যত্বাদি অংশে নিষ্প্রকারক হওয়া উচিত।

ঐ আশঙ্কার সমাধানার্থ বলা যায় যে,—সর্ববিধ জ্ঞানেরই একটী একটী আকারপ্রদর্শক অভিলাপবাক্য আছে। ঐ অভিলাপবাক্য সেই সেই জ্ঞানের প্রকার বিশেষ্যাদির যথাযথ আকারেরই বোধক হয়। অর্থাৎ প্রকৃত জ্ঞান যেখানে 'দ্রব্যং ভাবঃ' এইরূপে নির্বিশেষণক দ্রব্যত্ব এবং ভাবত্বকে বিষয় করে তথায় ঐ জ্ঞানের অভিলাপবাক্যও 'দ্রব্যং ভাবঃ' এইরূপই হইবে। আবার যখন 'দ্রব্যত্ববান্ ভাবত্ববান্' এই আকারের জ্ঞান হইবে,

**अत एव 'अनुल्लिख्यमानजात्यखण्डोपाध्यतिरिक्तपदार्थानां निरवच्छिन्नभानानभ्युपगम' इति ग्रन्थकृद्भिः सिद्धान्तितम्।**

**सम्बन्धः सन्निकर्षः। स च विभिन्नयोर्वस्तुनोर्विशेषणविशेष्यभावप्रयोजकः।**

**অনুবাদ**

**'অনুল্লিখ্যমান জাতি ও অখণ্ডোপাধিভিন্ন অপরাপর পদার্থের নিরবচ্ছিন্নরূপে ভান স্বীকার করা হয় না' এইরূপ সিদ্ধান্ত করিয়াছেন।**

**সম্বন্ধ পদার্থ—সন্নিকর্ষ। উহা বিভিন্ন দুইটি বস্তুর বিশেষ্য-বিশেষণভাবের**

**সুপ্রভা**

তথাকার অভিলাপবাক্যও 'দ্রব্যত্ববান্ ভাবত্ববান্' ইত্যাকার হইবে। ঐ অভিলাপবাক্যের ঘটক শব্দদ্বারা উল্লেখ ও অনুল্লেখ লইয়াই প্রকৃত গ্রন্থের সঙ্গতি হইতে পারে।

মূলের 'বিভিন্নয়োঃ বস্তুনোঃ' এই অংশ অভিন্ন বস্তুরও উপলক্ষণ। এবং ঐ স্থলের দ্বিত্বও অবিবক্ষিত। কারণ তাদাত্ম্য বা অভেদ সম্বন্ধ স্থলে ঐ সম্বন্ধ একই বস্তুর বিশেষ্য-বিশেষণভাবের নিয়ামক হয়, বিভিন্ন দুইটী বস্তুর নহে।

'দণ্ডপুরুষয়োরন্তরা' ইত্যাদি বাক্যে দণ্ড ও পুরুষের 'অন্তরা' শব্দার্থের সহিত সম্বন্ধ নহে, কিন্তু পরবর্তী 'বিশেষণ-বিশেষ্যভাব' এই অংশের সহিত সম্বন্ধ। কারণ 'অন্তরা' শব্দার্থের সহিত উহার সম্বন্ধ স্বীকার করিলে 'দণ্ডপুরুষ'শব্দোত্তর 'অন্তরা'শব্দযোগে বিহিত দ্বিতীয়া বিভক্তি হইতে পারে।

জগদীশ তর্কালঙ্কার 'সিদ্ধান্তলক্ষণ-দীধিতি'র টীকায় ঐ সম্বন্ধের লক্ষণ 'বিশেষ্যবিশেষণত্বান্যবিশিষ্টধীবিষয়ত্ব' এইরূপ করিয়াছেন। তাৎপর্য এই যে 'রূপবান্ ঘটঃ' ইত্যাদি বিশিষ্ট বুদ্ধিস্থলে প্রধানতঃ তিনটী বস্তুই বুদ্ধির বিষয় হয়,—বিশেষ্য ঘটাদি, বিশেষণ রূপাদি এবং রূপাদি বিশেষণের সম্বন্ধ সমবায়াদি। ঐ সকল পদার্থে যে ঐ বুদ্ধির বিষয়তা থাকে, তন্মধ্যে ঘটাদিগত বিষয়তা বিশেষ্যত্বরূপ, রূপাদিগত বিষয়তা বিশেষণত্ব বা প্রকারত্বরূপ। ঐ দ্বিবিধ বিষয়তা হইতে ভিন্ন সমবায়াদিগত বিষয়তা সংসর্গতারূপ। ঐ সংসর্গত্বাখ্য বিষয়তাই 'সম্বন্ধে'র লক্ষণ। ঐ সকল জ্ঞানে রূপত্ব ঘটত্ব ও সমবায়ত্বাদিতে অবচ্ছেদকতা-রূপ যে বিষয়তা আছে তাহা জগদীশমতে বিশেষণতা-ভিন্ন নহে অতএব রূপত্বাদিতে অতিপ্রসঙ্গ হইতে পারে না। সাক্ষাৎ সম্বন্ধকে যে সমবায় সংযোগ ও স্বরূপাদিভেদে বহু প্রকার বলা হইয়াছে, তথায় স্বরূপসম্বন্ধ দৈশিক এবং কালিক দ্বিবিধ বুঝিতে হইবে, এবং 'আদি'পদে তাদাত্ম্য বা অভেদ, প্রতিযোগিতা, অনুযোগিতা, বিষয়তা, অবচ্ছেদকতা, প্রকারতা, বিশেষ্যতা, স্বত্ব, স্বামিত্ব প্রভৃতি নানা সম্বন্ধ বুঝিতে হইবে।

সাক্ষাৎ সম্বন্ধ সংযোগাদিস্থলে স্বতন্ত্রভাবেই উহা অনুযোগী পদার্থে প্রতিযোগীর সম্বন্ধ হয়, উহাতে অন্যত্র প্রতিযোগীর কোনও সম্বন্ধ অপেক্ষা করে না। ঐ স্থলে সংযোগাদি সাক্ষাৎ সম্বন্ধ একৈক পদার্থ মাত্র। পরম্পরাসম্বন্ধ ঐরূপ একৈক পদার্থ মাত্র নহে। উহা

यथा—दण्डी पुरुष इति दण्डपुरुषयोर्विशेषणविशेष्यभावप्रयोजकः संयोगसम्बन्धः। दण्डपुरुषयोरन्तरा संयोगं विना दण्डी पुरुष इति विशेषणविशेष्यभावप्रतीतिरेव न स्यात्।

सम्बन्धश्च द्विविधः साक्षात्-परम्पराभेदात्। सम्बन्धान्तराघटितः सम्बन्धः

## অনুবাদ

সাধক। যথা—'দণ্ডী পুরুষঃ' এই স্থলে দণ্ড এবং পুরুষ এই দুইটি বস্তুর পরস্পর বিশেষণ-বিশেষ্যভাবের প্রয়োজক সংযোগ সম্বন্ধ। দণ্ড এবং পুরুষ এই উভয়ের মধ্যবর্তী সংযোগ ব্যতিরেকে 'দণ্ডী পুরুষঃ' এই রূপে বিশেষণ-বিশেষ্যভাবে প্রতীতিই হইতে পারে না। সাক্ষাৎ ও পরম্পরাভেদে সম্বন্ধ আবার দুই প্রকার। যে

## সুপ্রভা

সাধারণতঃ নানা পদার্থঘটিত পরস্পর বিশেষ্যবিশেষণভাবাপন্ন পদার্থ। উহার বিশেষ্যভূত পদার্থটী প্রকৃত অনুযোগীতে প্রকৃত প্রতিযোগীর সম্বন্ধ হইতে পারে না, কিন্তু ঐ বিশেষ্যে বিশেষণীভূত অন্তর্গত কোনও পদার্থ অংশে প্রতিযোগীর সম্বন্ধবশতই উহা বিশিষ্টরূপে প্রকৃত অনুযোগীতে প্রকৃত প্রতিযোগীর সম্বন্ধ হয়। যথা—স্বসংযোগিসংযোগেন বহ্নিমান্ দেশঃ' ইত্যাদি স্থলে সংযোগসম্বন্ধে বহ্নিশূন্য দেশবিশেষ্যক স্ব ( বহ্নি ) সংযোগি ( পর্বতাদি ) সংযোগরূপ পরম্পরাসম্বন্ধে বহ্নি-প্রকারক জ্ঞানস্থলে 'স্বসংযোগিসংযোগরূপ পরম্পরাসম্বন্ধ। ঐ স্থলে বিশিষ্ট সম্বন্ধের ঘটক বিশেষ্যভূত দ্বিতীয় সংযোগ পদার্থ প্রকৃত স্থলে বিশেষণাংশ পরিহার করিয়া স্বতন্ত্রভাবে বহ্ন্যসংযুক্ত দেশরূপ প্রকৃত অনুযোগীতে বহ্নিরূপ প্রকৃত প্রতি-যোগীর সম্বন্ধ হইতে পারে না, কিন্তু ঐ সম্বন্ধের ( স্বসংযোগিসংযোগের ) অন্তর্গত সংযোগ্যংশে বিশেষণীভূত সংযোগরূপ প্রতিযোগীর সম্বন্ধ সাপেক্ষে অথবা ঐ সংযোগাংশে স্বপদ-সূচিত প্রকৃত প্রতিযোগীর প্রতিযোগিত্বরূপ সম্বন্ধ প্রযুক্তই উহা ( স্বসংযোগিসংযোগ ) প্রকৃতস্থলে বহ্নির সম্বন্ধ হয়।

নব্য নৈয়ায়িকসম্প্রদায় প্রকারান্তরেও সাক্ষাৎসম্বন্ধ ও পরম্পরাসম্বন্ধের বৈলক্ষণ্য উপপাদন করিয়া থাকেন, যথা—সংযোগত্বমাত্রাবচ্ছিন্নসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক বহ্নি-সামান্যাভাববত্তানিশ্চয় সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্নবহ্নিপ্রকারক বুদ্ধির প্রতিবন্ধক বলা হয়। ঐ প্রতিবধ্য-প্রতিবন্ধকভাবস্থলে প্রতিবধ্যতাবচ্ছেদকের গর্ভে ইতরবারক পর্যাপ্তি নিবেশ করিয়া সংযোগত্বমাত্রাবচ্ছিন্নসংসর্গক বহ্নিমত্তা বুদ্ধির প্রতি উক্ত নিশ্চয় প্রতিবন্ধক এইরূপ কল্পনা করা যায় না। কারণ উক্তরূপ বহ্নিসামান্যাভাববত্তানিশ্চয়সত্ত্বে যেমন 'সংযোগ সম্বন্ধেন বহ্নি-মান্' এইরূপ বুদ্ধি হয় না, তেমনই 'মহানসীয়সংযোগেন বহ্নিমান্' ইত্যাদিরূপ বুদ্ধিও হয় না। অতএব উক্ত নিশ্চয়ের প্রতিবন্ধকতাবচ্ছেদকান্তর্গত প্রকারতাবচ্ছেদক সংসর্গতাবচ্ছেদকের ইতরবারক নিবেশ না করিয়াই উক্ত স্থলীয় প্রতিবধ্য প্রতিবন্ধকভাব কল্পনা করিতে হইবে। ঐ

साक्षात्सम्बन्धः। स च समवाय-संयोगस्वरूपादिभेदाद् बहुविधः। रूपवान् पुरुषः, पात्रे जलमस्ति, गृहे पटो नास्ति इत्यादौ पुरुषे रूपस्य पात्रे जलस्य गृहे च पटाभावस्य यथाक्रमं समवाय-संयोग-स्वरूपनामानः सम्बन्धाः प्रतीयन्ते।

समवायश्च षष्ठपदार्थतया कणादेनोक्तो नित्यः सम्बन्धः। यथा—'रूपवान् ब्राह्मणोऽयं चलति' इत्यादौ ब्राह्मणत्वजातेः रूपगुणस्य, चलनक्रियायाश्च ब्राह्मणे

### অনুবাদ

সম্বন্ধ অন্য সম্বন্ধ সাহায্যে গঠিত হয় না তাহা সাক্ষাৎ-সম্বন্ধ। ঐ সাক্ষাৎ-সম্বন্ধ সমবায়, সংযোগ ও স্বরূপাদিভেদে বহু প্রকার। 'রূপবান্ পুরুষঃ, পাত্রে জলমস্তি, গৃহে পটো নাস্তি' ইত্যাদি স্থলে পুরুষে রূপের সমবায় সম্বন্ধ, পাত্রে জলের সংযোগ সম্বন্ধ এবং গৃহে পটাভাবের স্বরূপ সম্বন্ধ যথাক্রমে প্রতীত হয়।

সমবায় মহর্ষি কণাদকর্তৃক ষষ্ঠপদার্থরূপে উপদিষ্ট নিত্য সম্বন্ধবিশেষ। যথা—'রূপবান্ ব্রাহ্মণোঽয়ং চলতি' এই স্থলে ব্রাহ্মণত্বরূপ জাতি, রূপস্বরূপ গুণ

### সুপ্রভা

কল্পনানুসারে একটী গুরুতর আশঙ্কা হয় এই যে,—পূর্বোক্ত রূপে সংযোগত্বমাত্রাবচ্ছিন্ন-সংসর্গতাক প্রতিযোগিতাক বহ্নিসামান্যাভাববত্তানিশ্চয়সত্ত্বে যেমন 'মহানসীয়সংযোগেন বহ্নিমান্' ইত্যাদি বুদ্ধি হয় না, তেমনই উক্তবিধ বহ্ন্যভাবপ্রকারকনিশ্চয়সত্ত্বে 'স্বসংযোগিসংযোগেন বহ্নিমান্' ইত্যাদিরূপ জ্ঞানও হইতে পারে না। ঐ দোষ বারণের জন্য সাক্ষাৎসম্বন্ধ স্থলে সম্বন্ধ-গত একটী মাত্র এবং পরম্পরা সম্বন্ধ স্থলে দুইটী সংসর্গতা স্বীকার করিয়া সাক্ষাৎসম্বন্ধ-স্থলীয় একই সংসর্গতায় প্রকারতানিরূপিতত্ব ও বিশেষ্যতানিরূপিতত্ব এবং পরম্পরা সম্বন্ধস্থলীয় দুইটী সংসর্গতার একটীতে কেবল প্রকারতানিরূপিতত্ব ও অপরটীতে কেবল বিশেষ্যতানিরূপিতত্ব স্বীকারপূর্বক প্রকৃতবিশেষ্যতানিরূপিত সংযোগত্বাবচ্ছিন্নসংসর্গতা-নিরূপিত প্রকৃতপ্রকারতাশালিবুদ্ধিত্ব প্রতিবধ্যতাবচ্ছেদক বলিলে আর দোষ হয় না। কারণ 'স্বসংযোগিসংযোগ' রূপ পরম্পরাসম্বন্ধস্থলে দুইটী সংসর্গতার একটী প্রথম সংযোগনিষ্ঠ, দ্বিতীয় সংসর্গতা দ্বিতীয় সংযোগনিষ্ঠ। প্রথমটী প্রকারতানিরূপিত, দ্বিতীয়টী নিরূপিত। উহার কোনটীই বিশেষ্যতা ও প্রকারতা উভয় নিরূপিত নহে। ঐ সংসর্গতার একত্ব ও দ্বিত্বনিবন্ধনই সাক্ষাৎসম্বন্ধ ও পরম্পরাসম্বন্ধের পার্থক্য উপপাদন করা যায়।

'রূপবান্ ব্রাহ্মণোঽয়ং চলতি' এই স্থলে ব্রাহ্মণরূপ দ্রব্যে জাতি গুণ ও ক্রিয়ার সম্বন্ধ যে সমবায় তাহার 'ঘটাদীনাং কপালাদৌ দ্রব্যেষু গুণ কর্মণোঃ, তেষু জাতেশ্চ সম্বন্ধঃ সমবায়ঃ প্রকীর্তিতঃ'। ইত্যাদি কারিকাবলী প্রভৃতি গ্রন্থে অনুশাসন জ্ঞাতব্য।

নৈয়ায়িকশিরোমণি বিশ্বনাথ নিজনির্মিত কারিকাবলীর প্রসিদ্ধ সিদ্ধান্তমুক্তাবলী টীকায় 'সমবায়ত্বং নিত্যসম্বন্ধত্বং' এই লক্ষণ বলিয়াছেন।

समवायः सम्बन्धः। यावदाधारं यावदाधेयं वा समवायस्तिष्ठतीति 'समवायो नित्यः सम्बन्ध' इत्युच्यते। समवायस्यैव 'अयुतसम्बन्ध' इति नामान्तरम्। संयोगादिकन्तु नैवम्। सतोरपि आधाराधेययोः (दण्डपुरुषयोः) संयोगादेरपायदर्शनात्।

## অনুবাদ

এবং চলনরূপক্রিয়ার ব্রাহ্মণে সমবায় সম্বন্ধ। সমবায় সম্বন্ধে যে অধিকরণে কোনও বস্তু থাকে, সেই অধিকরণ বা আধেয় যাবৎ কাল স্থায়ী তাবৎকাল সমবায় স্থিতিশীল বলিয়া ঐ সমবায় নিত্য সম্বন্ধ বলা হয়। 'অযুতসম্বন্ধ' ইহা সমবায় সম্বন্ধেরই নামান্তর। সংযোগাদি সম্বন্ধ এরূপ (নিত্যসম্বন্ধ বা অযুতসম্বন্ধ) নহে। কারণ আধেয় ও আধার-ভূত দণ্ড ও পুরুষের সত্তাদশায়ও উহার সংযোগাদি নষ্ট হইতে দেখা যায়।

## সুপ্রভা

'যাবদাধারং যাবদাধেয়ং বা' এই মূল গ্রন্থস্থলে বৈকল্পিকরূপে পক্ষদ্বয়ের উপন্যাসের কারণ এই যে—ঐ স্থলে সমবায়ের নিত্যত্ব বর্ণনায় কেবল 'যাবদাধারং তিষ্ঠতি' ইহাই হেতুরূপে উপন্যাস করিলে ঘটাদিগত রূপাদিসমবায়ে উক্ত হেতুর উপপত্তি হয় না। কারণ রূপপ্রভৃতির সমবায় রূপাদিসাপেক্ষ, অতএব রূপাদির উৎপত্তির পূর্বে ঘটের আদ্য ক্ষণে উহাতে রূপাদি না থাকায় উহাতে তখন রূপাদিসাপেক্ষ রূপাদিসমবায় থাকিতে না পারায় উহার যাবদাধারস্থিতি উপপন্ন হয় না। এই জন্যই বৈকল্পিকরূপে যাবদাধেয় স্থিতিকে হেতু রূপে উপন্যাস করা হইয়াছে। 'যাবদাধেয়ং তিষ্ঠতি' ইহাকেই নিত্যত্বকথনে হেতুরূপে উপন্যাস করিলে ঘটাদিগত ঘটত্বাদিসমবায়ে উক্ত হেতুর উপপত্তি হয় না, কারণ প্রলয়ে যখন সমগ্র ঘটাদির নাশ হইয়া যায় তখন ঘটত্বাদি জাতিরূপ আধেয় থাকিলেও আশ্রয়ের অভাবে উহা কোথায়ও থাকিতে পারে না। প্রলয়দশায়, ঘটত্বাদিজাতির কালে সত্তা স্বীকার করিয়া যেমন জাতির নিত্যত্ব উপপাদন করা হয়, ঐ রূপ ঐ সময়ে ঘটত্বাদি-সমবায়ও কালে থাকে ইহা মানিয়া লইলে অবশ্য উপপত্তি হইতে পারে। উক্ত হেতুমূলক সমবায়ের নিত্যত্ব-কথন 'পৃথিব্যাং গন্ধস্য সমবায়ো ন জলে ইত্যাদিপ্রতীতেঃ সমবায়স্য নানাত্বমিতি তু নব্যাঃ' এই দিনকরীগ্রন্থে সূচিত সমবায়ের নব্যমতসিদ্ধ নানাত্বসিদ্ধান্তকল্পেই সুষ্ঠু উপপন্ন হয়।

'অনন্তস্বরূপাণাং সম্বন্ধত্বকল্পনে গৌরবাৎ লাঘবাদেকসমবায়সিদ্ধিঃ' অর্থাৎ বিশ্বনাথোক্ত নিত্যসম্বন্ধকে 'অনন্ত স্বরূপসম্বন্ধরূপ কল্পনা করিলে গৌরব হয়, অতএব লাঘববশতঃ একই সমবায় সিদ্ধ হয়'—ঐ গ্রন্থসূচিত সমবায়ের একত্বমতে গগনাদিগত দ্রব্যত্বাদির সমবায় ও ঘটাদিগত রূপাদিসমবায় একই হওয়ায় উহার ত্রৈকালিকত্বাদিরূপ নিত্যত্ব মুখ্যরূপেই উপপন্ন হয়।

'অযুতসম্বন্ধ' এই মূলস্থলে, 'যু মিশ্রণে অমিশ্রণে চ' এই অমিশ্রণার্থক 'যু' ধাতুর উত্তর 'ক্ত' প্রত্যয়দ্বারা 'যুত'পদ সিদ্ধ করিয়া' ন যুতৌ অযুতৌ তয়োঃ সম্বন্ধঃ অযুতসম্বন্ধঃ' অর্থাৎ যে

संयोगश्च कणादोक्तगुणविशेषः। अभावादेः सम्बन्धः स्वरूपसम्बन्धः। यथा—'भूतले पटो नास्ति' इत्यादौ भूतले पटाभावस्य स्वरूपसम्बन्धः प्रतीयते। स्वरूपसम्बन्धस्यैव विशेषणता इति नामान्तरम्।

सम्बन्धान्तरघटितः ( यस्य सम्बन्धस्य निर्माणे सम्बन्धान्तरापेक्षा विद्यते तादृशः ) सम्बन्धः परम्परासम्बन्धः। यथा—स्वसमवायिसमवेतत्वरूपेण सामानाधि-

**অনুবাদ**

সংযোগ কণাদপ্রোক্ত গুণবিশেষ। অভাবাদির সম্বন্ধ স্বরূপসম্বন্ধ। যথা—'ভূতলে পটো নাস্তি' এই স্থলে ভূতলে প্রতীয়মান পটাভাবের স্বরূপসম্বন্ধ। স্বরূপসম্বন্ধেরই নামান্তর বিশেষণতা।

যে সম্বন্ধ অন্য সম্বন্ধ দ্বারা গঠিত অর্থাৎ যে সম্বন্ধের গঠনে অন্য সম্বন্ধের অপেক্ষা বিদ্যমান, তাদৃশ সম্বন্ধ পরম্পরাসম্বন্ধ। যেমন স্বসমবায়িসমবেতত্বরূপ

**সুপ্রভা**

পদার্থদ্বয় ( উভয়ের সত্তাকালে ) পৃথক্ আধারাধেয়ভাবে অবস্থিত হয় না, সেই পদার্থদ্বয় 'অযুত', তাহাদের সম্বন্ধ 'অযুতসম্বন্ধ'। উহা 'অযুতসিদ্ধানামাধার্যাধারভূতানাং যঃ সম্বন্ধ ইহ—প্রত্যয়হেতুঃ স সমবায়ঃ'—এই প্রশস্তপাদভাষ্যগ্রন্থের ন্যায়কন্দলীটীকায় শ্রীধরাচার্য বিবৃত করিয়াছেন। যথা—'যুতসিদ্ধিঃ পৃথক্ সিদ্ধিঃ পৃথগবস্থিতিঃ উভয়োরপি সম্বন্ধিনোঃ পরস্পর-পরিহারেণ পৃথগাশ্রয়াশ্রয়িত্বম্, সা যয়োর্নাস্তি তাবযুতসিদ্ধৌ তয়োঃ সম্বন্ধঃ সমবায়ঃ। যথা—তন্তুপটয়োঃ।' উহার অর্থ যথা—'যুতসিদ্ধি' শব্দের অর্থ পৃথক্-সিদ্ধি, পৃথগ্‌ভাবে অবস্থিতি, অর্থাৎ দুইটী সম্বন্ধী বস্তুরই পৃথক্ আশ্রয়াশ্রয়িত্ব, যে দুইটী সম্বন্ধী পদার্থের সেই যুতসিদ্ধি থাকে না, সেই দুইটী 'অযুতসিদ্ধ', তাহাদের সম্বন্ধ সমবায়। যথা তন্তু ও পটের সম্বন্ধ।

ঐ ভাষ্যের সূক্তি-টীকায় জগদীশ ব্যাখ্যা করেন, যথা—'অযুতসিদ্ধানামপৃথগ্‌ভূতানাং সর্বদা মিথঃ সমবেতানামিতি যাবৎ'। অর্থাৎ অযুতসিদ্ধ-অপৃথগ্‌ভূত, সর্বদা ( দুইয়ের সত্তাদশায় ) পরস্পর মিলিত ভাবেই অবস্থিত ইহাই নিষ্কৃষ্টার্থ। সেতু-টীকাকার পদ্মনাভমিশ্র বলেন—'অযুতসিদ্ধিশ্চ উভয়োরসম্বদ্ধয়োরবিদ্যমানতা'। অর্থাৎ দুইটী বস্তুর কদাপি পরস্পর অসংসৃষ্ট অবস্থায় না থাকাই 'অযুতসিদ্ধি'।

প্রকৃত স্বসমবায়িসমবেতত্বরূপ পরম্পরাসম্বন্ধ স্থলে 'স্ব'পদে তন্তুরূপ; উহার সমবায়ী তন্তু, উহাতে সমবেতত্ব অর্থাৎ সমবায়সম্বন্ধে বৃত্তিমত্ত্ব, পটে বর্তমান হওয়ায়, 'সম্বন্ধের সত্তা সম্বন্ধি-সত্তার নিয়ামক' এই নিয়ম বলে 'স্ব'পদ গ্রাহ্য তন্তুরূপ ঐ পরম্পরা সম্বন্ধে পটে থাকে। ঐ সম্বন্ধ সামানাধিকরণ্যরূপও বটে, কারণ 'সামানাধিকরণ্য' পদের অর্থ সমানাধিকরণবৃত্তিত্ব; উহারই নিষ্কৃষ্টার্থ স্বাধিকরণনিরূপিত-বৃত্তিত্ব। উক্তস্থলে 'স্ব'পদে তন্তুরূপ, উহার সমবায়-সম্বন্ধে অধিকরণ স্বসমবায়ী তন্তু, তন্নিরূপিত বৃত্তিত্বই 'সামানাধিকরণ্য'। ঐ বৃত্তিত্ব সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন, অতএব উহাই স্বসমবায়িসমবেতত্বরূপ।

करण्यनामकेन परम्परासम्बन्धेन पटे तन्तोरपि रूपमस्ति। अयञ्च सम्बन्धः समवाय-घटितः। एवं दण्डकमण्डलुधारिणि पुरुषे गृहे तिष्ठति सति स्वसंयोगिसंयोगित्वरूपेण स्वाश्रयाश्रयत्वेन परम्परासम्बन्धेन दण्डकमण्डलू अपि गृहे स्त इति। अयञ्च सम्बन्धः संयोगघटितः।

समवायादि साक्षात्सम्बन्धवत् परम्परासम्बन्धो न नियतसंख्यकः—नापि च नियतपरिमाणः, यथेच्छं सम्बन्धिसम्बन्धादिकमादाय दीर्घ-दीर्घतर-दीर्घतमा असंख्या एव ते कल्पयितुं शक्यन्ते। सर्वतोऽसंसृष्टावपि पदार्थौ परम्परासम्बन्धेन सम्बद्धौ भवतः। तत्र च दूरत्वादि न प्रतिबन्धकम्। तथा हि स्वसम्राडधिकृतराज्यत्व-

### অনুবাদ

সামানাধিকরণ্যনামক পরম্পরা—সম্বন্ধে পটে তন্তুরও রূপ থাকে। এই সম্বন্ধ সমবায়সম্বন্ধঘটিত। এইরূপ দণ্ড—কমণ্ডলুধারী পুরুষ গৃহে থাকিলে স্বসংযোগি-সংযোগিত্বরূপ স্বাশ্রয়াশ্রয়ত্ব পরম্পরা-সম্বন্ধে দণ্ড ও কমণ্ডলুও গৃহে থাকে। এই সম্বন্ধ সংযোগ-ঘটিত।

সমবায় প্রভৃতি সাক্ষাৎ-সম্বন্ধ যেমন নিয়তসংখ্যক, পরম্পরাসম্বন্ধ সেরূপ নিয়তসংখ্যক নহে ; অর্থাৎ, উহা অসংখ্য। উহা কি পরিমাণ ছোট বড় আকারের হইবে, তাহারও কোনও নিয়ম নাই। ইচ্ছামত সম্বন্ধী বস্তুর সম্বন্ধাদি গ্রহণ করিয়া উহা দীর্ঘ, দীর্ঘতর ও দীর্ঘতম অর্থাৎ বড় ও তাহা হইতে বড় এইরূপ অসংখ্যই কল্পনা করা যায়। সকল দিকে সাক্ষাৎ অসংসৃষ্ট তুইটি পদার্থেও পরম্পরা সম্বন্ধে সম্বদ্ধ হইয়া থাকে। তথায় দূরত্বাদিও কোনও বাধা জন্মায় না।

### সুপ্রভা

প্রকৃত 'স্বসংযোগি-সংযোগিত্ব'রূপ পরম্পরাসম্বন্ধস্থলে 'স্ব'পদে দণ্ড ও কমণ্ডলু গ্রাহ্য। তাহার সংযোগী পুরুষ, তৎসংযোগিত্ব গৃহে বর্তমান, অতএব ঐ সম্বন্ধ স্বাশ্রয়াশ্রয়ত্বরূপও বটে। কারণ পুরুষ 'স্ব'পদগ্রাহ্য দণ্ডও কমণ্ডলুর সংযোগসম্বন্ধে আশ্রয়, গৃহে সেই স্বাশ্রয়ী-ভূত পুরুষের সংযোগ সম্বন্ধে আশ্রয়ত্ব বিদ্যমান।

'সম্বন্ধি-সম্বন্ধাদিকমাদায়' এই স্থলে 'আদি'পদে সম্বন্ধি-সম্বন্ধিসম্বন্ধ ও সম্বন্ধিসম্বন্ধি-সম্বন্ধিসম্বন্ধ প্রভৃতি গ্রাহ্য। যথা স্বসংযোগিসংযোগ সম্বন্ধি সম্বন্ধ, স্বসংযোগিসংযোগিসংযোগ স্বসম্বন্ধিসম্বন্ধিসম্বন্ধ, স্বসংযোগিসংযোগি-সংযোগিসংযোগ স্বসম্বন্ধিসম্বন্ধিসম্বন্ধিসম্বন্ধ। ঐ সকল সম্বন্ধের দীর্ঘত্ব হ্রস্বত্বাদি সম্বন্ধঘটকীভূত পদার্থের আধিক্য ও ন্যূনতামূলক। অতএব 'সংযোগ' অপেক্ষা দীর্ঘ সম্বন্ধ 'স্বসংযোগিসংযোগ', তদপেক্ষা দীর্ঘতর 'স্বসংযোগিসংযোগিসংযোগ'-সম্বন্ধ, দীর্ঘতম 'স্বসংযোগিসংযোগিসংযোগিসংযোগ' সম্বন্ধ। এইরূপ অন্যত্রও বুঝিতে হইবে।

सम्बन्धेन भारतवर्षीयाः सर्व एव आर्या अनार्याश्च इंलण्डे सन्ति। इंलण्डीयाश्च तत्र स्थिता अपि स्वराज्येश्वरी साम्राज्यसम्बन्धेन भारतवर्षे तिष्ठन्तीति।

परम्परासम्बन्धस्य गूढं रहस्यमिदम्,—स्वशब्देन यमभिप्रेत्य यस्य परम्परासम्बन्धस्यारम्भो यस्मिंश्च पर्यवसानम्, तत् तेन परम्परासम्बन्धेन तस्मिन् तिष्ठति। यथा पूर्वोक्ते उदाहरणे स्वशब्देन भारतवर्षीयानभिप्रेत्य स्वसम्राडधिकृतराज्यत्व-

## অনুবাদ

যথা, 'স্বসম্রাডধিকৃতরাজ্যত্ব'রূপ পরম্পরাসম্বন্ধে ভারতবর্ষে অবস্থিত সমস্ত আর্য ও অনার্যজাতীয় ব্যক্তিবর্গই ইংলণ্ডে বর্তমান। এবং ইংলণ্ডে স্থিত ব্যক্তিবর্গ ঐ (সুদূর) ইংলণ্ডনগরে (সাক্ষাৎ সম্বন্ধে) থাকিলেও 'স্বরাজ্যেশ্বরীসাম্রাজ্য'রূপ পরম্পরা-সম্বন্ধে ভারতবর্ষে বর্তমান।

পরম্পরাসম্বন্ধের গূঢ় রহস্য এই যে,—পরম্পরাসম্বন্ধস্থলে 'স্ব'শব্দে যাহাকে উদ্দেশ করিয়া যে পরম্পরা-সম্বন্ধের আরম্ভ এবং যাহাতে গিয়া উহার পরিসমাপ্তি, তাহা (ঐ 'স্ব'পদে অভিমত বস্তু) সেই (পর্যবসানবিষয়) বস্তুতে সেই পরম্পরা-সম্বন্ধে থাকে। যথা—পূর্বোক্ত উদাহরণস্থলে 'স্ব'শব্দে ভারতবর্ষস্থিত ব্যক্তিবর্গকে উদ্দেশ করিয়া 'স্বসম্রাডধিকৃতরাজ্যত্ব'রূপ পরম্পরাসম্বন্ধের আরম্ভ এবং তাদৃশ

## সুপ্রভা

'স্বসম্রাডধিকৃত-রাজ্যত্ব'রূপ সম্বন্ধস্থলে 'স্ব'পদে ঐ সম্বন্ধের প্রতিযোগী ভারতবর্ষীয় ব্যক্তিবর্গ। তাহাদের সম্রাট্ ভারতাধীশ্বর (অতীতে) সপ্তম এড্ওয়ার্ড্ প্রভৃতি, তাহার অধিকৃত রাজ্য ইংলণ্ডদেশ, উহাতে তাদৃশ রাজ্যত্ব বিদ্যমান। অতএব, 'সম্বন্ধের সত্তা সম্বন্ধীর সত্তার নিয়ামক' এই নিয়মানুসারে 'স্ব'পদার্থ প্রতিযোগিভূত ভারতীয় ব্যক্তিবর্গ ইংলণ্ডদেশে থাকে।

'স্বরাজ্যেশ্বরীসাম্রাজ্য' সম্বন্ধস্থলে 'স্ব'পদে ঐ সম্বন্ধের প্রতিযোগী ইংলণ্ডীয় জনগণ, উহাদের রাজ্য ইংলণ্ডের ঈশ্বরী (অতীতে) কুইন্ ভিক্টোরিয়া, তাহার সাম্রাজ্য অর্থাৎ সম্রাটের যোগ্য আধিপত্য ভারতবর্ষে থাকায়, তাদৃশ পরম্পরাসম্বন্ধে ইংলণ্ডীয় জনগণ ভারতবর্ষে থাকে।

ইতিপূর্বে 'সাক্ষাৎ সম্বন্ধ' ও 'পরম্পরা সম্বন্ধ' এই দুই প্রকার সম্বন্ধের কথা বলা হইয়াছে। সম্প্রতি সেই সম্বন্ধকেই আবার 'বৃত্তিনিয়ামক' ও 'বৃত্ত্যনিয়ামক' এই দুই প্রকারে বিভাগ করা হইতেছে। এই কারণেই মূলে 'পুনশ্চ' এই অংশের উপন্যাস করা হইয়াছে। উহার তাৎপর্য এই—সম্বন্ধ যে কেবল 'সাক্ষাৎ' ও 'পরম্পরা'সম্বন্ধভেদে দ্বিবিধ তাহা নহে, উহা আবার বৃত্তিনিয়ামক ও বৃত্ত্যনিয়ামকভেদেও দ্বিবিধ।

सम्बन्धस्यारम्भः, तत्र राज्यत्वम् इंलंडे वर्तते इति तस्य इंलंडे पर्यवसानम्, अतः तेन सम्बन्धेन भारतवर्षीया इंलंण्ठे तिष्ठन्ति।

पुनश्च सम्बन्धो द्विविधः, वृत्तिनियामकः वृत्त्यनियामकश्चेति। यस्मिंश्च सम्बन्धे सति एकस्मिन् अपरस्य वृत्तिता, आधाराधेयभावः, आश्रयाश्रयिभावो वा प्रतीयते, स सम्बन्धो वृत्तिनियामकः। वृत्तिनियामकसम्बन्धस्थले आधारे सप्तमी विभक्तिः प्रयुज्यते। यथा—भूतले घटः। आधेये च मतुवादयः प्रत्यया भवन्ति। यथा—भूतलं घटवत्।

वृत्तिनियामकसम्बन्धाश्च समवाय-संयोग-स्वरूप प्रभृतय एव केचन। तेषु सम्बन्धेषु सत्सु—पृथिव्यां रूपम्, कुण्डे वदरम्, भूतले घटो नास्तीत्यादिप्रयोगात्।

### অনুবাদ

রাজ্যত্বরূপ সম্বন্ধ ইংলণ্ড নগরে বর্তমান ; অতএব ইংলণ্ডে ঐ সম্বন্ধের পর্যবসান ; এই কারণে ঐ পরম্পরা-সম্বন্ধে ভারতবর্ষীয় ব্যক্তিগণ ইংলণ্ডনগরে থাকে।

ঐ সম্বন্ধ আবার দুই প্রকার ; বৃত্তিনিয়ামক এবং বৃত্ত্যনিয়ামক। যে সম্বন্ধ সংসর্গরূপে ভাসমান হইলে এক বস্তুতে অপর বস্তুর বর্তমানতা, ঐ উভয়ের আধারাধেয়ভাব বা আশ্রয়াশ্রয়ি-ভাব প্রতীত হয়, সেই সম্বন্ধ বৃত্তিনিয়ামক। বৃত্তি-নিয়ামক সম্বন্ধস্থলে আধার অর্থাৎ অধিকরণে সপ্তমী বিভক্তি প্রযুক্ত হয়। যথা—'ভূতলে ঘটঃ', অর্থাৎ ভূতলে বর্তমান ঘট। আধেয়বোধক পদোত্তর মতুপ্ প্রভৃতি প্রত্যয় হইয়া থাকে। যথা—'ভূতলং ঘটবৎ' অর্থাৎ ভূতল ঘটাধিকরণ।

সমবায়, সংযোগ, স্বরূপ প্রভৃতি কতিপয় সম্বন্ধই বৃত্তি-নিয়ামক সম্বন্ধ। কারণ উহারা যখন সম্বন্ধরূপে ভাসমান হয়, তখন 'পৃথিব্যাং রূপম্' 'কুণ্ডে বদরম্' 'ভূতলে ঘটো নাস্তি' ইত্যাদি রূপ প্রয়োগ হইয়া থাকে।

### সুপ্রভা

বৃত্তিনিয়ামক ও বৃত্ত্যনিয়ামক এই দুই স্থলেই 'বৃত্তি' শব্দের অর্থ বৃত্তিতা অর্থাৎ আধেয়তা, ঐ বৃত্তিতা বা আধেয়তার নিয়ামক অর্থাৎ প্রযোজক 'বৃত্তিনিয়ামক', ঐ বৃত্তিতার অনিয়ামক অর্থাৎ অপ্রযোজকই 'বৃত্ত্যনিয়ামক'। আধেয়গত বৃত্তিতা আধারগত আধারতা বা অধিকরণতা-সাপেক্ষ, এই জন্যই বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধের বিবরণে 'বৃত্তিতা আধারাধেয়-ভাবঃ, আশ্রয়াশ্রয়িত্বং বা প্রতীয়তে' এইরূপ বলা হইয়াছে।

'সমসূত্রপাতেন স্থিতয়োঃ ইহার তাৎপর্য উপর্যধোভাবে আধারাধেয়রূপে অনবস্থিত। উদাহরণোক্ত অঞ্জলিবদ্ধ হস্তদ্বয় পরস্পর পাশাপাশি থাকে, উপর্যধোভাবে থাকে না ইহা সিদ্ধ, অতএব উহার পারস্পরিক সংযোগ বৃত্ত্যনিয়ামক।

समसूत्रपातेन स्थितयोरुभयोः संयोगोऽपि न वृत्तिनियामकः। अत एव अञ्जलिरूपतया समसूत्रपातेन स्थितयोर्हस्तयोः संयोगो न वृत्तिनियामक इति तत्र न 'हस्ते हस्त' इति प्रयोगः।

तयोरेव हस्तयोः उपर्यधोभावेन स्थितयोः पुनः संयोगो वृत्तिनियामक इति तत्र 'हस्ते हस्त' इति प्रयोगोऽपि भवति।

यस्मिंश्च सम्बन्धे पूर्वोक्तरूपा वृत्तिता आधाराधेयभावश्च न प्रतीयते, केवलं सम्बन्धितामात्रम्, स वृत्त्यनियामकः सम्बन्धः। तत्र सप्तमीविभक्तेः मतुबादिप्रत्ययस्य च प्रयोगो न भवति। किन्तु सम्बन्धित्वबोधका इन्-ईय-प्रभृतयः प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते। यथा—स्वत्वसम्बन्धो न वृत्तिनियामक इति मन्त्रिणि सत्यपि स्वत्वसम्बन्धे 'मन्त्री राजवान्' इति, किंवा 'मन्त्रिणि राजा' इति न प्रयोगः, किन्तु 'राजकीयो मन्त्री' इति प्रयोगः।

### অনুবাদ

হস্তদ্বয় যখন সমসূত্রে অবস্থিত হয়, তখন ঐ দুইটি হস্তের সংযোগও বৃত্তি-নিয়ামক নহে। অত এব অঞ্জলিরূপে সমসূত্রে অবস্থিত হস্তদ্বয়ের সংযোগ বৃত্তি নিয়ামক নহে বলিয়া তথায় 'হস্তে হস্তঃ' এইরূপ প্রয়োগ হয় না। কিন্তু সেই হস্তদ্বয়ই যখন একটী উপরে অপরটী নীচে এইরূপ উপর্যধোভাবে অবস্থিত হয়, তখন তাহাদের সংযোগ বৃত্তিনিয়ামক। এই কারণে তখন 'হস্তে হস্তঃ' এইরূপ প্রয়োগও হয়।

যে সম্বন্ধ সংসর্গতা প্রাপ্ত হইলে পূর্বোক্তরূপ বৃত্তিতা ও আধারাধেয়ভাবের প্রতীতি হয় না, কেবল সম্বন্ধিতামাত্রই প্রতীত হয়, তাহাই বৃত্ত্যনিয়ামক সম্বন্ধ। তথায় সপ্তমী বিভক্তি ও মতুবাদিপ্রত্যয়ের প্রয়োগ হয় না। পরন্তু সম্বন্ধিত্ব-বোধক ইন্, ঈয় প্রভৃতি প্রত্যয়ের প্রয়োগ হয়। যথা—স্বত্বরূপ সম্বন্ধ বৃত্তি-নিয়ামক নহে এইজন্য মন্ত্রীতে ( রাজার ) স্বত্বরূপ সম্বন্ধ থাকিলেও 'মন্ত্রী রাজবান্' অথবা 'মন্ত্রিণি রাজা' এইরূপ প্রয়োগ হয় না। কিন্তু 'রাজকীয় মন্ত্রী' এইরূপ প্রয়োগ হয়।

### সুপ্রভা

মূলে প্রতিপাদিত হইয়াছে যে পরম্পরাসম্বন্ধ বৃত্ত্যনিয়ামক। অতএব যখন গৃহে শিখী পুরুষ বিদ্যমান, তখন ঐ গৃহ বুঝাইবার জন্য 'স্বাশ্রয়াশ্রয়ত্বসম্বন্ধেন শিখাবদ্ গৃহং' এইরূপ প্রয়োগ হইবে না। কারণ মতুবাদিপ্রত্যয় আধারাধেয়ভাবের প্রত্যায়ক।

উহা সর্ববাদিসম্মত নহে। কারণ মতুবাদিপ্রত্যয়ের অর্থ সম্বন্ধিত্ব, অধিকরণত্ব নহে

परम्परासम्बन्धाः प्रायशः सर्वं एव वृत्त्यनियामकाः। अत एव शिखिनि पुरुषे गृहे तिष्ठति स्वाश्रयपुरुषाश्रयत्वसम्बन्धेन 'शिखावद् गृहम्' इति न प्रयोगः।

कालिकनामकः सम्बन्धः कश्चिद् वृत्तिनियामकः, कश्चिद् वृत्त्यनियामकोऽस्ति*। वृत्तिनियामकेन कालिकसम्बन्धेन काले सर्वं वर्तते। स च कालः

### অনুবাদ

পরম্পরাসম্বন্ধ প্রায় সবগুলিই বৃত্ত্যনিয়ামক। অতএব শিখাবিশিষ্ট পুরুষ যখন গৃহে বর্তমান তখন 'স্বাশ্রয়াশ্রয়ত্ব' রূপ পরম্পরাসম্বন্ধে 'শিখাবদ্ গৃহ' এই রূপ প্রয়োগ হয় না।

### সুপ্রভা

অতএব বৃত্ত্যনিয়ামক পরম্পরাসম্বন্ধস্থলেও গৃহাদিতে স্বাশ্রয়াশ্রয়ত্বসম্বন্ধে শিখাদিসম্বন্ধিত্ব থাকায় 'শিখাবদ্ গৃহম্' এরূপ প্রতীতি অবাধিত। উক্তরূপ পরম্পরাসম্বন্ধস্থলে পূর্বাচার্যগণের বতুপ্ প্রত্যয়ের প্রয়োগ দেখা যায়। যথা—তত্ত্বচিন্তামণির সিদ্ধান্তলক্ষণে শিরোমণ্যুক্ত দণ্ড্যাদি-কল্পের ব্যাখ্যায় জগদীশ বলিয়াছেন—'স্বাশ্রয়াশ্রয়ত্বলক্ষণ-পরম্পরাসম্বন্ধেন দণ্ডত্ববতো দণ্ডিনঃ' ইত্যাদি, সামান্যনিরুক্তিগ্রন্থে গাদাধরী-টীকায় দেখা যায়—'স্বাবচ্ছিন্নসাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাকত্বসম্বন্ধেন সাধ্যতাবচ্ছেদকবত্তমেবাভাবস্য সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বরূপ-ব্যাপ্তিঘটকম্' ইত্যাদি। ঐরূপ আরও অনেক প্রয়োগ দেখা যায়।

---

* মহাকাল-খণ্ডকালয়োর্বৃত্তিতানিয়ামকঃ 'কালিকবিশেষণতা' নামকঃ কশ্চিৎ সাক্ষাৎসম্বন্ধোঽস্তি। কেচিত্তু কালিকবিশেষণতাসম্বন্ধেন বস্তু মহাকাল এব বর্ততে। ন তু খণ্ডকালেঽপি। 'ক্রিয়ৈব কাল' ইতি গমনস্পন্দনাদিরূপঃ ক্রিয়াবিশেষ এব খণ্ডকালঃ। তস্মিন্ স্বাশ্রয়কালাশ্রিতত্বরূপপরম্পরাসম্বন্ধেন তৎসমকালীনং সর্বমেব বর্ততে। খণ্ডকালে চ পরম্পরাসম্বন্ধো বৃত্তিনিয়ামকঃ। তত্রায়ং বিশেষঃ—যদা খণ্ডকালস্য গমনাদিক্রিয়ারূপস্য কালবাচকেন বৎসর-মাস-দিন-ক্ষণাদিশব্দেন ইদানীং তদানীং প্রভৃতিশব্দেন বা (তত্তৎকালত্বেন প্রত্যয়ার্থম্) প্রয়োগঃ, তদৈবায়ং পরম্পরাসম্বন্ধো বৃত্তিতানিয়ামকঃ। ক্রিয়াবাচকেন গমনস্পন্দনাদিশব্দেন প্রয়োগে ন বৃত্তিতানিয়ামকঃ। অতএব 'ইদানীং ঘটঃ' 'অস্মিন্ দিনে ঘটঃ' ইত্যাদি প্রয়োগবৎ 'গমনে ঘটঃ' ইতি ন প্রয়োগঃ। অস্মিন্ মাসে শীতাধিক্যম্, অদ্য বৃষ্টির্জাতা ইত্যাদয়শ্চ খণ্ডকালবিষয়স্যপ্রতীতয়ঃ। বৃত্ত্যনিয়ামকঃ কালিকস্তু স্বাশ্রয়কালাশ্রিতত্বরূপঃ পরম্পরা-সম্বন্ধঃ। তেন সম্বন্ধেন সর্বং সর্বত্র বর্ততে। তথাহি গৃহস্য আশ্রয়ো যঃ কালঃ তস্মিন্ কালে পুরুষোঽপি বর্তত ইতি স্বাশ্রয়কালাশ্রিতত্ব সম্বন্ধেন (স্বস্য গৃহস্য আশ্রয়ঃ কালঃ তদাশ্রিতঃ পুরুষঃ) গৃহমপি পুরুষে বর্ততে।

#### অনুবাদ

মহাকাল ও খণ্ডকালে বর্তমানতার (বৃত্তিতা বা আধেয়তার) প্রযোজক কালিকবিষেণতানামক একটী সাক্ষাৎ সম্বন্ধ আছে। কেহ কেহ বলেন,—কালিকবিশেষণতারূপ সম্বন্ধে যে কোনও বস্তু মহাকালেই থাকে, খণ্ডকালেও থাকে না। 'ক্রিয়ৈব কালঃ' 'ক্রিয়াই কাল' এই নিয়মানুসারে গমন ও স্পন্দনপ্রভৃতিরূপ ক্রিয়াবিশেষই খণ্ডকাল। উহাতে স্বাশ্রয়কালাশ্রিতত্বরূপ পরম্পরাসম্বন্ধে তৎসমকালীন সমস্ত বস্তুই থাকে। খণ্ডকালেও এই পরম্পরাসম্বন্ধ বৃত্তিনিয়ামক। উহাতে বিশেষ এই যে,—যখন গমনাদিক্রিয়াত্মক খণ্ডকাল কালবাচক বর্ষ-মাস-দিন-ক্ষণাদি শব্দ দ্বারা বা ইদানীং তদানীং ইত্যাদি শব্দ দ্বারা তত্তৎকালরূপে প্রতীতির জন্য উল্লিখিত হয়, তখনই ঐ পরম্পরাসম্বন্ধ বৃত্তিনিয়ামক। ক্রিয়াবাচক শব্দ দ্বারা উহা উল্লিখিত হইলে ঐ সম্বন্ধ বৃত্তিনিয়ামক নহে। অতএব 'ইদানীং ঘটঃ' 'এই সময়ে ঘট', 'অস্মিন্ দিনে ঘটঃ' 'এই দিনে ঘট' ইত্যাদি প্রয়োগের ন্যায় 'গমনে ঘটঃ' 'গমনরূপ ক্রিয়ায় ঘট' এরূপ প্রয়োগ হয় না।

महाकालरूपः। खण्डकालरूपश्च। 'काले सर्वम्' इति महाकालविषयिणी प्रतीतिः।

'अयं न द्वौ, किन्तु द्वित्ववान्' इति प्रतीतेः 'द्वौ' 'द्वित्ववान्' इति पदयोः

**অনুবাদ**

কালিকনামক সম্বন্ধ কোনটী বৃত্তিনিয়ামক, আবার কোনটী বৃত্ত্যনিয়ামক আছে। বৃত্তিনিয়ামক কালিকসম্বন্ধে কালে সমস্ত বস্তু থাকে। সেই কাল মহাকাল এবং খণ্ডকালরূপ। 'কালে সর্বম্' অর্থাৎ 'কালে সমস্ত বস্তু আছে' এই প্রতীতি মহাকালবিষয়ক।

'এই (একটী) বস্তু দুই নয়, কিন্তু দ্বিত্বের আশ্রয়', এইরূপ প্রতীতি হয় বলিয়া 'দ্বৌ' অর্থাৎ দুই এবং দ্বিত্বের আশ্রয় এই দুইটী পদের অর্থভেদ

**সুপ্রভা**

জন্য বস্তুমাত্রই খণ্ডকাল। ঐ জন্য বস্তু স্বসমকালীন হইলেই উহাতে কালিকসম্বন্ধে বস্তু থাকে। ঐ সিদ্ধান্তের উপর নির্ভর করিয়াই খণ্ডকালে কালিক সম্বন্ধে বৃত্তিতাস্থলে স্বাশ্রয়কালাশ্রিতত্বরূপ পরম্পরা সম্বন্ধ কল্পনা করা হইয়াছে।

'তেন সম্বন্ধেন (স্বাশ্রয়কালাশ্রিতত্বরূপ পরম্পরাসম্বন্ধেন) সর্বং সর্বত্র বর্ততে'—মূলগত এই পাদটীকাস্থলে গগনাদি নিত্যদ্রব্যের কালিকসম্বন্ধেও অবৃত্তিত্বমতে সঙ্কোচবৃত্তিতা স্বীকার করিয়া নিত্যদ্রব্যাতিরিক্ত সমস্ত বস্তু নিত্যদ্রব্যাতিরিক্ত সমস্ত বস্তুতে থাকে এই অর্থ করিতে হইবে। বস্তুতঃ 'সর্বত্র' ইহার অর্থ নিত্যদ্রব্যাতিরিক্ত সমস্ত বস্তুতে এইরূপ অর্থ না করিয়া নিত্যসামান্যাতিরিক্ত সমকালীন সমস্ত বস্তুতে থাকে এইরূপ অর্থ করিলে স্বসমানকালীন জন্য বস্তুতেই সাধারণ কালিক সম্বন্ধে বস্তু থাকে এই প্রসিদ্ধ সিদ্ধান্তের সহিত সামঞ্জস্য রক্ষিত হয়। স্বাশ্রয়কালাশ্রিতত্ব সম্বন্ধে 'জন্যত্বে সতি' এই নির্দেশ ঐ সামঞ্জস্য রক্ষার জন্যই করিতে হইবে।

রঘুনাথ শিরোমণি স্বীয় 'অবচ্ছেদকত্বনিরুক্তি'প্রকরণগ্রন্থে 'পর্যাপ্তি' সম্বন্ধকে স্বরূপসম্বন্ধবিশেষ বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন, যথা—'পর্যাপ্তিশ্চ অয়মেকো ঘটঃ, ইমৌ দ্বাবিতি প্রতীতিসাক্ষিকঃ স্বরূপসম্বন্ধবিশেষ এব'। অর্থাৎ 'পর্যাপ্তি' একটী স্বরূপসম্বন্ধবিশেষ, 'ইহা একটি ঘট', ইহারা দুইটী ইত্যাদিরূপ প্রতীতিই উহার প্রমাণ। ঐ প্রতীতি দ্বারা দ্বিত্বাদি সংখ্যার ন্যায় ঘটত্ব পটত্বাদি ধর্মের যে পর্যাপ্তিসম্বন্ধ আছে ইহা প্রতিপাদিত হইয়াছে। ঐ কথা বিশেষভাবে বুঝাইবার জন্য জগদীশ বলিয়াছেন—'অয়মেকো ঘট ইতি একমাত্রবৃত্তি-

---

'এই মাসে শীতাধিক্য' 'আজ বৃষ্টি হইয়াছে' ইত্যাদি প্রতীতি খণ্ডকালবিষয়ক। বৃত্ত্যনিয়ামক কালিকসম্বন্ধ স্বাশ্রয়াশ্রিতত্বরূপ পরম্পরাসম্বন্ধ। ঐ সম্বন্ধে সকল বস্তুই সকল বস্তুতে থাকে। উদাহরণ যথা—গৃহের আশ্রয় যে কাল পুরুষও বর্তমান এই কারণে স্বাশ্রয়াশ্রিতত্বসম্বন্ধে (স্বপদে উদ্দিষ্ট তাহাতে গৃহের আশ্রয় কাল, ঐ কালে আশ্রিত পুরুষ অতএব) গৃহও পুরুষে সম্বন্ধ হয়।

**अर्थविशेषावधारणाय नवीनैः कश्चित् पर्याप्तिनामकः सम्बन्धः स्वीक्रियते। पर्याप्तिः पर्यवसानम्, साकल्येन सम्बन्धः, अर्थात् यस्य यावन्त आश्रयाः सन्ति, तावत्स्वेवाश्रयेषु मिलितेष्वेव सम्बन्धः। पर्याप्तसम्बन्धेन द्वित्वसंख्या मिलितयोरेव**

**অনুবাদ**

**অবধারণ করিবার জন্য নব্য নৈয়ায়িকগণ 'পর্যাপ্তি'নামক একটী সম্বন্ধ স্বীকার করেন। 'পর্যাপ্তি' শব্দের অর্থ—পর্যবসান বা সাকল্যে সম্বন্ধ। অর্থাৎ যে বস্তুর যতগুলি আশ্রয় বর্তমান, মিলিত ততগুলি আশ্রয়ের সহিতই উহার সম্বন্ধ। দ্বিত্ব সংখ্যা পর্যাপ্তিসম্বন্ধে মিলিত দুইটি বস্তুতেই থাকে, কেবল দুইটীর এক একটীতে থাকে না। এই রূপ ত্রিত্ব সংখ্যা মিলিত তিনটী বস্তুতেই থাকে।**

**সুপ্রভা**

ধর্মাবচ্ছেদেন ঘটত্বস্য পর্যাপ্তিং দর্শয়িতুম্। ইমৌ দ্বাবিতি উভয়বৃত্তিধর্মাবচ্ছেদেন দ্বিত্বস্য পর্যাপ্তিং দর্শয়িতুম্'। অর্থাৎ এই একটী বস্তু ঘট, ইহা একমাত্রবৃত্তি তত্তদ্ব্যক্তিত্বাবচ্ছেদে ঘটত্বের পর্যাপ্তি সম্বন্ধ দেখাইবার জন্য বলা হইয়াছে। এবং উভয়বৃত্তি ধর্মাবচ্ছেদে দ্বিত্বের পর্যাপ্তি দেখাইবার জন্য 'ইমৌ দ্বৌ' ইহারা দুই এই অংশ বলা হইয়াছে। তাৎপর্য এই যে ঘটত্বাদি ধর্ম এক একটী মাত্র ঘটাদিতেও 'পর্যাপ্তি' সম্বন্ধে থাকে, আর দ্বিত্বাদি ব্যাসজ্যবৃত্তি ধর্ম দুই প্রভৃতি বস্তুতেই থাকে, কেবল একৈক বস্তুতে থাকে না। ইহা দ্বারা দ্বিত্বাদি ব্যাসজ্যবৃত্তি ধর্ম সম্বন্ধে মূলোক্ত বস্তু সমর্থিত হয়।

আশঙ্কা হইতে পারে এই যে—'একো ন দ্বৌ কিন্তু দ্বিত্ববান্' ইত্যাদি প্রতীতির উপপত্তির জন্য দ্বিত্বাদি ব্যাসজ্যবৃত্তি ধর্মের সমবায়াদিসম্বন্ধাতিরিক্ত পর্যাপ্ত্যাখ্য স্বরূপসম্বন্ধ স্বীকার্য হইলেও, একত্ব ও ঘটত্বাদি ধর্মের 'সমবায়' সম্বন্ধ মাত্র স্বীকার করিলেই চলিতে পারে, উহাদের আবার 'পর্যাপ্তি'সম্বন্ধ স্বীকারের আবশ্যকতা কি? এই আশঙ্কার উত্তরে জগদীশ তর্কালঙ্কার 'অবচ্ছেদকত্বনিরুক্তি'র টীকায় বলিয়াছেন যে, 'ইদন্ত্বাবচ্ছিন্ন এব বহ্নিত্বমেকত্বঞ্চ পর্যাপ্তং ন তু দ্বিত্বমিত্যাদ্যনুভবাদেব তদভ্যুপগমাৎ'। অর্থাৎ ইদন্ত্বাবচ্ছিন্ন 'অয়ং' প্রভৃতি পদার্থেই একত্ব ও বহ্নিত্ব 'পর্যাপ্তি'সম্বন্ধে থাকে, দ্বিত্ব উহাতে 'পর্যাপ্তি'সম্বন্ধে থাকে না, ইত্যাদিরূপ অনুভবের বলেই উহা স্বীকার করিতে হয়। 'ইত্যাদ্যনুভবাৎ' এই স্থলের 'আদি' পদে সূচিত 'ঘটত্বমেকত্বঞ্চ পর্যাপ্তম্' ইত্যাকার অনুভব বলেই প্রকৃত উত্তর বুঝিতে হইবে। এস্থলে চিন্তনীয় এই যে, যদি উক্ত অনুভবের প্রামাণ্য স্বীকার না করা হয় তবে আর একত্ব ও ঘটত্বাদি সমবায়ব্যতিরিক্ত পর্যাপ্তি সম্বন্ধ উপপাদন করা সম্ভবপর হয় না।

'দ্বিত্ব' প্রভৃতি যে 'পর্যাপ্তি'সম্বন্ধে দুই বা তদধিক বস্তুতেই থাকে, ঐ দুই বা তদধিক বস্তুর ঘটক প্রত্যেক ব্যক্তিতে থাকে না, ইহা 'উভয়ত্বমুভয়ত্রৈব পর্যাপ্তং, ন তু একত্র' এই সিদ্ধান্তের দ্বারা মথুরানাথ তর্কবাগীশ 'ব্যাপ্তিপঞ্চক' প্রথম লক্ষণের টীকায় উল্লেখ করিয়াছেন।

द्वयोर्वर्तते न त्वेकैकस्मिन्। एवं त्रित्वसंख्या मिलितेष्वेव त्रिषु वर्तते, न त्वेकैकस्मिन् द्वयोर्वा। अत एव द्वित्वादयः संख्या व्यासज्यवृत्तयः (व्यासज्य सर्वमेवाधारमधिकृत्य वर्तन्ते) इत्युच्यते। एवञ्च द्विशब्दस्य पर्याप्तिसम्बन्धेन द्वित्वाधारताप्रतीतेः एकस्य च पर्याप्तसम्बन्धेन द्वित्वाधारत्वाभावात् 'अयं न द्वौ' इति प्रतीतिर्भवति। समवायसम्बन्धेन पुनः द्वित्वसंख्या द्वयोरेकैकस्मिन्नपि तिष्ठतीति समवायसम्बन्धेन द्वित्वाश्रय इत्यर्थमभिप्रेत्य 'द्वित्ववान्' इति प्रयोगः। ततश्च 'अयं न द्वौ किन्तु

## অনুবাদ

তাহাদের এক একটী বা দুইটী বস্তুতে থাকে না। অতএব 'দ্বিত্ব' প্রভৃতি সংখ্যাকে 'ব্যাসজ্যবৃত্তি' বলা হয়; অর্থাৎ উহা 'ব্যাসজ্য' অর্থাৎ সমগ্র আশ্রয় অধিকার করিয়া থাকে এই বলা হয়। অতএব 'দ্বি'শব্দ হইতে 'পর্যাপ্তি' সম্বন্ধে দ্বিত্বাধিকরণতার প্রতীতি হওয়ায় এবং একমাত্র ব্যক্তিতে 'পর্যাপ্তি'সম্বন্ধে দ্বিত্ব না থাকায় 'অয়ং ন দ্বৌ' এইরূপ প্রতীতি হয়। কিন্তু 'সমবায়'সম্বন্ধে 'দ্বিত্ব'সংখ্যা দুইয়ের এক একটীতেও থাকে। অত এব 'সমবায়সম্বন্ধে দ্বিত্বের আশ্রয়' এই অর্থ বুঝাইবার অভিপ্রায়ে 'দ্বিত্ববান্' এই প্রয়োগ করা হয়। ঐ কারণে 'এই (একটী) বস্তু

## সুপ্রভা

জগদীশ তর্কালঙ্কার কিন্তু ঐ সিদ্ধান্তের পক্ষপাতী নহেন। উহা তিনি তত্ত্বচিন্তামণির দীধিতিটীকার ব্যাখ্যায় একাধিক স্থলেই ব্যক্ত করিয়াছেন। তিনি বলেন যে,—যদি উভয়ত্বাদিরূপ ধর্ম উভয়াদি সমুদায়েই পর্যাপ্তিসম্বন্ধে থাকে, কিন্তু উভয়াদির ঘটকীভূত প্রত্যেক ব্যক্তিতে না থাকে, তবে 'যে ধর্ম যে সম্বন্ধে প্রত্যেক ব্যক্তিতে থাকে না, সেই ধর্ম সেই সম্বন্ধে (ঐ প্রত্যেক ঘটিত) সমুদায়েও থাকে না' এই নিয়মবশতঃ উভয়াদিঘটক প্রত্যেকে অবৃত্তি উভয়ত্বাদিধর্ম উভয়াদিসমুদায়েও থাকিতে পারে না। তাহার ফলে ঘটাদি দুইটী বস্তুকে বিষয় করিয়াও 'ইমৌ ন দ্বৌ' ইত্যাদি প্রতীতির আপত্তি হয়। অত এব দ্বিত্ব ত্রিত্বাদি ব্যাসজ্যবৃত্তি ধর্ম পর্যাপ্তিসম্বন্ধে যেমন ঘট পটাদিরূপ উভয়াদি সমুদায়ে থাকে তেমনই উভয়াদির ঘটক প্রত্যেকেও থাকে ইহা স্বীকার্য। ঐ মতে বিশেষত্ব এই যে দ্বিত্বাদিধর্ম প্রত্যেক ব্যক্তিতে সমুদায়বৃত্তিধর্মাবচ্ছেদেই থাকে, প্রত্যেকমাত্রবৃত্তি ধর্মাবচ্ছেদে থাকে না। অতএব ইদন্ত্বাবচ্ছিন্ন ঘটাদিকে উদ্দেশ করিয়া 'অয়ং দ্বৌ' ইত্যাদিরূপ প্রতীতির আপত্তি হয় না।

অবচ্ছেদকতারূপ ধর্ম পর্যাপ্তিসম্বন্ধে থাকে ইহার উদাহরণ যথা—'ঘটো নাস্তি' ইত্যাকার অভাবস্থলে ঘটত্ব অভাবীয় প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ধর্ম, উহাতে ঐ অভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতা পর্যাপ্তিসম্বন্ধে থাকে, ঐ পর্যাপ্তিসম্বন্ধের অনুযোগিতাবচ্ছেদক ঘটত্বগত একত্ব। 'নীলঘটো নাস্তি' ইত্যাকার অভাবস্থলে নীলত্ব এবং ঘটত্ব এই দুইটী ধর্ম

द्वित्ववान्', इति वाक्यस्य 'अयं न पर्याप्तिसम्बन्धेन द्वित्ववान्, किन्तु समवाय-सम्बन्धेन द्वित्ववान्' इत्यर्थः। संख्यादीनामिव वक्ष्यमाणाया अवच्छेदकताया अपि पर्याप्तिसम्बन्धोऽङ्गीक्रियते।

विषयता विषयिता चेति अपरौ द्वौ वृत्त्यनियामकौ सम्बन्धौ स्तः। तत्र विषया घटपटादयो ज्ञानेच्छादौ विषयितासम्बन्धेन वर्तन्ते। विषयतासम्बन्धेन च ज्ञानेच्छादयो घटपटादौ विषये तिष्ठन्तीति।

**অনুবাদ**

দুই নহে, কিন্তু দ্বিত্ববান্' এই বাক্যের ইহাই অর্থ যে—এই (একটী) বস্তু 'পর্যাপ্তি'সম্বন্ধে দ্বিত্ববান্ নহে; কিন্তু 'সমবায়'সম্বন্ধে দ্বিত্ববান্। সংখ্যাদিপদার্থের ন্যায় বক্ষ্যমাণ অবচ্ছেদকতারূপ ধর্মেরও 'পর্যাপ্তি'সম্বন্ধ স্বীকার করা হয়।

বিষয়তা ও বিষয়িতা নামে অপর দুইটী বৃত্ত্যনিয়ামক সম্বন্ধ আছে। ঐ দুইটী সম্বন্ধের মধ্যে বিষয়িতা সম্বন্ধে ঘটপটাদি বিষয়সমূহ জ্ঞান, ইচ্ছা প্রভৃতিতে থাকে এবং বিষয়তাসম্বন্ধে জ্ঞানেচ্ছা প্রভৃতি ঘটপটাদি বিষয়ে বর্তমান হয়।

**সুপ্রভা**

প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক। অতএব উক্ত স্থলে ঐ অবচ্ছেদকতা ঐ দুইটী ধর্মে পর্যাপ্ত। ঐ বিভিন্ন প্রকার অবচ্ছেদকতার সাহায্যেই বিশেষাভাব ও সামান্যাভাব নির্ণীত হয়। সংখ্যাভিন্ন অবচ্ছেদকতাপ্রভৃতি ধর্মের পর্যাপ্তি স্থলে একত্ব দ্বিত্বাদিসংখ্যা পর্যাপ্তির অনুযোগিতাবচ্ছেদক, দ্বিত্বাদিসংখ্যার পর্যাপ্তি স্থলে দ্বিত্বাদিসমনিয়ত অব্যাসজ্যবৃত্তি অন্যতরত্বাদি ধর্মই অনুযোগি-তাবচ্ছেদক এবং উদ্দেশ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্নানুযোগিতাক পর্যাপ্তিই পর্যাপ্তিসম্বন্ধে ব্যবহারের নিয়ামক ইহাই সাম্প্রদায়িক সিদ্ধান্ত। ঐ সিদ্ধান্ত বলেই 'অয়ং দ্বৌ' ইত্যাদিরূপ ব্যবহার বারিত হইতে পারে। উক্ত ব্যবহারস্থলে ইদত্ব উদ্দেশ্যতাবচ্ছেদক এবং পর্যাপ্তি ইদত্বাব-চ্ছিন্নানুযোগিতাক। তাদৃশ পর্যাপ্তি সম্বন্ধে দ্বিত্বের সত্তা অসিদ্ধ।

অবচ্ছেদকতার পর্যাপ্তির কথা সিদ্ধান্তলক্ষণ 'জাগদীশী' প্রভৃতিতে পাওয়া যায়। যথা—'হেতুসমানাধিকরণাভাবপ্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতায়াঃ পর্যাপ্ত্যধিকরণভিন্নত্বং সাধ্যতাবচ্ছেদকস্য বাচ্যমিত্যাদি'।

'জ্ঞানেচ্ছাকৃতিদ্বেষাঃ সবিষয়কাঃ'-অর্থাৎ জ্ঞান ইচ্ছা কৃতি ও দ্বেষ ইহারা সবিষয়ক, অর্থাৎ ইহাদের এক একটী বিষয় থাকে। বিষয় থাকিলেই তদ্‌গত বিষয়তারূপ ধর্মও থাকিবে। ঐ বিষয়তা ঘটপটাদি বিষয়নিষ্ঠ এবং জ্ঞানেচ্ছাদিনিরূপিত; এইজন্যই ঐ বিষয়তা সম্বন্ধের দুইটী সম্বন্ধী, একটী ঘটপটাদি বিষয় ও অপরটী জ্ঞানেচ্ছাদি। সম্বন্ধের সত্তা সম্বন্ধীর সত্তার নিয়ামক; এই জন্য ঐ বিষয়তা যখন সম্বন্ধ হয় তখন ঐ বিষয়তার আশ্রয় ঘটাদি বিষয়ে জ্ঞানেচ্ছাপ্রভৃতি অপর সম্বন্ধী ঐ সম্বন্ধে থাকে। অর্থাৎ সম্বদ্ধ হয়।

सम्बन्धो यद्यपि उभयनिष्ठः, यथा—कुण्डवदरयोः सम्बन्धः कुण्डे वदरे च अस्ति, तथापि केनचित् सम्बन्धेन कश्चिदेव कुत्रचिदेव तिष्ठति। यथा—संयोगेन सम्बन्धेन कुण्डे एव वदरं तिष्ठति, न तु वदरे कुण्डम्। एवं भूतले एव घटो वर्तते, न तु घटे भूतलमिति। अत्र कारणमेतत्; सम्बन्धस्य एकं प्रतियोगि, अपरञ्चानुयोगि भवति। यस्य सम्बन्धस्य यत् प्रतियोगि भवति, तेन सम्बन्धेन तदेव तिष्ठति। यच्च यस्य सम्वन्धस्य अनुयोगि भवति, तेन सम्बन्धेन तत्र प्रतियोगि

## অনুবাদ

যদিও সম্বন্ধ দুইটী সম্বন্ধী বস্তুতেই থাকে,—যথা কুণ্ড ও বদর ( বদরী ফল ) এই দুইয়ের সম্বন্ধ ( সংযোগ ) কুণ্ড ও বদর এই উভয়েই বর্তমান, তথাপি কোনও একটী সম্বন্ধের বলে কোনও একটী বস্তুই কোনও একটী বস্তুতেই থাকে। যথা সংযোগরূপ সম্বন্ধের বলে কুণ্ডরূপ ( আধারভূত ) বস্তুতেই বদরফল থাকে। বদরে কুণ্ডরূপ ( আধারভূত ) বস্তু থাকে না। এইরূপ ভূতলে ঘট থাকে কিন্তু ঘটে ভূতল থাকে না। এই বিষয়ে কারণ এই যে,— সম্বন্ধের একটী হয় প্রতিযোগী, এবং অপরটী হয় অনুযোগী। যে বস্তু যে সম্বন্ধের প্রতিযোগী হয়, সেই সম্বন্ধে সেই ( প্রতিযোগী ) বস্তুটীই ( আধারভূত অপর বস্তুতে ) থাকে। এবং যাহা যে সম্বন্ধের অনুযোগী হয়, সেই সম্বন্ধে ঐ অনুযোগীতে প্রতিযোগী

## সুপ্রভা

এইরূপ যাহার বিষয় আছে তাহাই বিষয়ী, অতএব জ্ঞান ইচ্ছা প্রভৃতি সবিষয়ক বলিয়া জ্ঞানাদিরূপ বস্তুই বিষয়ী, বিয়য়িতা তদ্‌গত ধর্মবিশেষ। ঐ বিয়য়তা যখন সম্বন্ধ হয়, তখন ঐ বিষয়তা জ্ঞানেচ্ছাদিতে থাকায় ঐ বিষয়িতা বিষয়সাপেক্ষতাবশতঃ ঘটপটাদি-বিষয়নিরূপিত হওয়ায় ঘটপটাদিরূপ বিষয় উক্ত সম্বন্ধে জ্ঞানেচ্ছাদিতে থাকে। ঐ বিষয়তা ও বিষয়িতাসম্বন্ধে সম্বন্ধী পদার্থদ্বয়ের আধারাধেয়ভাবের প্রতীতি হয় না, কেবল সম্বন্ধিত্বেরই প্রতীতি হয়; এইজন্য উহা বৃত্ত্যনিয়ামক সম্বন্ধ।

সম্বন্ধের প্রতিযোগিত্ব ও অনুযোগিত্ব 'পর্বতে বহ্নেঃ সংযোগসম্বন্ধঃ, ন তু বহ্নৌ পর্বতস্য', অর্থাৎ 'পর্বতে বহ্নির সংযোগ সম্বন্ধ, উহা বহ্নিতে পর্বতের সম্বন্ধ নহে' এইরূপ প্রতীতিসিদ্ধ। 'বহ্নি'পদোত্তর ষষ্ঠীর অর্থ প্রতিযোগিত্ব এবং 'পর্বত'পদোত্তর সপ্তমীর অর্থ অনুযোগিত্ব। ঐ প্রতিযোগিত্ব ও অনুযোগিত্বকে 'সাংসর্গিক প্রতিযোগিত্ব' ও 'সাংসর্গিক অনুযোগিত্ব' বলা হয়।

সকল সম্বন্ধের স্থলেই একটী প্রতিযোগী ও অপরটী অনুযোগী হয়। বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধস্থলে আধেয়ই সম্বন্ধের প্রতিযোগী এবং আধার সম্বন্ধের অনুযোগী। সম্বন্ধমাত্রস্থলেই যে ঐ প্রতিযোগিত্ব ও অনুযোগিত্ব থাকে, ইহা 'সম্বন্ধমাত্রস্য একপ্রতিযোগিকাপরানুযোগিক-

तिष्ठति। यथा—कुण्डवदरयोः संयोगे वदरं प्रतियोगि, कुण्डञ्चानुयोगीति कुण्डे वदरं वर्तते, धर्म-धर्मिणोः सम्बन्धस्य धर्मः प्रतियोगी, धर्मी चानुयोगी, अत एव धर्म एव धर्मिणि वर्तते, न तु धर्मी धर्मे।

*यच्च यत्र वर्तते तत् तस्य आधेयम् आश्रितं तद्वृत्ति इति च उच्यते। यत्र

**অনুবাদ**

বস্তুটী থাকে। যথা—কুণ্ড ও বদরের সংযোগসম্বন্ধস্থলে বদর (সংযোগের) প্রতিযোগী ও কুণ্ড অনুযোগী বলিয়া কুণ্ডে বদর থাকে। ধর্ম ও ধর্মিগত সম্বন্ধের ধর্ম প্রতিযোগী ও ধর্মী অনুযোগী, অতএব ধর্মই ধর্মীতে থাকে, কিন্তু ধর্মী ধর্মে থাকে না। (উক্ত ধর্মধর্মিভাব অনুভবগম্য।)

যে ধর্ম যাহাতে থাকে সেই ধর্ম সেই অধিকরণের 'আধেয়' 'আশ্রিত' ও 'তদ্‌বৃত্তি'নামে অভিহিত হয়। সেই ধর্ম যাহাতে থাকে সেই বস্তু সেই ধর্মের

**সুপ্রভা**

সম্বন্ধত্বনিয়মেন' ইত্যাদি জগদীশোক্ত গ্রন্থাদি দ্বারা সমর্থিত হয়। 'ধর্ম'শব্দের সাধারণ অর্থ আধেয়, ঐ ধর্ম যাহাতে থাকে, তাহাই ধর্মী। ঐ ধর্ম প্রতিযোগী এবং ধর্মী অনুযোগী বলিয়া কুণ্ড ও বদরের সংযোগসম্বন্ধস্থলে 'কুণ্ডে বদরম্' এইরূপে 'কুণ্ড' পদোত্তরই অনুযোগিতাবোধক সপ্তমী প্রযুক্ত হয়, বদর ঐ সম্বন্ধের অনুযোগী নহে বলিয়া তদ্‌বোধক 'বদর'শব্দোত্তর সপ্তমীর প্রয়োগ হয় না।

'যচ্চ যত্র বর্ততে' ইত্যাদি গ্রন্থের স্থলে 'যে সম্বন্ধে যে ধর্ম যাহাতে থাকে সেই ধর্ম সেই সম্বন্ধেই উহার আধেয়', এবং 'ঐ ধর্ম যে সম্বন্ধে যাহাতে থাকে সেই সম্বন্ধেই উহা সেই

---

* অধিকরণতা-বৃত্তিতাপ্রভৃতয়ো ধর্মাঃ সাপেক্ষাঃ, কিমপি অধিকরণং বিনা কুত্র বৃত্তিতা ভবেৎ, আধেয়ঞ্চ বিনা কস্য অধিকরণতা ভবেৎ? ততশ্চ বৃত্তিতা অধিকরণমপেক্ষতে, অধিকরণতা চ আধেয়মিতি। যচ্চ যদপেক্ষতে তৎ তন্নিরূপিতং ভবতি। ঘটস্য বৃত্তিতা কুত্র? ভূতলে অন্যত্র বা? ইতি সন্দেহঃ 'ভূতলে ঘটস্য বৃত্তিতা' ইত্যুত্তরেণ নিবার্যতে। 'ভূতলে' ইত্যনেন হি বৃত্তিতা কীদৃশীতি নিরূপ্যতে (বিশেষতোঽবধার্যতে)। অতঃ 'ভূতলমধিকরণং ঘটস্য বৃত্তিতানিরূপক'মিতি। এতাদৃশ্যৈব যুক্ত্যা অধিকরণতা আধেয়নিরূপিতা প্রত্যেতব্যা। অনয়ৈব চ যুক্তিভঙ্গ্যা কার্যতা-কারণতয়োঃ উদ্দেশ্যতা-বিধেয়তয়োঃ পরস্পরসাপেক্ষয়োঃ ধর্ময়োঃ অন্যেষাঞ্চ ঈদৃশানাং নিরূপ্যনিরূপকভাবোঽবসেয়ঃ।

**অনুবাদ**

অধিকরণতা ও বৃত্তিতা প্রভৃতি ধর্ম অন্যসাপেক্ষ অর্থাৎ অন্যবস্তুর অপেক্ষা রাখে। কারণ কোনও একটী অধিকরণ ব্যতিরেকে বৃত্তিতা অর্থাৎ স্থিতি কোথায় হইবে? আধেয় না থাকিলে কোন্ বস্তুর অধিকরণতা হইবে? ঐ কারণে বৃত্তিতা অধিকরণকে অপেক্ষা করে, এবং অধিকরণতা আধেয়কে অপেক্ষা করে। যে বস্তু যাহাকে অপেক্ষা করে, সেই বস্তু তন্নিরূপিত হয়। ঘটের বৃত্তিতা বা স্থিতি কোথায়? ভূতলে অথবা অন্যস্থানে—এই (প্রশ্ন) 'ভূতলে ঘটস্য বৃত্তিতা' অর্থাৎ ঘটের বৃত্তিতা বা স্থিতি ভূতলরূপ অধিকরণে—এই উত্তর দ্বারা নিবারিত হয়। 'ভূতলে' এই অংশ দ্বারাই প্রকৃত বৃত্তিতা কিরূপ ইহা নিরূপিত হয় অর্থাৎ বিশেষরূপে নির্ধারিত হয়। অতএব ভূতলরূপ অধিকরণ ঘটগত বৃত্তিতার নিরূপক। এই প্রকার যুক্তিতেই অধিকরণতারূপ ধর্মকে আধেয় নিরূপিত বুঝিতে হইবে। এবং এই প্রকার যুক্তিতেই কার্যতা ও কারণতারূপ ধর্মদ্বয় এবং উদ্দেশ্যতা-বিধেয়তারূপ পরস্পর সাপেক্ষ ধর্মদ্বয়ের এবং ঐরূপ অপরাপর ধর্মের পরস্পর নিরূপ্য-নিরূপকভাব বুঝিতে হইবে।

তু যদ্ বর্ততে তত্ তস্য অধিকরণম্ আধার আশ্রয় ইতি চ উচ্যতে। যথা কুণ্ডে বদরং বর্ততে, গৃহে পটো বর্তত ইতি। বদরং পটশ্চ আধেয়ম্, কুণ্ডং গৃহশ্চ আধার ইতি। যশ্চ যস্য আধেয়ম্, তস্মিন্ তন্নিরূপিতা বৃত্তিতা তিষ্ঠতি। এবং যশ্চ যস্য অধিকরণম্, তস্মিন্ তন্নিরূপিতা অধিকরণতা বর্ততে। যথা—পূর্বোক্তয়োরুদাহরণয়োঃ কুণ্ডনিরূপিতা বৃত্তিতা বদরে, গৃহনিরূপিতা আধেয়তা চ পটে বর্ততে। একস্য বৃত্তিতায়ামপরস্য অধিকরণতা অবশ্যম্ভাবিনী।

### অনুবাদ

অধিকরণ, আধার ও আশ্রয় নামে কথিত হয়। যথা 'কুণ্ডে বদর' আছে এবং 'গৃহে পট' আছে এই স্থলে বদর এবং পট এই দুইটী যথাক্রমে কুণ্ড ও গৃহের আধেয়, কুণ্ড ও গৃহ যথাক্রমে বদর ও পটের আধার। যে ধর্ম যাহার আধেয় সেই ধর্মে তন্নিরূপিত বৃত্তিতা থাকে। এবং যে বস্তু যে ধর্মের অধিকরণ সেই বস্তুতে সেই আধেয়ধর্মনিরূপিত অধিকরণতা থাকে। যথা—পূর্বোক্ত ( 'কুণ্ডে বদরম্ বর্ততে', 'গৃহে পটো বর্ততে' এইরূপ ) দুইটী উদাহরণের স্থলে যথাক্রমে বদরে কুণ্ডনিরূপিত বৃত্তিতা ও পটে গৃহনিরূপিত বৃত্তিতা এবং কুণ্ডে বদরনিরূপিত অধিকরণতা ও গৃহে পটনিরূপিত অধিকরণতা বর্তমান। এক পদার্থে বৃত্তিতা থাকিলে অপর পদার্থে অধিকরণতা অবশ্যম্ভাবী।

### সুপ্রভা

ধর্মের অধিকরণ ইহা অবশ্যই বুঝিতে হইবে। অতএব ভূতলে সংযোগ সম্বন্ধে ঘট থাকায় ঘট সংযোগ সম্বন্ধে ভূতলের আধেয় এবং ভূতল সংযোগ সম্বন্ধে ঘটের অধিকরণ কিন্তু সমবায় সম্বন্ধে নহে। এইরূপ সর্বত্রই জ্ঞাতব্য।

'বৃতু বর্তনে' এই গণোক্ত বৃত্ ধাতুর পর ভাববাচ্যে ক্ত প্রত্যয় করায় বৃত্ত পদ নিষ্পন্ন হয়। তদুত্তর 'বৃত্তং যত্র অস্তি' এই অর্থে মত্বর্থীয় ইন্ প্রত্যয়দ্বারা যে বৃত্তিন্ শব্দ সিদ্ধ হয়, তদুত্তর ভাবার্থে তল্‌প্রত্যয় করিলেই বৃত্তিতাশব্দ নিষ্পন্ন হয়। উহার অর্থ বর্তমানতা বা স্থিতি।

ঐ বৃত্তিতা ও অধিকরণতা প্রভৃতি ধর্ম স্বরূপসম্বন্ধবিশেষরূপ। কেহ কেহ ঐ ধর্ম অতিরিক্ত বলিয়াই স্বীকার করেন। উহা সিদ্ধান্তলক্ষণের দীধিতি টীকার—'বিষয়তা-ত্বাদিবৎ প্রতিযোগিত্বাধিকরণত্ব-তত্ত্ব-সম্বন্ধত্বাদয়োঽপ্যতিরিক্তা এব পদার্থা ইত্যেকদেশিনঃ'। এই অংশদ্বারা সূচিত হয়।

আধেয়গত বৃত্তিতা যেমন অধিকরণনিরূপিত হয়, তেমনই অধিকরণতানিরূপিত হয়। ঐরূপ অধিকরণগত অধিকরণতা যেমন আধেয়নিরূপিত হয় তেমনই ঐ অধিকরণতা আধেয়-গত বৃত্তিতানিরূপিত হয়। বৃত্তিতা ও অধিকরণতা প্রভৃতি ধর্ম যেমন যথাক্রমে অধিকরণরূপধর্মী

एवञ्च एकस्य अधिकरणतायां अपरस्य वृत्तिता नियता। अत एव वृत्तिताधिकरणतयोः परस्परनियतसापेक्षतया वृत्तिताधिकरणतयोश्च परस्परं निरूप्यनिरूपकभावोऽस्ति। वृत्तितानिरूपिता अधिकरणता, अधिकरणतानिरूपिता च वृत्तितेति। ततश्च

## অনুবাদ

এবং এইরূপ একটী যে কোনও বস্তু অধিকরণ হইতে গেলে অপর একটি বস্তুতে তাহার আধেয়তা বা বৃত্তিতা নিয়মতই থাকিবে। বৃত্তিতা ও অধিকরণতা এই দুইটি ধর্মের নিয়তই পরস্পর সাপেক্ষতা রহিয়াছে বলিয়া বৃত্তিতা ও অধিকরণতা এই দুইটী ধর্মের পরস্পর নিরূপ্য-নিরূপকভাব আছে।

অতএব অধিকরণতানিরূপিত বৃত্তিতা এবং বৃত্তিতানিরূপিত অধিকরণতা

## সুপ্রভা

ও আধেয়রূপ ধর্মী এবং অধিকরণতারূপ ধর্ম ও বৃত্তিতারূপ ধর্ম দ্বারা নিরূপিত বলিয়া ব্যবহার হয়, ঐরূপ আধেয়পদার্থ রূপ ধর্মী অধিকরণনিরূপিত বা অধিকরণতানিরূপিত এবং অধিকরণরূপ ধর্মী পদার্থ আধেয় বা আধেয়তানিরূপিত এরূপ ব্যবহার হয় না।

যে ধর্ম যন্নিরূপিত হয়, তাহা সেই ধর্মের নিরূপক বলিয়া ব্যবহৃত হয়। অতএব বৃত্তিতা যেমন অধিকরণনিরূপিত তেমনই অধিকরণতানিরূপিত হয় বলিয়া অধিকরণ ও অধিকরণতা এই দুই পদার্থেই বৃত্তিতার নিরূপকত্ব ব্যবহার হয়। এবং আধেয় বা বৃত্তিপদার্থ ও তদ্‌গত বৃত্তিতা এই দুই পদার্থ দ্বারাই অধিকরণতা নিরূপিত হয় বলিয়া ঐ দুই পদার্থেই অধিকরণতার নিরূপকত্ব ব্যবহৃত হয়।

পাদটীকায় যে কার্যতা ও কারণতার পরস্পর নিরূপ্য নিরূপকভাবের কথা বলা হইয়াছে, ঐ স্থলেও কার্যতা যেমন কারণতানিরূপিত তেমনই কারণনিরূপিত এবং কারণতা যেমন কার্যতানিরূপিত তেমনই কার্যরূপিত হইয়া থাকে। কার্য কারণতার নিরূপক ও কারণ কার্যতার নিরূপক। কার্য ও কারণ প্রভৃতির পারস্পরিক নিরূপ্য-নিরূপকভাব ব্যবহৃত হয় না।

কোথাও কোথাও বৃত্তিতা অর্থে আধেয়তাশব্দের ন্যায় নিরূপকতাশব্দেরও ব্যবহার করা হয়।

কার্যতা ও কারণতা, উদ্দেশ্যতা ও বিধেয়তার ন্যায় অপরাপর বহু ধর্মযুগ্মেরই পারস্পরিক নিরূপ্যনিরূপকভাব হয়। যথা—প্রতিযোগিতা ও অবচ্ছেদকতা, প্রকারতা ও বিশেষ্যতা, প্রকারতা ও অবচ্ছেদকতা, বিশেষ্যতা ও অবচ্ছেদকতা, সংসর্গতা ও অবচ্ছেদকতা, কার্যতা ও অবচ্ছেদকতা, কারণতা ও অবচ্ছেদকতা, প্রতিবধ্যতা ও প্রতিবন্ধকতা, প্রতিবধ্যতা ও অবচ্ছেদকতা, প্রতিবন্ধকতা ও অবচ্ছেদকতা ইত্যাদি দুই দুইটী ধর্মের পরস্পর নিরূপ্য নিরূপকভাব হইয়া থাকে।

'कुण्डे वदरम्' इति वाक्यस्य 'कुण्डनिरूपितवृत्तितावद् वदरम्' किंवा 'कुण्डनिष्ठाधिकरणतानिरूपिताधेयतावद् वदरम्' इत्यर्थः प्रतीयते। एवं 'वदरवत् कुण्डम्' इत्यस्य प्रयोगस्य 'कुण्डं वदरनिरूपिताधिकरणतावत्' इति, किंवा 'वदरनिष्ठवृत्तितानिरूपिताधिकरणतावत्' इति अर्थः पर्यवसीयते।

सम्बन्धवदभावस्यापि एवं प्रतियोगि अपरञ्च अनुयोगि अस्ति। यः अभावः यस्य विरोधी प्रतिपक्षः, यश्चाभावो यस्य, 'घटस्य अभावः', 'पटस्य अभावः'

## অনুবাদ

এই ব্যবহার হয়। ঐ কারণেই 'কুণ্ডে বদরম্' এই বাক্যের অর্থ—'কুণ্ডনিরূপিত বৃত্তিতাবিশিষ্ট বদর' অথবা 'কুণ্ডনিষ্ঠাধিকরণতানিরূপিত বৃত্তিতাবিশিষ্ট বদর' এইরূপ অর্থ প্রতীত হইয়া থাকে। এবং 'বদরবৎ কুণ্ডম্' এই বাক্যের 'কুণ্ড বদরনিষ্ঠ বৃত্তিতানিরূপিতাধিকরণতাবিশিষ্ট' এইরূপ নিষ্কৃষ্ট অর্থ হইয়া থাকে।

সম্বন্ধের যেমন একটী প্রতিযোগী ও অপর একটী অনুযোগী আছে, সেইরূপ অভাবেরও একটী প্রতিযোগী ও অপর একটী অনুযোগী আছে। যে অভাব যাহার বিরোধী ( একত্র অনবস্থিত ) প্রতিপক্ষ, যে অভাবটী যাহার, 'ঘটের অভাব, পটের অভাব' ইত্যাদিরূপে যাহার সম্বন্ধী রূপে অভাবের

## সুপ্রভা

অধিকরণনিরূপিত বৃত্তিতা নিয়তই অধিকরণতানিরূপিত হয় এই জন্য অধিকরণতানিরূপিত বৃত্তিতার উদাহরণ বর্ণনা প্রসঙ্গে 'কুণ্ডনিরূপিত বৃত্তিতা' এবং বৃত্তিপদার্থ নিরূপিত অধিকরণতা নিয়মতই বৃত্তিতানিরূপিত বলিয়া বৃত্তিতানিরূপিত অধিকরণতার উদাহরণ বর্ণনাপ্রসঙ্গে 'বদরনিরূপিতাধিকরণতা' এই রূপ বলা হইয়াছে। অথবা উক্ত কল্পদ্বয় সুস্পষ্টরূপে বৃত্তিতা ও অধিকরণতার পারস্পরিক নিরূপ্যনিরূপকভাব প্রতিপাদনের জন্য গৃহীত হইয়াছে।

'যঃ অভাবঃ যস্য বিরোধী' এই স্থলে 'বিরোধী' পদের অর্থ 'অসমানাধিকরণ' অর্থাৎ একাধিকরণে অবর্তমান। কেবল উহাই প্রতিযোগীর লক্ষণ বলিলে কপিসংযোগাদিরূপ কপিসংযোগাভাবাদি অব্যাপ্যবৃত্তি-অভাবের প্রতিযোগীতে অব্যাপ্তি হয়। অতএব অভিন্ন দেশ ও কালাবচ্ছেদে একত্র অবর্তমান ইহাই 'বিরোধী' এই পদের অর্থ বুঝিতে হইবে। ঐরূপ অর্থ গ্রহণ করিলে কপিসংযোগাদি অব্যাপ্যবৃত্তি পদার্থ নিজ অভাবের সহিত একই অধিকরণে থাকিলেও অভিন্ন দেশ ও কালাবচ্ছেদে একাধিকরণে না থাকায় অব্যাপ্তি হয় না। প্রতিযোগীর ব্যাপ্যপদার্থে অতিব্যাপ্তিবারণার্থ মূলে 'যশ্চাভাবো যস্য' এই অংশ যোগ করা হইয়াছে। ঐ স্থলে 'যস্য' পদের অর্থ যৎসম্বন্ধিত্বরূপে ব্যবহার বিষয়। অতএব ঘটাভাব প্রভৃতি অভাব ঘটাদিরূপ প্রকৃত প্রতিযোগিসম্বন্ধিত্বরূপেই ব্যবহৃত হয়, প্রতিযোগিব্যাপ্য-

इत्यादिरीत्या तत्सम्बन्धितया अभावः प्रतीयते, तत् तस्य अभावस्य प्रतियोगि भवति। यथा—यत्र घटाभावोऽस्ति, तत्र घटो नैव तिष्ठति इति—घटाभावो घटस्य विरोधी। एवं अयमभावो घटस्येति घटाभावस्य घटः प्रतियोगी, रूपाभावस्य रूपं प्रतियोगि। यत्र अभावो वर्तते, तद् अभावस्य अनुयोगि भवति। यथा—वायुः रूपाभावस्य अनुयोगी। घटादिः जड़पदार्थः ज्ञानाभावस्य। प्रतियोगिनि प्रतियोगिता, अनुयोगिनि च अनुयोगिता वर्तते।

**অনুবাদ**

প্রতীতি হয়, তাহাই সেই অভাবের প্রতিযোগী। যথা—যেখানে ঘটাভাব থাকে, সেখানে ঘট থাকে না, এইজন্য ঘট ঘটাভাবের বিরোধী। এইরূপ 'এই অভাবটী ঘটের' এইরূপ ঘটের অভাবটী ঘটসম্বন্ধীরূপে প্রতীত হয়, অতএব ঘট ঘটাভাবের প্রতিযোগী, ঐরূপ রূপ—রূপাভাবের প্রতিযোগী। অভাব যে অধিকরণে থাকে সেই অধিকরণটী অভাবের অনুযোগী হয়। যেমন বায়ু রূপাভাবের অনুযোগী এবং ঘটাদি অচেতন জড় পদার্থ জ্ঞানাভাবের অনুযোগী।

**সুপ্রভা**

সম্বন্ধিত্বরূপে নহে এই কারণেই ঐ অংশের উপাদান হেতু ব্যাপ্যে অতিব্যাপ্তি বারিত হয়। ঐ কারণেই মূলে 'যৎসম্বন্ধিতয়া অভাবঃ প্রতীয়তে' এইরূপ বিবরণ করা হইয়াছে।

আচার্য উদয়ন স্বীয় কুসুমাঞ্জলি গ্রন্থে 'অভাববিরহাত্মত্বং বস্তুনঃ প্রতিযোগিতা' এই কারিকাংশ দ্বারা অভাবের অভাবকে প্রতিযোগিস্বরূপ বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। ঘটা-ভাবের অভাব যুক্তি ও তর্কের অনুরোধে ঘটস্বরূপ স্বীকার করা হয়, অতিরিক্ত অভাব নহে, অতএব ঘট ঘটাভাবের প্রতিযোগী।

ব্যাপ্তিপঞ্চকরহস্যে মথুরানাথোক্ত 'প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকবৎ প্রতিযোগ্যপি অন্যোন্যা-ভাবাভাবঃ' এই সিদ্ধান্তাবলম্বনে ভেদাভাবও ভেদের প্রতিযোগিস্বরূপ হওয়ায় আচার্য লক্ষণের অব্যাপ্তি হয় না। মূলোক্ত বিরোধিত্বের বিশদ তাৎপর্য এই যে,—অভাব দুইপ্রকার; ভাব ও ভাবভিন্নরূপ। ভাবরূপ অভাব যথা ঘটাভাবের অভাব, উহা ঘটরূপ ভাবপদার্থ-স্বরূপ। ভাবভিন্ন অভাব যথা ঘটাভাব পটাভাব প্রভৃতি। ভাবরূপ ঘটাভাবাভাবাদির প্রতিযোগিলক্ষণঘটক প্রকৃত বিরোধিত্ব প্রথমাভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধে অভাবের অধিকরণে দৈশিকবিশেষণতাসম্বন্ধে অবৃত্তিত্ব। ঐরূপ সম্বন্ধবিশেষনিয়ন্ত্রিত বিরোধিত্ব না বলিলে কালিকাদি সম্বন্ধে প্রকৃত প্রতিযোগিত্বাভিমত ঘটাভাবের অধিকরণে কালিকাদি সম্বন্ধে ঘটাদিরূপ অভাবের বৃত্তিত্ব থাকায় অব্যাপ্তি দোষ ঘটে।

ঘটাভাবাদিরূপ ভাবভিন্ন অভাবস্থলে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধে প্রতিযোগিত্বাভিমত

एकत्र एकेन सम्बन्धेन वर्तमानस्यापि सम्बन्तान्तरेण अभावो वर्तते। यथा–भूतले संयोगेन सम्बन्धेन वर्तमानस्यापि घटस्य समवायसम्बन्धेनाभावः। एवं एकेन रूपेण वर्तमानस्यापि रूपान्तरेण अभावो भवति। यथा—शुक्लपटवति गृहे पटत्वरूपेण सामान्यधर्मेण वर्तमानस्यापि नीलपटत्वरूपेण विशेषधर्मेण, वहिर्वृत्तित्वरूपेण वा विशिष्टधर्मेण, पटघटोभयत्वरूपेण वा उभयत्वपुरस्कारेण अभावो भवति। न हि शुक्लपटस्य विद्यमानत्वेनैव नीलपटस्यापि वृत्तिता भवति। एवं गृहे केवलस्य पटस्य सत्त्वेऽपि घटस्याभावेन पटघटोभयस्यापि अभावोऽस्त्येव।

অনুবাদ

প্রতিযোগি পদার্থে প্রতিযোগিতা ও অনুযোগি পদার্থে অনুযোগিতা থাকে।

কোনও একটী বস্তুতে এক সম্বন্ধে কোনও বস্তু থাকিলেও ঐ অধিকরণে ঐ বর্তমান বস্তুর অন্য সম্বন্ধাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিক অভাব থাকে। যথা—সংযোগসম্বন্ধে ভূতলরূপ অধিকরণে ঘট বর্তমান হইলেও ঐ ঘটের সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিক অভাব ঐ অধিকরণে বর্তমান হয়। এইরূপ কোনও ধর্মবিশিষ্টরূপে কোনও অধিকরণে বস্তু বর্তমান হইলেও ঐ অধিকরণে (প্রতি-যোগ্যংশে ধর্মান্তরবিশেষণমূলক) ধর্মান্তরাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিক অভাব থাকে। যথা—যে গৃহে শুক্লবর্ণ পট বর্তমান, সেই গৃহে পটত্বরূপ সামান্যধর্ম রূপে অর্থাৎ পটত্ববিশিষ্টরূপে পট বর্তমান হইলেও নীলপটত্বরূপ বিশেষ ধর্ম পুরস্কারে, অথবা বহির্বৃত্তিত্ববিশিষ্টপটত্বরূপবিশিষ্ট ধর্ম পুরস্কারে, কিংবা পটঘটোভয়ত্বরূপ (ব্যাসজ্যবৃত্তি) উভয়ত্বধর্ম পুরস্কারে ঐ পটের অভাব থাকে। শুক্ল পটের বিদ্যমানতা প্রযুক্তই যে নীল পটেরও বৃত্তিতা থাকে এমন নহে, এবং ঘটের বহির্ভাগে অবস্থিতিকালে বহির্বৃত্তিত্ব বিশিষ্ট ঘট গৃহে থাকে না। অতএব ঘটবদ্

সুপ্রভা

বস্তুর অধিকরণে দৈশিকবিশেষণতাসম্বন্ধে অবৃত্তিত্ব। অন্যথা কালিকাদি সম্বন্ধ আদান করিয়া অব্যাপ্তি প্রসঙ্গ হয়। উক্ত বিবরণানুসারে বক্ষ্যমাণ উদাহরণস্থলেও সম্বন্ধ-বিশেষ নিবেশ্য।

'রূপ-দ্রবত্ব-প্রত্যক্ষযোগিনঃ প্রথমাস্ত্রয়ঃ'। এই কারিকা প্রভৃতির নির্দেশানুসারে বায়ু রূপশূন্য ইহা সিদ্ধ। অতএব বায়ুতে রূপের অভাব থাকায় উহা রূপাভাবের অনুযোগী।

তর্কসংগ্রহকার অন্নং ভট্ট বলিয়াছেন—'জ্ঞানাধিকরণমাত্মা'। আত্মা অর্থ জীবাত্মা ও পরমাত্মা (ঈশ্বর)। এতদ্ভিন্ন নিখিল পদার্থই জ্ঞানাভাববৎ বা অচেতন জড় পদার্থ। অতএব উহা জ্ঞানাভাবের অনুযোগী।

एकाभावेन उभयाभावस्य अवश्यम्भावित्वात्। इत्येवं अभावस्य सम्बन्धविशेषकृतं धर्मविशेषकृतञ्च वैलक्षण्यं भवति।

तच्च अभावस्य वैलक्षण्यं प्रतियोगितावैलक्षण्यनिबन्धनमिति तदेवोच्यते–

अभावस्य प्रतियोगिता केनचित् सम्बन्धेन केनचिद् धर्मेण च अवच्छिन्ना भवति। येन सम्बन्धेन येन वा धर्मेण अवच्छिन्ना भवति, स सम्बन्धः स च धर्मः तस्याः प्रतियोगिताया अवच्छेदको भवति। यथा भूतले समवायसम्बन्धेन घटो नास्ति इत्यादौ घटाभावस्य प्रतियोगिता समवायेन सम्बन्धेन घटत्वेन च धर्मेण अवच्छिन्ना। ततश्च तस्याः प्रतियोगितायाः समवायः सम्बन्धः, घटत्वञ्च धर्मः अवच्छेदकः। अत एव समवायेण घटो नास्तीत्यस्य समवायसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकोऽभावो वर्तत इत्यर्थः।

### অনুবাদ

গৃহেও বহির্বৃত্তিত্ব ধর্ম পুরস্কারে ঘটাভাব থাকে। এইরূপ গৃহরূপ অধিকরণে একমাত্র পট থাকিলেও ঘটের অভাবপ্রযুক্ত পট ও ঘট এতদুভয়াভাব (পট ও ঘট এতদুভয়ত্বপুরস্কারে অভাব) ঐ গৃহে অবশ্যই থাকে। কারণ অভাবের দুইটী প্রতিযোগীর মধ্যে একটীর অভাবপ্রযুক্তই উভয়াভাব অবশ্যম্ভাবী।

এইরূপ অভাবের সম্বন্ধবিশেষ ও ধর্মবিশেষ প্রযুক্ত বৈলক্ষণ্য হয়।

অভাবের সেই বৈলক্ষণ্য আবার প্রতিযোগিতার বৈলক্ষণ্যের উপর নির্ভর করে। অতএব সেই প্রতিযোগিতার বৈলক্ষণ্যই বিবৃত করা হইতেছে।

### সুপ্রভা

যে সম্বন্ধে যদ্ধর্মবিশিষ্ট বস্তু যে অধিকরণে থাকে সেই অধিকরণে তৎসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন তদ্ধর্মাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতানিরূপিত অধিকরণতা থাকে। ঐ অধিকরণতার সহিত তৎসম্বন্ধাবচ্ছিন্নতদ্ধর্মাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতানিরূপক অভাবের বিরোধিতা সিদ্ধ। অতএব যে গৃহে সংযোগসম্বন্ধে শুক্লপটত্বরূপ ধর্মবিশিষ্ট শুক্লপটরূপ বস্তু থাকে সেখানে সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন শুক্লপটত্বাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতানিরূপিত অধিকরণতারূপ বিরোধী থাকায় সেখানে 'সংযোগেন শুক্লপটো নাস্তি' ইত্যাকার সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন শুক্লপটত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতানিরূপক অভাব থাকিতে পারে না। কিন্তু শুক্ল পটাধিকরণ গৃহে 'সংযোগেন নীলপটো নাস্তি' ইত্যাকার সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন নীলপটত্বরূপ ধর্মান্তরাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাক অভাব এবং সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নশুক্লপটত্বরূপ ধর্মাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাক 'সমাবায়েন শুক্লপটো নাস্তি' ইত্যাকার অভাব থাকে। কারণ ঐ গৃহ সংযোগসম্বন্ধে শুক্লপটাধিকরণ হইলেও সংযোগ সম্বন্ধে নীলপটাধিকরণ বা সমবায় সম্বন্ধে শুক্লপটের অধিকরণ নহে। অতএব উহাতে সংযোগ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন নীলপটত্ব—ধর্মাবচ্ছিন্ন

सम्बन्धस्य प्रतियोगितावच्छेदकत्वस्वीकारे युक्तिरियम्—सामान्यतः कस्यापि कुत्रापि प्रायशः अभावो नास्ति। अन्ततः कालिकसम्बन्धेन सर्वस्य सर्वत्र विद्यमानत्वात्। ततश्च अभावस्य अन्तरा कश्चित् सम्बन्धोऽस्तीति अवश्यमङ्गीकार्यम्। अभावस्यान्तरा प्रविशन् सम्बन्धः प्रतियोगितामेव अवच्छिन्दन् (विशेषयन्) सम्भवति, नान्यथा। येन सम्बन्धेन यत्र यन्नास्ति, स एव सम्बन्धस्तत्र तदभावस्य प्रतियोगितामवच्छिनत्ति (विशेषयति)। अत एव स एव सम्बन्धस्तस्याः अवच्छेदको भवति। प्रतियोगिता च तेन सम्बन्धेनावच्छिन्ना भवति। यथा—भूतले समवायसम्बन्धेन घटो नास्तीत्यत्र समवायसम्बन्धः भूतले घटाभावस्य

**অনুবাদ**

অভাবের প্রতিযোগিতা কোনও সম্বন্ধ এবং কোনও ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয়। উহা যে সম্বন্ধ এবং যে ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয়, সেই সম্বন্ধ ও সেই ধর্ম ঐ প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হইয়া থাকে। যথা—ভূতলে সমবায় সম্বন্ধে

**সুপ্রভা**

বৃত্তিতা নিরূপিত অধিকরণতা না থাকায় 'সংযোগেন নীলপটো নাস্তি' এইরূপ ধর্মান্তরাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতানিরূপক 'সংযোগেন নীলপটো নাস্তি' ইত্যাকার অভাব, এবং সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন শুক্লপটত্বরূপ ধর্মাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা নিরূপিত অধিকরণতারূপ বিরোধী ধর্ম না থাকায় 'সমবায়েন শুক্লপটো নাস্তি' এইরূপ ধর্মান্তরাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতানিরূপক 'সংযোগেন নীলপটো নাস্তি' ইত্যাকার অভাব, এবং সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন শুক্লপটত্বরূপ ধর্মাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা নিরূপিত অধিকরণতারূপ বিরোধী ধর্ম না থাকায় 'সমবায়েন শুক্লপটো নাস্তি' ইত্যাকার সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন শুক্লপটত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতানিরূপক অভাব থাকিতে পারে। সামান্যধর্মমাত্রা-বচ্ছিন্ন বৃত্তিতা নিরূপিত অধিকরণতার সহিত বিশেষাভাবের বিরোধিতা না থাকায় শুক্ল-পটবদ্ গৃহে পটত্বরূপসামান্য ধর্মমাত্রাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতানিরূপিত অধিকরণতা থাকিলেও 'নীলপটো নাস্তি' ঐরূপ বিশেষাভাব থাকার বাধা হয় না।

যে বস্তু বাহিরে বর্তমান তদ্‌গত বৃত্তিতানিরূপিত অধিকরণতা বাহিরে থাকে গৃহে নহে, অতএব 'গৃহে বহির্বৃত্তির্নাস্তি' ইত্যাকার অভাব থাকে।

জ্ঞাতব্য এই যে পূর্বোক্ত শুক্লপটত্ব, নীলপটত্ব প্রভৃতি অখণ্ড ধর্ম নহে, উহা শুক্লত্ব পটত্ব ও নীলত্ব পটত্বাদিরূপ দুই দুইটী ধর্ম এবং উক্ত প্রতিযোগিতা প্রভৃতি ঐ দুই দুইটী ধর্মাবচ্ছিন্ন। ঘট ও পট দুইটী বস্তু মিলিতভাবে যেখানে থাকে সেইখানেই ঘট পট উভয়ত্বা-বচ্ছিন্ন বৃত্তিতা নিরূপিত অধিকরণতা থাকে, ঐ দুইটী বস্তুর কেবল এক একটীর অধিকরণে ঐ উভয়ত্বাবচ্ছিন্নবৃত্তিতা নিরূপিত অধিকরণতা থাকে না। অতএব তথায় প্রকৃত উভয়ত্বা-বচ্ছিন্নবৃত্তিতা নিরূপিত অধিকরণতারূপ বিরোধী থাকায় ঘটপটোভয়ত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতা-

प्रतियोगितां विशेषयतीति घटाभावस्य प्रतियोगिता समवायसम्बन्धावच्छिन्ना। समवायसम्बन्धश्च तस्याः प्रतियोगितायाः अवच्छेदकः। तथा च सम्बन्धस्य अवच्छेदकत्वं विशेषकत्वरूपमिति फलितम्।

### অনুবাদ

ঘট নাই ইত্যাদি প্রতীতিসিদ্ধ অভাবস্থলে ঘটাভাবের প্রতিযোগিতা 'সমবায় সম্বন্ধ' ও 'ঘটত্ব' ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয়। অতএব সমবায়রূপ সম্বন্ধ ও ঘটত্বরূপ ধর্ম সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক। সেই জন্যই 'সমবায়েন ঘটো নাস্তি' এই বাক্যের অর্থ—'সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতার নিরূপক অভাব আছে' এইরূপ।

সম্বন্ধকে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক বলিয়া স্বীকার করিবার পক্ষে যুক্তি এই যে—

সামান্যভাবে প্রায় কোথাও কোনও বস্তুর অভাব থাকে না। কারণ অন্ততঃ পক্ষে কালিকসম্বন্ধে সকল বস্তুই সকল পদার্থে থাকে। অতএব অভাবের মধ্যবর্তী কোনও একটি সম্বন্ধ আছে ইহা অবশ্যই স্বীকার্য। অভাবের মধ্যভাগে প্রবিষ্ট সম্বন্ধ প্রতিযোগিতাকে বিশেষিত করিয়াই সম্ভবপর হয়, অন্যথা নহে। যে সম্বন্ধে যেখানে যে বস্তু থাকে না, সেই সম্বন্ধই তথায় সেই অভাবের প্রতিযোগিতাকে বিশেষিত করে। অতএব সেই সম্বন্ধই সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয়। এবং ঐ প্রতিযোগিতা সেই সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয়। যথা—'ভূতলে সমবায়সম্বন্ধে ঘটের অভাব' এই স্থলে সমবায়রূপ সম্বন্ধ ভূতলবৃত্তি ঘটাভাবের প্রতিযোগিতাকে বিশেষিত করে। অতএব ঐ ঘটাভাবনিরূপিত প্রতিযোগিতা সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। এবং সমবায় সম্বন্ধ ঐ প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক। তাহা হইলে সম্বন্ধ গত অবচ্ছেদকত্ব বিশেষকত্ব-রূপ এই অর্থই ফলতঃ প্রতিপন্ন হয়।

### সুপ্রভা

নিরূপক অভাব থাকে। এই জন্যই একাভাব প্রযুক্ত উভয়াভাব বলা হয়। এইরূপ ত্রিতয়াভাব চতুষ্টয়াভাবাদিও ত্রিতয় বা চতুষ্টয়াদির ঘটক একটী বা দুইটী প্রভৃতির অভাবপ্রযুক্ত বুঝিতে হইবে। এই প্রসঙ্গে ইহাও জ্ঞাতব্য যে ঘটপটোভয়াভাবাদিস্থলে কেবল সেই সেই উভয়ত্বই প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক নহে। তথায় ঘটত্ব, পটত্ব এবং উভয়ত্ব ইত্যাদি তিন তিনটি ধর্ম প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক। শক্তিবাদ গ্রন্থে গদাধর ইহা যুক্তির সহিত বলিয়াছেন।

'সমবায়েন ঘটো নাস্তি' এই বাক্যের অর্থ বিবরণে যে 'সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-ঘটত্বাবচ্ছিন্ন-

धर्मस्य प्रतियोगितावच्छेदकत्वे युक्तिरियम्—अभावस्य प्रतियोगिता कुत्र वर्तते, कुत्र वा न वर्तते इति निर्णयाय प्रतियोगितानियामकः कश्चिदस्तीति अवश्यमङ्गी-कार्यम्। सर्वेषु प्रतियोगिषु वर्तमानः, तदन्यत्र अवर्तमानः प्रतियोगिगतः कश्चन असाधारणो धर्म एव प्रतियोगितया नियामको भवति। य एव नियामकः स एव अवच्छेदक इत्युच्यते। यश्च नियमितः सः अवच्छिन्न इति। तथाहि

### অনুবাদ

ধর্ম যে প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয় তদ্বিষয়ে যুক্তি এই যে, অভাব-নিরূপিত প্রতিযোগিতা কোথায় থাকে বা কোথায় থাকে না ইহার নির্ণয়ের জন্য প্রতিযোগিতার কোনও একটী বস্তু আছে ইহা অবশ্যই স্বীকার্য।

যে ধর্ম সমগ্র প্রতিযোগীতে থাকে অথচ প্রতিযোগী হইতে ভিন্ন অপর পদার্থে থাকে না এইরূপ প্রতিযোগিগত অসাধারণ ধর্মই ঐ প্রতিযোগিতার নিয়ামক হইয়া থাকে। ঐরূপ যে ধর্মই প্রতিযোগিতার নিয়ামক হইবে সেই ধর্মই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক বলিয়া কথিত হয়। এবং ঐ নিয়ামক দ্বারা যে নিয়মিত হয়, তাহাই অবচ্ছিন্ন বলিয়া ব্যবহৃত হয়। তাহার ফলে

### সুপ্রভা

প্রতিযোগিতাক' বলা হইয়াছে উক্ত পদটী বহুব্রীহি সমাসে 'ক' প্রত্যয় দ্বারা সিদ্ধ। উহার অর্থ তাদৃশ প্রতিযোগিতানিরূপক।

'কালিকসম্বন্ধেন সর্বস্য সর্বত্র বিদ্যমানত্বাৎ' এই মূল সন্দর্ভ সম্বন্ধে যাহা বক্তব্য তাহা প্রসঙ্গক্রমে পূর্বেই সুপ্রভায় বিবৃত হইয়াছে। অতএব এস্থানে ঐ আলোচনা পরিহৃত হইল।

ধর্ম ও সম্বন্ধের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকত্ব স্বীকার বিষয়ে মূলোক্ত যুক্তি অপেক্ষা সমীচীন যুক্তি এই যে,—সাধারণ নিয়মানুসারে প্রতিযোগীর অধিকরণে ঐ প্রতিযোগীর অভাব থাকে না। ঐ নিয়ম রক্ষার জন্য প্রতিযোগ্যধিকরণতার সহিত অভাবের সহানবস্থানরূপ বস্তুতান্ত্রিক বিরোধিতা স্বীকার্য। ঐ স্থলে যদি সম্বন্ধ অন্তর্ভাব না করিয়া সামান্যভাবে এই বলা হয় যে প্রতিযোগিনিষ্ঠবৃত্তিতা নিরূপিতাধিকরণতা তদভাবের বিরোধী, তবে সংযোগ সম্বন্ধে ঘটাদির অধিকরণ ভূতলাদিতে সমবায় সম্বন্ধে ঘটাত্যভাব আদান করিয়া উক্ত বিরোধিতার নিয়মভঙ্গ হয়, অতএব সম্বন্ধবিশেষকে বৃত্তিতা ও প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বীকার করিয়া তৎসম্বন্ধা-বচ্ছিন্ন প্রতিযোগিনিষ্ঠ বৃত্তিতানিরূপিতাধিকরণতা তৎসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাবের বিরোধী—এইরূপ নিয়ম স্বীকারে দোষ থাকে না। কারণ ভূতলাদিতে সংযোগসম্বন্ধে ঘটাদির বৃত্তিতাস্থলে ভূতলাদিগত ঘটাত্যধিকরণতা সংযোগ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ঘটাদিনিষ্ঠ বৃত্তিতানিরূপিত এবং প্রকৃত অভাব সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ঘটাদিনিষ্ঠ প্রতিযোগিতানিরূপক। অতএব উক্ত স্থলে বৃত্তিতা ও প্রতিযোগিতা একই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন না হওয়ায় উক্তরূপে নিয়মভঙ্গ প্রসঙ্গ হইবে না।

घटाभावस्य घटगता प्रतियोगिता कुत्र कुत्र वर्तते, कुत्र कुत्र वा न वर्तते, इति प्रश्नस्य उत्तरमिदमेव भवति, यत्र यत्र घटत्वं वर्तते, तत्र सर्वत्रैव घटाभावस्य घटगता प्रतियोगिता वर्तते। नान्यत्र कुत्रचित् घटत्वशून्ये ; नापि च कस्मिन्नपि घटे तस्या अभाव इति घटत्वमेव घटगताया घटाभावप्रतियोगितायाः स्थितिनियामकम्। घटत्वेनैव घटाभावप्रतियोगिता नियमितेति नियामकत्वमेवावच्छेदकत्वम्। नियमितत्व-मेवावच्छिन्नत्वमिति।

यश्च प्रतियोगी भवति, तत्र विशेषणतया प्रतीयमानोऽसाधारणो धर्मः तद्गत-प्रतियोगिताया अवच्छेदको भवतीति फलितार्थः।

## অনুবাদ

'ঘটাভাবনিরূপিত ঘটগত প্রতিযোগিতা কোথায় কোথায় থাকে বা কোথায় থাকে না' এই প্রশ্নের ইহাই উত্তর যে, যেখানে যেখানে ঘটত্বরূপ ধর্ম থাকে সেই সকল বস্তুতেই ঘটাভাবনিরূপিত ঘটগত প্রতিযোগিতা থাকে। 'ঘটত্ব' ধর্ম যে বস্তুতে নাই এমন অন্য কোনও বস্তুতে থাকে না। এবং কোনও ঘটে ঐ প্রতিযোগিতার অভাবও অবস্থান করে না। অতএব 'ঘটত্ব'রূপ ধর্মই ঘটগত ঘটাভাবীয় প্রতিযোগিতার স্থিতির নিয়ামক। 'ঘটত্ব'দ্বারাই ঘটাভাবীয় প্রতিযোগিতা নিয়মিত এইজন্য নিয়ামকত্বই অবচ্ছেদকত্ব। এবং নিয়মিতত্বই অবচ্ছিন্নত্ব।

যে বস্তু অভাবের প্রতিযোগী হয় তদংশে বিশেষণ রূপে প্রতীয়মান অসাধারণ ধর্ম তদ্গত প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয় ইহা ফলিতার্থ।

## সুপ্রভা

ঐরূপ সম্বন্ধ অন্তর্ভাব না করিয়া উক্ত বস্তুতান্ত্রিক বিরোধিতা স্বীকার করিলে সংযোগ-সম্বন্ধে ঘটাদ্যধিকরণ ভূতলাদিতে 'সমবায়েন ঘটো নাস্তি' ইত্যাদি অভাবের অসত্ত্বপ্রসঙ্গ বারণ করা অসম্ভব হয়। অতএব ঐ বিরোধিতা বৃত্তিতা ও প্রতিযোগিতা অংশে একই সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব ঘটিত মানিতে হইবে।

অন্য কারণেও সম্বন্ধকে প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বীকার করিতে হয়। যথা—ভাবজ্ঞান ও অভাবজ্ঞানের পারস্পরিক প্রতিবধ্য প্রতিবন্ধকভাবরূপ বৈজ্ঞানিক বিরোধিতা শাস্ত্রসিদ্ধ ও অনুভবসিদ্ধ। 'ঘটবদ্ভূতলম্' এই বুদ্ধির প্রতি 'ঘটাভাববদ্ভূতলম্' এই নিশ্চয় প্রতিবন্ধক। ঐরূপ আবার 'ঘটাভাববদ্ভূতলম্' এই বুদ্ধির প্রতি 'ঘটবদ্ভূতলম্' এই নিশ্চয় প্রতিবন্ধক। 'ঘটবদ্ভূতলম্' এই জ্ঞানে ঘটরূপ বিশেষণকে প্রকার এবং ভূতলকে বিশেষ্য বলা হয় এবং প্রতিযোগীতে যেমন প্রতিযোগিতা থাকে সেইরূপ যে প্রকার তাহাতে প্রকারতা এবং যে বিশেষ্য তাহাতে বিশেষ্যতারূপ ধর্ম পরস্পর নিরূপ্যনিরূপকভাবাপন্ন এবং, জ্ঞান উহার নিরূপক। ঐ ধর্মদ্বয় জ্ঞাননিরূপিত।

अथवा स्थूलत एवं रीत्या बोध्यम्,—प्रतियोगिबोधक-विशेष्यपदोत्तरं 'त्व' 'त' प्रभृतिभावप्रत्ययनिष्पन्नो ( निष्पन्नपदवाच्य ) धर्मः प्रतियोगितावच्छेदको भवति। यथा—घटाभावस्य घटः प्रतियोगीति, प्रतियोगिवाचकं घटपदम्, तदुत्तरं 'त्व' प्रत्ययेन (घट+त्व) निष्पन्नो धर्मः ( घटत्वं जातिः ), घटगतप्रतियोगिताया अवच्छेदक

অনুবাদ

অথবা স্থূলত এইভাবে বুঝিতে হইবে যে,—প্রকৃত প্রতিযোগীর বোধক বিশেষ্যপদের পর 'ত্ব' বা 'ত' প্রভৃতি ভাবার্থবিহিত প্রত্যয় দ্বারা যে পদ নিষ্পন্ন হয়, তৎপ্রতিপাদ্য ধর্ম প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক হয়। যথা ঘটাভাবের প্রতিযোগী ঘট, অতএব প্রকৃত প্রতিযোগীর বাচক ঘটপদ, ঐ ঘটপদের পর 'ত্ব'প্রত্যয় করিলে যে 'ঘটত্ব' ইত্যাকার পদ নিষ্পন্ন হয়, তৎপ্রতিপাদ্য ধর্ম 'ঘটত্ব'জাতি ঘটগত প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক। এইরূপ রূপাভাবের প্রতিযোগী রূপের বাচক

সুপ্রভা

যদি ঐ ভাবাভাবজ্ঞানের প্রতিবধ্যপ্রতিবন্ধকভাব এইরূপ কল্পনা করা যায় যে—ঘটনিষ্ঠপ্রকারতানিরূপিতভূতলনিষ্ঠ বিশেষ্যতানিরূপকজ্ঞানের প্রতি ভূতলনিষ্ঠ বিশেষ্যতা-নিরূপিত—ঘটনিষ্ঠপ্রতিযোগিতাকাভাবপ্রকারতানিরূপক নিশ্চয় প্রতিবন্ধক এবং তাদৃশাভাব প্রকারতানিরূপিতভূতল বিশেষ্যকজ্ঞানের প্রতি ভূতলবিশেষ্যক ঘটপ্রকারক নিশ্চয় যেমন ভূতলবিশেষ্যক 'সংযোগেন ঘটো নাস্তি' ইত্যাকার ঘটাভাবপ্রকারক বুদ্ধির প্রতি প্রতিবন্ধক হয়; তেমনই 'সমবায়েন ঘটো নাস্তি' ইত্যাকার ঘটাভাবপ্রকারক ভূতলবিশেষ্যক-বুদ্ধির প্রতিও প্রতিবন্ধক হইতে পারে এবং 'সংযোগেন ঘটো নাস্তি' ইত্যাকার অভাবপ্রকারক-ভূতলবিশেষ্যক নিশ্চয় 'সমবায়েন ঘটবদ্ভূতলম্' এই বুদ্ধির প্রতিও প্রতিবন্ধক হইতে পারে। এই জন্যই 'সংযোগেন ঘটো নাস্তি' 'সমবায়েন ঘটো নাস্তি' ইত্যাদি প্রতীতিসিদ্ধ অভাব-স্থলে যথাক্রমে সংযোগ সমবায়াদি সম্বন্ধকে তত্তদভাবীয়প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ স্বীকার করিয়া সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ঘটপ্রকারতা নিরূপিত ভূতল বিশেষ্যতানিরূপকজ্ঞানের প্রতি ভূতলবিশেষ্যতানিরূপিত-সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাকাভাবপ্রকারনিরূপক নিশ্চয় এবং সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাকাভাবপ্রকারতানিরূপিত ভূতলবিশেষ্যতানিরূপক-জ্ঞানের প্রতি সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ঘটপ্রকারতানিরূপিত ভূতলবিশেষ্যতানিরূপক নিশ্চয় প্রতিবন্ধক, এইরূপে প্রতিবধ্যপ্রতিবন্ধকভাব কল্পনা করিলেই আর উক্ত দোষাশঙ্কা থাকে না। উক্তরূপ যুক্তি যেমন প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের সাধক তেমনই বৃত্তিতা-বচ্ছেদক ও প্রকারতাবচ্ছেদক সম্বন্ধেরও সাধক।

এক সম্প্রদায় বৃত্ত্যনিয়ামক সম্বন্ধকে সংসর্গাভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকসম্বন্ধ বলিয়া স্বীকার করেন না। অনেক স্থলেই উহার উল্লেখ দেখা যায়। যথা—গদাধর ভট্টাচার্য

इति। एवं रूपाभावस्य प्रतियोगिवाचकं रूपपदम्, तत्र 'त्व'प्रत्ययनिष्पन्नपदस्यार्थः, रूपत्वं जातिः रूपाभावस्य प्रतियोगिताया अवच्छेदिकेति। यद्यपि अवच्छेदकत्व-नियामकत्वयोरैक्यम्, तथापि ग्रन्थकृद्भिरवच्छेदकपदस्यैव प्रयोगात् अवच्छेदकशब्द एव प्रयोक्तव्यः, न तु नियामकशब्दोऽपि ; तथात्वे अप्रयुक्तत्वादोषः स्यात्।

**অনুবাদ**

রূপপদ, তদুত্তর 'ত্ব' প্রত্যয়দ্বারা নিষ্পন্ন রূপত্বপদের অর্থ 'রূপত্ব' জাতি, উহাই রূপাভাবীয় প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক।

যদিও (উক্ত ক্রমের অনুসারে) অবচ্ছেদকত্ব এবং নিয়ামকত্ব এই দুই পদার্থেরই ঐক্য বিদ্যমান, তথাপি প্রাচীন গ্রন্থকারগণ ঐ অবচ্ছেদকরূপ অর্থে 'অবচ্ছেদক' শব্দই প্রয়োগ করায় তদর্থে অবচ্ছেদক শব্দেরই প্রয়োগ কর্তব্য, কিন্তু নিয়ামক শব্দেরও প্রয়োগ কর্তব্য নহে, তাহা করিলে 'অপ্রযুক্তত্ব'দোষ ঘটিবে।

**সুপ্রভা**

'ব্যুৎপত্তিবাদে' বলিয়াছেন—'স্বত্বাদিসম্বন্ধস্য বৃত্ত্যনিয়ামকতয়া প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্বেন তৎসম্বন্ধাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাকাভাবাপ্রসিদ্ধেঃ' ইতি। তিনিই অন্যত্রও বলিয়াছেন—'তাদৃশসম্বন্ধস্য বৃত্ত্যনিয়ামকতয়া সংসর্গাভাবপ্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্বেন তৎসম্বন্ধাবচ্ছিন্নাভাবস্য নঞা প্রত্যায়নাসম্ভবাৎ' ইতি। ঐ মতে তাদাত্ম্যসম্বন্ধ অন্যোন্যাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয়। কেহ কেহ আবার উহাও মানেন না। 'সিদ্ধান্তলক্ষণে'র জাগদীশী টীকায় 'সাধনবন্নিষ্ঠান্যোন্যাভাবপ্রতিযোগিতায়াঃ সাধ্যতাবচ্ছেদকতাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্বে মানাভাবস্য স্বয়মেব বৌদ্ধাধিকারটিপ্পণ্যামুক্তত্বাৎ' এই অংশদ্বারাই সূচিত হইয়াছে। গদাধর ভট্টাচার্যের 'ব্যুৎপত্তিবাদ' গ্রন্থের 'বৃত্ত্যনিয়ামক-সম্বন্ধস্যাভাব-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকত্বে কো দোষঃ' ইত্যাদি অংশ হইতে বৃত্ত্যনিয়ামক সম্বন্ধের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধত্ব নব্য নৈয়ায়িক সম্মত ইহাই প্রতিপন্ন হয়।

সম্বন্ধের ন্যায় ধর্মও যে প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয় তদ্বিষয়ে প্রধান ও সমীচীন যুক্তি এই যে—প্রতিযোগ্যধিকরণতার সহিত অভাবের বস্তুতান্ত্রিক বিরোধিতা যদি এইরূপে স্থির করা যায় যে, প্রতিযোগিনিষ্ঠ আধেয়তানিরূপিত অধিকরণতার সহিত অভাবের বিরোধিতা, তবে 'দ্রব্যং নাস্তি' ইত্যাকার অভাবীয় প্রতিযোগীর অন্তর্গত ঘটরূপ দ্রব্যনিষ্ঠাধেয়তানিরূপিতাধিকরণতাবৎ-ভূতলে 'দ্রব্যং নাস্তি' ইত্যাকার অভাবের প্রতিযোগী দ্রব্যের অন্তর্গত পটরূপ দ্রব্যনিষ্ঠ প্রতিযোগিতানিরূপক 'পটো নাস্তি' ইত্যাকার অভাব থাকায় দ্রব্যাত্যভাবের সহিত দ্রব্যাত্যধিকরণতার বিরোধিতা নিয়মভঙ্গের প্রসঙ্গ হয়। যদি বলা যায় যে—যৎপ্রতিযোগিনিষ্ঠ আধেয়তানিরূপিত অধিকরণতা তৎপ্রতিযোগিনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা

वृत्तितावत् प्रतियोगितापि अभावेन निरूपिता भवति, अभावश्च प्रतियोगिताया नियामकः (†)। एवं अवच्छेदकताप्रतियोगितयोरपि परस्परं निरूप्य-निरूपकभावोऽस्ति। अवच्छेदकतानिरूपिता प्रतियोगिता, प्रतियोगितानिरूपिता च अवच्छेदकता भवति। ततश्च समवायेन घटो नास्तीत्यस्य समवायसम्बन्धावच्छिन्नघटत्वावच्छिन्नप्रति-योगितानिरूपकोऽयमभावः।

## অনুবাদ

বৃত্তিতার ন্যায় ( বৃত্তিতা যেমন অধিকরণতা নিরূপিত সেইরূপ ) প্রতি-যোগিতাও অভাবদ্বারা নিরূপিত হয়। এবং অভাব প্রতিযোগিতার নিরূপক†।

এইরূপ অবচ্ছেদকতাও প্রতিযোগিতার পরস্পর নিরূপ্যনিরূপকভাব বিদ্য-মান। প্রতিযোগিতা অবচ্ছেদকতানিরূপিত ও অবচ্ছেদকতা প্রতিযোগিতা নিরূ-পিত হইয়া থাকে। সেই কারণেই 'সমবায়েন ঘটো নাস্তি' ইহার অর্থ—'এই অভাব সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ঘটত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতা নিরূপক'। ( উহার বিশদ অর্থ—সমবায়ত্বাবচ্ছিন্নসাংসর্গিকাবচ্ছেদকতানিরূপিত - ঘটত্বনিষ্ঠধর্মীয়াবচ্ছেদকতানিরূপিত-প্রতিযোগিতানিরূপক এই অভাব। )

## সুপ্রভা

নিরূপক অভাবের সহিতই উহার বিরোধিতা, তথাপি সত্তাধিকরণতা ও সত্তাভাবাদির পারস্পরিক বিরোধিতার নিয়মভঙ্গ প্রসঙ্গ অতিক্রম করা অসম্ভব। উহার বিশদ বিবরণ এই যে,—দ্রব্য গুণ ও কর্মে যে সত্তানামক একটী জাতি থাকে উহা ও গুণ কর্মান্যত্ব-বিশিষ্ট সত্তা অনতিরিক্ত অর্থাৎ অভিন্ন। অথচ গুণ এবং কর্ম উক্ত সত্তার অধিকরণ হইলেও 'গুণকর্মান্যত্ববিশিষ্ট সত্তা নাস্তি' ইত্যাদি রূপ সত্তা প্রতিযোগিক অভাব উহাতে থাকায় উক্ত নিয়মের ভঙ্গপ্রসঙ্গ হয় এবং উক্ত সত্তাদ্যধিকরণে বিশিষ্ট সত্তাভাবাদির সত্ত্ব অনুপপন্ন হয়। দ্রব্যত্বাদি জাতি ও অখণ্ড উপাধির অধিকরণতা এবং ঐ জাতি ও অখণ্ডোপাধির অভাবের বিরোধিতাকল্পনা স্থলেও উক্তরূপে দোষ বুঝিতে হইবে। অতএব পূর্ব পূর্ব রূপে প্রসক্ত দোষের বারণার্থ প্রতিযোগিতা ও আধেয়তার বিভিন্ন অবচ্ছেদক স্বীকার করিয়া দ্রব্যত্বাবচ্ছিন্নাধেয়তা নিরূপিত অধিকরণতার সহিত দ্রব্যত্বমাত্রাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাবের ঘটত্বমাত্রাবচ্ছিন্নাধেয়তা নিরূপিতাধিকরণতার সহিত ঘটত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাবের সত্তাত্বমাত্রাবচ্ছিন্নাধেয়তা নিরূপিত অধিকরণতার সহিত সত্তাত্ব-মাত্রাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাবের এবং বিশিষ্ট ধর্মাবচ্ছিন্নাধেয়তা নিরূপিতাধিকরণতার সহিত বিশিষ্ট ধর্মাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাবের বিরোধিতা ইত্যাদি রূপে বস্তুতান্ত্রিক

† মূল আদর্শে 'নিয়ামকঃ' এই পাঠ দেখা যায়। ঐ স্থলে 'নিরূপক' এইরূপ পাঠই উচিত মনে হয়।

एकस्य अभावस्य बहूनि प्रतियोगीनि सन्ति। सुतरां प्रतियोगिताः तदव-च्छेदकसम्बन्धाश्चापि बहवो भवन्ति। तथा हि द्वितीयाभावः (घटाभावाभावः) प्रतियोगि-(घट) स्वरूपः। तृतीयाभावः (घटाभावाभावाभावः) प्रथमाभाव-(घटाभाव) स्वरूप इति–प्रथमाभावस्य (घटाभावस्य) घट इव द्वितीयाभावोऽपि (घटाभावाभावोऽपि) प्रतियोगी। तस्मिंश्च एका अपरा प्रतियोगिता वर्तते। तस्याश्च प्रतियोगिताया अवच्छेदको धर्मः द्वितीयाभावत्वम् (घटाभावाभावत्वम्)। अवच्छेदकसम्बन्धश्च स्वरूपम्। एवमन्यदपि प्रतियोगि ऊह्यम्।

অনুবাদ

এক অভাবের বহু প্রতিযোগী হয়। সুতরাং তাহার প্রতিযোগিতা, তদবচ্ছেদক ধর্ম ও তদবচ্ছেদক সম্বন্ধও বহু হয়। যথা—দ্বিতীয় অভাব অর্থাৎ ঘটাভাবের অভাব পূর্বাভাবের প্রতিযোগী ঘটস্বরূপ। তৃতীয় অভাব অর্থাৎ ঘটাভাবাভাবের অভাব পূর্ব প্রথমাভাব-ঘটাভাবস্বরূপ। অতএব ঘটাভাবরূপ প্রথমাভাবের প্রতিযোগী যেমন ঘট তেমন ঘটাভাবাভাবরূপ দ্বিতীয় অভাবও। উক্ত অভাবে ঘটাভাবরূপ অভাবের আর একটী প্রতিযোগিতা আছে। সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ধর্ম দ্বিতীয়াভাবত্ব অর্থাৎ ঘটাভাবাভাবত্ব। অবচ্ছেদক-সম্বন্ধ স্বরূপ সম্বন্ধ। এইরূপ অপর প্রতিযোগীও অনুসন্ধেয়।

সুপ্রভা

বিরোধিতা স্থির করিতে হইবে। উক্ত সর্ববিধ স্থলেই আধেয়তাবচ্ছেদক ও প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদক সম্বন্ধরূপে একই সম্বন্ধ অবশ্যই নিবেশ করিতে হইবে।

এইরূপ আবার বৈজ্ঞানিক বিরোধিতা কল্পনার নির্দোষত্বের অনুরোধেও ধর্মে প্রতি-যোগিতাবচ্ছেদকত্ব স্বীকার্য। উহার বিশদ বিবরণ এই, যথা—'ঘটবদ্‌ভূতলম্' এই বুদ্ধির প্রতি 'ঘটাভাববদ্ ভূতলম্' এই নিশ্চয় প্রতিবন্ধক, 'ঘটাভাববদ্ ভূতলম্' এই বুদ্ধির প্রতি 'ঘটবদ্ ভূতলম্' এই নিশ্চয় প্রতিবন্ধক 'দ্রব্যবদ্ ভূতলম্' ও 'দ্রব্যাভাববদ্ ভূতলম্' এই জ্ঞানদ্বয়ে দ্রব্যত্ব রূপে ঘট বিষয়ীভূত হইলেও ঐ জ্ঞানদ্বয় যথাক্রমে 'ঘটাভাববদ্ ভূতলম্' ও 'ঘটবদ্ ভূতলম্' এই জ্ঞানদ্বয়ের প্রতিবন্ধক বা প্রতিবধ্য নহে। ইহাই অনুভবসিদ্ধ ও শাস্ত্রসিদ্ধ। এই অবস্থায় উক্ত ভাবাভাব বুদ্ধির প্রতিবধ্য প্রতিবন্ধকভাব যদি এইরূপে কল্পনা করা হয় যে—ঘটনিষ্ঠ প্রকারতা নিরূপিত ভূতলনিষ্ঠ বিশেষ্যতাশালিজ্ঞানের প্রতি ঘটনিষ্ঠ প্রতিযোগিতাক অভাব প্রকারতা নিরূপিত ভূতলনিষ্ঠ বিশেষ্যতাশালি নিশ্চয় প্রতিবন্ধক এবং ঘটনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাকাভাব প্রকারতা নিরূপিত ভূতলবিশেষ্যতাশালিবুদ্ধির প্রতি ঘটনিষ্ঠ প্রকারতা নিরূপিত ভূতল বিশেষ্যতাশালি নিশ্চয় প্রতিবন্ধক, তবে 'দ্রব্যাভাববদ্‌ভূতলম্' এই জ্ঞানের প্রতি 'ঘটবদ্ ভূতলম্' এই নিশ্চয় এবং 'ঘটবদ্ ভূতলম্' এইরূপ জ্ঞানের প্রতি 'দ্রব্যাভাববদ্

भावपदार्थवत् अभावोऽपि व्याप्यवृत्तिरव्याप्यवृत्तिश्च भवति। 'व्याप्य' सर्वमेव आधारस्यांशं कालं देशं वा अवलम्ब्य वर्तते यः, स व्याप्यवृत्तिः। कस्मिन्नपि अंशे कालविशेषे देशविशेषे वा यस्याधिकरणे अभावो नास्ति, स व्याप्यवृत्तिः। यथा—मनुष्ये मनुष्यत्वं जातिः, आकाशे रूपाभावः, शशे विषाणाभावः।

स्वाधारेऽपि यस्याभावो वर्तते, सः अव्याप्यवृत्तिः। यथा वृक्षे कपिसंयोगाभावश्च अव्याप्यवृत्तिः।

### অনুবাদ

ভাবপদার্থের ন্যায় অভাব পদার্থও ব্যাপ্যবৃত্তি ও অব্যাপ্যবৃত্তি এই দুই প্রকার হয়। যে বস্তু ব্যাপ্য অর্থাৎ নিজ অধিকরণের সমগ্র দেশ বা কাল রূপ অংশকে অবলম্বন করিয়া থাকে তাহাই ব্যাপ্যবৃত্তি। অর্থাৎ নিজ অধিকরণে কোনও দেশ বা কালবিশেষ রূপ অংশে যাহার অভাব থাকেনা তাহা ব্যাপ্যবৃত্তি। যথা মনুষ্যে বর্তমান মনুষ্যত্ব জাতি। আকাশে বর্তমান রূপাভাব, শশে বর্তমান শৃঙ্গাভাব।

নিজের অধিকরণেও যাহার অভাব থাকে সেই বস্তু অব্যাপ্যবৃত্তি। যথা বৃক্ষবৃত্তিকপিসংযোগ ও কপিসংযোগাভাব অব্যাপ্যবৃত্তি।

### সুপ্রভা

ভূতলম্' ইত্যাকার নিশ্চয়ও প্রতিবন্ধক হইতে পারে। অতএব প্রতিযোগিতাও প্রকারতার অবচ্ছেদক এক একটি ধর্ম স্বীকার করিয়া ঘটত্বাবচ্ছিন্ন প্রকারতা নিরূপিত ভূতল বিশেষ্যতাশালি বুদ্ধির প্রতি ঘটত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাকাভাব প্রকারতা নিরূপিত ভূতল বিশেষ্যতাশালি নিশ্চয় প্রতিবন্ধক এবং ঘটত্বাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাকাভাবপ্রকারতা—নিরূপিত ভূতলবিশেষ্যতাশালিবুদ্ধির প্রতি ঘটত্বাবচ্ছিন্ন—প্রকারতানিরূপিত ভূতল বিশেষ্যতাশালিনিশ্চয় প্রতিবন্ধক এইরূপ সিদ্ধান্ত গৃহীত হয়। উক্ত সকল স্থলেই নির্দোষতারক্ষার্থ প্রতিযোগিতা ও প্রকারতায় একই সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্বও নিবেশ করিতে হইবে।

বিশেষাভাব ও সামান্যাভাবের বৈলক্ষণ্য সাধনের জন্যও প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ধর্ম স্বীকার্য। 'ঘটো নাস্তি' ইত্যাদিরূপ ঘটত্বাদি ধর্মপর্যাপ্তাবচ্ছেদকতাক প্রতিযোগিতা নিরূপক অভাব ঘটাদি সামান্যাভাব। এবং বিশেষ ধর্মাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক ঘটাদ্যভাব বিশেষাভাব। ঘটসামান্যাভাবের প্রতিযোগিতা ঘটত্বমাত্রাবচ্ছিন্ন অর্থাৎ ঘটত্বপর্যাপ্তাবচ্ছেদকতাক। ঘটবিশেষাভাবের প্রতিযোগিতা বিশেষধর্মাবচ্ছিন্ন। প্রতিযোগিতাত্ব বা ঘটাদি প্রতিযোগিনিষ্ঠ প্রতিযোগিতাত্বরূপে ঐক্য থাকিলেও বিশেষাভাব ও সামান্যাভাবীয় প্রতিযোগিতাদ্বয়ের বিভিন্ন অবচ্ছেদকীভূত ধর্মদ্বয়ই সামানাধিকরণ্য সম্বন্ধে প্রতিযোগিতাংশে

অব্যাপ্যবৃত্তিপদার্থস্য বৃত্তিতায়াঃ কশ্চিৎ সীমাপরিচ্ছেদকঃ অস্তি। পরিচ্ছেদক এবাত্র অবচ্ছেদকনাম্না ব্যবহ্রিয়তে। স চ ক্বচিৎ আধারস্য অংশবিশেষঃ, ক্বচিৎ কালবিশেষঃ, ক্বচিচ্চ দেশবিশেষ ইতি। তথা 'শাখায়াং বৃক্ষঃ কপিসংযোগী, ন মূলে' ইত্যত্র বৃক্ষে কপিসংযোগস্য বৃত্তিতায়াঃ সীমাপরিচ্ছেদকতয়া শাখা অবচ্ছেদিকা। কপিসংযোগাভাবস্য তু মূলমবচ্ছেদকম্। 'উৎপত্তিকালে পুষ্পং ন গন্ধবৎ কিন্তু

## অনুবাদ

অব্যাপ্যবৃত্তি পদার্থগত বৃত্তিতার একটা সীমানির্দেশক বস্তু থাকে, ঐ সীমানির্দেশক বস্তুই ইহার অবচ্ছেদক নামে ব্যবহৃত হয়। সেই অবচ্ছেদক বস্তু কখনও অধিকরণের অংশ দেশবিশেষ কখনও বা কালবিশেষ। কখনও বা অন্য দেশবিশেষ। যথা—বৃক্ষ শাখাবচ্ছেদে কপিসংযোগবিশিষ্ট, মূলাবচ্ছেদে কপি-সংযোগাভাববিশিষ্ট। এই স্থলে বৃক্ষরূপ অধিকরণে কপিসংযোগের বৃত্তিতার সীমা পরিচ্ছেদকত্বনিবন্ধন শাখা অবচ্ছেদকপদবাচ্য। কিন্তু কপিসংযোগাভাবের মূলদেশ অবচ্ছেদক। 'উৎপত্তি কালাবচ্ছেদে পুষ্পগন্ধাভাববৎ' এই স্থলে পুষ্পে গন্ধাভাবের বৃত্তিতায় উৎপত্তিকাল অবচ্ছেদক।

## সুপ্রভা

থাকিয়া এক প্রতিযোগিতা হইতে অপর প্রতিযোগিতাকে ব্যাবৃত্ত বা পৃথক্ করে। এই জন্যই ঐ ধর্মকে অবচ্ছেদক বা ব্যাবর্তক ধর্ম বলা হয়। মূলকারের ব্যাখ্যানুসারে উহাই প্রতিযোগিতার নিয়ামক।

প্রকৃত প্রতিযোগীতে বিশেষণরূপে প্রতীয়মান অসাধারণ ধর্মকে মূলে প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদক ধর্ম বলা হইয়াছে, যে ধর্ম প্রতিযোগিতার সমনিয়ত অর্থাৎ প্রতিযোগিতার ব্যাপক অথচ ব্যাপ্য তাহাই প্রকৃত অসাধারণ ধর্ম। যথা—'ঘটো নাস্তি' এই অভাবস্থলে ঘটত্বরূপ ধর্ম। ঐ সমনিয়তত্বরূপ অসাধারণ্যই মূলে 'সর্বেষু প্রতিযোগিষু বর্তমানঃ, তদন্যত্র অবর্তমানঃ' এই অংশ দ্বারা ব্যক্ত করা হইয়াছে। উহার প্রথমাংশ দ্বারা প্রতি-যোগিতার ব্যাপকত্ব এবং উত্তরাংশ দ্বারা প্রতিযোগিতার ব্যাপ্যত্ব প্রদর্শিত হইয়াছে।

'অভাবের অভাব প্রতিযোগিস্বরূপ' এই সিদ্ধান্ত ব্যাপ্তিপঞ্চকের 'রহস্য' টীকায় মথুরানাথ তর্কবাগীশ বিশেষ যুক্তি সহকারে উপপাদন করিয়াছেন। মূলকার ঐ সিদ্ধান্ত অবলম্বন করিয়াই 'একস্য অভাবস্য বহূনি প্রতিযোগীনি সন্তি' এই সন্দর্ভের অবতারণা করিয়াছেন। ঐ সন্দর্ভের উপপাদন করিতে গিয়া মূলকার দেখাইয়াছেন যে ঘটাভাবাভাব যেহেতু ঘটস্বরূপ, এবং ঘটাভাবাভাবের অভাব ঘটাভাবস্বরূপ, অতএব ঘটাভাবের প্রতিযোগী যেমন ঘট তেমনই ঘটাভাবাভাব অতএব ঘটাভাবরূপ একই অভাবের বহু প্রতিযোগী। এইরূপ গ্রন্থার্থ সঙ্গত হয় না। কারণ ঘট ও ঘটাভাবাভাব প্রভৃতি একই বস্তু, ভিন্ন

तदुत्तरम्' इत्यत्र पुष्पे गन्धाभावस्य वृत्तितायामुत्पत्तिकालः अवच्छेदकः। "वसन्ते यवा मगधे तिष्ठन्ति, न तु गिरौ" इत्यत्र वसन्ते यववृत्तितायाः मगधदेशः अवच्छेदकः, यवाभावस्य वृत्तितायां गिरिप्रदेशः अवच्छेदकः। अव्याप्यवृत्तितायाः अवच्छेदकवाचक-

**অনুবাদ**

'বসন্তকালে মগধদেশে যব থাকে, পর্বতে থাকে না' এই স্থলে মগধদেশ বসন্তকালে যববৃত্তিতার অবচ্ছেদক। যবাভাবের বৃত্তিতায় গিরি প্রদেশ অবচ্ছেদক।

**সুপ্রভা**

বস্তু নহে, অতএব ঐ ঘট ও ঘটাভাবাভাবের প্রতিযোগিত্বনিবন্ধন প্রতিযোগীর বহুত্ব কিরূপে উপপাদিত হইতে পারে?

আর একটী কথা এই;—মূলে ঘটাভাবনিরূপিত প্রতিযোগিতার নানাত্ব বর্ণনা প্রসঙ্গে ঘটাভাবাভাবত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ স্বরূপসম্বন্ধকে বলা হইয়াছে। উহাও উপপন্ন হয় না। কারণ উদাহরণ স্থলে গৃহীত 'ঘটাভাব' যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতি-যোগিতাক, 'ঘটাভাবাভাবের' সেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাবই তৎস্বরূপ, অন্য সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক নহে। অতএব প্রাথমিক অভাব সংযোগাদি সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক গ্রহণ করিলে উক্ত ঘটাভাবাভাবের অভাবকেও সংযোগাদি সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাকই ধরিতে হয়। উহা স্বরূপ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক গ্রহণ করিলে ঐ অভাব স্বরূপ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক ঘটাভাবরূপ অতিরিক্ত অভাবই হইবে কিন্তু প্রকৃত সংযোগাদি সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক ঘটাভাবস্বরূপ নহে।

অতএব মূলোক্ত 'বহূনি প্রতিযোগীনি' ইহার যথাশ্রুত অর্থ ত্যাগ করিয়া 'বহু ধর্মাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগী' এই অর্থ করিতে হইবে। ঐ অর্থ প্রকৃত স্থলে 'ঘটাভাবীয় ঘটত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতা' ও 'ঘটাভাবাভাবত্বাত্যবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতা' আদান করিয়াই সুসঙ্গত হইবে।

'অবচ্ছেদকসম্বন্ধশ্চ স্বরূপম্' এই গ্রন্থাংশেও আপাততঃ প্রতীয়মান 'প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকীভূত সম্বন্ধ' এইরূপ অর্থ পরিহার করিয়া 'অবচ্ছেদকস্য সম্বন্ধঃ' এইরূপ অর্থে ষষ্ঠীসমাসনিষ্পন্ন অবচ্ছেদকসম্বন্ধ পদ স্বীকার করিলেই প্রকৃত গ্রন্থের অনুপপত্তি বারিত হইতে পারে। কারণ প্রকৃত স্থলে ঘটনিষ্ঠ দুইটী প্রতিযোগিতারই একই সংযোগাদি সম্বন্ধবিশেষ অবচ্ছেদকীভূত সম্বন্ধ হইলেও উক্ত প্রতিযোগিতা দুইটী বিভিন্ন ধর্মাবচ্ছিন্ন। ঐ ধর্মদ্বয়ের মধ্যে ঘটত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ঘটত্বরূপ ধর্মের সম্বন্ধ সমবায়, অতএব ঐ প্রতিযোগিতা ঘটত্বনিষ্ঠ সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাবচ্ছেদকতানিরূপিত। ঘটাভাবাভাব-ত্বাবচ্ছিন্ন অপর প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ঘটাভাবাভাবত্বের সম্বন্ধ স্বরূপসম্বন্ধ। অতএব ঐ প্রতিযোগিতা ঘটাভাবাভাবত্বনিষ্ঠ স্বরূপসম্বন্ধাবচ্ছিন্নাবচ্ছেদকতানিরূপিত। এই রূপেই প্রকৃতে দুইটী পৃথক প্রতিযোগিতা উপপন্ন হয়।

পদে প্রায়শঃ সপ্তমী ভবতি। যথা 'অগ্রে বৃক্ষঃ কপিসংযোগী, ন মূলে' ইতি প্রয়োগঃ।

অব্যাপ্যবৃত্তিরভাবঃ প্রতিযোগিসমানাধিকরণো[1] ভবতি। যথা বৃক্ষে কপিসংযোগাভাবঃ, বৃক্ষে কপিসংযোগঃ কপিসংযোগাভাবশ্চাস্তি।

ব্যাপ্যবৃত্তিস্তু প্রতিযোগিব্যধিকরণঃ,[2] যথা—আকাশে রূপাভাবঃ। আকাশে রূপাভাব এবাস্তি, ন তু রূপমিতি।

**অনুবাদ**

অব্যাপ্যবৃত্তিতার অবচ্ছেদকবাচক পদের (ঐ অর্থে) প্রায়শঃ সপ্তমী বিভক্তি প্রযুক্ত হয়। যথা—'অগ্রে বৃক্ষঃ কপিসংযোগী ন মূলে' অর্থাৎ 'অগ্রাবচ্ছেদে বৃক্ষ কপিসংযোগবিশিষ্ট, মূলাবচ্ছেদে নহে' ঐরূপ প্রয়োগ হয়।

অব্যাপ্যবৃত্তি অভাব প্রতিযোগিসমানাধিকরণ অর্থাৎ প্রতিযোগীর সহিত এক অধিকরণে থাকে। যথা 'বৃক্ষবৃত্তি কপিসংযোগাভাব'। বৃক্ষে কপিসংযোগ ও কপিসংযোগাভাব আছে। ব্যাপ্যবৃত্তি অভাব প্রতিযোগিব্যধিকরণ। যথা—আকাশে রূপাভাব, আকাশে রূপের অভাবই থাকে, রূপ থাকে না।

**সুপ্রভা**

'এবমন্যদপি প্রতিযোগি উহ্যম্' এস্থলেও প্রতিযোগিপদে প্রতিযোগিতা প্রভৃতি বুঝিতে হইবে।

অব্যাপ্যবৃত্তি পদার্থের অবচ্ছেদকীভূত দেশ দুই প্রকার, একটি স্বীয় অধিকরণের একদেশ, অপরটী তদ্ভিন্ন দেশ। এইজন্য দেশরূপ অবচ্ছেদকের উদাহরণ দুইটী প্রদর্শিত হইয়াছে।

অব্যাপ্যবৃত্তি কপিসংযোগাভাবাদি,—কপিসংযোগের অধিকরণীভূত বৃক্ষাদি পদার্থে যেমন অব্যাপ্যবৃত্তি ও প্রতিযোগিসমানাধিকরণ, তেমনই কপিসংযোগাদিরূপ প্রতিযোগীর অনধিকরণীভূত বৃক্ষাদিতে উহা ব্যাপ্যবৃত্তি ও প্রতিযোগিব্যধিকরণ। একই পদার্থে ব্যাপ্যবৃত্তিত্ব ও অব্যাপ্যবৃত্তিত্ব এবং প্রতিযোগি-সামানাধিকরণ্য ও প্রতিযোগি-বৈয়ধিকরণ্যরূপ বিরুদ্ধ ধর্ম কিরূপে থাকে এই প্রশ্নের সমাধান বিভিন্ন সম্বন্ধ অবলম্বনেই হইতে পারে। যথা—কপিসংযোগাদির অভাব অবচ্ছিন্ন স্বরূপ সম্বন্ধে অব্যাপ্যবৃত্তি ও প্রতিযোগিসমানাধিকরণ এবং নিরবচ্ছিন্নস্বরূপ সম্বন্ধে উহা ব্যাপ্যবৃত্তি ও প্রতিযোগিব্যধিকরণ। ঐ বিভিন্ন সম্বন্ধদ্বয় ঘটিত ঐ ঐ ধর্মদ্বয় পরস্পর বিরুদ্ধ নহে।

---

1. প্রতিযোগিনঃ সমানম্ একম্ অধিকরণং যস্য স প্রতিযোগিসমানাধিকরণঃ, প্রতিযোগিনা সহ একত্র স্থিত ইতি যাবৎ।
2. প্রতিযোগিনঃ 'বি' বিরুদ্ধম্ অধিকরণং যস্য সঃ, প্রতিযোগিনঃ অধিকরণে যো ন তিষ্ঠতি।

अभावश्च पुनर्द्विविधः। अन्योन्याभावः, संसर्गाभावश्च। तादात्म्यं (तत्स्वरूपता, ऐक्यम, अभेदः) नाम कश्चित् सम्बन्धोऽस्ति। तेन सम्बन्धेन तस्य प्रतियोग्यनुयोगिनोरभेदः प्रतीयते। यथा—'सुन्दरो नर' इत्यत्र नरसुन्दरयोरैक्यं प्रतीयते। तादात्म्यसम्बन्धेन अभावः (भेदः) अन्योन्याभावः। यस्य अभावस्य प्रतियोगिता तादात्म्यसम्बन्धेनावच्छिन्ना सः अन्योन्याभाव इति। यथा—'घटो न पट' इति। ततश्च न्यायभाषायाम्—अन्योन्याभावस्य 'तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिता-

### অনুবাদ

অভাব আবার দুই প্রকার;—অন্যোন্যাভাব ও সংসর্গাভাব। তাদাত্ম্য (তৎস্বরূপতা, ঐক্য বা অভেদ) নামে একটি সম্বন্ধ আছে। সেই সম্বন্ধের সাহায্যে সেই সম্বন্ধের প্রতিযোগী ও অনুযোগী এই উভয়ের অভেদ প্রতীত হয়। যেমন 'সুন্দরো নরঃ' এই স্থলে 'সুন্দর' এবং 'নর' এই দুইটি পদার্থের ঐক্য প্রতীত হয়। তাদাত্ম্য সম্বন্ধে অভাব (ভেদ) অন্যোন্যাভাব। যে অভাবের প্রতিযোগিতা তাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সেই অভাবই অন্যোন্যাভাব। যথা—'ঘটো ন পটঃ' এই প্রতীতিসিদ্ধ অভাব। অতএব ন্যায়শাস্ত্রীয় ভাষায় 'তাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন—

### সুপ্রভা

কেহ কেহ অধিকরণ ভেদে অভাবের ভেদ মানিয়া ঐ প্রশ্নের সমাধান করেন। যথা—কপিসংযোগাদির অধিকরণে বর্তমান কপিসংযোগাভাব এবং কপিসংযোগাদির অনধিকরণে বর্তমান কপিসংযোগাভাবাদি এক নহে, উহা পরস্পর ভিন্ন। কপিসংযোগাদির অধিকরণে বর্তমান কপিসংযোগাদির অভাবই অব্যাপ্যবৃত্তি ও প্রতিযোগিসমানাধিকরণ, এবং কপিসংযোগাদির অনধিকরণ বৃক্ষাদিতে বর্তমান কপিসংযোগাত্মভাবই ব্যাপ্যবৃত্তি ও প্রতিযোগিব্যধিকরণ, অতএব বিরুদ্ধ ধর্মদ্বয়ের একত্র সমাবেশের প্রসক্তি হয় না। অধিকরণভেদে কপিসংযোগাদি অব্যাপ্যবৃত্তি পদার্থের অভাব ভিন্ন এ বিষয় মথুরানাথ তর্কবাগীশের 'ব্যাপ্তিপঞ্চকরহস্যো'ক্ত 'যত্র প্রতিযোগিসমানাধিকরণত্ব-প্রতিযোগিব্যধিকরণত্বলক্ষণবিরুদ্ধধর্মাধ্যাসঃ, তত্রৈবাধিকরণভেদেন অভাবভেদাভ্যুপগমঃ, ন তু সর্বত্র'। এই গ্রন্থ দ্বারা সমর্থিত হয়। ঐ গ্রন্থের অর্থ যথা—'যেখানে অধিকরণভেদেও অভাবের ঐক্য স্বীকার করিলে একত্র প্রতিযোগিসমানাধিকরণত্ব ও প্রতিযোগিব্যধিকরণত্বরূপ বিরুদ্ধ ধর্মের সমাবেশ প্রসক্ত হয় তথায়ই অধিকরণভেদে অভাব ভিন্ন, কিন্তু সর্বত্র নহে। কপিসংযোগাদিরূপ অব্যাপ্যবৃত্তি পদার্থের অভাব স্থলই সেইরূপ স্থল।

বিশ্বনাথ তর্কপঞ্চানন স্বকৃত কারিকাবলী ও তাহার মুক্তাবলী টীকায় অভাবের এই দুই প্রকার ভেদ ও ঐ দ্বিবিধ অভাবের ঐ রূপই লক্ষণ বর্ণনা করিয়াছেন। যথা—'অভাবস্তু 'দ্বিধা সংসর্গান্যোন্যাভাবভেদতঃ।' (কারিকা)। 'সংসর্গাভাবত্বম্ অন্যোন্যাভাবভিন্নাভাবত্বম্।

निरूपकाभावत्वम् अन्योन्याभावत्वमि'ति लक्षणं पर्यवसितं भवति। अन्योन्याभाव एव भेदः।

अन्योन्याभावभिन्नः अभावः संसर्गाभावः। नञा अभावबोधने यत्र प्रतियोगिपदे अनुयोगिपदे च प्रथमा भवति, तत्र अन्योन्याभावः प्रतीयते। यथा—'घटो न पट' इति।

## অনুবাদ

প্রতিযোগিতানিরূপকাভাবত্ব অন্যোন্যাভাবত্ব' এই রূপই অন্যোন্যাভাবের নিষ্কৃষ্ট লক্ষণ হয়। অন্যোন্যাভাবই ভেদপদার্থ।

অন্যোন্যাভাব হইতে ভিন্ন অভাব সংসর্গাভাবপদবাচ্য। নঞ্ পদ দ্বারা অভাবের বোধস্থলে যেখানে অভাবের প্রতিযোগী ও অনুযোগীর বাচক পদোত্তর প্রথমা বিভক্তি হয় তথায় অন্যোন্যাভাবের প্রতীতি হয়। যথা—'ঘটো ন পটঃ'

## সুপ্রভা

অন্যোন্যাভাবত্বম্—তাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাকাভাবত্বম্।' (মুক্তাবলী) ঐ অভাব সম্বন্ধে বিশেষ জ্ঞাতব্য এই যে—ঐ সংসর্গাভাব প্রাগভাব, ধ্বংসাভাব ও অত্যন্তাভাবভেদে তিন প্রকার। বিশ্বনাথ 'প্রাগভাবস্তথা ধ্বংসোঽপ্যত্যন্তাভাব এব চ। এবং ত্রৈবিধ্যমাপন্নঃ সংসর্গাভাব ইষ্যতে'। এই কারিকা দ্বারা উহা ব্যক্ত করিয়াছেন। এবং স্বকৃত সিদ্ধান্তমুক্তাবলী টীকায় ঐ তিনটী অভাবেরই বিশেষ লক্ষণ নিরূপণ করিয়াছেন। যথা—'বিনাশ্যভাবত্বং প্রাগভাবত্বম্' অর্থাৎ যে অভাব বিনাশী বা বিনাশের প্রতিযোগী, অর্থাৎ যে অভাবের বিনাশ আছে তাহাই প্রাগভাব। প্রাক্ অর্থাৎ প্রতিযোগীর উৎপত্তির পূর্ববর্তী অভাব। ঐ অভাব প্রতিযোগিনাশ্য, অর্থাৎ প্রতিযোগীর উৎপত্তি হইলেই ধ্বংস প্রাপ্ত হয়। ঐ অভাবের আদি নাই, অর্থাৎ বস্তুর উৎপত্তির পূর্ববর্তী সর্বকালেই উহা থাকে। এই জন্যই তর্কসংগ্রহকার অন্নং ভট্ট 'অনাদিঃ সান্তঃ প্রাগভাবঃ' অর্থাৎ যে অভাবের আদি নাই, কিন্তু অন্ত বা ধ্বংস আছে তাহাই প্রাগভাব এইরূপে উহার স্বরূপ বর্ণনা করিয়াছেন। বস্তুতঃ প্রাগভাবকে প্রতিযোগিনাশ্য বলিলে উৎপন্ন প্রতিযোগীর উৎপত্তিপ্রসঙ্গ হয়, অতএব উহাকে প্রতিযোগিসামগ্রীনাশ্য বলা হয়। প্রতিযোগীর পূর্বক্ষণেই উহার সামগ্রী সম্বলিত হইয়া থাকে। প্রাগভাব প্রতিযোগীর কারণ অতএব এই কল্পে প্রতিযোগীর উৎপত্তিক্ষণে প্রাগভাবরূপ কারণ না থাকায় পূর্বোক্ত প্রসঙ্গ হয় না। প্রাগভাবস্থলে প্রতিযোগীর ভবিষ্যত্ত্ববোধক 'ঘটো ভবিষ্যতি' ইত্যাদিরূপ প্রয়োগ হয়।

মুক্তাবলীনিরুক্ত ধ্বংসাভাবের লক্ষণ 'জন্যাভাবত্ব'। যে অভাব কোন কারণজন্য অর্থাৎ যে অভাবের কোনও কারণাধীন উৎপত্তি ঘটে, সেই অভাবকেই ধ্বংসাভাব কহে। যথা—'দণ্ডেন ঘটো নষ্টঃ' ইত্যাদি প্রতীতি স্থলীয় ঘটনাশাদিরূপ অভাব। ঐ ধ্বংসাভাবের

यत्र पुनः प्रतियोगिपदे प्रथमा, अनुयोगिपदे च सप्तमी भवति, तत्र नञा संसर्गाभावः प्रतीयते। यथा—'भूतले घटो नास्ति'।

स्थूलत इदमत्रावधेयम् ;—अन्योन्यस्मिन् अन्योन्यस्य अभावः ( तादात्म्याभावः, भेद इति यावत् ) अन्योन्याभावः, संसर्गस्य प्रतियोगिनः सम्बन्धस्य अनुयोगिनि अभावः संसर्गाभावः। अन्योन्याभावस्थले प्रतियोग्यनुयोगिनोः घटपटयोः परस्परम् अभेदाभावः ( भेदः ) प्रतीयते। संसर्गाभावस्थले तु प्रतियोग्यनुयोगिनोः घटभूतलयोः

**অনুবাদ**

এই স্থলে। আর যেখানে প্রতিযোগিবাচক পদোত্তর প্রথমা এবং অনুযোগিবাচক-পদোত্তর সপ্তমী বিভক্তি হয়, তথায় নঞ্ দ্বারা সংসর্গাভাব বোধিত হয়। যথা—'ভূতলে ঘটো নাস্তি' এই স্থলে।

এখানে স্থূলভাবে ইহা লক্ষণীয় যে—পরস্পরে পরস্পরের অভাব ( তাদাত্ম্যা-ভাব বা ভেদ ) অন্যোন্যাভাব স্থলে সূচিত হয়। সংসর্গের অর্থাৎ প্রতিযোগি-প্রতিযোগিক সম্বন্ধের অভাবানুযোগী পদার্থে অভাব সংসর্গাভাবস্থলে সূচিত হয়।

অন্যোন্যাভাবস্থলে ঘট ও পটরূপ প্রতিযোগী ও অনুযোগী এই দুইটী পদার্থের পরস্পর অভেদাভাব অর্থাৎ ভেদ প্রতীত হয়। কিন্তু সংসর্গাভাবস্থলে ঘট ও ভূতলরূপ প্রতিযোগী ও অনুযোগী এই দুইটী পদার্থের সম্বন্ধ নাই ইহা

**সুপ্রভা**

আদি বা উৎপত্তি আছে। কিন্তু অন্ত বা ধ্বংস নাই। এই কারণেই তর্কসংগ্রহকার অন্নংভট্ট 'সাদিরনন্তঃ প্রধ্বংসাভাবঃ' এইরূপে উহার স্বরূপ নির্দেশ করিয়াছেন। মুক্তাবলী নিরুক্ত অত্যন্তা-ভাবের লক্ষণ 'নিত্য সংসর্গাভাবত্ব।' তিনটী সংসর্গাভাবের মধ্যে প্রাগভাবের উৎপত্তি না থাকিলেও ধ্বংস আছে। এবং ধ্বংসাভাবের ধ্বংস না থাকিলেও উৎপত্তি আছে অতএব 'উৎপত্তিরহিতত্বে সতি বিনাশরহিতত্ব' বা 'প্রাগভাবাপ্রতিযোগিত্বে সতি ধ্বংসাপ্রতিযোগিত্ব'-রূপ নিত্যত্ব ঐ দুইটী অভাবের কোনটীতেই না থাকায় প্রাগভাব ও ধ্বংসে ঐ লক্ষণ যায় না। এখানে অবশ্য আশঙ্কা হইতে পারে এই যে,—অত্যন্তাভাব যদি নিত্য হয় তবে যে গৃহ হইতে ঘট অপসারিত হইল ঐ ঘট অপসারিত হইবার পর সেই গৃহে ব্যাপকরূপে ঘটাভাব থাকে ইহা সম্মত। কিন্তু ঐ গৃহেই যখন পুনরায় ঘট আনীত হয় তখনও ঐ গৃহে পূর্বের ন্যায়ই ঘটাভাব থাকে ইহা স্বীকার করিতে হয় কারণ ঐ অভাব যেমন নিত্য তেমনই নিষ্ক্রিয় ও অচেতন। অতএব ঐ গৃহে ঘটের সত্ত্বকালেও ঘটাভাবের পূর্ববৎ ব্যাপকরূপেই সত্তানিবন্ধন ঘট ও ঘটাভাবের বস্তুতান্ত্রিক বিরোধিতা বিলুপ্ত হয়, তাহার ফলে ঘটবত্তাবুদ্ধি ও ঘটাভাববত্তাবুদ্ধির চিরসিদ্ধ বিষয়বিরোধমূলক বৈজ্ঞানিক বিরোধিতাও অসম্ভব হইয়া পড়ে। এবং ঐ গৃহে ঘটের আনয়নের পরও তথায় ঘটাভাবের প্রমাত্মক বুদ্ধির আপত্তি হয়। এই সকল দোষের

सम्बन्धो नास्तीति पर्यवसाने प्रतीतिः। अतएव प्रतियोग्यनुयोगिनोरभेदेऽपि 'घटे घटो नास्ती'ति संसर्गाभावप्रतीतिः।

प्रतियोगितावत् अवच्छेदकता साध्यता-कार्यता—विधेयता-हेतुता-कारणता-प्रकारतादयोऽपि धर्मगताः सापेक्षधर्माः केनचिद्धर्मेण केनचिच्च सम्बन्धेन अवच्छिन्ना भवन्ति। अत्र वृत्तिता—प्रतियोगितास्थलीया युक्तिरेव युक्तिः स्वयमुद्भावनीया। तत्र कियन्ति उदाहरणानि दर्शयामि। अवच्छेदके विशेषणीभूतो धर्मः अवच्छेदकताया अवच्छेदको भवति। अवच्छेदके विशेषणीभूतो धर्मः येन सम्बन्धेन तिष्ठति, स सम्बन्धः

**অনুবাদ**

পর্যবসানে বুদ্ধিগোচর হয়। অতএব প্রতিযোগী ও অনুযোগীর অভেদসত্ত্বেও 'ঘটে ঘটো নাস্তি' এইরূপ সংসর্গাভাবের প্রতীতি হইয়া থাকে।

প্রতিযোগিতার ন্যায় অবচ্ছেদকতা, সাধ্যতা, কার্যতা, বিধেয়তা, হেতুতা, কারণতা, প্রকারতা প্রভৃতি ধর্মগত সাপেক্ষ ধর্মগুলিও কোনও কোনও ধর্ম ও কোনও কোনও সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয়। এস্থলে বৃত্তিতা ও প্রতিযোগিতা-স্থলীয় যুক্তিই যুক্তিরূপে স্বয়ং উদ্‌ভাবনীয়। সেই বিষয়ে কিছু উদাহরণ দেখাইতেছি। অবচ্ছেদক ধর্মাংশে বিশেষণীভূত ধর্ম অবচ্ছেকতার অবচ্ছেদক হয়, অবচ্ছেদকে বিশেষণীভূত ( বিশেষণরূপে ভাসমান ) ধর্ম যে সম্বন্ধে অবচ্ছেদকে থাকে ( বিশেষণরূপে ভাসমান হয় ), সেই সম্বন্ধ অবচ্ছেদকতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয়।

**সুপ্রভা**

সমাধানের জন্য কল্পনা করা হয় এই যে—সাধারণ স্বরূপ সম্বন্ধ ঐ অত্যন্তাভাবের বৃত্তিতা-নিয়ামক সম্বন্ধ নহে, কিন্তু প্রতিযোগীর তত্তদধিকরণে অসত্ত্বকালীন ভূতলাদি স্বরূপ সম্বন্ধই অত্যন্তা-ভাবের বৃত্তিতার নিয়ামক সম্বন্ধ। গৃহে ঘটের সত্তাকালে ঘটরূপ প্রতিযোগীর গৃহাসত্ত্বকালরূপ কালবিশেষের অভাববশতই তৎকালীন স্বরূপ সম্বন্ধ গৃহে না থাকায় তৎসম্বন্ধে তথায় উক্ত অত্যন্তাভাব থাকিতে না পারায় দোষ সমূহ বারিত হয়। ঐ সম্বন্ধ বিশেষের কথা বিশ্বনাথ 'সিদ্ধান্তমুক্তাবলী' টীকায় উল্লেখ করিয়াছেন। যথা—'এবঞ্চ তত্তৎকালীনং তত্তদ্ভূতলাদিকং তত্তদভাবানাং সম্বন্ধঃ' ঘটকালে গৃহাদিতে ঘটাত্যন্তাভাব বুদ্ধির আশঙ্কা বারণার্থ পরেও বলিয়াছেন। যথা—'যত্র তু ভূতলাদৌ ঘটাদিকমপসারিতং পুনরানীতঞ্চ তত্র ঘটকালস্য সম্বন্ধাঘটকত্বাৎ অত্যন্তাভাবস্য নিত্যত্বেঽপি ঘটকালে ন ঘটাত্যন্তাভাববুদ্ধিঃ'। অর্থাৎ যে ভূতলাদিরূপ অধিকরণে পূর্ববর্তী ঘটের অপসারণের পর আবার ঘটাদি পদার্থ আনীত হইয়াছে, তথায় ঐ ভূতলাদি অধিকরণে ঘটসত্তার কাল ঘটাত্যন্তাভাবের বৃত্তিতানিয়ামক সম্বন্ধের ঘটক নহে ( কিন্তু ঘটের ভূতলাদিতে অসত্ত্বকাল ), এইজন্য অত্যন্তাভাব নিত্য হইলেও ঘটকালে তথায় ঘটাত্যন্তাভাববুদ্ধি হয় না।

अवच्छेदकतावच्छेदकसम्बन्धो भवति। यथा - 'दण्डी नास्ति' इत्यत्र दण्डिनि प्रतियोगिनि विशेषणतया उपस्थितो दण्डो दण्डिगत-प्रतियोगिताया अवच्छेदकः, दण्डश्च दण्डिनि संयोगसम्बन्धेन तिष्ठतीति दण्डगता प्रतियोगितावच्छेदकता संयोग-सम्बन्धावच्छिन्ना। दण्डे च दण्डत्वं विशेषणतया उपस्थितमिति दण्डगतायाः प्रति-योगितावच्छेदकतायाः अवच्छेदकं दण्डत्वम्। दण्डत्वञ्च दण्डे समवासम्बन्धेन तिष्ठतीति दण्डत्वगता अवच्छेदकता समवायसम्बन्धावच्छिन्ना। दण्डत्वे च किमपि विशेषणतया न प्रतीयत इति दण्डत्वगता अवच्छेदकतावच्छेदकता निरव-

### অনুবাদ

যথা—'দণ্ডী নাস্তি' ইত্যাকার অভাবস্থলে দণ্ডিস্বরূপ প্রতিযোগ্যংশে বিশেষণরূপে উপস্থিত দণ্ড দণ্ডিগত প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক, ঐ দণ্ড দণ্ডী.ত সংযোগ সম্ব.ন্ধ থাকে (বিশেষণরূপে ভাসমান)। অতএব দণ্ডগত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতা সংযোগ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। দণ্ডেও দণ্ডত্ব বিশেষণরূপে ভাসমান এইজন্য 'দণ্ডত্ব' দণ্ডগত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক ধর্ম। ঐ 'দণ্ডত্ব' আবার দণ্ডে সমবায়রূপ সম্বন্ধে থাকে (ভাসমান), এইজন্য দণ্ডত্বগত অবচ্ছেদকতাবচ্ছেদকতা সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। দণ্ডত্বরূপ অবচ্ছেদকতাবচ্ছেদক ধর্মাংশে কোনও ধর্ম বিশেষণরূপে ভাসমান হয় না এইজন্য দণ্ডত্বগত অবচ্ছেদকতা নিরবচ্ছিন্ন (কিঞ্চিদ্ধর্মানবচ্ছিন্ন)।

### সুপ্রভা

মূলে সাধ্যতাপদের অর্থ সাধ্যপদার্থগত অনুমিতিনিরূপিত বিধেয়ত্বাখ্যবিষয়তা, বিধেয়তাপদের সাধারণ অর্থ উদ্দেশ্য বিধেয়ভাবস্থলীয় বিধেয়তা। অনুমিতিবিধেয়তা 'পর্বতো বহ্নিমান্ ধূমাৎ' ইত্যাদি ন্যায়স্থলীয় বহ্ন্যাদিরূপ সাধ্যগত বিধেয়ত্বাখ্য বিষয়তা। সাধারণ উদ্দেশ্যবিধেয়ভাবস্থলীয় বিধেয়তা যথা—'ধনবান্ সুখী' ইত্যাদি স্থলীয় সুখাদি পদার্থগত বিধেয়তা। উহা সুখত্বাদি ধর্মাবচ্ছিন্ন ও সমবায়াদিসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। ঐরূপ স্বরূপভেদ অবলম্বন করিয়াই 'সাধ্যতা' ও 'বিধেয়তা' ভিন্নরূপে উল্লেখ করা হইয়াছে। কার্যতা ও কারণতার উদাহরণ যথা—'সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন উৎপত্তিমত্ত্ব' সম্বন্ধে ঘটাদি পদার্থের প্রতি 'স্বজন্যভ্রমিমত্ত্বাদি' সম্বন্ধে দণ্ডাদি কারণ। ঐ স্থলে ঘটাদি পদার্থে কার্যতা ও দণ্ডাদিপদার্থে কারণতা থাকে। ঐ কার্যতার অবচ্ছেদক ধর্ম ঘটত্বাদি ও অবচ্ছেদক সম্বন্ধ সংযোগ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন উৎপত্তিমত্ত্ব, অতএব উক্ত কার্যতা ঘটত্বাদি ধর্মাবচ্ছিন্ন ও উক্তরূপ উৎপত্তিমত্ত্ব সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। উক্তস্থলীয় কারণতার অবচ্ছেদক ধর্ম দণ্ডত্বাদি এবং অবচ্ছেদক সম্বন্ধ স্বজন্যভ্রমিমত্ত্বাদি। অতএব উহা দণ্ডত্বাদিধর্মাবচ্ছিন্ন ও স্বজন্যভ্রমিমত্ত্বাদি সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন।

প্রকারতা—জ্ঞানাদিতে কোনও পদার্থাংশে বিশেষণরূপে ভাসমান বস্তুগত বিষয়তা-

च्छिन्ना। ततश्च 'दण्डी नास्ती' त्यस्य नैयायिकभाषामयमर्थः—'समवायसम्बन्धावच्छिन्नदण्डत्वनिष्ठाच्छेदकतानिरूपित-संयोगसम्बन्धावच्छिन्नदण्डनिष्ठावच्छेदकतानिरूपितसंयोगसम्बन्धावच्छिन्नदण्डिनिष्ठप्रतियोगितानिरूपकः अभावः।

येन सम्बन्धेन यत् साध्यते, यत् क्रियते, यत् विधीयते, यो हेतुः, यत् कारणम्,

### অনুবাদ

অতএব ন্যায়শাস্ত্রীয় ভাষায় 'দণ্ডী নাস্তি' এই বাক্যের অর্থ এই যে,—'সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন—(নিরবচ্ছিন্ন বা কিঞ্চিদ্ধর্মানবচ্ছিন্ন) দণ্ডত্বনিষ্ঠাবচ্ছেদকতা নিরূপিত সংযোগ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন দণ্ডনিষ্ঠাবচ্ছেদকতানিরূপিত সংযোগ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন দণ্ডিনিষ্ঠ প্রতিযোগিতানিরূপক অভাব।

যে সম্বন্ধে যে বস্তুর সাধন বা অনুমান করা হয়, যে সম্বন্ধে যে বস্তু উৎপাদিত হয়, যে সম্বন্ধে যে (কোনও উদ্দেশ্য) বিহিত হয়, (অনুমানস্থলে)

### সুপ্রভা

বিশেষ। যথা—'সংযোগেন ঘটবদ্ ভূতলম্' এই জ্ঞানস্থলে ভূতলরূপ বিশেষ্যাংশে ঘট বিশেষণরূপে ভাসমান, অতএব ঘটে ঐ জ্ঞানীয় প্রকারতাখ্য বিষয়তা থাকে। ঐ প্রকারতা ঘটত্বরূপ ধর্মাবচ্ছিন্ন ও সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন।

'অবচ্ছেদকে বিশেষণীভূতো ধর্মঃ' ইহার অর্থ অবচ্ছেদকাংশে বিশেষণরূপে প্রতীয়মান ধর্ম বুঝিতে হইবে। অন্যথা 'বহ্নিমান্ ধূমাৎ' ইত্যাদি স্থলে বহ্ন্যাদিরূপ সাধ্য যেমন বহ্নিত্ববিশিষ্ট তেমনই তেজস্বাদি বিশিষ্ট বলিয়া তেজস্বাদি ধর্মেও অবচ্ছেদকতার আপত্তি হয়। 'বিশেষণীভূত' এই পদে 'চ্বি' প্রত্যয় দ্বারাই ঐরূপ বিশেষার্থ সূচিত হয় বলিতে পারা যায়। 'দণ্ডশ্চ দণ্ডিনি সংযোগসম্বন্ধেন তিষ্ঠতীতি' ইত্যাদি পরবর্তী সন্দর্ভে 'তিষ্ঠতি' পদের অর্থও 'ভাসতে' এইরূপ করিতে হইবে। তাহা না করিলে সমবায়াদিসম্বন্ধে দণ্ডী অংশে দণ্ডাদিজ্ঞানস্থলীয় 'দণ্ডী নাস্তি' ইত্যাদি প্রতীতিতে দণ্ডাদির অবচ্ছেদকত্ব উহা দ্বারা সমর্থিত হইতে পারে না।

অনুল্লিখ্যমান জাতি ও অখণ্ডোপাধির স্বরূপতঃ (নিষ্প্রকারক) ভান হয় ইহা পূর্বেই বিস্তৃতরূপে বলা হইয়াছে। অতএব 'দণ্ডী নাস্তি' এইরূপ প্রতীতি স্থলে দণ্ডত্ব অনুল্লিখ্যমান জাতি হওয়ায় উহার স্বরূপতই ভান হয়। এই জন্য প্রকৃতস্থলে তদ্গত অবচ্ছেদকতা নিরবচ্ছিন্ন। এখানে নিরবচ্ছিন্নপদের অর্থ সামান্যত অবচ্ছিন্নতাশূন্যত্ব বা কিঞ্চিন্নিষ্ঠাবচ্ছেদকতার অনিরূপকত্ব নহে, কারণ উক্ত দণ্ডত্বনিষ্ঠ অবচ্ছেদকতা কোনও ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন না হইলেও সমবায়রূপ সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন। অতএব উক্ত 'নিরবচ্ছিন্ন' পদের অর্থ 'কিঞ্চিদ্ধর্মানবচ্ছিন্ন' বা কিঞ্চিদ্ধর্মনিষ্ঠ বিলক্ষণাবচ্ছেদকত্বানিরূপকত্ব। উক্ত ধর্মগত অবচ্ছেদকতার বৈলক্ষণ্য সংসর্গাবচ্ছিন্নত্ব। অতএব সম্বন্ধ কিঞ্চিদ্ধর্মস্বরূপ হইলেও 'সম্বন্ধগত সাংসর্গিক অবচ্ছেদকতা সম্বন্ধানবচ্ছিন্ন' এই নিয়মবলে উহাতে ঐ বৈলক্ষণ্য না থাকায় দোষ হয় না।

यश्च प्रकारो भवति, स सम्बन्धः तन्निष्ठसाध्यता-कार्यता-विधेयता-हेतुता-कारणता-प्रकारतानामवच्छेदको भवति। 'सुन्दरो नर' इत्यादौ नरस्य केवलं विशेष्यतयैव प्रतीतिः, तस्य सम्बन्धो न कुत्रापि बोध्यते इति धर्मिगता अधिकरणता-अनुयोगिता-विशेष्यता-पक्षतादयः सापेक्षधर्माः, न केनापि सम्बन्धेन अवच्छिन्नाः, केवलं धर्मेणैव ते अवच्छिन्ना इति।

### অনুবাদ

যে সম্বন্ধে হেতুর উপন্যাস করা হয়, যে সম্বন্ধে যাহা কারণ হয়, যে সম্বন্ধে যে বস্তু (জ্ঞানাদিতে) প্রকারীভূত হয়, সেই সেই সম্বন্ধ তত্তন্নিষ্ঠসাধ্যতা-কার্যতা-বিধেয়তা-হেতুতা-কারণতা ও প্রকারতার যথাক্রমে অবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয়। 'সুন্দরো নরঃ' ইত্যাদি স্থলে 'নর' পদার্থের কেবল বিশেষ্যরূপেই প্রতীতি হয়, কোথাও তাহার সম্বন্ধ বোধিত হয় না, অতএব ধর্মিগত অধিকরণতা, অনুযোগিতা, বিশেষ্যতা এবং পক্ষতা প্রভৃতি সাপেক্ষ ধর্মসমূহ কোনও সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয় না। তাহারা কেবল ধর্মদ্বারাই অবচ্ছিন্ন হইয়া থাকে।

### সুপ্রভা

কোনও কোনও স্থলে 'বৃত্তিতার' অবচ্ছেদক সম্বন্ধ গ্রহণ করিয়া অধিকরণতায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব ব্যবহার দেখা যায়। যথা—সিদ্ধান্তলক্ষণ-জাগদীশীতে 'যৎ-প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদকসম্বন্ধাবচ্ছিন্নাধিকরণতানিরূপিতস্বরূপসম্বন্ধেন' ইত্যাদি। ঐ সকল স্থলে তত্তৎ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাধিকরণতা পদের অর্থ—তত্তৎসম্বন্ধাবচ্ছিন্নবৃত্তিতানিরূপিত অধিকরণতা। অধি-করণতা ও বিশেষ্যতায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব স্বীকারে দোষ মৎকৃত 'ন্যায়পরিভাষা' গ্রন্থে দ্রষ্টব্য।

অধিকরণতার সাক্ষাৎ কোনও অবচ্ছেদক সম্বন্ধ না থাকিলেও কোনও কোনও স্থলে স্বনিরূপিত বৃত্তিতার অবচ্ছেছদক সম্বন্ধ আদান করিয়া 'সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন অধিকরণতা' ইত্যাদি ব্যবহার করা হয়।

সখণ্ড ধর্মের প্রতীতি তদংশে নিষ্প্রকারক হয় না, সপ্রকারকই হয়, এই কারণেই মরণত্বরূপ ধর্মাংশে মরণত্বত্বরূপ ধর্ম প্রকাররূপে ভাসে। 'এবমন্যদপি' এস্থলে অন্যপদে 'দণ্ডিমান্ দণ্ডিসংযোগাৎ' ইত্যাদি স্থলীয় দণ্ডত্বাদিরূপ সাধ্যতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদক বোদ্ধব্য।

বহ্নিত্ববিশিষ্ট বা বহ্নিত্বের আশ্রয় অর্থে বহ্নিত্বাবচ্ছিন্নপদ জগদীশ সিদ্ধান্তলক্ষণ দীধিতির টীকায় প্রয়োগ করিয়াছেন; যথা—'বহ্নিত্বাবচ্ছিন্নস্য সর্বস্যৈব ধূমাদিমন্নিষ্ঠাভাবপ্রতিযোগিতা-বচ্ছেদকীভূত তদ্ব্যক্তিত্বাবচ্ছিন্নত্বাদব্যাপ্তিরিতি'। অর্থাৎ বহ্নিত্বের আশ্রয় বা বহ্নিত্ব-বিশিষ্ট সকল বহ্নিব্যক্তিই ধূমরূপ হেতুর অধিকরণে বর্তমান 'তদ্ব্যক্তির্নাস্তি' 'এতদ্ব্যক্তি র্নাস্তি' ইত্যাদিরূপ অভাবের প্রতিযেগিতাবচ্ছেদক তত্তদ্ব্যক্তিত্বাদ্যবচ্ছিন্ন হওয়ায় অব্যাপ্তি

यो धर्मः साध्यादौ विशेषणतया प्रतीयते, स धर्मः साध्यतादीनामवच्छेदको भवति, यथा—'पर्वतो वह्निमान् धूमात्' इत्यत्रानुमाने पर्वते पक्षे धूमेन हेतुना वह्निः संयोगसम्बन्धेन साध्यते इति यथाक्रमं पर्वतत्वं पक्षतावच्छेदकम्, धूमत्वं हेतुतावच्छेदकम्, वह्नित्वं साध्यतावच्छेदकम्, संयोगश्च साध्यतावच्छेदकः सम्बन्धः, हेतुरपि संयोग-सम्बन्धेनैव कृत इति हेतुतावच्छेदक-सम्बन्धोऽपि संयोग एव।

यत्र साध्यतावच्छेदको धर्मः सखण्डः, तत्र साध्यतावच्छेदकतावच्छेदकोऽप्यस्ति, यथा—'शतायुरप्ययं वृद्धो मरिष्यति मनुष्यत्वात्' इत्यनुमाने मरणं साध्यम्, मरणत्वञ्च साध्यतावच्छेदकम्। मरणञ्च श्वासप्रश्वासविरामत्वरूपं, मरणत्वम् सखण्डोपाधिः

**অনুবাদ**

যে ধর্ম সাধ্যাদি অংশে বিশেষণরূপে প্রতীয়মান হয়, সেই ধর্ম সাধ্যতা প্রভৃতির অবচ্ছেদক ধর্ম হয়। উদাহরণ যথা—'পর্বতো বহ্নিমান্ ধূমাৎ' এইরূপ অনুমান (ন্যায়) স্থলে পর্বতরূপ পক্ষে ধূমরূপ হেতুদ্বারা বহ্নি, সংযোগ সম্বন্ধে সাধিত (অনুমিত) হয়। অতএব উক্তস্থলে পর্বতত্ব, ধূমত্ব ও বহ্নিত্ব যথাক্রমে পক্ষতাবচ্ছেদক হেতুতাবচ্ছেদক ও সাধ্যতাবচ্ছেদক এবং সংযোগসম্বন্ধ সাধ্যতাচ্ছেদক সম্বন্ধ। উক্ত স্থলে ধূমকে সংযোগসম্বন্ধেই হেতু করায় হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধও সংযোগ সম্বন্ধ।

যেখানে সাধ্যতাবচ্ছেদক ধর্ম সখণ্ড সেখানে সাধ্যতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদক ধর্মও থাকে। যথা—'এই বৃদ্ধ শতায়ু হইলেও মরিবে, যেহেতু সে মনুষ্য। এই অনুমানে মরণ সাধ্য, মরণত্ব সাধ্যতাবচ্ছেদক। শ্বাস ও প্রশ্বাসের বিরামই মরণপদার্থ, অতএব শ্বাস প্রশ্বাস বিরামত্বরূপ মরণত্ব সখণ্ডোপাধিরূপ ধর্ম। সেই কারণেই মরণত্বরূপ ধর্ম বিশিষ্ট হইয়াই ঐ মরণত্বরূপ প্রকৃতস্থলে

**সুপ্রভা**

হয়। কারণ তাদৃশ অভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন ভিন্ন সাধ্যসামানাধিকরণ্যই সিদ্ধান্তলক্ষণের যথাশ্রুত মূলোক্ত ব্যাপ্তি।

নির্বিকল্পকজ্ঞান যে বিশেষ্য বিশেষণভাব ও বিশেষ্য বিশেষণের সম্বন্ধকে বিষয় করে না ইহা বিশ্বনাথ 'প্রকারতাদিশূন্যং হি সম্বন্ধানবগাহি তৎ' এই কারিকাংশ দ্বারা 'ভাষাপরিচ্ছেদে' প্রতিপাদন করিয়াছেন। উহার অর্থ যথা—'পূর্বোক্ত নির্বিকল্পক জ্ঞান প্রকারতা বিশেষ্যতা প্রভৃতি বিষয়তাশূন্য এবং বিশেষ্য বিশেষণের সংসর্গাবিষয়ক। ঐ নির্বিকল্পকজ্ঞান প্রমা ও অপ্রমা (যথার্থ ও অযথার্থ) কোনও প্রকার জ্ঞানভেদেরই অন্তর্গত নহে। ইহাও 'ভাষাপরিচ্ছেদে' বিশ্বনাথোক্ত 'ন প্রমা নাপি ভ্রমঃ স্যান্নির্বিকল্পম্' এই কারিকাংশ দ্বারা

धर्मः। ततश्च मरणत्वत्वेन धर्मेण मरणत्वमत्र विशेषणीभूतमिति मरणत्वत्वं साध्यतावच्छेदकतावच्छेदकम्। एवमन्यदपि ज्ञेयम्।

अवच्छेदकपदस्य क्वचिद् विशेषणमित्यर्थः। अवच्छिन्नपदस्य च विशिष्टम्, आश्रय इत्यर्थोऽपि भवति। 'अवच्छेदकत्वमात्रेणान्वयः' इत्यत्र अवच्छेदकत्वपदस्य विशेषणत्वमर्थः। 'वह्नित्वावच्छिन्नस्य यस्य कस्यापि' इत्यत्र 'वह्नित्वाश्रयस्य इत्यर्थो बोध्यते।

ज्ञानं द्विविधम्;— निर्विकल्पकं सविकल्पकञ्च। 'निः' नास्ति 'विकल्पः' विशेष्यविशेषणभावः विशेष्यविशेषणयोः सम्बन्धो वा यस्मिन् तत् निर्विकल्पकम्।

### অনুবাদ

মরণরূপ সাধ্যাংশ বিশেষণীভূত হওয়ায় মরণত্বত্বরূপ ধর্ম সাধ্যতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদক। এইরূপে অন্যস্থলও জ্ঞেয়।

কোনও স্থলে অবচ্ছেদকপদের অর্থ কেবল বিশেষণ হয়। অবচ্ছিন্নপদের অর্থও বিশিষ্ট বা আশ্রয় এই হয়। 'অবচ্ছেদকত্বমাত্রেণান্বয়ঃ' অর্থাৎ কেবল 'অবচ্ছেদকরূপে অন্বয়।' এই স্থলে 'অবচ্ছেদকত্ব' পদের অর্থ বিশেষণত্ব। 'বহ্নিত্বাবচ্ছিন্নস্য যস্য কস্যাপি' অর্থাৎ 'বহ্নিত্বাবচ্ছিন্ন যে কোনও ব্যক্তির' এইস্থলে বহ্নিত্বাবচ্ছিন্ন ইহার বহ্নিত্বাশ্রয় এইরূপ অর্থ বোধিত হয়।

জ্ঞান দুই প্রকার; নির্বিকল্পক ও সবিকল্পক। ('নিঃ' শব্দার্থ অবর্তমান, 'বিকল্প' শব্দের অর্থ বিশেষ্যবিশেষণভাব বা বিশেষ্য ও বিশেষণের পারস্পরিক

### সুপ্রভা

সমর্থিত হয়। উহার কারণ এই যে উক্ত প্রমা ও অপ্রমা দুই জ্ঞানেই প্রকারতা ও বিশেষ্যতা থাকে।

বিশ্বনাথ 'মুক্তাবলী' টীকায় নির্বিকল্পকজ্ঞানে যুক্তি প্রদর্শন করিবার প্রসঙ্গে বলিয়াছেন —'চক্ষুঃসংযোগানন্তরং 'ঘটঃ' ইত্যাকারকং ঘটত্ববিশিষ্টজ্ঞানং ন সম্ভবতি, পূর্বং বিশেষণস্য ঘটত্বাদের্জ্ঞানাভাবাৎ। বিশিষ্টবুদ্ধৌ বিশেষণজ্ঞানস্য কারণত্বাৎ। তথা চ প্রথমতঃ ঘটঘটত্বয়োর্বৈশিষ্ট্যানবগাহ্যেব জ্ঞানং জায়তে। তদেব নির্বিকল্পকম্। তচ্চ ন প্রত্যক্ষম্'। অর্থাৎ ঘটে চক্ষুঃ সংযোগ হওয়ার পর 'ঘটত্ববিশিষ্ট ঘট' এইরূপ জ্ঞান সম্ভবপর নহে, কারণ পূর্বে ঘটত্বাদিরূপ বিশেষণের জ্ঞান নাই। অথচ বিশিষ্ট বুদ্ধির প্রতি বিশেষণ জ্ঞান কারণ এই নিয়ম বর্তমান। অতএব প্রথম (ঘটে চক্ষুঃ সংযোগের পর) ঘট ও ঘটত্বের পারস্পরিক সম্বন্ধকে বিষয় না করিয়াই (ঘট ঘটত্বে ইত্যাদি আকারের) জ্ঞান হয়। উহাই নির্বিকল্পক জ্ঞান। ঐ নির্বিকল্পক জ্ঞান (সবিকল্পক জ্ঞানের মত) প্রত্যক্ষগ্রাহ্য নহে। বিশেষ জিজ্ঞাসু

निर्विकल्पके हि ज्ञाने केवलं धर्मधर्मिणोः पटत्वपटयोः परस्परमसंसृष्टयोः ( पट-पटत्वे इत्याकारकं ) भानं ( प्रकाशः ) भवति। न तु तयोः सम्बन्धस्यापि भानम्। विषये-न्द्रियसन्निकर्षे सति जायमानं प्राथमिकं प्रत्यक्षं निर्विकल्पकं भवति।

तत्रेदं कारणम् ;—विशिष्ट*बुद्धिं प्रति विशेषणज्ञानस्य हेतुत्वम्। न हि अज्ञात-शुक्लरूपस्य जनस्य 'इदं शुक्लं वस्त्रम्' इति प्रतीतिर्भवति। ततश्च पटे चक्षुःसंयोगात् पूर्वं तत्समकालं वा पटत्वज्ञानस्य नियतमसम्भवात् पटत्वज्ञानं विना पटत्वस्य विशेषणतया पटे ज्ञानासम्भव इति, पटे चक्षुःसंयोगानन्तरं प्रथमं पटत्वस्य ज्ञाने जाते ततो .द्वतीयेन ज्ञानेन 'अयं पट' इति पटत्व-विशिष्टबुद्धिर्भवति।

## অনুবাদ

সম্বন্ধ ) যে-জ্ঞানে ( বিষয়িতাসম্বন্ধে ) ঐ বিশেষ্য বিশেষণভাব বা বিশেষ্যও বিশেষণের সম্বন্ধ থাকে না, অর্থাৎ যে জ্ঞান বিশেষ্যবিশেষণভাব বা বিশেষ্যবিশেষণের সম্বন্ধকে বিষয় করে না, সেই জ্ঞান নির্বিকল্পক জ্ঞান। নির্বিকল্পক জ্ঞানে কেবল পটত্ব ও পট ( প্রভৃতি ) রূপ ধর্ম ও ধর্মীর পরস্পর অসংসৃষ্টরূপে 'পট-পটত্বে' ইত্যাকার ( ইত্যাদি ) আকারে ভান ( প্রকাশ ) হয়। কিন্তু তাহাদের ( পারস্পরিক ) সংসর্গের ভান হয় না।

বিষয়ের সহিত ইন্দ্রিয়ের সন্নিকর্ষ হইলে প্রথম যে প্রত্যক্ষ জ্ঞান উৎপন্ন হয় তাহাই নির্বিকল্পক।

## সুপ্রভা

ব্যক্তি 'জ্ঞানং যন্নির্বিকল্পাখ্যং তদতীন্দ্রিয়মিষ্যতে'—এই কারিকার 'মুক্তাবলী' টীকা প্রভৃতিতে উহার যুক্তি অনুসন্ধান করিবেন।

'চক্ষুঃসংযোগের পূর্বে বা তৎসমকালে পটত্ব জ্ঞান অসম্ভব'—ইহার যুক্তি এই যে, পটত্ব পটরূপ দ্রব্যে সমবায়সম্বন্ধে বর্তমান জাতি। সমবায়সম্বন্ধে দ্রব্যগত বস্তুর প্রত্যক্ষে স্বসংযুক্ত সমবায় বা স্বসংযুক্ত সমবেতত্বসম্বন্ধে ইন্দ্রিয় কারণ। পটে চক্ষুঃ সংযোগের পূর্বে পটরূপ দ্রব্য চক্ষুঃ সংযুক্ত না হওয়ায় উক্তরূপ সম্বন্ধে পটত্বে ইন্দ্রিয় থাকিতে পারে না, চক্ষুঃ সংযোগসমকালে স্বসংযুক্ত সমবেতত্ব সম্বন্ধে ইন্দ্রিয় ঐ পটত্বগত হইলেও পূর্ববর্তী না হওয়ায় চক্ষুঃ সংযোগের পূর্বে ও তৎসমকালে পটত্বপ্রত্যক্ষ সম্ভবপর হয় না। পটে চক্ষুঃ সংযোগের উৎপত্তি হইলেই স্বসংযুক্ত সমবেতত্বরূপ পরম্পরা সম্বন্ধে পটত্বরূপ পটসমবেত জাতিতে চক্ষুঃ স্বরূপ ইন্দ্রিয় থাকায় উহাতে বিষয়তারূপ কার্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধে প্রত্যক্ষ সম্ভবপর হয়।

---

* একস্মিন্ অপরস্য বিশেষণতয়া জ্ঞানং বিশিষ্টবুদ্ধিঃ। বিশিষ্টবুদ্ধৌ একস্মিন্ অপরস্য সম্বন্ধঃ প্রতীয়তে। যথা 'অয়ং ঘটঃ,' সুন্দরো নরঃ', ইত্যাদৌ ঘটে ঘটত্বস্য, নরে সৌন্দর্যগুণস্য বিশেষণতয়া প্রতীতিঃ সম্বন্ধস্য চাবগমঃ।

विशेष्यविशेषणभावावगाहि* ज्ञानं सविकल्पकम् (विकल्पेन सहितम्) ज्ञानम्। 'अयं घटः' 'सुन्दरो नरः' इत्यादि विशिष्टज्ञानं सर्वमेव सविकल्पकम्।

द्वितीयप्रत्यक्षं सर्वमेव विशिष्टज्ञानमेव भवति। प्राथमिकेन निर्विकल्पकेन प्रत्यक्षेण अवगतस्य घटत्वादि सामान्यस्य घटादौ विशेषणतया प्रतीतौ बाधाभावात्,

**অনুবাদ**

ঐ নির্বিকল্পক জ্ঞানের যুক্তি এই,—বিশিষ্টবুদ্ধির প্রতি বিশেষণজ্ঞান কারণ। যে ব্যক্তির শুক্লরূপবিষয়ে জ্ঞান হয় নাই, তাহার 'এইটী শুক্ল বস্ত্র' এইরূপ জ্ঞান হয় না। অতএব পটে চক্ষুঃসংযোগের পূর্বে অথবা চক্ষুঃসংযোগের সমকালে পটত্বজ্ঞান নিয়মিত অসম্ভব বলিয়া পটত্বজ্ঞান ব্যতিরেকে পটত্বের পটাংশে বিশেষণ-রূপে জ্ঞান সম্ভবপর নহে, এই কারণে পটে চক্ষুঃসংযোগের পর প্রথম পটত্বের জ্ঞান হইলে পরে দ্বিতীয় জ্ঞানদ্বারা 'অয়ং পটঃ' এইরূপ বিশিষ্ট বুদ্ধির সম্বলন হয়।

বিশেষ্যবিশেষণভাবকে বিষয় করিয়া যে জ্ঞান হয়, সেই জ্ঞানই সবিকল্পক অর্থাৎ পূর্বোক্ত বিকল্পসম্বলিত জ্ঞান। 'অয়ং ঘটঃ', সুন্দরো নরঃ' ইত্যাদি আকারের সমস্ত বিশিষ্টজ্ঞানই সবিকল্পক জ্ঞান।

দ্বিতীয় (প্রথম প্রত্যক্ষভিন্ন) প্রত্যক্ষ সবগুলিই বিশিষ্টজ্ঞানই হয়। কারণ প্রথমোৎপন্ন নির্বিকল্প প্রত্যক্ষ দ্বারা ঘটত্বাদিরূপ সামান্য অবগত হওয়ার পর ঘটাদিরূপ ধর্মী পদার্থাংশে উহার বিশেষণরূপে প্রতীত হইতে কোনও বাধা থাকে না। কিন্তু তৃতীয় (তদুত্তরজাত) প্রত্যক্ষ প্রায় বিশিষ্টবৈশিষ্ট্যাবগাহী অর্থাৎ বিশিষ্ট ধর্মের বৈশিষ্ট্য অর্থাৎ সম্বন্ধকে বিষয় করিয়াই হয়। যথা—

**সুপ্রভা**

ন্যায়শাস্ত্রীয় রীতি অনুসারে 'সামানাধিকরণ্যে' এবং অবচ্ছেদাবচ্ছেদে' বিধেয়ের বিধান বুঝিতে হইলে বুঝিতে হইবে এই যে,—'সংযোগেন পর্বতো বহ্নিমান্' ইত্যাদি রূপ অনুমিতি স্থলে পর্বত পক্ষ (বিশেষ্য বা উদ্দেশ্য), বহ্নি বিধেয় (সাধ্য), সংযোগ সাধ্যতাব-চ্ছেদক বা বিধেয়তাবচ্ছেদক সম্বন্ধ। পর্বতত্ব পক্ষতাবচ্ছেদক, বহ্নিত্ব সাধ্যতাবচ্ছেদক। প্রকৃত-স্থলে পক্ষে যেমন পক্ষতা (বিশেষ্যতা বা উদ্দেশ্যতা) ও বহ্নিতে বিধেয়তা বা সাধ্যতা আছে সেইরূপ সংযোগরূপ সাধ্যতাবচ্ছেদকসম্বন্ধে সংসর্গতারূপ ধর্ম আছে। পক্ষগত বিশেষ্যতা বা উদ্দেশ্যতা যেমন পক্ষতাবচ্ছেদকীভূত পর্বতত্বাবচ্ছিন্ন এবং বহ্নিগত বিধেয়তা যেমন বহ্নিত্বাব-চ্ছিন্ন, সেইরূপ সংযোগগত সংসর্গতা সংযোগরূপ সম্বন্ধাংশে বিশেষণরূপে ভাসমান সংযোগত্ব দ্বারা অবচ্ছিন্ন। পক্ষতাবচ্ছেদক সামানাধিকরণ্যে সাধ্যের বিধান স্থলে 'সংযোগেন বহ্নিমান'

* অবগাহনং ভাসনং ভানং বিষয়ীকরণং প্রকাশনঞ্চ ইত্যেতে শব্দাঃ সমানার্থকাঃ। সুতরাং অবগাহতে ভাসতে ভাতি বিষয়ীক্রিয়তে প্রকাশতে ইতি ক্রিয়াপদানামপি একরূপ এবার্থঃ।

'तृतीयन्तु प्रत्यक्षं प्रायशो विशिष्टवैशिष्ट्यावगाहि* भवति। यथा—कृष्णपशुपूर्णा पशुशाला इति। अत्र कृष्णरूपविशिष्टस्य पशोः पशुशालायां सम्बन्धो भासते। 'दण्डिपूर्णो मठ' इति ज्ञाने दण्डविशिष्टस्य पुरुषस्य वैशिष्ट्यं (सम्बन्धः) मठे प्रतीयते।

विशिष्टज्ञाने एकं विशेष्यम् अपरं विशेषणं भवति। विशेष्यस्यैव उद्देश्यमिति नामान्तरम्। विशेषणस्य प्रकार इति। यथा—'सुन्दरो नरः' इत्यत्र नरो विशेष्यः, सौन्दर्यं प्रकारः, विशेष्ये प्रकारे च यद् विशेषणतया प्रतीयते तद् यथाक्रमं विशेष्यतावच्छेदकं प्रकारतावच्छेदकञ्च भवति। यथा—'मृन्मयोऽयं गिरिः, आश्विने मासि मनोहरपुष्पसमृद्धो भवति'। इत्यादौ गिरौ विशेष्ये मृत्तिका गिरित्वञ्च विशेष्यतावच्छेदकम्, मृत्तिकात्वन्तु विशेष्यतावच्छेदकावच्छेदकम्। एवं मनोहरपुष्पसमृद्धौ

অনুবাদ

'কৃষ্ণপশুপূর্ণা পশুশালা' অর্থাৎ পশুশালাটী কৃষ্ণবর্ণ পশুপূর্ণ (পশুবিশিষ্ট), এই স্থলে কৃষ্ণরূপবিশিষ্ট পশুর পশুশালায় সম্বন্ধ প্রতীত হয়। 'দণ্ডিপূর্ণো মঠঃ', মঠ দণ্ডিপরিপূর্ণ (দণ্ডিবিশিষ্ট), এই জ্ঞানে দণ্ডবিশিষ্ট পুরুষের বৈশিষ্ট্য অর্থাৎ সম্বন্ধ মঠে প্রতীত হইয়া থাকে।

বিশিষ্টজ্ঞানে একটী বিশেষ্য ও অপরটী বিশেষণ হয়। 'উদ্দেশ্য' ইহা বিশেষ্যেরই নামান্তর। 'প্রকার' ইহা বিশেষণের নামান্তর। যথা—'সুন্দরো নরঃ' এইস্থলে 'নর' বিশেষ্য এবং সৌন্দর্য প্রকার। বিশেষ্যাংশে ও প্রকারাংশে যাহা বিশেষণরূপে প্রতীত হয়, তাহা যথাক্রমে বিশেষ্যতাবচ্ছেদক ও প্রকারতাবচ্ছেদক। যথা—'মৃন্ময়োহয়ং গিরিঃ, আশ্বিনে মাসি মনোহরপুষ্পসমৃদ্ধো ভবতি' অর্থাৎ এই মৃত্তিকাময় গিরি, আশ্বিনমাসে মনোহর পুষ্পসমৃদ্ধিবিশিষ্ট হয়; এই স্থলে গিরিরূপ বিশেষ্যে মৃত্তিকা ও গিরিত্ব বিশেষ্যতাবচ্ছেদক, মৃত্তিকা ও গিরিত্ব বিশেষ্যতাবচ্ছেদক, মৃত্তিকাত্ব বিশেষ্যতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদক। মনোহর পুষ্পসমৃদ্ধিরূপ প্রকারীভূত ধর্মাংশে মনোহরপুষ্প বিশেষণ, তাহাতে (ঐ পুষ্পাংশে) মনোহরত্ব এবং পুষ্পত্ব

সুপ্রভা

এখানে কেবল সংযোগত্ব এবং 'মহানসীয় সংযোগেন বহ্নিমান্' এখানে কেবল মহানসীয়ত্ব সংযোগত্ব এই ধর্মদ্বয় সংসর্গতাবচ্ছেদক, অতএব প্রকৃতস্থলীয় প্রথম সংসর্গতা—সংযোগত্ব মাত্রাবচ্ছিন্ন ও দ্বিতীয় সংসর্গতা—মহানসীয়ত্ব ও সংযোগত্ব ধর্মদ্বয়মাত্রাবচ্ছিন্ন।

পক্ষতাবচ্ছেদক ধর্মাবচ্ছেদে পক্ষে সাধ্যের বিধানস্থলে সংযোগত্বাদিরূপ ধর্মই কেবল সংসর্গতাবচ্ছেদকরূপে ভাসমান হয় না, পরন্তু 'সংযোগেন পর্বতো বহ্নিমান্' ইত্যাকার জ্ঞান

---

* বিশিষ্টস্য বিশেষণসম্বন্ধস্য বৈশিষ্ট্যং সম্বন্ধং অবগাহতে বিষয়ী করোতি ইতি বিশিষ্টবৈশিষ্ট্যাবগাহি।

प्रकारे मनोहरपुष्पं विशेषणम् तत्र च मनोहरत्वम् पुष्पत्वञ्च विशेषणतया प्रतीयत इति। पुष्पं प्रकारतावच्छेदकं मनोहरत्वं पुष्पत्वञ्च उभयमेव प्रकारतावच्छेदकतावच्छेदकम्।

विशेष्ये विशेष्यता प्रकारे च प्रकारता वर्त्तते। ते च परस्परं निरूप्यनिरूपक-भावापन्ने। विशेष्यतानिरूपिता प्रकारता भवति, प्रकारतानिरूपिता च विशेष्यतेति, एवं प्रकारता विशेष्यनिरूपिता भवति विशेष्यता च प्रकारनिरूपिता भवति। एतत् सर्वं वृत्तितावर्णनास्थले उक्तप्रायमेव।

विशेषणं द्विविधम् ;—सिद्धं साध्यञ्च। सिद्धं पूर्वावगतं विशेषणम्, विशेष्यस्य इतरेभ्यो व्यावर्तनाय विशेष्यान्तरा प्रयुज्यते। साध्यञ्च पूर्वमप्राप्तं प्राधान्येन विधीयते। साध्यस्य विधेयमिति नाम। यथा—'दयादाक्षिण्यादिगुणैरलङ्कृतो

## অনুবাদ

বিশেষণরূপে প্রতীত হয়, অতএব পুষ্প প্রকারতাবচ্ছেদক এবং মনোহরত্ব ও পুষ্পত্ব এই দুইটী ধর্মই প্রকারতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদক।

বিশেষ্যে বিশেষ্যতা ও প্রকারে প্রকারতা থাকে। উহারা দুইটী পরস্পর নিরূপ্যনিরূপকভাবাপন্ন। যথা—বিশেষ্যতানিরূপিত প্রকারতা এবং প্রকারতা-নিরূপিত বিশেষ্যতা। এই সকল বৃত্তিতার বর্ণনাস্থলে প্রায়ই সূচিত হইয়াছে।

বিশেষণ দুই প্রকার ; সিদ্ধ ও সাধ্য। যে বিশেষণ পূর্বে জ্ঞাত তাহা সিদ্ধ বিশেষণ। উহা বিশেষ্য ভিন্ন পদার্থকে বিশেষ্য হইতে পৃথক্ করিবার জন্য বিশেষ্যের গর্ভে প্রযুক্ত হয়। পূর্বে যাহা জ্ঞাত নহে তাহা সাধ্য, উহা বিশেষ্যাংশে প্রধানভাবে (মুখ্যপ্রকাররূপে) বিহিত হইয়া থাকে। সাধ্যের নাম 'বিধেয়'। উদাহরণ যথা—'দয়াদাক্ষিণ্যাদিগুণযুক্ত পিতৃভক্ত এই রাম সকলের নমস্য' এই স্থলে

## সুপ্রভা

হইলেও তথায় সংযোগত্ব যেমন সংসর্গতাবচ্ছেদকরূপে ভাসমান হয়, সেইরূপ পর্বতত্বব্যাপক বহ্নিপ্রতিযোগিকত্বরূপ আর একটি ধর্মও সংসর্গতাবচ্ছেদকরূপে প্রতীত হয়। অতএব ঐ পক্ষতাবচ্ছেদক ধর্মাবচ্ছেদে সাধ্যবিধান স্থলীয় সংযোগগত সংসর্গতা যেমন সংযোগত্বাবচ্ছিন্ন তেমনই পর্বতত্বব্যাপকবহ্নিপ্রতিযোগিকত্বাবচ্ছিন্ন। ঐ সংসর্গতাবচ্ছেদক ধর্মের ঘটকরূপে বহ্নিস্বরূপ সাধ্যাংশে পর্বতত্বব্যাপকত্ব অবগাহন করে বলিয়া ঐ অবচ্ছেদকাবচ্ছেদে পর্বতে বহ্নির জ্ঞান ভ্রমাত্মক, কিন্তু সামানাধিকরণ্য মাত্রে জ্ঞানস্থলে উক্তরূপ ব্যাপকত্ব অবগাহন না করায় পর্বতত্ব সামানাধিকরণ্যে উক্তরূপ জ্ঞান ভ্রমরূপ নহে। কারণ সকল পর্বতে বহ্নির সত্তামূলক বহ্নিতে পর্বতত্বব্যাপকত্ব না থাকিলেও যৎকিঞ্চিৎ পর্বতে বহ্নি থাকায় উক্ত সামানাধিকরণ্যমাত্রে পর্বতে বহ্নির জ্ঞান যথার্থ।

जनकानुरक्तोऽयं रामः सर्वैर्नमस्य' इत्यत्र विशेष्यस्य रामस्य दयादाक्षिण्यादिगुणैर-लङ्कृतत्वं जनकानुरक्तत्वञ्च पूर्वावगतमिति सिद्धं विशेषणम् इतरव्यावर्तनाय विशेष्य-मध्ये प्रयुक्तम्। नमस्यत्वन्तु पूर्वमसिद्धमिति विधीयते। विधेयस्य विधानञ्च क्वचित् विशेष्यतावच्छेदकसामानाधिकरण्येन, क्वचिच्च विशेष्यतावच्छेदकावच्छेदेन भवति।

यस्मिन् कस्मिन्नपि विशेष्ये यद्विधानं तत् विशेष्यतावच्छेदकसामानाधिकरण्येन (विशेष्यतावच्छेदकस्य समाने एकस्मिन् अधिकरणे वृत्तितया) विधानम्। यथा—'ब्राह्मणो विद्वान् भवति' इत्यनेन न सर्व एव ब्राह्मणा विद्वांसो भवन्तीति विधीयते, किन्तु यत्र यत्र ब्राह्मण्यं वर्तते तेषां मध्ये केषुचित् विद्या वर्तत इति। यत्र यत्र

অনুবাদ

বিশেষ্যভূত রামের দয়াদাক্ষিণ্যাদিগুণযুক্তত্ব ও পিতৃভক্তত্বরূপ ধর্ম পূর্বে জ্ঞাত বলিয়া উহা সিদ্ধ বিশেষণ এবং ইতর পদার্থ হইতে রামকে পৃথক্‌রূপে বুঝাইবার জন্য উহা বিশেষ্যগর্ভে বিশেষণরূপে প্রযুক্ত হইয়াছে। কিন্তু তদ্‌গত নমস্যত্বরূপ ধর্ম পূর্বে অবগত নহে। অতএব উহা বিধেয় বা মুখ্য প্রকাররূপে বিহিত হইয়া থাকে।

বিধেয় পদার্থের বিধান কোথাও বিশেষ্যতাবচ্ছেদক ধর্মের সামানাধিকরণ্যে, আর কোথাও বিশেষ্যতাবচ্ছেদক ধর্মাবচ্ছেদে হয়।

যে কোনও এক বিশেষ্য পদার্থে যে বিধান উহা বিশেষ্যতাবচ্ছেদক ধর্মের সামানাধিকরণ্যে বিধান অর্থাৎ বিশেষ্যতাবচ্ছেদক ধর্মের সমান অর্থাৎ এক বা অভিন্ন অধিকরণে বর্তমানরূপে বিধান। যথা—'ব্রাহ্মণত্ববিশিষ্ট ব্যক্তি বিদ্বান্ হয়' ইহা দ্বারা সকল ব্রাহ্মণই বিদ্বান্ হয় এরূপ বিহিত হয় না, যাহাতে যাহাতে ব্রাহ্মণত্ব বিদ্যমান তাহার মধ্যে কতিপয় ব্রাহ্মণে বিদ্যা অর্থাৎ বিদ্বত্তা থাকে, ইহাই বিহিত হয়।

সুপ্রভা

কেহ কেহ বলেন যে পক্ষতাবচ্ছেদকাবচ্ছেদে সাধ্যের জ্ঞানস্থলে সাধ্যতাবচ্ছেদক সংসর্গাংশে পক্ষতাবচ্ছেদক ব্যাপক সাধ্যপ্রতিযোগিকত্ব বিশেষণরূপে ভাসমান হয় না, পরন্তু পক্ষতাবচ্ছেদক ব্যাপকত্বরূপ পক্ষতাবচ্ছেদকাবচ্ছেদ্যত্ব সাধ্যাংশে প্রকার রূপেই ভাসমান হয়। তথায় জ্ঞানের আকার 'সংযোগেন পর্বতত্বাবচ্ছেদ্য বহ্নিমান্ পর্বতঃ' ইত্যাদি। সামানাধিকরণ্যমাত্র স্থলে 'সংযোগেন বহ্নিমান্ পর্বতঃ' ইত্যাদি। জগদীশ তর্কালঙ্কার পক্ষতা-দীধিতির ব্যাখ্যায় উক্ত মতের উল্লেখ ও তৎখণ্ডন করিয়াছেন;—যথা—'যত্তু পর্বতত্বাবচ্ছেদ্যত্বম্ অবচ্ছেদ্যতাসম্বন্ধেন পর্বতত্বাদিকং বা সাধ্যাংশে প্রকারতয়ৈবানুমিতৌ ভাসতে। তথা চ 'পর্বতত্বাবচ্ছেদ্য বহ্নিমান্' ইত্যেব 'পর্বতত্ববদ্ বহ্নিমা'নিত্যেব বা অনুমিতিরিতি প্রাচীনাঃ, তত্তুচ্ছম্' ইতি। অর্থাৎ

विशेष्यतावच्छेदकं वर्तते, तत्र सर्वत्रैव ( अर्थात् सर्वस्मिन्नेव विशेष्ये ) विधेयस्य विधानं विशेष्यतावच्छेदकावच्छेदेन ( विशेष्यतावच्छेदकस्य अवच्छेदेन व्याप्त्या ) विधानम्। यथा—'मनुष्यो मरणशीलः' इत्यनेन न केषुचित् मनुष्येषु मरणशीलत्वं विधीयते। किन्तु सर्वेष्वेव मनुष्येषु। मनुष्यत्वं व्याप्य सर्वेष्वेव मनुष्येषु मरणशीलत्वं विधीयत इति।

## অনুবাদ

যেখানে যেখানে বিশেষ্যতাবচ্ছেদক ধর্ম বর্তমান, সেই সকল স্থানেই অর্থাৎ সমগ্র বিশেষ্য পদার্থেই বিধেয় বস্তুর বিধানই বিশেষ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছেদে অর্থাৎ বিশেষ্যতাবচ্ছেদকের ব্যাপ্তিসহকারে বা বিশেষ্যতাবচ্ছেদক ধর্মের ব্যাপকরূপে বিধান। যথা—'মনুষ্য মরণশীল' ইহা দ্বারা কতিপয় মনুষ্যে মরণশীলত্ব বিহিত হয় না, কিন্তু সকল মনুষ্যেই মরণশীলত্ব বিহিত হয়। ঐ স্থলে মনুষ্যত্ব ব্যাপিয়া সমস্ত মনুষ্যেই মরণশীলত্ব বিহিত। ( অতএব উক্তস্থলে বিশেষ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছেদে সাধ্য বিধান। )

## সুপ্রভা

প্রাচীনগণ যে বলেন;—পর্বতত্বাবচ্ছেদ্যত্ব ( পর্বতত্বব্যাপকত্ব ) অথবা অবচ্ছেদ্যতাসম্বন্ধে পর্বতত্বাদি ধর্ম অনুমিতিস্থলে সাধ্যাংশে প্রকাররূপেই প্রতীত হয়। তাহার ফলে, 'পর্বতঃ পর্বতত্বাবচ্ছেদ্যবহ্নিমান্' কিংবা 'অবচ্ছেদ্যতাসম্বন্ধেন পর্বতত্ববদ্ বহ্নিমান্' ইত্যাকারই অনুমিতি হয়। উক্ত মত সমীচীন নহে।

উক্ত কারণে পূর্বোক্তরূপ বিধেয়তাবচ্ছেদক সংসর্গগর্ভে পক্ষতাবচ্ছেদকধর্মব্যাপকত্বের ভানাভানপ্রযুক্ত সামানাধিকরণ্যে ও অবচ্ছেদকাবচ্ছেদে জ্ঞানের পারস্পরিক বৈলক্ষণ্য পক্ষই গ্রাহ্য।

একই বস্তুতে যদি দুইটি বিষয়তা বর্তমান হয়, তবে ঐ দুইটী বিষয়তা পরস্পর অভিন্ন ইহা জগদীশপ্রমুখ গ্রন্থকারগণ স্বীকার করেন। যথা—'দণ্ডবৎপুরুষবান্ দেশঃ' ইত্যাদি স্থলে পুরুষে দণ্ডপ্রকারতানিরূপিত বিশেষ্যতা এবং দেশগত বিশেষ্যতানিরূপিত প্রকারতা এই দুইটী বিষয়তা থাকে, ঐ বিশেষ্যতা ও প্রকারতারূপ বিষয়তা দুইটী পরস্পর অভিন্ন। অতএব উক্ত জ্ঞানের বিশেষ পরিচয়ার্থ বলা যায় যে, উক্ত জ্ঞান দণ্ডত্বাবচ্ছিন্নপ্রকারতানিরূপিত পুরুষত্বাবচ্ছিন্ন-বিশেষ্যত্বাভিন্ন প্রকারতানিরূপিত দেশত্বাবচ্ছিন্ন বিশেষ্যতানিরূপক। গদাধর ভট্টাচার্য উক্ত মতে দোষারোপ করিয়া ঐ মত পরিহারপূর্বক ঐ রূপ দুইটী বিষয়তার পরস্পর অবচ্ছেদ্যাব-চ্ছেদকভাব স্বীকার করিয়াছেন। তন্মতে ঐ জ্ঞান দণ্ডত্বাবচ্ছিন্ন প্রকারতা নিরূপিত পুরুষত্বা-বচ্ছিন্ন বিশেষ্যত্বাবচ্ছেদ্য প্রকারতানিরূপিত দেশত্বাবচ্ছিন্নবিশেষ্যতানিরূপক। ঐ মত বৈষম্যের বিবরণ তত্ত্বচিন্তামণির অনুমিতি প্রকরণে গাদাধরী টীকায় দ্রষ্টব্য।

विधेये मुख्यप्रकारता तिष्ठति। मुख्यप्रकारतानिरूपिता विशेष्यता च मुख्य-विशेष्यता भवति। विधेयभिन्ने या प्रकारता सा न मुख्या। एवं या च विशेष्यता मुख्यप्रकारतानिरूपिता न भवति सापि न मुख्यविशेष्यता। अतएव 'जनकानुरक्तोऽयं रामः पूज्यः' इत्यत्र पूज्यत्वरूपविधेयनिष्ठा प्रकारता मुख्या, तन्निरूपितैव च रामनिष्ठा विशेष्यता मुख्या। जनकानुरक्तत्वरूपविशेषणनिष्ठा च प्रकारता न मुख्या, सुतरां तन्निरूपिता रामनिष्ठा विशेष्यतापि न मुख्या।

पुनश्च ज्ञानं द्विविधम्, निश्चयः संशयश्चेति। यत्र ज्ञाने एकमेव, तदेव तद्भाव एव वा प्रकारतया भासते, स निश्चयः। यस्मिंस्तु पुनः तत् तद्भावश्च

## অনুবাদ

যে বস্তু বিধেয়, তাহাতে মুখ্য প্রকারতা থাকে। এবং যে বিশেষ্যতা মুখ্য-প্রকারতানিরূপিতা তাহা মুখ্য বিশেষ্যতা। বিধেয় ভিন্ন বস্তুগত যে প্রকারতা উহা মুখ্য প্রকারতা নহে। এবং যে বিশেষ্যতা মুখ্যপ্রকারতা নিরূপিত নহে, উহা মুখ্যবিশেষ্যতা নহে। অতএব 'পিতৃভক্ত এই রাম পূজনীয়' এইস্থলে পূজনীয়ত্বরূপ বিধেয়গত প্রকারতা মুখ্য প্রকারতা। ঐ মুখ্যপ্রকারতানিরূপিত রামগত বিশেষ্যতাই মুখ্য বিশেষ্যতা। পিতৃভক্তত্বরূপ বিশেষণগত প্রকারতা মুখ্যপ্রকারতা নহে সুতরাং ঐ প্রকারতানিরূপিত রামনিষ্ঠ বিশেষ্যতাও মুখ্যবিশেষ্যতা নহে।

পুনরায় জ্ঞান দ্বিবিধ ; নিশ্চয় ও সংশয়। যে জ্ঞানে একই মাত্র বস্তু অর্থাৎ ভাব অথবা অভাবই মাত্র প্রকাররূপে ভাসমান হয়, তাহা নিশ্চয়। কিন্তু যে

## সুপ্রভা

ঐ সিদ্ধান্তানুসারে জগদীশাদি মতে বিধেয়তার সহিত অভিন্ন প্রকারতা মুখ্য প্রকারতা, এবং বিধেয়তানাত্মক বা বিধেয়তাভিন্ন প্রকারতা গৌণ প্রকারতা, উহা মুখ্য প্রকারতা নহে। গদাধর মতে বিধেয়ত্বাবচ্ছেদ্য প্রকারতা মুখ্য প্রকারতা, এবং বিধেয়ত্বানবচ্ছেদ্য প্রকারতা গৌণ প্রকারতা, উহা মুখ্য প্রকারতা নহে।

'বিধেয়ে মুখ্য প্রকারতা থাকে' এই নিয়ম বিধেয় প্রকারক জ্ঞান স্থলেই বুঝিতে হইবে। কারণ বিধেয় বিশেষ্যক 'পর্বতে বহ্নিঃ' ইত্যাদি জ্ঞানস্থলে বহ্নি প্রভৃতি বিধেয় পদার্থে মুখ্য প্রকারতা থাকে না এবং বিধেয় ভিন্ন পর্বতাদি পদার্থে মুখ্য প্রকারতা থাকে।

ভাষাপরিচ্ছেদ-কারিকায় বিশ্বনাথ 'নিশ্চয়' ও 'সংশয়' এই দ্বিবিধ জ্ঞানের স্বরূপ বর্ণনা যেরূপ করিয়াছেন মূলকারের বর্ণনা তদনুসারী। বিশ্বনাথ বলিয়াছেন যথা—'তদভাবা-প্রকারা ধীস্তৎপ্রকারা তু নিশ্চয়ঃ'। অর্থাৎ জ্ঞানে যে ধর্ম প্রকাররূপে ভাসমান হইবে উহার অভাব প্রকার না হইয়া যদি ঐ ধর্মই মাত্র প্রকার হয়, তবে উহাই তদ্ধর্মের নিশ্চয়। মূলকার

उभयमेव भासते, स संशयः। यथा—'अयं मानुषः' इति निश्चयः, 'दीर्घोऽयं मानुषो न वा' इति संशयः। पूर्वत्र एकमेव मनुष्यत्वं प्रकारः, परत्र मनुष्यत्वं तदभावश्च

### অনুবাদ

জ্ঞানে ভাব ও অভাব উভয় বস্তুই ( প্রকাররূপে ) ভাসমান হয়, তাহা সংশয়। যথা—'এই ব্যক্তি মনুষ্য' ইহা নিশ্চয়। 'এই দীর্ঘাকার ব্যক্তি মনুষ্য কিনা'? ইহা সংশয়। পূর্বস্থলে ( 'এই ব্যক্তি মনুষ্য' এই জ্ঞানে ) একমাত্র মনুষ্যত্বই প্রকার।

### সুপ্রভা

'তদেব তদভাব এব বা' এই বাক্যস্থ ইতর ব্যাবর্তক এব শব্দের উপন্যাস দ্বারা প্রকারীভূত ধর্মের অভাবরূপ ইতরের ব্যাবর্তন বুঝাইয়া বিশ্বনাথেরই আনুগত্য রক্ষা করিয়াছেন। কিন্তু বিশ্বনাথ ও প্রকৃত মূলকার উভয়ের প্রদর্শিত নিশ্চয়ের স্বরূপই যথাশ্রুত রূপে দোষমুক্ত নহে। কারণ 'পর্বতো বহ্নিমান্ জলং বহ্ন্যভাববৎ' এই সমূহালম্বন জ্ঞানে বহ্নি ও বহ্ন্যভাব নিশ্চয় লক্ষণ সমন্বয় হয় না, যেহেতু উক্ত জ্ঞানে যেমন বহ্নি প্রকার হইয়াছে, তেমনই বহ্ন্যভাব প্রকার হইয়াছে এবং যেমন বহ্ন্যভাব প্রকার হইয়াছে তেমনই বহ্ন্যভাবের অভাবরূপ বহ্নিও প্রকার হইয়াছে।

তৎপ্রকারতা ও তদভাবপ্রকারতায় একধর্মাবচ্ছিন্নবিশেষ্যতানিরূপিতত্ব নিবেশ করিলেও 'বহ্নিমান্ বহ্ন্যভাববাংশ্চ পর্বতঃ' ইত্যাদি নিশ্চয়ে অব্যাপ্তি হয়, অতএব উভয় প্রকারতায় একবিশেষ্যতানিরূপিতত্ব নিবেশ করিতে হইবে। 'বহ্নিমান্ বহ্ন্যভাববাংশ্চ পর্বতঃ' ইত্যাদি সমূহালম্বন বা সমুচ্চয়াত্মক জ্ঞানে একাধিক বিশেষ্যতা। উহা গদাধর মতে পরস্পর ভিন্ন, অবচ্ছেদ্যাবচ্ছেদকভাবাপন্ন। ঐ মতানুসারেই পরিষ্কার বুঝিতে হইবে।

ঐরূপ নিবেশ করিলেও 'বহ্নিতদভাববৎ পর্বতবান্ দেশঃ' ইত্যাদিরূপ 'একত্র দ্বয়ং' এই রীতিতে যে নিশ্চয়াত্মক জ্ঞান হয় তাহাতে অব্যাপ্তি দোষের প্রসক্তি হয়। উহার বারণার্থ 'তদভাবাপ্রকারকত্ব' ঘটক অভাব প্রকারতায় অবচ্ছেদকতানাত্মকত্ব বা অচ্ছেদকত্বানবচ্ছিন্নত্ব অথবা 'একত্র দ্বয়ং রীত্যা' জ্ঞানীয় প্রকারতাভিন্নত্ব নিবেশ করিতে হইবে। বিশেষণাংশেই 'একত্র দ্বয়ং রীত্যা' জ্ঞান হয় এবং মুখ্য বিশেষ্যাংশেই সংশয় হয় এই নিয়ম থাকায় 'একত্র দ্বয়ং রীত্যা' জ্ঞানীয় উক্ত অভাব প্রকারতা অবচ্ছেদকতাত্মক অথবা অবচ্ছেদকত্বাবচ্ছিন্ন, তত্তদ্-ভিন্ন নহে। মুখ্য বিশেষ্যাংশে ভিন্ন বিশেষণাংশে সংশয় হয় না এইজন্য সংশয়ত্ব ঘটক অভাব-প্রকারতা অবচ্ছেদকতানাত্মক বা অবচ্ছেদকত্বানবচ্ছিন্ন। 'একত্র দ্বয়ং রীত্যা' জ্ঞান ও সংশয়া-ত্মক পরস্পর ভিন্নরূপ, অতএব সংশয়ীয় প্রকারতা 'একত্র দ্বয়ং রীত্যা' জ্ঞানীয় প্রকারতাভিন্ন। নিষ্কর্ষে 'তৎসংশয়ান্য তৎপ্রকারক জ্ঞানই তন্নিশ্চয়' ইহা প্রতিপন্ন হয়।

'সংশয়ে প্রকারস্য কোটিরিতি নাম' এই মূলাংশ দ্বারা সংশয়ীয় প্রকারতা কোটিত্বাখ্য ইহাই সূচিত হইয়াছে।

उभयमेव प्रकारः। संशये हि एकस्मिन् विशेष्ये प्रतियोगी तदभावश्च परस्परविरुद्धावपि उभौ प्रकारतया भासेते इति नियमः। तत्र भावाभावोभयप्रकारतानिरूपिता एकैव विशेष्यता भवति। यथा—उक्ते उदाहरणे मनुष्यत्वनिष्ठा या प्रकारता, या च मनुष्यत्वाभावनिष्ठा प्रकारता, एतदुभयनिरूपिता एकैव विशेष्यता अस्मिन् दीर्घे विशेष्ये वर्तते। समूहालम्बनस्थले* तु प्रत्येकप्रकारतानिरूपिता पृथक् पृथक् विशेष्यता

**অনুবাদ**

পরবর্তী স্থলে ( 'এই দীর্ঘাকার ব্যক্তি মানুষ কি না' এই জ্ঞানস্থলে ) মনুষ্যত্ব এবং মনুষ্যত্বাভাব এই উভয়ই প্রকার। সংশয়ে প্রতিযোগী এবং তাহার অভাব এই দুই বস্তু পরস্পর বিরুদ্ধ হইলেও একই বিশেষ্যে প্রকাররূপে ভাসমান হইয়া থাকে, ইহাই নিয়ম। তথায় ( সংশয়ে ) ভাব ও অভাব এতদুভয়প্রকারতা-নিরূপিত একই বিশেষ্যতা থাকে। যথা—উক্ত ( 'এই দীর্ঘাকার ব্যক্তি মনুষ্য কিনা' এই ) উদাহরণে মনুষ্যত্বে যে প্রকারতা এবং মনুষ্যত্বাভাবে যে প্রকারতা বিদ্যমান ঐ দুই প্রকারতানিরূপিত একই বিশেষ্যতা 'এই দীর্ঘাকার ব্যক্তি' রূপ বিশেষ্যে আছে। সমূহালম্বনজ্ঞানে কিন্তু প্রত্যেক প্রকারতানিরূপিত এক একটী পৃথক্ পৃথক্ বিশেষ্যতা থাকে ইহাই সংশয়াপেক্ষায় সমূহালম্বনজ্ঞানের পার্থক্য।

**সুপ্রভা**

মূলে সংশয়ের স্বরূপ বর্ণনা স্থলে 'তৎ তদভাবশ্চ উভয়মেব ভাসতে' ইহার সহিত 'একত্র মুখ্যবিশেষ্যে প্রকারতয়া' ইহার যোজনা করিতে হইবে। উহার যোজনা না করিলে 'বহ্নিস্তদভাবশ্চ পর্বতো বহ্নিমান্ জলং বহ্ন্যভাববচ্চ, বহ্নিতদভাববৎ পর্বতবান্ দেশঃ' ইত্যাদি নানা জ্ঞানে উক্ত সংশয় লক্ষণের অতিপ্রসঙ্গ হয়। উক্ত অংশ যোজনা করিলে ঐ অতিপ্রসঙ্গ হইবে না। কারণ উহার মধ্যে প্রথম জ্ঞানে বহ্নি ও তদভাব ভাসমান হইলেও বিশেষ্যে প্রকার-রূপে ভাসমান হয় নাই। দ্বিতীয় জ্ঞানে বহ্নি ও তদভাব বিশেষ্যাংশে প্রকাররূপে ভাসমান

---

* যত্র একস্মিন্ বিশেষ্যে 'একত্র দ্বয়ম্' ইতি রীত্যা বহূনি বিশেষণানি প্রতীয়ন্তে, তজ্ জ্ঞানং সমূহালম্বনম্। ( সমূহঃ ( অনেকে ) আলম্বনং প্রকারতয়া বিষয়ো যস্য তৎ। ) যথা—'বৃক্ষঃ কপিসংযোগী কপিসংযোগাভাববাংশ্চ' ইত্যস্মিন্ জ্ঞানে একস্মিন্ বৃক্ষে কপিসংযোগস্তদভাবশ্চ একদৈব বিশেষণতয়া প্রতীয়তে। অথচ নায়ং সংশয়ঃ। অত্র হি কপিসংযোগনিষ্ঠপ্রকারতা নিরূপিতা বৃক্ষনিষ্ঠা একা বিশেষ্যতা, একা চ কপিসংযোগাভাবনিষ্ঠপ্রকারতা-নিরূপিতেতি।

**অনুবাদ**

যে জ্ঞানে এক বিশেষ্যপদার্থে 'একত্র দ্বয়ং রীত্যা' জ্ঞানের মত এক বিশেষ্যে অনেক বিশেষণের প্রতীতি হয়, সেই জ্ঞান সমূহালম্বন জ্ঞান। ( সমূহ অর্থাৎ অনেক, আলম্বন অর্থাৎ প্রকাররূপে বিষয় যার সেই জ্ঞান। ) যথা—বৃক্ষঃ কপিসংযোগী তদভাববাংশ্চ' এই জ্ঞানে এক বৃক্ষে কপি সংযোগ ও তদভাব এই দুইটী বস্তু একদাই বিশেষণরূপে প্রতীত হয়। অথচ ঐ জ্ঞান সংশয় নহে। এই জ্ঞানে বৃক্ষনিষ্ঠ একটী বিশেষ্যতা কপিসংযোগপ্রকারতানিরূপিত ও অপর একটী বিশেষ্যতা কপিসংযোগাভাবপ্রকারতানিরূপিত।

भवति इति संशयात् समूहालम्बनस्य भेदः। संशये प्रकारस्य कोटिरिति नाम। 'अयं स्थाणुर्वा पुरुषो वा' इत्यादौ संशये कोटिचतुष्टयमस्ति। स्थाणुत्वं, स्थाणुत्वाभावः, पुरुषत्वं पुरुषत्वाभावश्चेति। अत एवायं संशयः चतुष्कोटिक इत्युच्यते। केचित्तु वदन्ति ;—अत्रापि कोटिद्वयमेवास्ति ; स्थाणुत्वम् ; स्थाणुत्वविरुद्धपुरुषत्वञ्चेति।

संशये च क्वचित् कोटिद्वयं समानं भवति। क्वचिच्च काचिदेका कोटिरुत्कटा भवति। 'आश्विने मासि वृष्टिरधिका भवति न वा' इति सन्देहे अधिकवृष्टेः

### অনুবাদ

সংশয়াত্মক জ্ঞানে প্রকারীভূত ধর্মের নাম কোটি 'ইহা স্থানু অথবা পুরুষ' ইত্যাদিরূপ সংশয়ে চারিটী কোটি বিদ্যমান ; যথা—স্থানুত্ব, স্থানুত্বাভাব, পুরুষত্ব, পুরুষত্বাভাব। অতএব ঐ সংশয়কে চতুষ্কোটিক বলা হয়।

কেহ কেহ বলেন যে এ সংশয়েও কেবল দুইটী কোটি প্রতীয়মান হয়। ঐ দুইটী কোটি যথা—স্থাণুত্ব ও স্থাণুত্বের বিরুদ্ধে পুরুষত্ব। সংশয়জ্ঞানে কোনও স্থলে কোটিদ্বয়ই সমান (অর্থাৎ একটী কোটির ঔৎকট্য ও অপর কোটির অনৌৎকট্য না থাকায় সমভাবাপন্ন)। আর কোনও স্থলে দুইটী কোটীর একটী কোটির ঔৎকট্য (ও অপরটী কোটির অনৌৎকট্য) থাকে। যথা—'আশ্বিন মাসে

### সুপ্রভা

হইলেও একই বিশেষ্যে ঐ উভয় প্রকাররূপে ভাসমান হয় নাই। তৃতীয় স্থলে বহ্নি ও তদভাব পর্বতরূপ একই বিশেষ্যে প্রকাররূপে ভাসমান হইলেও উক্ত 'একত্র দ্বয়ং রীত্যা' জ্ঞানে পর্বত মুখ্য বিশেষ্য না হওয়ায় অতিপ্রসঙ্গ হইবে না। 'একত্র মুখ্য বিশেষ্যে প্রকারতয়া' এই যোজিত অংশেরও যথাশ্রুত অর্থ পরিহার করিয়া 'একত্র মুখ্যবিশেষ্যতানিরূপিতপ্রকারতয়া' এইরূপ অর্থ করিতে হইবে। তাহা না করিলে 'পর্বতো বহ্নিমান্ বহ্ন্যভাববাংশ্চ' ইত্যাদি সমূহালম্বনজ্ঞানে অতিপ্রসঙ্গ হয়।

বিশ্বনাথ ভাষাপরিচ্ছেদ-কারিকায় যে 'স সংশয়ো মতির্যা স্যাদেকত্রাভাবভাবয়োঃ' এই-ভাবে সংশয়ের স্বরূপ বর্ণনা করিয়াছেন। উহার এবং এক ধর্মি ঘটিত স্থলান্তরীয় সংশয় লক্ষণেরও ঐরূপ নিষ্কৃষ্ট অর্থে তাৎপর্য বুঝিতে হইবে। মুক্তাবলীর দিনকরী টীকাকার মহাদেব ভট্ট স্বীয় দিনকরী টীকায় প্রকারান্তরে সংশয়ের নিষ্কৃষ্ট স্বরূপ বর্ণনা করিয়াছেন যথা,—'স্বীয়ৈককোটিপ্রকারত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিবধ্যতা নিরূপিত প্রতিবন্ধকতাবচ্ছেদকীভূতাপরকোটিপ্রকারতাশালি-জ্ঞানত্বং সংশয়ত্বমিতি ধ্যেয়ম্'।

'সংশয়ত্ব জাতিবিশেষ' এই মত খণ্ডনের জন্য মহাদেবভট্ট বলিয়াছেন,—'যত্তু সংশয়ত্বং জাতিবিশেষ ইতি তন্ন, চাক্ষুষত্বাদিনা সঙ্করপ্রসঙ্গাৎ' ইতি। 'সঙ্করশ্চ পরস্পরাত্যন্তাভাব-সমানাধিকরণয়োরেকত্র সমাবেশঃ।' অর্থাৎ 'সংশয়ত্ব জাতিবিশেষ' এই যে বলা হয় তাহা

তদভাবস্য বা বোধকং কিমপি চিহ্নমধুনা নাস্তীতি নৈকাপি কোটিরুত্কটা। পরন্তু 'ভাদ্রে মাসি বৃষ্টির্ভবতি ন বা' ইতি সংশয়ে ভাদ্রমাসস্য বর্ষাকালতয়া বৃষ্টিকোটিরুত্কটা ইত্যয়ং সংশয়ঃ উত্কটৈককোটিকঃ। উত্কটৈককোটিকঃ সংশয় এব 'সম্ভাবনে'ত্যুচ্যতে। অতএব 'ভাদ্রে মাসি বৃষ্টির্ভবতি ন বা' ইতি জ্ঞানং 'সম্ভাবনা' ইত্যলম্।

ইতি মহামহোপাধ্যায় শ্রীমন্মহেশচন্দ্রন্যায়রত্ন-প্রণীতঃ
'নব্যন্যায়ভাষাপ্রদীপঃ' সমাপ্তঃ।

## অনুবাদ

অধিক বৃষ্টি হয় কিনা' এইরূপ সংশয়স্থলে অধিক বৃষ্টি বা তদভাবের জ্ঞাপক কোনও চিহ্নই তৎকালে না থাকায় কোনও একটি কোটির ঔৎকট্য নাই, পরন্তু 'ভাদ্রমাসে বৃষ্টি হয় কিনা' এইরূপ সংশয় স্থলে ভাদ্রমাস বর্ষাকাল বলিয়া বৃষ্টিরূপ কোটি অংশে ঔৎকট্য বর্তমান, অতএব ঐ সংশয় উৎকটৈককোটিক সংশয়। যে সংশয়ের একটী কোটিতে ঔৎকট্য থাকে সেই সংশয় 'সম্ভাবনা' নামে অভিহিত হয়। অতএব 'ভাদ্রমাসে বৃষ্টি হয় কি না' এই জ্ঞান সম্ভাবনা। অধিক নিষ্প্রয়োজন।

মহামহোপাধ্যায় শ্রীমহেশচন্দ্র ন্যায়রত্নকৃত-নব্যন্যায়ভাষাপ্রদীপের
বঙ্গভাষানুবাদ সমাপ্ত।

## সুপ্রভা

নহে। কারণ সংশয়ত্ব জাতি হইলে চাক্ষুষত্বাদিজাতি দ্বারা সঙ্করপ্রসঙ্গ হয়'। 'পরস্পর অত্যন্তাভাবের সমানাধিকরণ ধর্মের একত্র সমাবেশ বা সামানাধিকরণ্য সঙ্কর পদার্থ। ঐ সঙ্কর বা সাঙ্কর্য জাতিত্বের বাধক।

উক্ত সমূহালম্বনজ্ঞানের পাদটীকায় যে 'একত্র দ্বয়ম্ ইতি রীত্যা বহূনি বিশেষণানি প্রতীয়ন্তে' এই অংশ বলা হইয়াছে, তাহার তাৎপর্য এই—'একত্র দ্বয়ং রীত্যা' জ্ঞানে যেমন এক বিশেষ্যাংশে একাধিক ধর্ম প্রকাররূপে ভাসে, এ জ্ঞানেও সেইরূপ একাধিক ধর্ম এক বিশেষ্যে ভাসে। কিন্তু এই সমূহালম্বন জ্ঞান 'একত্র দ্বয়ং রীত্যা' জ্ঞানাত্মক নহে। ইহা নৈয়ায়িক মতে একটী পারিভাষিক বিশেষজ্ঞান। উহার একটী বিশেষ্যতা, সমূহালম্বনে একাধিক বিশেষ্যতা ইত্যাদি বৈলক্ষণ্য বিদ্যমান।

মহামহোপাধ্যায় শ্রীকালীপদ তর্কাচার্যকৃত-নব্যন্যায় ভাষাপ্রদীপের
'সুপ্রভা' বিবৃতি সমাপ্ত।

# नव्यन्याय-भाषाप्रदीपस्य

## सानुवाद-

## परिशिष्टम्

— ❀ —

[ महामहोपाध्याय-श्रीकालीपदतर्काचार्यकृतम् ]

लक्षण-लक्षणप्रकरणम्—लक्ष्यते वस्तु येनेति व्युत्पत्त्या करणसाधनोऽयं लक्षणशब्दः। तदर्थस्वरूपञ्च लक्ष्यस्य असाधारणो धर्म इति। लक्ष्यस्य असाधारणो धर्मश्च लक्ष्यतावच्छेदकसमनियतो धर्मः। स च प्रकृतलक्ष्यतावच्छेदकव्याप्यः सन् प्रकृतलक्ष्यतावच्छेदकव्यापकः, प्रकृतलक्ष्येतरावृत्तिः सन्—सकलप्रकृतलक्ष्यवृत्तिरिति यावत्। यथा गोः सास्नावत्त्वं (गलकम्बलवत्त्वम्) लक्षणम्। तद्धि गोत्वरूपस्य प्रकृतलक्ष्यतावच्छेदकस्य व्याप्यं व्यापकञ्च। एवमन्यत्रापि।

लक्षणस्य लक्ष्यस्य तत्तद्विशेषरूपेण व्यवहारः लक्ष्येतरभिन्नत्वेनानुमानञ्चेति फलद्वयमस्ति। तेन लक्षणं व्यवहारौपयिकं इतरभेदानुमापकञ्चेति द्विधा व्यपदिश्यते।

### অনুবাদ

যে ধর্ম দ্বারা বস্তু বিশেষরূপে লক্ষিত হয় তাহা 'লক্ষণ' এই ব্যুৎপত্তি অনুসারে লক্ষণশব্দ করণবাচ্যে 'লক্ষ' ধাতুর উত্তর অনট্ প্রত্যয় দ্বারা নিষ্পন্ন। সেই লক্ষণশব্দের অর্থ লক্ষণের স্বরূপ বা লক্ষণ, লক্ষ্য বস্তুর অসাধারণ ধর্ম। 'লক্ষ্যবস্তুর অসাধারণ ধর্ম' ইহার অর্থ লক্ষ্যতাবচ্ছেদক-সমনিয়ত অর্থাৎ—প্রকৃত লক্ষ্যতাবচ্ছেদক ধর্মের ব্যাপ্য হইয়া প্রকৃতলক্ষ্যতাবচ্ছেদক ধর্মের ব্যাপক ধর্ম। উহার সরল নিষ্কৃষ্টার্থ—লক্ষ্যের অতিরিক্ত বস্তুতে না থাকিয়া যে ধর্ম প্রকৃত সমগ্র লক্ষ্য বস্তুতে থাকে এমন ধর্ম। উদাহরণ যথা—গোর লক্ষণ সাস্নাবত্ত্ব (গলকম্বলবত্ত্ব)। ঐ ধর্ম প্রকৃত লক্ষ্যতাবচ্ছেদক গোত্বের ব্যাপ্য এবং উহার ব্যাপক। অন্য স্থলেও এইরূপ।

লক্ষ্য বস্তুর সেই সেই লক্ষ্যতাবচ্ছেদক বিশেষধর্মরূপে ব্যবহার এবং লক্ষ্যেতর ভিন্নরূপে লক্ষ্যের অনুমান এই দুইটী লক্ষণের ফল। এই হেতু লক্ষণকে ব্যবহারোপয়িক এবং ইতরভেদানুমাপক এই দুই নামে অভিহিত করা হয়।

इतरभेदः साध्यः, लक्षणञ्च

लक्षणेन लक्ष्ये इतरभेदानुमाने लक्ष्यं वस्तु पक्षः, इतरभेदः साध्यः, लक्षणञ्च हेतुः। यथा गौर्गवेतरभिन्ना सास्नावत्त्वरूपलक्षणवत्त्वादित्यत्र प्रकृतलक्ष्यभूतो गोपदार्थः पक्षः, गोरूपलक्ष्येतरभेदः साध्यः, सास्नावत्त्वरूपं लक्षणं हेतुः। एवं सर्वत्र बोध्यम्।

कस्यापि धर्मस्य लक्षणत्वेनोपन्यासावसरे तत्र विशेषतो विचार्य अव्याप्त्यति-व्याप्त्यसम्भवानां दोषाणां वर्जनं कार्यम्। लक्षणत्वेनाभिमतस्य धर्मस्य तद्दोषान्यतम-दोषाक्रान्तत्वे तस्य लक्षणत्वमेव नोपपद्यते। तथा हि,—

अव्याप्तिर्नाम लक्षणत्वेनाभिमतस्य धर्मस्य लक्ष्यैकदेशावृत्तित्वं, किञ्चिल्लक्ष्य-वृत्तित्वे सति किञ्चिल्लक्ष्यावृत्तित्वमिति। तच्च—लक्ष्यतावच्छेदकसामानाधिकरण्ये सति लक्ष्यतावच्छेदकसमानाधिकरणाभावप्रतियोगित्वमिति वा। असम्भवस्थले अतिप्रसङ्गवारणाय सत्यन्तम्। तद्दोषग्रस्तो लक्षणत्वाभिमतो धर्मो यथा—गोः कपिलात्वं, कपिला नाम गोविशेषः। अतः कपिलात्वं कपिलायामेव गवि, नान्यत्र गोविशेषे।

### অনুবাদ

লক্ষণদ্বারা লক্ষ্যে ইতরভেদের অনুমানস্থলে প্রকৃত লক্ষ্য বস্তু পক্ষ, লক্ষ্যে-তরভেদ সাধ্য, প্রকৃত লক্ষণ হেতু। উদাহরণ যথা—গোপদার্থ গোভিন্ন মহিষাদি হইতে ভিন্ন, যেহেতু তাহাতে সাস্নাবত্ত্বরূপ গোলক্ষণ বিদ্যমান। এই স্থলে গোপদার্থরূপ লক্ষ্য বস্তু পক্ষ, গোরূপ লক্ষ্য বস্তুর ইতর মহিষাদির ভেদ সাধ্য, এবং সাস্নাবত্ত্বরূপ লক্ষণ হেতু। এইরূপ সর্বত্র বুঝিতে হইবে।

কোনও একটী ধর্মকে যখন লক্ষণরূপে উপন্যাস করা হইবে তখন তথায় বিশেষ বিবেচনাপূর্বক 'অব্যাপ্তি, অতিব্যাপ্তি ও অসম্ভব' এই তিনটী লক্ষণদোষ পরিহার করিতে হইবে। কারণ লক্ষণরূপে অভিমত ধর্ম যদি ঐ তিনটী দোষের যে কোনও একটি দোষগ্রস্ত হয়, তবে তাহা পূর্বোক্তরূপ লক্ষণই হইতে পারে না। কারণ 'অব্যাপ্তি' পদের অর্থ লক্ষণরূপে পরিকল্পিত ধর্মের লক্ষ্যৈকদেশে অবর্তমানতা, তাহা কিছু লক্ষ্য বস্তুতে থাকিয়া কিছু লক্ষ্যবস্তুতে না থাকা। অথবা লক্ষ্যতা-বচ্ছেদক ধর্মের সমানাধিকরণ হইয়া লক্ষ্যতাবচ্ছেদক সমানাধিকরণ অভাবের প্রতিযোগী হওয়া। অসম্ভবদোষ স্থলে উক্ত অব্যাপ্তিলক্ষণের অতিপ্রসঙ্গ বারণার্থ মূলে 'সত্যন্ত' দল। (উহারই অর্থ—'কিছু লক্ষ্য বস্তুতে থাকিয়া।)

লক্ষণরূপে অভিমত উক্ত 'অব্যাপ্তি' দোষগ্রস্ত ধর্মের উদাহরণ যথা।—গো'র লক্ষণরূপে অভিমত 'কপিলাত্ব' ধর্ম। 'কপিলা' গোবিশেষ। অতএব কপিলাত্ব-

प्रकृतलक्ष्यतावच्छेदकस्य गोत्वस्य तत्रोभयत्रैव सत्त्वात् कपिलात्वस्य धर्मस्य प्रकृत-लक्ष्यतावच्छेदकव्यापकत्वाभावेन तस्य गोलक्षणत्वं न भवितुमर्हतीति भावः।

असम्भवो नाम लक्षणत्वेनाभितस्य धर्मस्य निखिललक्ष्येष्ववर्तमानत्वम्। निखिले-त्यनेन लक्ष्यस्य विशेषणादव्याप्तावसम्भवलक्षणस्यातिव्याप्तिनिरासः। तद्दोषाक्रान्तस्य लक्षणत्वाभिमतधर्मस्योदाहरणं यथा—गोः लक्षणत्वेन प्रस्तुतम्, प्रतिचरणमेकैकमात्र-खुरविशिष्टत्वम्। तस्यापि प्रकृतलक्ष्यतावच्छेदक-व्यापकत्वाभावादेव न निरुक्तलक्षणत्व-सम्भवः।

अतिव्याप्तिर्नाम लक्ष्यातिरिक्तवृत्तित्वम्। तद्दोषाक्रान्तधर्मस्य उदाहरणं यथा—गोर्लक्षणत्वेनाभिमतं शृङ्गित्वादिकम्। तथाभूतस्य धर्मस्य प्रकृतलक्ष्यतावच्छेदकगोत्व-व्याप्यत्वाभावादेव न गोलक्षणत्वम्।

অনুবাদ

রূপ ধর্ম ঐ কপিলানামক 'গো'তেই থাকে। অন্য 'গো'বিশেষে থাকে না। কিন্তু প্রকৃত লক্ষ্যতাবচ্ছেদক গোত্বরূপ ধর্ম ঐ দুই স্থলেই অর্থাৎ কপিলা গো এবং তদিতর গো, এই দুই বস্তুতেই বিদ্যমান হওয়ায় 'কপিলাত্ব' ধর্ম গোস্বরূপ লক্ষ্যতাব-চ্ছেদক ধর্মের ব্যাপক হয় না বলিয়া ঐ 'কপিলাত্ব' 'গো'র লক্ষণ হইতে পারে না।

অসম্ভব নামক দোষ—লক্ষণরূপে অভিপ্রেত ধর্মের সমগ্র প্রকৃত লক্ষ্য-বস্তুতে অসত্তা। মূলে সমগ্রার্থক 'নিখিল' এই পদ দ্বারা লক্ষ্য বিশেষিত করায় 'অব্যাপ্তি' দোষে ঐ অসম্ভবলক্ষণের অতিব্যাপ্তি বারিত হয়। লক্ষণরূপে অভিমত তদ্দোষাক্রান্ত ধর্মের উদাহরণ যথা—গোজাতি লক্ষণরূপে প্রস্তুত 'প্রত্যেক চরণে কেবল এক একটী খুরবিশিষ্টত্ব'। ঐ ধর্মও প্রকৃত লক্ষ্যতাবচ্ছেদক গোত্বরূপ ধর্মের ব্যাপক না হওয়ায় গো'র লক্ষণ হইতে পারে না।

অতিব্যাপ্তি নামক দোষের স্বরূপ—লক্ষ্যবস্তু হইতে যাহা ভিন্ন তাহাতে বর্তমানত্ব। তদ্দোষাক্রান্ত ধর্মের উদাহরণ যথা—গোজাতির লক্ষণরূপে উপস্থাপিত শৃঙ্গিত্বাদি। তাদৃশ ধর্ম প্রকৃত লক্ষ্যতাবচ্ছেদক গোত্বের ব্যাপ্য না হওয়ায়ই গো'র লক্ষণ নহে। এইরূপে লক্ষণলক্ষণের অর্থ বিচার করিলে 'অব্যাপ্তি, অতিব্যাপ্তি ও অসম্ভব' এই দোষত্রয় শূন্য ধর্মই লক্ষণ এই অর্থ পর্যবসিত হয়। ব্যবহারোপয়িক লক্ষণ স্বজ্ঞান দ্বারা লক্ষ্যবস্তুর লক্ষ্যতাবচ্ছেদক বিশেষ বিশেষ ধর্মরূপে ব্যবহারের কারণ হয়। ঐ লক্ষণ অব্যাপ্তি বা অসম্ভব দোষাক্রান্ত হইলে সেই লক্ষণ যে লক্ষ্যবস্তুতে না থাকায় প্রকৃত অব্যাপ্তি বা অসম্ভব দোষ ঘটে সেই লক্ষ্যবস্তুতে

इत्थञ्च लक्षण-लक्षणार्थविचारेण अव्याप्त्यतिव्याप्त्यसम्भवेति त्रितयदोषरहित-धर्मस्यैव लक्षणत्वमिति पर्यवस्यति ।

लक्षणस्य व्यवहारसाधनत्वे अव्याप्तिदोषाक्रान्तत्वे असम्भवदोषाक्रान्तत्वे वा तत्तल्लक्षणाभाववति लक्ष्ये तत्तल्लक्षणेन विशेषव्यवहारानुपपत्तिः। अतिव्याप्ति-दोषाक्रान्तलक्षणस्थले लक्ष्यभिन्ने तादृशलक्षणवति लक्ष्यतावच्छेदकरूपेण व्यवहारा-पत्तिः।

लक्षणस्य इतरभेदानुमापकत्वे अव्याप्तिदोषग्रस्तस्य लक्षणस्य इतरभेदानुमाने भागासिद्धिः। असम्भवदोषग्रस्तस्य स्वरूपासिद्धिः। अतिव्याप्तिदोषग्रस्तस्य च व्यभिचारो दोषः। विस्तरः स्वयमूहनीयः। उक्तस्वरूपासिद्धि-व्यभिचारौ हेत्वा-भासान्तर्गतौ।

हेत्वाभासाः—हेतोराभासाः, हेतुवदाभासन्ते वा इति व्युत्पत्तिभेदेन अनुमापक-हेतोर्दोषा दुष्टहेतवो वा हेत्वाभासपदार्थः। हेतुदोषरूपार्थकल्पे तल्लक्षणं यथा—

### অনুবাদ

প্রকৃত লক্ষণ দর্শন মূলক প্রকৃত লক্ষ্যতাবচ্ছেদক বিশেষ ধর্মরূপে ব্যবহার অনুপপন্ন হয়।

উক্ত লক্ষণ অতিব্যাপ্তি দোষাক্রান্ত হইলে লক্ষ্যের অতিরিক্ত যে বস্তুতে ঐ লক্ষণ থাকে, তাহাতে উক্ত লক্ষণমূলক প্রকৃত লক্ষ্যতাবচ্ছেদক বিশেষ ধর্মরূপে অযথার্থ ব্যবহারের আপত্তি ঘটে।

লক্ষণ যখন ইতরভেদানুমাপক তখন উক্ত লক্ষণ অব্যাপ্তি দোষগ্রস্ত হইলে লক্ষণ দ্বারা লক্ষ্যে ইতরভেদানুমানে লক্ষণ রূপ হেতু পক্ষের একদেশে না থাকায় 'ভাগাসিদ্ধি' বা 'আংশিক স্বরূপাসিদ্ধি' দোষ ঘটে। 'অসম্ভব' দোষাক্রান্ত হইলে নিখিল লক্ষ্যরূপ নিখিল পক্ষেই লক্ষণরূপ হেতুর অসত্তা নিবন্ধন অবচ্ছেদাব-চ্ছেদেই অসিদ্ধি দোষ হইয়া থাকে। উক্ত লক্ষণ অতিব্যাপ্তি দোষাক্রান্ত হইলে লক্ষণরূপ হেতু ইতরভেদানুমানে ব্যভিচারদোষদুষ্ট হয়। অতএব লক্ষণ যাহাতে অব্যাপ্তি, অসম্ভব ও অতিব্যাপ্তি এই ত্রিবিধ দোষমুক্ত হয় তদ্বিষয়ে বিশেষ অবহিত হওয়া আবশ্যক। এতদতিরিক্ত বিবরণ স্বয়ং অনুসন্ধেয়। উক্ত অসিদ্ধি ও ব্যভিচার হেত্বাভাসান্তর্গত।

হেত্বাভাস—হেতুর আভাস, অর্থাৎ অনুমাপক হেতুর দোষ, অথবা হেতুর ন্যায় (সদ্ধেতুর ন্যায়ই) যাহা প্রতিভাত হয়, এই বিভিন্ন ব্যুৎপত্তি

यद्रूपावच्छिन्नविषयकनिश्चयसामान्यं प्रकृतानुमितिप्रतिबन्धकं तद्रूपावच्छिन्नत्वं हेत्वाभासत्वम्। यद्रूपपदेन 'वह्निमान् ह्रद' इत्यादौ वह्न्यभावविशिष्टह्रदत्वादिरूपो दोषतावच्छेदकधर्मो ग्राह्यः। तदवच्छिन्नविषयता वह्न्यभाववान् ह्रद इत्यादिरूपप्रमाज्ञाननिरूपिता ह्रदत्वाद्यवच्छिन्नविशेष्यतैव तस्यास्तदतिरिक्तत्वकल्पने गौरवात्। निरुक्तह्रदत्वाद्यवच्छिन्नविशेष्यतायां वह्न्यभावविशिष्ट-ह्रदत्वादिरूपविशिष्टधर्मावच्छिन्नत्वस्वीकारे मानञ्च 'वह्न्यभाववान् ह्रद' इत्यादि ज्ञानं विषयितासम्बन्धेन वह्न्यभावविशिष्टह्रदत्वावच्छिन्नवत्'इति प्रतीतिरेव। तथाहि —तद्धर्मावच्छिन्नविषयतानिरूपिता विषयितैव तद्धर्मावच्छिन्नस्य सम्बन्धः, अतः प्रकृतस्थले तादृशरूपावच्छिन्नस्य सम्बन्धत्वेनाभिमता विषयता तादृशरूपावच्छिन्नविषयतानिरूपिता न स्यात्, तदा सा तादृशरूपावच्छिन्नस्य सम्बन्धो न स्यात्। भवति चात्र प्रतीतौ विषयिता तादृशरूपावच्छिन्नस्य सम्बन्धः। अतएव निरुक्तविषयितानिरूपकविषयतायां तद्रूपावच्छिन्नत्वसिद्धिः।

### অনুবাদ

অনুসারে হেত্বাভাসপদের অর্থ অনুমাপক হেতুর দোষ অথবা দুষ্ট অনুমাপক হেতু।

অনুমাপক হেতুর দোষরূপ অর্থকল্পে হেত্বাভাসলক্ষণ যথা—যদ্রূপাবচ্ছিন্নবিষয়ক নিশ্চয়মাত্রই প্রকৃতানুমিতিপ্রতিবন্ধক, তদ্রূপাবচ্ছিন্ন বস্তুই হেত্বাভাস। 'যদ্রূপাবচ্ছিন্নবিষয়ক' এই স্থলে 'যদ্রূপ' পদে 'বহ্নিমান্ হ্রদঃ' ইত্যাদিরূপ অনুমিতিস্থলে বহ্ন্যভাববিশিষ্ট হ্রদত্বাদিরূপ প্রকৃতদোষতাবচ্ছেদক ধর্ম গ্রহণ করিতে হইবে। তদ্রূপাবচ্ছিন্ন বিষয়তাপদে 'বহ্ন্যভাববান্ হ্রদঃ' ইত্যাদিরূপ প্রমাজ্ঞানীয় হ্রদত্বাদ্যবচ্ছিন্নবিশেষ্যতাকেই বুঝিতে হইবে। (উহা আর একটী অতিরিক্ত বিষয়তা নহে।) উহা তদপেক্ষা অতিরিক্ত কল্পনা করিলে গৌরব হয়। উক্ত স্থলীয় হ্রদত্বাদ্যবচ্ছিন্ন বিশেষ্যতাতে বহ্ন্যভাববিশিষ্ট-হ্রদত্বাদিরূপবিশিষ্টধর্মাবচ্ছিন্নত্বস্বীকারের পক্ষে প্রমাণ—'বহ্ন্যভাববান্ হ্রদ' ইতি প্রমাজ্ঞানং বিষয়িতাসম্বন্ধেন বহ্ন্যভাববিশিষ্টহ্রদত্বাবচ্ছিন্নবৎ' ইত্যাদি প্রতীতি। উহা উপপাদন এই—তত্তদ্ধর্মাবচ্ছিন্নবিষয়তানিরূপিত বিষয়িতাই জ্ঞানাদিতে তত্তদ্ধর্মাবচ্ছিন্নের সম্বন্ধ। অতএব প্রকৃত প্রতীতিস্থলে তত্তদ্রূপাবচ্ছিন্নের সম্বন্ধরূপে বিষয়িতা যদি তত্তদ্রূপাবচ্ছিন্ন বিষয়তানিরূপিত না হয়, তবে ঐ বিষয়িতা উক্ত জ্ঞানে তত্তদ্রূপাবচ্ছিন্নের সম্বন্ধই হইতে পারে না। অথচ এই প্রতীতিতে বিষয়িতা

यथाश्रुतस्य निरुक्तहेत्वाभासलक्षणस्य संक्षिप्तार्थस्तु यद्रूपावच्छिन्नविषयताक-निश्चयत्वव्यापकं प्रकृतानुमितित्वव्यापकप्रतिवध्यतानिरूपितप्रतिबन्धकत्वं तद्रूपवत्त्वम् हेत्वाभासत्वम् ( हेतुदोषत्वम् )। उदाहरणं यथा 'वह्निमाम् ह्रद' इत्याद्यनुमानस्थले वह्न्यभाववद् ह्रद इत्यादिः। तथाहि 'वह्न्यभाववान् ह्रद' इत्येवं वह्न्यभाव-वद्ह्रदत्वावच्छिन्नविषयकनिश्चयः 'वह्निमान् ह्रद' इत्यनुमितिसामान्यप्रतिबन्धकः अतस्यत्र वह्न्यभाववद्ह्रदत्वावच्छिन्नो दोषः। एवमन्यत्रापि।

प्रकृतनिश्चये अप्रामाण्यज्ञानानास्कन्दितत्वानाहार्यत्वादिकं विशेषणं देयम्। अन्यथा 'वह्न्यभाववान् ह्रद' इति ज्ञानमप्रमा इत्येवमप्रामाण्यज्ञानास्कन्दितस्य 'ह्रदो वह्न्यभाववान् वह्निमांश्च' इत्येवमाहार्याकारकस्य वा 'वह्न्यभाववान् ह्रद' इति निश्चयस्य 'वह्निमान् ह्रद' इत्यनुमितिप्रतिबन्धकत्वाभावादसम्भवापत्तेः।

**অনুবাদ**

তাদৃশরূপাবচ্ছিন্নের সম্বন্ধ হইয়া থাকে। এই কারণেই উক্ত বিষয়িতানিরূপক-বিষয়তায় তত্তদ্রূপাবচ্ছিন্নত্ব সিদ্ধ হয়।

যথাশ্রুত নিরুক্ত হেত্বাভাসলক্ষণের সংক্ষিপ্ত অর্থ, যথা—প্রকৃতানুমিতিত্ব-ব্যাপকপ্রতিবধ্যতানিরূপিত প্রতিবন্ধকতা যদ্রূপাবচ্ছিন্নবিষয়তানিরূপকনিশ্চয়ত্বের ব্যাপক তদ্রূপবিশিষ্ট বা তদ্ধর্মাবচ্ছিন্নই হেত্বাভাস ( অনুমাপক হেতুর দোষ )। উদাহরণ যথা—'বহ্নিমান্ হ্রদঃ' ইত্যাদিরূপ অনুমিতি স্থলে 'বহ্ন্যভাববদ্ হ্রদঃ' ইত্যাদি। উপপত্তি যথা—'বহ্ন্যভাববান্ হ্রদঃ' এইরূপ বহ্ন্যভাববদ্ হ্রদত্বাবচ্ছিন্ন-বিষয়কনিশ্চয়সামান্য 'বহ্নিমান্ হ্রদঃ' ইত্যাকার অনুমিতি সামান্যের প্রতিবন্ধক অর্থাৎ 'বহ্নিমান্ হ্রদঃ' ইত্যাকার বহ্নিত্বাবচ্ছিন্নপ্রকারক হ্রদত্বাবচ্ছিন্নবিশেষ্যক অনুমিতিত্ব ব্যাপক বহ্নিত্বাবচ্ছিন্নপ্রকারকতানিরূপিত হ্রদত্বাবচ্ছিন্নবিশেষ্যত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিবধ্যতানিরূপিত বহ্ন্যভাবত্বাবচ্ছিন্ন প্রকারতানিরূপিত হ্রদত্বাবচ্ছিন্ন বিশেষ্যতাক নিশ্চয়ত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিবন্ধকতা বহ্ন্যভাববদ্হ্রদত্বাবচ্ছিন্নবিষয়ক নিশ্চয়ত্বব্যাপক হওয়ায় তাদৃশরূপাবচ্ছিন্ন বহ্ন্যভাববদ্হ্রদরূপ বিশিষ্টে উক্ত লক্ষণ সঙ্গতি। অন্যত্রও এইরূপ। প্রকৃত লক্ষণ ঘটক নিশ্চয়াংশে অপ্রামাণ্যজ্ঞানাভাবও অনাহার্যত্বাদি বিশেষণ দিতে হইবে। তাহা না হইলে 'বহ্ন্যভাববান্ হ্রদঃ' এই জ্ঞান 'অপ্রমা' এইরূপ অপ্রামাণ্যজ্ঞানাস্কন্দিত এবং 'হ্রদো বহ্ন্যভাববান্ বহ্নিমাংশ্চ' ইত্যাদিরূপ আহার্যাকার বহ্ন্যভাববদ্হ্রদত্বাবচ্ছিন্নবিষয়কনিশ্চয়ে প্রকৃতানুমিতিপ্রতিবন্ধকত্ব না থাকায় অসম্ভব দোষের আপত্তি হয়।

अनुमितिश्चात्र 'साध्यव्याप्य हेतुमान् पक्षः साध्यवांश्च'इत्येवं समूहालम्बनाकारा ग्राह्या। अन्यथा व्यभिचारत्वाद्यवच्छिन्नविषयकनिश्चयसामान्यस्य 'साध्यवान् पक्ष' इत्याकारानुमितिसामान्यप्रतिबन्धकत्वाभावेन व्यभिचारादावव्याप्तेः। न चैवं 'साध्य-व्याप्याभाववत् पक्षरूपविशिष्टे अतिव्याप्त्यापत्तिः। तादृशविशिष्टस्य व्याप्यत्वासिद्धि-रूपदोषत्वाङ्गीकारेण दोषपरिहारात्।

परे तु तत्रातिव्याप्तिपरीहाराय प्रकृतानुमितिं 'साध्यव्याप्यो हेतुः, हेतुमान् पक्षः, पक्षः साध्यवान्' इत्येवं त्रिखण्डाकारामभ्युपगच्छन्ति। उक्तरूपामनुमितिं प्रति उक्त-विशिष्टविषयकनिश्चयो न प्रतिबन्धकः।

'ह्रदो वह्निमानि'त्याद्यनुमितिस्थले 'ह्रदो वह्निमान् जलाभाववांश्च' इत्यादि

## অনুবাদ

উক্ত লক্ষণে অনুমিতিপদের অর্থ 'সাধ্যব্যাপ্যহেতুমান্ পক্ষঃ সাধ্যবাংশ্চ' এইরূপ সমূহালম্বনাকার অনুমিতি বুঝিতে হইবে। ঐরূপ অনুমিতি গ্রহণ না করিয়া কেবল 'সাধ্যবান্ পক্ষঃ' এইরূপ অনুমিতি গ্রহণ করিলে 'ধূমবান্ বহ্নেঃ' ইত্যাদি অনুমান স্থলে ধূমাভাববাদ্‌বৃত্তিবহ্নি ইত্যাদিরূপ ব্যভিচারত্বাদ্যবচ্ছিন্ন-বিষয়ক নিশ্চয়ে 'সাধ্যবান্ পক্ষঃ' ইত্যাকার অনুমিতিসামান্য প্রতিবন্ধকত্ব না থাকায় ব্যভিচারাদি দোষে অব্যাপ্তি ঘটে।

প্রকৃত লক্ষণে অনুমিতি পদে 'সাধ্যব্যাপ্যহেতুমান্ পক্ষঃ সাধ্যবাংশ্চ' এই-রূপ অনুমিতি স্বীকার করিলে 'সাধ ব্যাপ্যাভাববৎপক্ষ'রূপ বিশিষ্টে হেত্বাভাস-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি দোষের আপত্তি হয় এমন নহে। কারণ উক্ত সাধ্য-ব্যাপ্যাভাববৎপক্ষরূপবিশিষ্টে ব্যাপ্যত্বাসিদ্ধিরূপ হেত্বাভাসত্ব স্বীকার করায় উক্ত (অলক্ষ্যে লক্ষণগমন) রূপ অতিব্যাপ্তি দোষের পরিহার হয়।

অপর সম্প্রদায়ের আচার্যগণ বলেন—উক্ত 'সাধ্যব্যাপ্যাভাববৎপক্ষে' অতিব্যাপ্তি বারণের জন্য প্রকৃত লক্ষণঘটক অনুমিতি—'সাধ্যব্যাপ্যো হেতুঃ, হেতুমান্ পক্ষঃ, পক্ষঃ সাধ্যবাংশ্চ' এইরূপ ত্রিখণ্ডাকার সমূহালম্বন অনুমিতি ইহারা স্বীকার করেন। উক্ত রূপ অনুমিতি পক্ষাংশে সাধ্যব্যাপ্য সাধ্যব্যাপ্যপ্রকারক না হওয়ায় ঐ অনুমিতির প্রতি সাধ্যব্যাপ্যাভাববৎপক্ষরূপ বিশিষ্ট বিষয়ক নিশ্চয় প্রতিবন্ধক হয় না।

'হ্রদো বহ্নিমান্' ইত্যাকার অনুমিতিস্থলে 'হ্রদো বহ্নিমান্ জলাভাববাংশ্চ' ইত্যাকারক সমূহালম্বনানুমিতিও হ্রদপক্ষকবহ্নিসাধ্যক প্রকৃতানুমিতি, তন্নিষ্ঠ-

समूहालम्बनानुमितिनिष्ठजलाभावप्रकारकह्रदविशेष्यकत्वावच्छिन्नप्रतिबध्यतानिरूपितप्रतिबन्धकताया जलवद्ह्रदत्वावच्छिन्नविषयकनिश्चयत्वव्यापकत्वादतिव्याप्तिवारणाय प्रतिबध्यतायां व्यापकत्वनिवेशः।

उक्तहेत्वाभासलक्षणोपरि सूक्ष्मेक्षिकया सम्भाविता अपरे दोषाः तत्समाधानप्रकारभेदाश्च हेत्वाभाससामान्यनिरुक्तिप्रकरणीय - गदाधरभट्टाचार्यकृत - विवृतिग्रन्थादिभ्य एव विशेषजिज्ञासुभिः प्रतिपत्तव्याः।

ते च हेतुदोषाः पञ्चविधाः। व्यभिचारविरोधासिद्धिबाधसत्प्रतिपक्षभेदात्। व्यभिचारो यथा—धूमवान् वह्नेरित्यादौ धूमाभाववद्वृत्तिवह्न्यादिः। विरोधो यथा—गोत्ववान् अश्वत्वादित्यादौ गोत्वासमानाधिकरणाश्वत्वादिः। निरुक्तलक्षणघटकानुमितौ हेत्वंशे साध्याभाववदवृत्तित्वं हेतुव्यापकसाध्यसामानाधिकरण्यं चेति द्विविधान्वयव्याप्तिनिवेशाद् उक्तव्यभिचारविरोधज्ञानयोः प्रकृतानुमितिप्रतिबन्धकत्वात्।

### অনুবাদ

জলাভাবত্বাবচ্ছিন্ন প্রকারক হ্রদত্বাবচ্ছিন্ন বিশেষ্যকত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিবধ্যতানিরূপিত প্রতিবন্ধকতা জলবদ্হ্রদত্বাবচ্ছিন্নবিষয়কনিশ্চয়ত্বব্যাপক হওয়ায় উক্ত স্থলে জলবদ্হ্রদরূপবিশিষ্টে উক্ত হেত্বাভাসলক্ষণের অতিব্যাপ্তি দোষ বারণের জন্য প্রতিবধ্যতায় প্রকৃতানুমিতিত্ব ব্যাপকত্ব নিবেশ করা হইয়াছে। জলাভাবত্বাবচ্ছিন্নপ্রকারক হ্রদত্বাবচ্ছিন্নবিশেষ্যকত্বাবচ্ছিন্নপ্রতিবধ্যতা 'হ্রদো বহ্নিমান্' ইত্যাকার অসমূহালম্বন প্রকৃতানুমিতিতে না থাকায় প্রকৃতানুমিতিত্বের ব্যাপক হয় না।

উক্ত হেত্বাভাসলক্ষণের উপর সূক্ষ্ম দৃষ্টিতে যে সকল দোষ সম্ভাবনা করা যায় এবং তাহার যে সকল বিভিন্ন প্রকারের সমাধান হয় তাহা 'তত্ত্বচিন্তামণি' 'সামান্য নিরুক্তি' প্রকরণের দীধিতি ও তাহার গদাধর ভট্টাচার্য কৃত বিবৃতি প্রভৃতি গ্রন্থ হইতেই বিশেষ জিজ্ঞাসু ব্যক্তিগণ জানিয়া লইবেন।

সেই হেতুদোষ ব্যভিচার, বিরোধ, অসিদ্ধি, বাধ এবং সৎপ্রতিপক্ষ ভেদে পঞ্চবিধ। ব্যভিচার যথা—'ধূমবান্ বহ্নেঃ' ইত্যাদি স্থলে 'ধূমাভাববদবৃত্তিবহ্নি' প্রভৃতি। বিরোধ যথা—'গোত্ববান্ অশ্বত্বাৎ' ইত্যাদি স্থলে 'গোত্বাসমানাধিকরণ অশ্বত্ব' প্রভৃতি। কারণ উক্ত হেত্বাভাসলক্ষণঘটক অনুমিতিতে সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্ব এবং হেতুব্যাপক সাধ্যসামানাধিকরণ্য এই দ্বিবিধ অন্বয় ব্যাপ্তিরই হেত্বংশে নিবেশ থাকায় উক্ত রূপ ব্যভিচারজ্ঞান ও উক্ত রূপ বিরোধ জ্ঞান প্রকৃত ( সাধ্যব্যাপ্যহেতুমান্ পক্ষঃ সাধ্যবান্ এইরূপ ) অনুমিতির প্রতি প্রতিবন্ধক হয়।

असिद्धिदोषो यथा—ह्रदो वह्निमान् धूमादित्यादौ धूमाभाववद्ध्रदादिः।

सत्प्रतिपक्षदोषो यथा—ह्रदो वह्निमानित्यादौ वह्न्यभावव्याप्यवद्ध्रदादिः। वाध-दोषश्च—तत्रैव वह्न्यभाववद्ध्रदादिः।

अत्र विशेषत एतदवधेयं यत्—वाध-सत्प्रतिपक्षव्यतिरिक्तव्यभिचारविरोधा-सिद्धिरूपदोषत्रयस्थलेषु यत्र यद्वान् यो यद्दोषः तत्र तद् व्याप्यवान् अपि स तद्दोष एव। यथा—धूमाभाववद्वृत्तिर्वह्निरित्यत्र धूमाभाववद्वृत्तित्वव्याप्यवद्वह्निः, इत्यपि व्यभिचारः, ह्रदो वह्निमान् धूमादित्यादौ धूमाभावव्याप्यवद् ह्रद इत्यपि असिद्धिः, गोत्वासमानाधिकरणमश्वत्वमित्यत्र गोत्वासामानाधिकरण्यव्याप्यवदश्वत्वमित्यपि विरोध एव। वाध-सत्प्रतिपक्षस्थलयोस्तु न तथा। तत्र वह्न्यभाववद्ह्रदादिः वाधः, न तु तत्र वह्न्यभावव्याप्यवद् ह्रदादिरपि वाधः, किन्तु सत्प्रतिपक्षरूप-दोषान्तरम्। तथा साध्याभावव्याप्यवत्पक्षः सत्प्रतिपक्षः, न तु साध्याभावव्याप्य-व्याप्यवत् पक्षोऽपि तन्निश्चयस्य तत्स्थलीय-प्रकृतानुमित्यप्रतिबन्धकत्वात्।

### অনুবাদ

অসিদ্ধি দোষ যথা—'হ্রদো বহ্নিমান্ ধূমাৎ' ইত্যাদি স্থলে ধূমভাববদ্ হ্রদাদিরূপ হেত্বভাববৎপক্ষাদি।

সৎপ্রতিপক্ষদোষ যথা—'হ্রদো বহ্নিমান্' ইত্যাদি স্থলে 'বহ্ন্যভাবব্যাপ্যবদ্ হ্রদাদি (সাধ্যাভাবব্যাপ্যবৎপক্ষাদি)। বাধদোষ যথা—উক্ত 'হ্রদো বহ্নিমান্' ইত্যাদি স্থলেই 'বহ্ন্যভাববদহ্রদাদিরূপ সাধ্যাভাববৎপক্ষ।

এস্থলে বিশেষভাবে ইহা জ্ঞাতব্য যে—বাধ ও সৎপ্রতিপক্ষভিন্ন ব্যভিচার, বিরোধ ও অসিদ্ধি এই দোষত্রয় স্থলে যেখানে যে ধর্মবিশিষ্ট যে ধর্মী যে দোষ, সেখানে সেই ধর্মের ব্যাপ্যবিশিষ্ট সেই ধর্মীও সেই দোষই হয়। যথা—'ধূমাভাববদবৃত্তি বহ্নি' ইত্যাদি ব্যভিচার স্থলে ধূমাভাববদ্‌বৃত্তিত্বব্যাপ্যবদ্‌বহ্নি ইহাও ব্যভিচার দোষ, 'হ্রদো বহ্নিমান্ ধূমাৎ' ইত্যাদি স্থলে ধূমাভাবব্যাপ্যবদ্ হ্রদ ইহাও অসিদ্ধি দোষ, গোত্বাসমানাধিকরণ অশ্বত্ব এই বিরোধ স্থলে গোত্বা-সামানাধিকরণ্যব্যাপ্যবৎ অশ্বত্বও বিরোধদোষ।

বাধ ও সৎপ্রতিপক্ষ এই দুইটী দোষ স্থলে ঐ নিয়ম নহে। তন্মধ্যে বহ্ন্যভাববদহ্রদাদি বাধ, কিন্তু সেখানে বহ্ন্যভাবব্যাপ্যবদ্ হ্রদাদিও বাধ নহে, পরন্তু উহা সৎপ্রতিপক্ষরূপ দোষান্তর। ঐরূপ সাধ্যাভাবব্যাপ্যবৎপক্ষ সৎ-প্রতিপক্ষ কিন্তু 'সাধ্যাভাবব্যাপ্যব্যাপ্যবৎ পক্ষ' সৎপ্রতিপক্ষ নহে। কারণ

उक्तपञ्चविधहेतुदोषाणामवान्तरभेदादिकं सर्वमाकरेभ्यो ज्ञातव्यम्।

हेत्वाभासपदस्य दुष्टहेत्वर्थकत्वपक्षे लक्षणञ्च—स्वज्ञानविषयप्रकृतहेतुतावच्छेदकवत्त्वसम्बन्धेन तादृशदोषवत्त्वम्। प्रकृतदोषेण सह प्रकृतहेतोः समूहालम्बनज्ञानमादाय प्रकृतसम्बन्धोपपत्तिः। ते च दुष्टहेतवः—यथायथं सव्यभिचारविरुद्धासिद्धसत्प्रतिपक्षितवाधिता इति पञ्चसंज्ञाभिरभिधीयन्ते। अन्यत् सर्वमाकरेभ्यो विशेषसाम्प्रदायिक-पत्रिकादिभ्यश्च ज्ञेयम्।

प्रतिबन्धकत्वम्—प्रतिवध्नाति वाधते यः स प्रतिबन्धकः, तस्य भावः प्रतिबन्धकत्वम्। तच्च कारणीभूताभावप्रतियोगित्वम्, कार्यानुत्पादप्रयोजकत्वम्, स्वरूपसम्बन्धविशेषो वा। यो यस्य कार्यस्य प्रतिबन्धकः, तदभावस्तस्य कारणम्, अतः प्रतिबन्धके वस्तुनि कारणीभूताभावप्रतियोगित्वं घटते। सत्स्वपि कार्यस्य क्लृप्तेषु समग्रेषु कारणान्तरेषु प्रतिबन्धकवस्तुसत्त्वे कार्यं नोत्पद्यत इति प्रतिबन्धकस्य

**অনুবাদ**

ঐরূপ বিশিষ্ট নিশ্চয় লক্ষণ ঘটক প্রকৃতানুমিতির প্রতি প্রতিবন্ধক হয় না।

ঐ পঞ্চবিধ হেতুদোষের যে সকল অবান্তরভেদাদি বর্তমান সেই সকল আকর গ্রন্থ হইতে জ্ঞাতব্য।

হেত্বাভাস পদের দুষ্টহেতুরূপ অর্থপক্ষে তাহার লক্ষণ যথা—স্বজ্ঞানবিষয়-প্রকৃতহেতুতাবচ্ছেদকবত্ত্বসম্বন্ধে নিরুক্তলক্ষণদোষবত্ত্ব। প্রকৃত হেতুর সহিত প্রকৃত দোষের সমূহালম্বনজ্ঞান আদান করিয়া উক্ত সম্বন্ধের উপপত্তি।

উক্ত দুষ্ট হেতু সমূহ যথা—'সব্যভিচার, বিরুদ্ধ, অসিদ্ধ, সৎপ্রতিপক্ষিত এবং বাধিত এই পাঁচ সংজ্ঞায় অভিহিত হয়। ইহার সম্বন্ধে অন্য জ্ঞাতব্য বিষয়-সমূহ আকরগ্রন্থ ও সাম্প্রদায়িক পত্রিকা প্রভৃতি হইতে জ্ঞাতব্য।

প্রতিবন্ধকত্ব,—যাহা (কোনও কার্যের) প্রতিরোধ করে, অর্থাৎ বাধা জন্মায় তাহাই প্রতিবন্ধক। তাহার ভাব প্রতিবন্ধকত্ব। ঐ প্রতিবন্ধকত্বের স্বরূপ কারণীভূতাভাব প্রতিযোগিত্ব। কার্যানুৎপাদপ্রযোজকত্ব অথবা স্বরূপসম্বন্ধবিশেষ। যাহা যে কার্যের প্রতিবন্ধক, তদভাব তাহার কারণ। অতএব প্রতিবন্ধক বস্তু কারণীভূতাভাবপ্রতিযোগিত্ব সংঘটিত হয়। কার্যের প্রতি কারণরূপে কৢপ্ত বিদ্যমান থাকিলেও প্রতিবন্ধক বস্তুসত্ত্বে কার্য উৎপন্ন হয় না। অতএব প্রতিবন্ধকীভূত বস্তুতে কার্যের অনুৎপাদের প্রতিও প্রযোজকত্ব আছে। বিশেষ উদাহরণ যথা—

कार्यानुत्पादप्रयोजकत्वमप्यस्ति। यथा—वह्निः करादिगतः करादेर्दाहं जनयति, परमस्ति कश्चिदेवम्भूतो मणिर्यः करादौ स्थितः सन् सत्यपि करादौ वह्नेः सम्बन्धे तत्र दाहं बाधते, तदभावे च सति तत्र वह्निर्दाहं जनयति। स एष मणिः दाहप्रतिबन्धको मणिरुच्यते। अस्ति चापरः कोऽप्येवम्भूतो मणिः यस्मिन् करादौ वर्तमाने सति तत्र प्रतिबन्धको मणिः दाहं न प्रतिबध्नाति, परं तत्र दाहो भवत्येव। अतस्तादृशमण्यभावविशिष्टस्यैव प्रतिबन्धकमणेर्दाहप्रतिबन्धकत्वं कल्प्यते। निरुक्तप्रतिबन्धकताकुक्षौ प्रतिबन्धकमण्यंशे विशेषणीभूतस्य अभावस्य प्रतियोगिभूतोऽसौ मणिः 'उत्तेजकः' मणिरित्युच्यते प्रतिबन्धकतावच्छेदकीभूताभावप्रतियोगित्वमुत्तेजकत्वमिति प्रतिबन्धकताकुक्षावुत्तेजकलक्षणात्।

एवं ज्ञानस्थले विशिष्टज्ञानं प्रति बाधनिश्चयः अभावव्याप्यवत्तानिश्चयश्च प्रतिबन्धकः—तथाहि वह्निव्याप्यधूमवान् पर्वत इत्यादिरूपपरामर्शप्रमुखक्लृप्तकारणकलापसमवधानेऽपि यदि तत्र वह्न्यभाववान् पर्वतः अथवा वह्न्यभावव्याप्यवान् पर्वतः

### অনুবাদ

বহ্নি করাদিগত হইলে করাদির দাহ জন্মায়। কিন্তু এমন কোনও বিশেষ মণি আছে, যাহা করে বর্তমান থাকিয়া করাদির সহিত বহ্নির সম্বন্ধ হইলেও করাদিতে দাহের বাধা জন্মায় এবং তথায় ঐ প্রতিবন্ধক মণির অভাবে বহ্নি তথায় দাহ জন্মায়। সেইরূপ এই মণিবিশেষকে দাহের প্রতিবন্ধক মণি বলা হয়। আবার অপরও এক প্রকার এমন বিশেষ মণি আছে, যাহা করাদিতে বর্তমান থাকিলে তথায় প্রাগুক্ত প্রতিবন্ধক মণি দাহের বাধা জন্মায় না। কিন্তু তথায় দাহ অবশ্য হয়। অতএব উক্তরূপ মণির অভাববিশিষ্ট প্রতিবন্ধক মণিরই দাহরূপ কার্যের প্রতি প্রতিবন্ধকত্ব কল্পনা করা হয়। উক্ত প্রতিবন্ধকতাকুক্ষিতে প্রতিবন্ধক মণ্যংশে বিশেষণীভূত অভাবের প্রতিযোগিভূত ঐ মণি 'উত্তেজক' মণি নামে আখ্যাত হয়। কারণ প্রতিবন্ধকতাবচ্ছেদকীভূতাভাব প্রতিযোগিত্ব প্রতিবন্ধকতাগর্ভে উত্তেজকের লক্ষণ।

এইরূপ জ্ঞানস্থলে বিশিষ্টজ্ঞানের প্রতি বাধনিশ্চয় ও অভাবব্যাপ্যবত্তানিশ্চয় প্রতিবন্ধক। যথা—'বহ্নিব্যাপ্য ধূমবান্ পর্বতঃ' ইত্যাদিরূপ পরামর্শপ্রমুখ কৢপ্ত কারণ সমষ্টির সম্বলন হইলেও যদি সেখানে 'বহ্ন্যভাববান্ পর্বতঃ' অথবা 'বহ্ন্যভাবব্যাপ্যবান্ পর্বতঃ' ইত্যাদিরূপ নিশ্চয় সংগঠিত হয়, তবে তথায়

इत्यादिरूपः निश्चयः संघटितः स्यात् तदा तत्र 'पर्वतो वह्निमान्' इत्येवमनुमित्यात्मकं कार्यभूतं विशिष्टज्ञानं न स्यात्। तत्र बाधनिश्चयः बाधव्याप्यवत्तानिश्चयो वा प्रतिबन्धकः, विशिष्टज्ञानञ्च प्रतिबध्यम्। बाधनिश्चये प्रतिबन्धकत्वं विशिष्टज्ञाने च प्रतिबध्यत्वम्। तयोः परस्परं निरूप्यनिरूपकभावः। यथा—प्रतिबन्धकतानिरूपिता प्रतिबध्यता, प्रतिबध्यतानिरूपिता च प्रतिबन्धकतेति। तत्तदभावनिश्चयः तत्तदभावव्याप्यवत्तानिश्चयो वा यदि अप्रामाण्यज्ञानास्कन्दितो भवति तदा स स निश्चयः तत्तद्वत्ताबुद्धिं न प्रतिबध्नाति। तथा हि यदा ह्रदो वह्न्यभाववान् वह्न्यभावव्याप्यवान् वा इति ज्ञानधर्मिकम् 'इदं ज्ञानम् अप्रमा' इत्येवमप्रामाण्यज्ञानं तदुत्तरं ह्रदो वह्निमानित्येवं ह्रदधर्मिकः वह्निमत्ताज्ञानं भवत्येव। तदभावे तु न भवति। अतः प्रतिबन्धकत्वेनाभिमते अभावनिश्चये अभावव्याप्यवत्त्वनिश्चये च अप्रामाण्यज्ञानाभावो विशेषणरूपेण निवेश्य प्रतिबन्धकता निर्वाच्या, स चाभावः विशेष्यत्वसामानाधिकरण्योभयसम्बन्धेन ग्राह्यः। सामानाधिकरण्यञ्च तत्र एकक्षणावच्छिन्नैकात्मवृत्तित्वम्, तेन कालान्तरे पुरुषान्तरे

### অনুবাদ

'পর্বতো বহ্নিমান্' এইরূপ অনুমিত্যাত্মক বিশিষ্টজ্ঞানরূপ কার্য হইবে না। তথায় বাধনিশ্চয় বা বাধব্যাপ্যবত্তানিশ্চয় প্রতিবন্ধক এবং বিশিষ্টজ্ঞান প্রতিবধ্য। বাধনিশ্চয় ও অভাবব্যাপ্যবত্তানিশ্চয়ে প্রতিবন্ধকতা ও প্রকৃত বিশিষ্টজ্ঞানে প্রতিবধ্যতা। ঐ প্রতিবধ্যতা ও প্রতিবন্ধকতার পরস্পর নিরূপ্য নিরূপকভাব বিদ্যমান। যথা—প্রতিবন্ধকতা নিরূপিত প্রতিবধ্যতা ও প্রতিবধ্যতা নিরূপিত প্রতিবন্ধকতা।

উক্তরূপ সেই সেই অভাবনিশ্চয় বা অভাবব্যাপ্যবত্তানিশ্চয় যদি অপ্রামাণ্যজ্ঞানাস্কন্দিত অর্থাৎ অপ্রামাণ্যজ্ঞানবিষয়ীভূত হয়, তবে সেই সেই বাধনিশ্চয় বা বাধব্যাপ্যবত্তানিশ্চয় তত্তদ্বত্তাবিশিষ্ট জ্ঞানের প্রতি প্রতিবন্ধক হয় না। যখন হ্রদো বহ্ন্যভাববান্ অথবা হ্রদো বহ্ন্যভাবব্যাপ্যবান্ এই জ্ঞান বিশেষ্যক 'ইদং জ্ঞানম্ অপ্রমা' এইরূপ অপ্রামাণ্য জ্ঞান, তদুত্তর 'হ্রদো বহ্নিমান্' ইত্যাকার হ্রদধর্মিক বহ্নিমত্তাজ্ঞান অবশ্যই হইয়া থাকে। ঐ অপ্রামাণ্যজ্ঞান না থাকিলে প্রকৃত বাধনিশ্চয় বা বাধব্যাপ্যবত্তানিশ্চয়ের বিরোধী হইবে। অতএব প্রতিবন্ধকরূপে অভিমত বাধনিশ্চয় ও বাধব্যাপ্যবত্তানিশ্চয়ে উক্ত অপ্রামাণ্যজ্ঞানাভাব বিশেষণরূপে নিবেশ করিয়া প্রতিবন্ধকতা নির্বাচন করিতে হইবে। উক্ত অপ্রামাণ্যজ্ঞানাভাব বিশেষ্যত্ব ও সামানাধিকরণ্য এতদুভয়সম্বন্ধে

वा अप्रामाण्यज्ञानमादाय ज्ञानान्तरविशेष्यकाप्रामाण्यज्ञानमादाय वा न दोषः। तत्र अप्रामाण्यम् अप्रमात्वं भ्रमत्वमिति यावत्। तच्च तदभाववति तत्प्रकारकत्वम्। यथा—वह्निमान् ह्रद इति ज्ञाने वह्न्यभाववति ह्रदे वह्निप्रकारकत्वम्। वह्निव्याप्यवान् ह्रद इत्यत्र च वह्निव्याप्याभाववति ह्रदे वह्निप्रकारकत्वम्। तत्र निरुक्ताप्रामाण्यज्ञानं यथार्थम्। पर्वतो वह्निमान् पर्वतो वह्निव्याप्यवानित्युभयत्रैव अप्रामाण्यज्ञानमयथार्थम्, तदुभयविधमेव अप्रामाण्यज्ञानं संशयात्मकं निश्चयात्मकं वा, निश्चयत्वेन प्रतिबन्धकतास्थले निर्विशेषण अप्रामाण्यज्ञानत्वेनोत्तेजकम्। अतः वह्न्यभाववान् ह्रद इति निश्चयदशायां 'इदं ज्ञानमप्रमा' 'इदं ज्ञानमप्रमा न वा' इति निश्चयसंशययोरन्यतरस्य सत्त्व एव न 'वह्निमान् ह्रद' इति ज्ञानानुत्पादः। 'यत्र निश्चयत्वेन प्रतिबन्धकता कारणता वा तत्र ज्ञानत्वेन अप्रामाण्यज्ञानस्य उत्तेजकता, यत्र च तदन्यरूपेण ज्ञानस्य प्रतिबन्धकता कारणता वा तत्र ज्ञानत्वमात्रेण अप्रामाण्यज्ञानस्य उत्तेजकता' इति नियमात्।

एवं आहार्याकारकः विपरीतनिश्चयः अभावव्याप्यवत्तानिश्चयो वा न विशिष्टबुद्धौ प्रतिबन्धकः। यथा—निर्वह्निर्वह्निमान् इति निश्चयः न वह्न्यभाववान् निर्वह्निरिति

### অনুবাদ

গ্রাহ্য। তথায় সামানাধিকরণ্যও একক্ষণাবচ্ছিন্ন একাত্মবৃত্তিত্বরূপ। তাহার ফলে অন্য সময়ে এবং অন্য পুরুষে অপ্রামাণ্যজ্ঞান আদান করিয়া দোষ হয় না।

ঐস্থলে অপ্রমাত্ব অর্থাৎ ভ্রমত্ব অপ্রামাণ্য পদার্থ। উহাও 'তদভাববদ্-বিশেষ্যক তৎপ্রকারকত্বরূপ। যথা—'বহ্নিমান্ হ্রদঃ' এই জ্ঞানে বহ্ন্যভাববদ্হ্রদ-বিশেষ্যক বহ্নিপ্রকারকত্ব। এবং 'বহ্নিব্যাপ্যবান্ হ্রদঃ' এই জ্ঞানে বহ্নিব্যাপ্যাভাববদ্ হ্রদবিশেষ্যক বহ্নিব্যাপ্য প্রকারকত্ব। উক্ত দুই স্থলে অপ্রামাণ্যজ্ঞান যথার্থ। পর্বতো বহ্নিমান্, পর্বতো বহ্নিব্যাপ্যবান্ এই উভয়স্থলে অপ্রামাণ্যজ্ঞান অযথার্থ। উক্ত উভয়প্রকার অপ্রামাণ্যজ্ঞানই সংশয়াত্মকই হউক বা নিশ্চয়াত্মকই হউক উহা নিশ্চয়ত্বরূপে প্রতিবন্ধকতাস্থলে নির্বিশেষে অপ্রামাণ্যজ্ঞানত্বরূপে উত্তেজক। অতএব যখন বহ্ন্যভাববান্ হ্রদঃ এইরূপ নিশ্চয় রহিয়াছে তখন 'ইদং জ্ঞানমপ্রমা' 'ইদং জ্ঞানমপ্রমা ন বা' ইত্যাকার নিশ্চয় ও সংশয়ের যে কোনও একটী অপ্রামাণ্যজ্ঞান থাকিলেই 'বহ্নিমান্ হ্রদঃ' এই জ্ঞানোৎপত্তির বাধা হয় না। যেহেতু যেখানে নিশ্চয়ত্বরূপে কারণতা বা প্রতিবন্ধকতা তথায় জ্ঞানত্বরূপে অপ্রামাণ্যজ্ঞানের উত্তেজকতা—এইরূপ নিয়ম।

बुद्धिं प्रतिबध्नाति पर्वतो वह्निमान् वह्न्यभाववांश्च इति निश्चयश्च प्रतिबध्नाति पर्वतो वह्निमान् इति बुद्धिं पर्वतो वह्न्यभाववानिति बुद्धिं वा।

निर्वह्निर्वह्निमानिति ज्ञानस्य नियताहार्यत्वात् पर्वतो वह्निमान् वह्न्यभाववांश्च इत्यस्य च ज्ञानस्य अनियताहार्यत्वात्। स्वविरोधिधर्मधर्मितावच्छेदककस्वप्रकारकज्ञानं नियताहार्यम्। निर्वह्निर्वह्निमान् इति ज्ञाने च वह्निविरोधि वह्न्यभावरूपं निर्वह्नित्वं विशेष्यतावच्छेदकापरपर्यायं धर्मितावच्छेदकम्, वह्निश्च प्रकारः। अतस्तत्र नियताहार्य-लक्षणसमन्वयः।

अनियताहार्यत्वं साधारणाहार्यत्वं वा—बाधनिश्चयविशिष्टत्वे सति इच्छा-विशिष्टप्रत्यक्षत्वम्। आहार्यत्वेनाभिमते प्रत्यक्षे बाधनिश्चयवैशिष्ट्यञ्च स्वाधिकरण-सुखवृत्तित्व-स्वसामानाधिकरण्य-स्वाव्यवहितप्राक्क्षणवृत्तिप्रागभावप्रतियोगित्वैतत्त्रितय-सम्बन्धेन। इच्छावैशिष्ट्यञ्च स्वाव्यवहितोत्तरत्व-स्वसामानाधिकरण्य-स्वविशेष्यत्वैतत्त्रितयसम्बन्धेन। लक्ष्येषु लक्षणसङ्गमनसम्बन्धव्यावृत्त्यादिकं सावधानमूहनीयम्।

অনুবাদ

এইরূপ আহার্যাকার বিপরীতনিশ্চয় বা আহার্যাকার অভাবব্যাপ্যবত্তা নিশ্চয় বিশিষ্টবুদ্ধির প্রতি প্রতিবন্ধক নহে। যথা—'নির্বহ্নিঃ বহ্নিমান্' এই নিশ্চয় 'বহ্ন্যভাববান্ নির্বহ্নিঃ' এই বুদ্ধির প্রতিবন্ধক হয় না এবং পর্বতো বহ্নিমান্ বহ্ন্যভাববাংশ্চ ইত্যাদিরূপ নিশ্চয় 'পর্বতো বহ্নিমান্' এই বুদ্ধি অথবা 'পর্বতো বহ্ন্যভাববান্' এই বুদ্ধির প্রতিবন্ধক হয় না। যেহেতু 'নির্বহ্নিঃ বহ্নিমান্' এই জ্ঞানটী 'নিয়তাহার্য', এবং পর্বতো বহ্নিমান্ বহ্ন্যভাববাংশ্চ এই জ্ঞান অনিয়তাহার্য বা সামান্য আহার্য। 'স্ববিরোধিধর্মধর্মিতাবচ্ছেদকক স্বপ্রকারকজ্ঞানত্ব' নিয়তাহার্যত্ব। নির্বহ্নির্বহ্নিমান্ এই জ্ঞানে বহ্নির বিরোধী বহ্ন্যভাবরূপ নির্বহ্নিত্ব ধর্মিতাবচ্ছেদক অর্থাৎ বিশেষ্যতাবচ্ছেদক এবং বহ্নি প্রকার হইয়াছে। অতএব উহাতে নিয়তাহার্য লক্ষণের সমন্বয় হয়।

অনিয়তাহার্য বা সামান্যাহার্য লক্ষণ যথা—বাধনিশ্চয়বিশিষ্টত্বে সতি ইচ্ছা বিশিষ্ট প্রত্যক্ষত্ব। আহার্যত্বে অভিমত প্রত্যক্ষে বাধনিশ্চয়বৈশিষ্ট্য স্বাধিকরণসুখবৃত্তিত্ব-স্বসামানাধিকরণ্য - স্বাব্যবহিত প্রাক্ক্ষণবৃত্তিপ্রাগভাবপ্রতিযোগিত্ব এই তিনটী সম্বন্ধে। ইচ্ছাবৈশিষ্ট্য স্বাব্যবহিতোত্তরত্ব, স্বসামানাধিকরণ্য, স্ববিশেষ্যত্ব এই তিনটী সম্বন্ধে। লক্ষ্যে লক্ষণ সঙ্গমন এবং তত্তৎ সম্বন্ধ নিবেশের প্রয়োজন প্রভৃতি অবধান পূর্বক লক্ষণীয়।

आहार्यं ज्ञानं यथा प्रतिबन्धकं न भवति तथा प्रतिवध्यमपि न भवति। अतः यत्र आदौ पर्वतो वह्न्यभाववान् इति बाधनिश्चयः, अनन्तरं पर्वतो वह्निमानिति ज्ञानं जायताम् इति इच्छा, तदनन्तरक्षणे पर्वतो वह्निमानिति आहार्यज्ञानं जायते न तु प्राक्तनेन बाधनिश्चयेन प्रतिवध्यते, निरुक्तसामान्याहार्यलक्षणाक्रान्तत्वात्।

आहार्यज्ञानवत् लौकिकसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं तथा दोषविशेषजन्यं ज्ञानं न बाधनिश्चयादिना प्रतिवध्यते। तथाहि यत्र केनापि कारणेन घटाभाववद्भूतलमिति निश्चयो जातः, अथ भूतलवृत्तौ घटे जातेन चक्षुःसंयोगरूपलौकिकसन्निकर्षेण घटवद्भूतलमिति जायमानं न प्राक्तनेन बाधनिश्चयेन प्रतिरुद्धं भवति। अतः प्रतिवध्यप्रतिबन्धकभावकल्पनायां प्रतिवध्यज्ञानांशे लौकिकसन्निकर्षाजन्यत्वं विशेषणं देयम्। तेन प्रागुक्तज्ञानस्य लौकिकसन्निकर्षजन्यत्वात् न बाधनिश्चयेन प्रागुक्तेन प्रतिरोधः।

एवं शङ्खः पीतत्वाभाववान् इति सुदृढनिश्चये सत्यपि पित्तप्रभावप्रभवकामलादिदोषेण शङ्खः पीतत्ववानिति ज्ञानं भवति। अतो दोषविशेषाजन्यत्वमपि प्रतिवध्यज्ञाने विशेषणं निवेश्यम्। अत उक्तस्थले शङ्खे पीतत्वबोधस्य कामलरूप-

### অনুবাদ

আহার্য জ্ঞান যেমন প্রতিবন্ধক হয় না তেমন প্রতিবধ্যও হয় না। অতএব যেখানে প্রথম 'পর্বতো বহ্ন্যভাববান্' ইত্যাকার বাধ নিশ্চয়, অনন্তর 'পর্বতো বহ্নিমানিতি জ্ঞানং জায়তাং' এইরূপ ইচ্ছা, তদনন্তরক্ষণে 'বহ্নিমান্ পর্বতঃ' এই আহার্যজ্ঞান হয়। উহা পূর্ববর্তী বাধনিশ্চয়দ্বারা প্রতিরুদ্ধ হয় না। যেহেতু ঐ জ্ঞান পূর্বোক্ত সামান্য আহার্যলক্ষণাক্রান্ত।

আহার্যজ্ঞানের ন্যায় লৌকিকসন্নিকর্ষজন্য জ্ঞান এবং দোষবিশেষজন্য জ্ঞান বাধনিশ্চয়াদিপ্রতিবধ্য হয় না। যথা—যেখানে কোনও কারণে 'ভূতলং ঘটাভাববৎ' এইরূপ নিশ্চয় হইয়াছে, পরে ভূতলবৃত্তি ঘটে চক্ষুঃসংযোগরূপ লৌকিকসন্নিকর্ষ ঘটিয়াছে তথায় ঐ লৌকিকসন্নিকর্ষপ্রভাবে উৎপদ্যমান 'ঘটবৎ ভূতল' এই জ্ঞান পূর্ববর্তী বাধনিশ্চয়দ্বারা বাধিত হয় না। অতএব প্রতিবধ্য প্রতিবন্ধকভাবের কল্পনায় প্রতিবধ্যজ্ঞানাংশে লৌকিকসন্নিকর্ষাজন্যত্ব বিশেষণের নিবেশ কর্তব্য। উক্ত কারণে প্রাগুক্ত জ্ঞান লৌকিকসন্নিকর্ষাজন্য না হওয়ায় পূর্ব বাধনিশ্চয়দ্বারা বাধিত হয় না।

ঐরূপ 'শঙ্খঃ পীতত্বাভাববান্' এইরূপ সুদৃঢ় নিশ্চয় থাকিলেও পিত্তপ্রভাবজনিত কামলাদিদোষনিবন্ধন 'শঙ্খঃ পীতত্ববান্' এইরূপ জ্ঞান জন্মে। অতএব

प्रतिबन्धः। निरुक्तविशेषणद्वयस्य
दोषविशेषजन्यत्वात् न प्रागुक्तबाधनिश्चयेन प्रतिबन्धः। निरुक्तविशेषणद्वयस्य एकोक्त्या संग्रहार्थं लाघवार्थञ्च प्रतिबध्यज्ञानांशे साक्षात्कारित्वव्यञ्जक विषयिता-शून्यत्वं विशेषणं देयम्। यस्य ज्ञानस्य 'साक्षात्करोमि' इत्याद्याकारानुव्यवसायो भवति तत्रैव साक्षात्कारित्वव्यञ्जकविषयिता स्वीक्रियते। लौकिकसन्निकर्षजन्यस्य तथा दोषविशेषजन्यस्य ज्ञानस्य 'साक्षात्करोमी'त्याद्याकारानुव्यवसायात् तत्रोभयत्रैव साक्षात्कारित्वव्यञ्जकविषयितासत्त्वेन न तच्छून्यत्वरूपप्रकृतप्रतिबध्यतावच्छेदक-धर्माक्रान्तत्वम्। लौकिक सन्निकर्षविशेषा दोषविशेषाश्च आकरादिभ्यो ज्ञातव्याः।

हेतुः—हेतुपदार्थो द्विविधः, ज्ञापको जनकश्च। ज्ञापकत्वं नाम ज्ञानजनकज्ञान-विषयत्वम्। उदाहरणं यथा—वह्निमान् धूमादित्यादौ वह्न्याद्यनुमितिरूपज्ञानजनकज्ञान-विषयो धूमः। ज्ञायमानस्य धूमादेः कारणत्वमते तु ज्ञापकत्वं ज्ञानजनकत्वमेव। वह्निमान् धूमादित्यादौ वह्निव्याप्यो धूमः इति व्याप्तिज्ञानस्य वह्निव्याप्यधूमवान् पर्वत इत्यादिपरामर्शस्य च वह्न्यनुमितिरूपसाध्यज्ञानजनकत्वात् धूमादिरूपहेतुविषय-कत्वाच्च धूमादेर्ज्ञापकत्वरूपहेतुत्वम्।

### অনুবাদ

প্রতিবধ্যজ্ঞানাংশে দোষবিশেষাজন্যত্বও বিশেষণ দিতে হইবে। অতএব উক্ত স্থলে শঙ্খে পীতত্ববোধ কামলরূপদোষবিশেষজন্য বলিয়া প্রাগুক্ত বাধনিশ্চয় উহার প্রতিরোধ করে না। উক্ত দুইটী প্রতিবধ্যজ্ঞানবিশেষণের এক কথায় সংগ্রহের জন্য এবং লাঘবের জন্য প্রতিবধ্যজ্ঞানাংশে 'সাক্ষাৎকারিত্বব্যঞ্জকবিষয়িতা-শূন্যত্ব বিশেষণ দিতে হইবে। যে জ্ঞানের 'সাক্ষাৎকরোমি' ইত্যাকার অনুব্যবসায় হয়, সেই জ্ঞানেই সাক্ষাৎকারিত্বব্যঞ্জক বিষয়িতা স্বীকার করা হয়। লৌকিক-সন্নিকর্ষজন্য জ্ঞান এবং দোষবিশেষজন্য জ্ঞানের অনুব্যবসায় 'সাক্ষাৎকরোমি' ইত্যাকার হয় বলিয়া উহাতে সাক্ষাৎকারিত্বব্যঞ্জকবিষয়িতা থাকায় উহা সাক্ষাৎ-কারিত্বব্যঞ্জকবিষয়িতাশূন্যত্বরূপ প্রতিবধ্যতাবচ্ছেদকধর্মাক্রান্ত হয় না। লৌকিক-সন্নিকর্ষবিশেষ ও দোষবিশেষ আকরগ্রন্থাদি হইতে জ্ঞাতব্য।

হেতু—হেতুপদার্থ দুই প্রকার, জ্ঞাপক হেতু এবং জনক হেতু। জ্ঞাপকত্ব জ্ঞানজনকজ্ঞানবিষয়ত্ব। উদাহরণ যথা—বহ্নিমান্ ধূমাৎ ইত্যাদিস্থলে বহ্ন্যাদি-সাধ্যক অনুমিতিরূপজ্ঞানজনক যে জ্ঞান তাহার বিষয় ধূম। জ্ঞায়মান ধূমাদির অনুমিতি কারণত্বমতে কিন্তু জ্ঞানজনকত্বই জ্ঞাপকত্ব। বহ্নিমান্ ধূমাৎ ইত্যাদি স্থলে 'বহ্নিব্যাপ্যো ধূমঃ' এই ব্যাপ্তি-জ্ঞান এবং 'বহ্নিব্যাপ্যধূমবান্ পর্বতঃ' ইত্যাদি

दोषविशेषजन्यत्वात् न प्रागुक्तबाधनिश्चयेन प्रतिबन्धः। निरुक्तविशेषणद्वयस्य एकोक्त्या संग्रहार्थं लाघवार्थञ्च प्रतिबध्यज्ञानांशे साक्षात्कारित्वव्यञ्जक विषयिता-शून्यत्वं विशेषणं देयम्। यस्य ज्ञानस्य 'साक्षात्करोमि' इत्याद्याकारानुव्यवसायो भवति तत्रैव साक्षात्कारित्वव्यञ्जकविषयिता स्वीक्रियते। लौकिकसन्निकर्षजन्यस्य तथा दोषविशेषजन्यस्य ज्ञानस्य 'साक्षात्करोमी'त्याद्याकारानुव्यवसायात् तत्रोभयत्रैव साक्षात्कारित्वव्यञ्जकविषयितासत्त्वेन न तच्छून्यत्वरूपप्रकृतप्रतिबध्यतावच्छेदक-धर्माक्रान्तत्वम्। लौकिक सन्निकर्षविशेषा दोषविशेषाश्च आकरादिभ्यो ज्ञातव्याः।

हेतुः—हेतुपदार्थो द्विविधः, ज्ञापको जनकश्च। ज्ञापकत्वं नाम ज्ञानजनकज्ञान-विषयत्वम्। उदाहरणं यथा—वह्निमान् धूमादित्यादौ वह्न्याद्यनुमितिरूपज्ञानजनकज्ञान-विषयो धूमः। ज्ञायमानस्य धूमादेः कारणत्वमते तु ज्ञापकत्वं ज्ञानजनकत्वमेव। वह्निमान् धूमादित्यादौ वह्निव्याप्यो धूमः इति व्याप्तिज्ञानस्य वह्निव्याप्यधूमवान् पर्वत इत्यादिपरामर्शस्य च वह्न्यनुमितिरूपसाध्यज्ञानजनकत्वात् धूमादिरूपहेतुविषय-कत्वाच्च धूमादेर्ज्ञापकत्वरूपहेतुत्वम्।

## অনুবাদ

প্রতিবধ্যজ্ঞানাংশে দোষবিশেষাজন্যত্বও বিশেষণ দিতে হইবে। অতএব উক্ত স্থলে শঙ্খে পীতত্ববোধ কামলরূপদোষবিশেষজন্য বলিয়া প্রাগুক্ত বাধনিশ্চয় উহার প্রতিরোধ করে না। উক্ত দুইটী প্রতিবধ্যজ্ঞানবিশেষণের এক কথায় সংগ্রহের জন্য এবং লাঘবের জন্য প্রতিবধ্যজ্ঞানাংশে 'সাক্ষাৎকারিত্বব্যঞ্জকবিষয়িতা-শূন্যত্ব বিশেষণ দিতে হইবে। যে জ্ঞানের 'সাক্ষাৎকরোমি' ইত্যাকার অনুব্যবসায় হয়, সেই জ্ঞানেই সাক্ষাৎকারিত্বব্যঞ্জক বিষয়িতা স্বীকার করা হয়। লৌকিক-সন্নিকর্ষজন্য জ্ঞান এবং দোষবিশেষজন্য জ্ঞানের অনুব্যবসায় 'সাক্ষাৎকরোমি' ইত্যাকার হয় বলিয়া উহাতে সাক্ষাৎকারিত্বব্যঞ্জকবিষয়িতা থাকায় উহা সাক্ষাৎ-কারিত্বব্যঞ্জকবিষয়িতাশূন্যত্বরূপ প্রতিবধ্যতাবচ্ছেদকধর্মাক্রান্ত হয় না। লৌকিক-সন্নিকর্ষবিশেষ ও দোষবিশেষ আকরগ্রন্থাদি হইতে জ্ঞাতব্য।

হেতু—হেতুপদার্থ দুই প্রকার, জ্ঞাপক হেতু এবং জনক হেতু। জ্ঞাপকত্ব জ্ঞানজনকজ্ঞানবিষয়ত্ব। উদাহরণ যথা—বহ্নিমান্ ধূমাৎ ইত্যাদিস্থলে বহ্ন্যাদি-সাধ্যক অনুমিতিরূপজ্ঞানজনক যে জ্ঞান তাহার বিষয় ধূম। জ্ঞায়মান ধূমাদির অনুমিতি কারণত্বমতে কিন্তু জ্ঞানজনকত্বই জ্ঞাপকত্ব। বহ্নিমান্ ধূমাৎ ইত্যাদি স্থলে 'বহ্নিব্যাপ্যো ধূমঃ' এই ব্যাপ্তি-জ্ঞান এবং 'বহ্নিব্যাপ্যধূমবান্ পর্বতঃ' ইত্যাদি

जनको हेतुश्च कारणरूपः। कारणत्वञ्च अनन्यथासिद्धत्वे सति कार्यनियतपूर्ववर्तित्वम्। अन्यथा अन्यप्रकारेण कार्यस्य क्लृप्तकारणभिन्नत्वरूपेण सिद्धाः प्रसिद्धा इति कथञ्चिदन्यथासिद्धपदव्युत्पत्तिः शक्यवचना। न अन्यथासिद्धा इति अनन्यथासिद्धाः। प्रकृतान्यथासिद्धप्रकारभेदा आकरग्रन्थेभ्यो ज्ञातव्याः।

निखिलान्यथासिद्धगतानुगतधर्मस्य निर्वक्तुमशक्यतया प्रकृतलक्षणे तत्तदन्यथासिद्धव्यक्तिभेदकूटवत्त्वे सतीति सत्यन्तदलार्थः प्रतिपत्तव्यः। न च केवलमनन्यथासिद्धत्वमेव कारणलक्षणमस्तु किं कार्यनियतपूर्ववर्तित्वरूपविशेष्यांशप्रवेशेनेति वाच्यम्। भेदकूटलाघवाय तन्निवेशस्यावश्यकत्वात्। तथा हि अन्यथासिद्धा द्विविधाः सन्ति, केचित् कार्यनियतपूर्ववर्तिनः, केचिच्च कार्यनियतपूर्ववर्तिभिन्नाः। अनन्यथासिद्धत्वमात्रस्य कारणलक्षणत्वे तेषां द्विविधान्यथा सिद्धानामेव भेदा लक्षणगर्भे निवेशनीयाः। कार्यनियतपूर्ववर्तित्वरूपविशेष्यदलोपादाने तु कार्यनियतपूर्ववर्तिभिन्नानां तेन विशेष्यदलेनैव वारणसम्भवात् कार्यनियतपूर्ववर्तिनामन्यथासिद्धानामेव भेदकूटनिवेशेन चरितार्थतया सुमहल्लाघवं भवतीति ध्येयम्।

### অনুবাদ

পরামর্শ বহ্নির অনুমিতিরূপ সাধ্য জ্ঞানের জনক এবং উহা ধূমাদিরূপ হেতুবিষয়ক বলিয়া ধূমাদি জ্ঞাপক হেতু। জনক হেতু কারণরূপ। অন্যথাসিদ্ধভিন্ন হইয়া যাহা কার্যের নিয়ত পূর্ববর্তী তাহাই কারণ। অন্যথা অর্থাৎ অন্যপ্রকারে, কার্যে যাহা কৢপ্ত কারণ তদ্‌ভিন্নপ্রকারে যাহা সিদ্ধ বা প্রসিদ্ধ এইরূপ কথঞ্চিৎ অন্যথাসিদ্ধ পদের ব্যুৎপত্তি বলা যায়। যাহা উক্তরূপ অন্যথাসিদ্ধ নয় তাহা অনন্যথাসিদ্ধ-পদবাচ্য। উক্ত অন্যথাসিদ্ধবস্তুর প্রকারভেদ অ করগ্রন্থ হইতে জ্ঞাতব্য।

নিখিল অন্যথাসিদ্ধগত অনুগত কোনও ধর্ম নির্বচন করা যায় না বলিয়া প্রকৃত কারণলক্ষণে সেই সেই অন্যথাসিদ্ধব্যক্তিবর্গের তত্তদ্‌ব্যক্তিত্বরূপে ভেদকূট-বত্ত্বসমানাধিকরণ ইহাই সত্যন্তদলের অর্থ বোধ্য। এস্থলে ইহা বলা যায় না যে উক্ত 'অনন্যথাসিদ্ধত্ব'ই কেবল কারণের লক্ষণ হউক, কার্যনিয়তপূর্ববর্তিত্বরূপ-বিশেষ্যাংশ নিবেশের প্রয়োজন কি? কারণ ভেদকূটের লাঘবের জন্য উহা নিবেশ করা আবশ্যক। উহার উপপাদন এই যে,—অন্যথাসিদ্ধবস্তু দুই প্রকার; কতকগুলি অন্যথাসিদ্ধ কার্যের নিয়ত পূর্ববর্তী, এবং কতকগুলি অন্যথাসিদ্ধ কার্যনিয়তপূর্ববর্তী নহে। অনন্যথাসিদ্ধত্ব মাত্র কারণলক্ষণ হইলে ঐ অন্যথা-সিদ্ধের দ্বিবিধ অন্যথাসিদ্ধেরই ভেদ লক্ষণগর্ভে নিবেশ করিতে হয়। কিন্তু

कार्यत्वं नाम प्रागभावप्रतियोगित्वं स्वरूपसम्बन्धविशेषो वा। कार्य-नियतपूर्ववर्तित्वञ्च कार्याऽव्यवहितप्राक्क्षणावच्छेदेन कार्यसमानाधिकरणाभाव-प्रतियोगितानवच्छेदकधर्मवत्त्वम्। कार्याऽव्यवहितप्राक्क्षणश्च कार्यपूर्ववर्ती यः क्षणः केनापि कार्यपूर्ववर्तिना क्षणेन व्यवहितो न भवति स एव क्षणः। क्षणः सूक्ष्मतमः कालविशेषः। कार्यपूर्ववर्तिनः स्थूलकालस्य घटका बहव एव क्षणाः सन्ति। ते च क्रमेणाविर्भवन्ति। तत्र कार्यसन्निहितो यः कार्यापेक्षया पूर्ववर्ती प्रथमः क्षणः स एव तत्पूर्ववर्तिना क्षणान्तरेणाऽव्यवहितत्वात् तदीयाऽव्यवहित-प्राक्क्षणः, न तु तत्क्षण पूर्ववर्तीनि द्वितीयादिक्षणान्तराणि, तेषां अव्यवहित-प्राक्क्षणादिभिर्व्यवहितत्वात्।

नैयायिकभाषया तस्य निर्देशस्तु—कार्यप्रागभावाधिकरणसमयप्रागभावानधि-करणत्वे सति कार्यप्रागभावाधिकरणक्षणः कार्याऽव्यवहितप्राक्क्षण इति। कार्या-व्यवहितप्राक्क्षणपूर्ववर्तिक्षणषु अतिव्याप्तिवारणाय सत्यन्तम्। कार्योत्तरक्षणादिषु

**অনুবাদ**

'কার্যনিয়তপূর্ববর্তিত্বরূপ বিশেষ্যদলের উপাদান করিলে কার্যনিয়তপূর্ববর্তিভিন্ন অন্যথাসিদ্ধসমূহের ঐ বিশেষ্যদলদ্বারাই বারণ সম্ভব হওয়ায় লক্ষণগর্ভে কার্য-নিয়তপূর্ববর্তী অন্যথাসিদ্ধব্যক্তিবর্গেরই ভেদ নিবেশদ্বারাই প্রয়োজন সিদ্ধ হওয়ায় লক্ষণে অত্যন্ত লাঘব হয় ইহা বুঝিতে হইবে।

কার্যত্বপদার্থ প্রাগভাবপ্রতিযোগিত্ব। অথবা উহা স্বরূপসম্বন্ধবিশেষ। কার্যনিয়ত পূর্ববর্তিত্বপদার্থ—কার্যাব্যবহিতপ্রাক্ক্ষণে কার্যসমানাধিকরণ অভাবের প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকধর্মবত্ত্ব। কার্যাব্যবহিতপ্রাক্ক্ষণপদার্থ—কার্যবস্তুর পূর্ববর্তী যে ক্ষণরূপ সূক্ষ্ম সময়টী ঐ কার্যের পূর্ববর্তী কোনও ক্ষণদ্বারা ব্যবহিত হয় না, সেই ক্ষণই মাত্র। ক্ষণপদের অর্থ অতিসূক্ষ্ম কালবিশেষ। কার্যের পূর্ববর্তী স্থূলকালবিশেষের ঘটক বহু সংখ্যক ক্ষণই থাকে। ঐ ক্ষণগুলি যথাক্রমে আবির্ভূত হয়। তন্মধ্যে কার্যের সন্নিহিত যে ক্ষণটী প্রথম পূর্ববর্তী, সেই ক্ষণটীই কার্যের পূর্ববর্তী কোনও ক্ষণদ্বারা ব্যবহিত না হওয়ায় ঐ কার্যের অব্যবহিত প্রাক্ক্ষণ, কিন্তু তৎক্ষণপূর্ববর্তী অপরাপর ক্ষণগুলি নহে। কারণ সেগুলি কার্যের অব্যবহিত পূর্ববর্তী প্রথমাদি ক্ষণদ্বারা ব্যবহিত।

ন্যায়দর্শনের ভাষায় উহার নির্দেশ যথা—কার্যপ্রাগভাবাধিকরণসময়-প্রাগভাবানধিকরণত্বে সতি কার্যপ্রাগভাবাধিকরণক্ষণঃ কার্যাব্যবহিত প্রাক্ক্ষণঃ

अतिव्याप्तिवारणाय विशेष्यदलम्। न च कार्यप्रागभावस्य तत्प्रतियोगिभूत-कार्यनाश्यत्वात् कार्योत्पत्त्यनन्तरमेव नाशसम्भवेन कार्यप्रागभावाधिकरण-समयत्वस्य कार्योत्पत्तिक्षणरूपसमयेऽपि सत्त्वेन तत्पूर्वक्षणे तत्प्रागभावानधि-करणत्वस्याघटमानतया तत्र सत्यन्तार्थानुपपत्तिरिति वाच्यम्। प्रागभावस्य प्रतियोगिसामग्रीनाश्यत्वमतानुसारेण तदभिधानात्। अत्र प्रागभावाधिकरणत्वं कालिकसम्बन्धेन, दैशिकस्वरूपेण ध्वंसप्रागभावयोः प्रतियोगिसमवायिदेशवृत्तित्व-नियमात्।

कार्याधिकरणभिन्नकिञ्चिद्वृत्त्यभावमादायासम्भववारणाय कार्यसमानाधिकर-णेत्यभावविशेषणम्। कार्यसामानाधिकरण्यघटककार्याधिकरणत्वं प्रकृतकार्यतावच्छे-दकसम्बन्धेन। प्रतियोगिता च प्रकृतकारणतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्ना ग्राह्या। तादात्म्यसम्बन्धेन कारणतास्थले उपपत्त्यर्थं अभावपदेन भेदः अत्यन्ताभावश्चेति द्विविधाभावो ग्राह्यः।

### অনুবাদ

ইতি। কার্যের অব্যবহিতপ্রাক্‌ক্ষণ অপেক্ষা পূর্ববর্তী ক্ষণসমূহে অতিব্যাপ্তি বারণের জন্য সত্যন্তদল এবং কার্যের উত্তরবর্তী ক্ষণসমূহে অতিব্যাপ্তিবারণের জন্য বিশেষ্যদল নিবেশিত। এস্থলে বলা যায় না যে, কার্যের প্রাগভাব উহার প্রতিযোগিস্বরূপ কার্যদ্বারা নাশ প্রাপ্ত হয়। অতএব কার্যের উৎপত্তির পরেই উহার নাশ সম্ভবপর হওয়ায় কার্যের উৎপত্তিক্ষণেও কার্যপ্রাগভাবাধিকরণত্ব থাকায় তৎপূর্বক্ষণে তৎপ্রাগভাবের অনধিকরণত্বের অসত্তাহেতু তথায় সত্যন্তদলের অর্থ উপপন্ন হয় না। কারণ 'প্রাগভাব প্রতিযোগিসামগ্রীনাশ্য' এই মতানুসারেই উহা বলা হইয়াছে।

উক্ত স্থলে সময়ে কার্যপ্রাগভাবাধিকরণত্ব কালিকসম্বন্ধে। কারণ ধ্বংস ও প্রাগভাব দৈশিকস্বরূপসম্বন্ধে প্রতিযোগীর সমবায়ী দেশে থাকে ইহাই নিয়ম। কার্যাধিকরণ ভিন্ন কোনও পদার্থে বর্তমান অভাব গ্রহণ করিয়া সম্ভাব্য অসম্ভব দোষের বারণার্থ অভাবাংশে 'কার্যসমানাধিকরণ' এই বিশেষণ নিবেশ করা হইয়াছে। কার্যসামানাধিকরণ্যের অন্তর্গত কার্যাধিকরণতা প্রকৃত কার্যতাব-চ্ছেদক সম্বন্ধে বুঝিতে হইবে। প্রতিযোগিতা কারণতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। তাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন কারণতাস্থলে উপপত্তির জন্য অভাবপদে ভেদ ও অত্যন্তাভাব এই দ্বিবিধ অভাবই গ্রহণ করিতে হইবে।

तदिदं कारणं द्विविधं, फलोपधायकं स्वरूपयोग्यञ्च। स्वाव्यवहितपूर्ववर्तित्व-स्वसामाधिकारण्योभयसम्बन्धेन कार्यविशिष्टं कारणं फलोपधायकम्। प्रकृत-कारणतावच्छेदकधर्मवन्मात्रं स्वरूपयोग्यम्। तादृशकारणं घटादिकार्यस्थले अरण्यस्थ-दण्डादि। तादृशे कारणे अव्याप्तिवारणायैव लक्षणे तादृशाभावाप्रतियोगित्वमपहाय तादृशाभावप्रतियोगितानवच्छेदकधर्मवत्त्वपर्यन्तानुसरणम्। तादृशप्रतियोगितान-वच्छेदकधर्म एव कारणतावच्छेदको धर्मः। अव्याप्यवृत्तिचक्षुःसंयोगादिरूप-प्रत्यक्षादिकारणस्थले विषयत्वादिरूपकार्यतावच्छेदकसम्बन्धेन प्रत्यक्षरूपकार्याधि-करणे प्रत्यक्षविषये घटादौ चक्षुःसंयोगादेरव्याप्यवृत्तेरभावमादायाव्याप्तिवारणाय प्रतियोग्यसम्बन्धित्वेन कार्याधिकरणं विशेषणीयम्। कार्यकारणयोरेकं विशेषो-दाहरणं यथा—घटस्य कारणं दण्ड इति। अत्र कार्यो घटः, संयोगसम्बन्धा-वच्छिन्नोत्पत्तिः कार्यतावच्छेदकसम्बन्धः, कार्यस्य घटत्वावच्छिन्नस्य तेन सम्बन्धेन अधिकरणं चक्रम्, कारणं दण्डः, स्वजन्यभ्रमिमत्त्वं कारणतावच्छेदकसम्बन्धः, तेन सम्बन्धेन प्रकृतकार्यस्य घटत्वावच्छिन्नस्य संयोगसम्बन्धावच्छिन्नोत्पत्तिरूप-कार्यतावच्छेदकसम्बन्धेनाधिकरणे चक्रे प्रकृतकार्यभूतघटाव्यवहितप्राक्क्षणा-वच्छेदेन पदार्थान्तरस्य अभावो वर्तते, न तु दण्डस्य, अतः दण्डत्वं तादृशाभाव-

### অনুবাদ

উক্ত কারণ—ফলোপধায়ক ও স্বরূপযোগ্য ভেদে দ্বিবিধ। স্বাব্যবহিত-পূর্বত্ব স্বসামানাধিকরণ্যোভয়সম্বন্ধে কার্যবিশিষ্টকারণ ফলোপধায়ক কারণ। প্রকৃত কারণতাবচ্ছেদক ধর্মবৎ মাত্রই স্বরূপযোগ্য কারণ। সেইরূপ কারণ—ঘটাদিরূপ কার্যস্থলে অরণ্যস্থ দণ্ডাদি। তাদৃশ কারণে অব্যাপ্তিবারণের জন্যই অভাবাপ্রতিযোগিত্ব পরিহার করিয়া অভাব প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক ধর্মবত্ত্বপর্যন্ত নিবেশ করা হইয়াছে।

তাদৃশ প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক ধর্মই কারণতাবচ্ছেদক ধর্ম। অব্যাপ্যবৃত্তি চক্ষুঃসংযোগাদিরূপ প্রত্যক্ষাদিকারণস্থলে বিষয়ত্বাদিরূপ কার্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধে প্রত্যক্ষরূপ কার্যের অধিকরণ প্রত্যক্ষবিষয়ীভূত ঘটাদিতে অব্যাপ্যবৃত্তি চক্ষুঃ-সংযোগাদির অভাব আদান করিয়া যে অব্যাপ্তিদোষের সম্ভাবনা হয় তাহার বারণের জন্য কার্যাধিকরণে প্রতিযোগীর অসম্বন্ধিত্ব বিশেষণ দিতে হইবে।

কার্য ও কারণের একটী বিশেষ উদাহরণ যথা—ঘটরূপ কার্যের কারণ দণ্ড। এখানে ঘট কার্য, সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন উৎপত্তি কার্যতাবচ্ছেদকসম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধে

প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকভিন্নং তদ্বৃত্তয়া দণ্ডে ঘটকারণলক্ষণসঙ্গতিঃ। কার্যনিরূপিতা কার্যতা নিরূপিতা চ কারণতা, কারণনিরূপিতা কারণতানিরূপিতা চ কার্যতা বোধ্যা। কার্যতাবচ্ছেদকগতা অবচ্ছেদকতা কার্যতা নিরূপিতা, কারণতাবচ্ছেদকগতা অবচ্ছেদকতা কারণতা নিরূপিতা। কার্যতাবচ্ছেদকভেদেন কারণতাবচ্ছেদকভেদেন চ যথাযথং কার্যতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদককারণতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদকসম্বন্ধবিশেষা ঊহনীয়াঃ।

**অনুবাদ**

ঘটত্বাবচ্ছিন্নরূপ কার্যের অধিকরণ চক্র (যে গোলাকার ভ্রাম্যমান চক্রের উপর ঘট প্রস্তুত হয়), কারণ দণ্ড, স্বজন্যভ্রমিমত্ত্ব কারণতাবচ্ছেদকসম্বন্ধ। সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন উৎপত্তিরূপ প্রকৃত কার্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধে ঘটত্বাবচ্ছিন্নরূপ কার্যের অধিকরণীভূত চক্রে ঘটরূপ প্রকৃত কার্যের অব্যবহিত পূর্বক্ষণে স্বজন্যভ্রমিমত্ত্বরূপ প্রকৃতকারণতাবচ্ছেদক সম্বন্ধে অন্য বস্তুর অভাব আছে, কিন্তু দণ্ডের অভাব নাই। অতএব দণ্ডত্ব তাদৃশ অভাব নিরূপিত প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক অর্থাৎ অবচ্ছেদকভিন্ন ধর্ম, ঐ দণ্ডত্বরূপ ধর্ম দণ্ডে থাকায় উহাতে ঘটের কারণলক্ষণ সমন্বয় হয়।

কারণতা কার্য ও কার্যতা নিরূপিত, এবং কার্যতা কারণ ও কারণতা নিরূপিত বুঝিতে হইবে। কার্যতাবচ্ছেদকে যে অবচ্ছেদকতা বর্তমান উহা কার্যতা নিরূপিত এবং কারণতাবচ্ছেদকে যে অবচ্ছেদকতা থাকে উহা কারণতা নিরূপিত। কার্যতাবচ্ছেদক ও কারণতাবচ্ছেদক ধর্ম ভেদে যথাযথ কার্যতানিরূপিত অবচ্ছেদকতার এবং কারণতা নিরূপিত অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ লক্ষণীয়।
সেই কারণ তিন প্রকার; সমবায়িকারণ, অসমবায়িকারণ ও নিমিত্তকারণ।

তন্মধ্যে বিশ্বনাথ ন্যায়পঞ্চানন কারিকাবলী বা ভাষাপরিচ্ছেদগ্রন্থে সমবায়িকারণের স্বরূপ এইরূপ বলিয়াছেন, যথা—'যৎসমবেতং কার্যং ভবতি জ্ঞেয়ং সমবায়িজনকং তৎ'। ঐ গ্রন্থাংশে 'ভবতি' এই পদের সত্তারূপ এবং উৎপত্তিরূপ বিভিন্ন অর্থ অবলম্বন করিয়া দুই প্রকার অর্থ হইতে পারে। একটী অর্থ 'যস্মিন্ সমবেতং যৎসমবেতং' এই ব্যুৎপত্তি অনুসারে 'কোনও জন্য বস্তু যাহাতে সমবায়সম্বন্ধে বর্তমান হয়, অর্থাৎ যে অধিকরণনিরূপিত সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নবৃত্তিতার আশ্রয় হয়, সেই অধিকরণীভূত বস্তু সমবায়িকারণ। উহা কারিকাবলীর প্রভাটীকাকার ঐ গ্রন্থাংশের ব্যাখ্যায় বলিয়াছেন, যথা—'যস্মিন

সমবেতমিতি ব্যুৎপত্ত্যা যন্নিরূপিতসমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নবৃত্তিতাশ্রয়ঃ কার্যং তৎ সমবায়িকারণমিত্যর্থঃ। তথা চ কার্যনিষ্ঠসমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাধেয়তানিরূপিতাধিকরণত্বং সমবায়িকারণত্বমিতি ফলিতম্' ইতি। অর্থাৎ 'যাহাতে সমবেত' এই ব্যুৎপত্তিমূলক 'যৎসমবেত' পদের অর্থানুসারে 'কোনও কার্য বস্তু যে বস্তুদ্বারা নিরূপিত সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতার আশ্রয় হয়, তাহা সমবায়িকারণ। উহার ফলিতার্থ এই যে, কোনও কার্যগত সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আধেয়তাদ্বারা নিরূপিত অধিকরণতাই সমবায়িকারণত্ব। উহার বহু উদাহরণই অনায়াসলভ্য।

দ্বিতীয় অর্থটী 'ভবতি' এই পদের উৎপত্তিরূপ অর্থ অবলম্বন করিয়া। যথা—কার্য যাহাতে সমবায়সম্বন্ধে সম্বদ্ধ হইয়া উৎপন্ন হয় অর্থাৎ কোনও কার্যবস্তু যাহাতে সমবায়সম্বন্ধে উৎপন্ন হয় তাহাই সমবায়িকারণ। ঐ পক্ষ অবলম্বন করিয়াই 'সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকার্যতানিরূপিতাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন কারণতাই সমবায়িকারণতা' প্রাচীন ন্যায়াচার্যগণ এইরূপ নিষ্কৃষ্ট সমবায়িকারণ সামান্যলক্ষণের উপদেশ করিয়াছেন।

সমবায়িকারণস্থলে কার্যতা সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং কারণতা তাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। উহাদের পরস্পর নিরূপ্য নিরূপকভাব শাস্ত্রসিদ্ধ বলিয়া ঘটত্বাবচ্ছিন্ন সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকার্যতানিরূপিত তাদাত্ম্য সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকারণতা ঘটাদির অবয়বাদিরূপ কপালাদিপদার্থে থাকায় কপালাদিতে উক্ত সামান্য সমবায়িকারণত্ব উপপন্ন হয়। কারণ 'ঘটাদিরূপ কার্য তৎসমবায়িকারণ কপালাদিতেই সমবায়সম্বন্ধে উৎপন্ন হয় অন্যত্র নহে' এই নিয়মবশতঃ ঘটাদিগত সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকার্যতানিরূপিত কপালাদিগত কারণতা তাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিয়াই সিদ্ধ। উক্তরূপ কারণতা বিশিষ্টই সামান্য সমবায়িকারণ।

ঐ সমবায়িকারণের বিশেষলক্ষণ বলিতে ইচ্ছা হইলে উক্ত সামান্যলক্ষণঘটক কার্যতায় কার্যগত সেই সেই বিশেষ ধর্মাবচ্ছিন্নত্ব এবং কারণতায় কারণগত সেই সেই বিশেষ বিশেষ ধর্মাবচ্ছিন্নত্ব নিবেশ করিতে হইবে। যথা—'ঘটত্বাবচ্ছিন্নসমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকার্যতানিরূপিততাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্নকপালত্বাবচ্ছিন্নকারণত্বং ঘটত্বাবচ্ছিন্ননিরূপিত-কপালত্বাবচ্ছিন্নসমবায়িকারণত্বম্। এইরূপ অন্যত্রও বিশেষ বোদ্ধব্য।

ঐ সমবায়িকারণত্ব দ্রব্যেরই ধর্ম, অন্যের ধর্ম নহে। অর্থাৎ ঐ সমবায়িকারণত্বরূপ ধর্ম দ্রব্যেই থাকে অন্য গুণাদি পদার্থে থাকে না। দৈশিক সম্বন্ধই

अथ असमवायिकारणम्। असमवायिकारणलक्षणं 'तत्रासन्नं जनकम्' इति विश्वनाथः प्राह। तदर्थश्च—तत्रेति पूर्वोक्तसमवायिकारणे आसन्नं कार्यैकार्थ-प्रत्यासत्ति—कारणैकार्थप्रत्यासत्त्येतदन्यतरप्रत्यासत्त्या कार्याधिकरणे सम्बद्धं सत् यत् प्रकृतकार्यं प्रति जनकं अनन्यथासिद्धनियतपूर्ववर्ति तत् असमवायिकारणम्। कार्यैकार्थप्रत्यासत्तिः कार्येण सह एकस्मिन् अर्थे वस्तुनि अधिकरणभूते प्रत्यासत्तिः सम्बन्धः। तथाहि असमवायिकारणस्थले कार्यं समवायेन स्वसमवायिकारणे उत्पद्यते वर्तते च। तद् यथा—उक्तसमवायिकारणे सम्बद्धं तथैव तत्र समवायिकारणे सम्बद्धं सत् किमपि असमवायिकारणं कार्यस्य जनकं भवति सा प्रत्यासत्तिः कारणस्य समवायलक्षणा कार्यैकार्थप्रत्यासत्तिः। यथाश्रुततदर्थः कार्यसमवाय्यनुयोगिकः समवायसम्बन्ध इत्यर्थः। यथा—घटादिकार्यं प्रति कपालादिसंयोगस्य

**অনুবাদ**

ঐ নিয়মের ঘটক। অর্থাৎ উক্ত সমবায়িকারণত্ব দৈশিক স্বরূপ সম্বন্ধে দ্রব্যেই থাকে উক্ত সম্বন্ধে অন্যত্র থাকে না ইহাই নিয়ম, অতএব কালিকবিষয়িতা বা পরম্পরাদিসম্বন্ধে উহা অন্যত্র থাকিলেও উক্ত নিয়মভঙ্গদোষ হয় না।

অতঃপর অসমবায়িকারণ। বিশ্বনাথ ঐ অসমবায়িকারণের লক্ষণ এইরূপ করিয়াছেন যথা—'তত্রাসন্নং জনকং দ্বিতীয়ম্।' 'তত্র' ইহার অর্থ পূর্বোক্ত সমবায়িকারণে। 'আসন্ন' শব্দের অর্থ—'কার্যৈকার্থপ্রত্যাসত্তি ও কারণৈকার্থ-প্রত্যাসত্তি' এই দুইটী প্রত্যাসত্তির অন্যতর অর্থাৎ যে কোনও একটী প্রত্যাসত্তি দ্বারা কার্যাধিকরণে সম্বদ্ধ হইয়া যে বস্তু প্রকৃত কার্যের কারণ অর্থাৎ অনন্যথাসিদ্ধ নিয়তপূর্ববর্তিরূপ কারণ লক্ষণাক্রান্ত হয়, তাহা প্রকৃত কার্যের অসমবায়িকারণ।

কার্যৈকার্থপ্রত্যাসত্তি ইহার অর্থ—কার্যের সহিত একই অধিকরণে প্রত্যাসত্তি বা সম্বন্ধ। উহার বিবরণ যথা—অসমবায়িকারণস্থলে কার্য বস্তুটী নিজ সমবায়িকারণে উৎপন্ন হয় এবং থাকে। ঐ কার্য বস্তু যেমন উক্ত সমবায়ি-কারণে সম্বদ্ধ সেইরূপ ঐ অসমবায়িকারণে সম্বদ্ধ হইয়া কোনও অসমবায়িকারণ কার্যের জনক হয়, সেই কারণের ঐ সমবায়রূপ প্রত্যাসত্তি বা সম্বন্ধ কার্যৈকার্থ প্রত্যাসত্তি।

উহার যথাশ্রুত অর্থ—প্রকৃতকার্যের যাহা সমবায়সম্বন্ধে অধিকরণ তাহা যে (সমবায়) সম্বন্ধের অনুযোগী তাদৃশ (সমবায়) সম্বন্ধ। উদাহরণ যথা—ঘটাদি কার্যের প্রতি কপালাদি অবয়ব সংযোগের অসমবায়িকারণতাস্থলে

असमवायिकारणतास्थले समवायेन घटादि कार्यस्य अधिकरणे कपालादौ समवाय-लक्षणा तस्य कपालादि संयोगस्य प्रत्यासत्तिः। साक्षात् समवायमनुक्त्वा तादृशरूपेण प्रकृतप्रत्यासत्तिनिरुक्तिः कार्यकारणभावोपयुक्तस्य प्रकृतकार्यकारणयोः सामानाधि-करण्यप्रत्यायनाय। तदीयसंसर्गतावच्छेदकं समवायत्वमेव। कारणैकार्थ-प्रत्यासत्तिः—कारणेन सह एकस्मिन् अर्थे प्रत्यासत्तिः कारणसमवाय्यनुयोगिकः सम्बन्धः इति तत्पदस्य यथाश्रुतः अर्थः। कारणैकार्थप्रत्यासत्त्या प्रत्यासन्नस्य सतः असमवायिकारणतायां प्रसिद्धमुदाहरणं घटरूपाद्यात्मकं कार्यं प्रति कारणं कपालरूपादि। किन्तु कारणैकार्थप्रत्यासत्तिपदस्य तादृशयथाश्रुतार्थ-परिग्रहे तत्र तया प्रत्यासत्त्या घटरूपात्मकप्रकृतकार्यस्य समवायिकारणे घटे कपालरूपात्मकस्य असमवायिकारणस्य सम्बद्धत्वं न घटते। तथाहि प्रकृते कार्यं घटस्य रूपं, तस्य कारणं घटः, तस्य समवायि कपालात्मकं वस्तु तदनुयोगिकः सम्बन्धः कपालसमवेतस्य रूपस्य सम्बन्धः समवायलक्षणः। तेन सम्बन्धेन कपालरूपं कपाल एव सम्बद्धं न तु प्रकृतकार्यस्य अधिकरणे घटे। एवञ्च कपालरूपस्य घटरूपात्मक-

### অনুবাদ

সমবায়সম্বন্ধে ঘটাদিকার্যের অধিকরণ কপালাদিতে কপালাদি সংযোগের সমবায়রূপ প্রত্যাসত্তি বা সম্বন্ধ। সাক্ষাৎভাবে সমবায়সম্বন্ধ না বলিয়া ঐরূপে যে সমবায়সম্বন্ধের কথা বলা হয় উহা কার্যকারণভাবের পক্ষে উপযোগী প্রকৃত কার্য ও কারণের সামানাধিকরণ্য প্রতিপাদন করিবার জন্য। উহার সংসর্গতা-বচ্ছেদক ধর্ম কেবল সমবায়ত্বই হইবে ; কার্যসমবায্যনুযোগিকত্ব উহার ঘটক নহে।

কারণৈকার্থপ্রত্যাসত্তি কারণের সহিত এক অর্থে প্রত্যাসত্তি। কারণ সমবায্যনুযোগিক সম্বন্ধ ইহা যথাশ্রুত অর্থ। কারণৈকার্থপ্রত্যাসত্তি অসমবায়ি কারণতাস্থলের প্রসিদ্ধ উদাহরণ ঘটরূপাদিস্বরূপ কার্যের প্রতি কারণীভূত কপালরূপাদি। কিন্তু কারণৈকার্থ প্রত্যাসত্তিপদের উক্তরূপ যথাশ্রুত অর্থ গ্রহণ করিলে তথায় উক্তরূপ (কারণসমবায্যনুযোগিকসমবায়সম্বন্ধাত্মক) প্রত্যাসত্তিদ্বারা ঘটরূপাদিরূপ কার্যের সমবায়িকারণ ঘটে কপালরূপ কপাল-রূপাত্মক অসমবায়িকারণের সম্বদ্ধত্ব সংঘটিত হয় না। যেহেতু উক্ত উদাহরণস্থলে ঘটের রূপ কার্য, তাহার কারণ (সমবায়িকারণ) ঘট, তাহার সমবায়ী কপালরূপ বস্তু, তাহা যে সম্বন্ধের অনুযোগী সেই সম্বন্ধ কপালে সমবায় সম্বন্ধে বর্তমান রূপের (কপাল রূপের) সমবায়রূপসম্বন্ধ। ঐ সম্বন্ধে কপালরূপ কপালেই থাকে, কিন্তু (ঘটরূপাত্মক) কার্যের অধিকরণ ঘটে নহে। এমত অবস্থায়

कार्यसामानाधिकरण्याभावात् तत्र कारणसामान्यलक्षणमपि न सङ्गच्छते। अतः कारणैकार्थप्रत्यासत्तिपदस्य स्वसमवायिसमवेतत्वरूपः फलितार्थः स्वीक्रियते। प्रकृतस्थले स्वं कपालस्य रूपं तत्समवायि कपालं तत्समवेतत्वं घटे वर्तते, अतः तेन सम्बन्धेन कपालरूपात्मकस्य कारणस्य घटे सम्बद्धत्वेन सर्वमुपपन्नम्। कार्यैकार्थ-प्रत्यासत्ति-कारणैकार्थप्रत्यासत्तिरूपपारिभाषिकशब्दद्वयस्यार्थप्रदर्शनार्थमेव तयोरेतद्-विवरणमुपन्यस्तम्। तस्य शब्दद्वयस्य न्यायसम्प्रदाये प्रचरद्रूपत्वात्। तदुक्तं सिद्धान्तमुक्तावल्यां विश्वनाथेन यथा—'अत्र समवायिकारणे प्रत्यासन्नं द्विविधं कार्यैकार्थप्रत्यासत्त्या कारणैकार्थप्रत्यासत्त्या च' इति। फलितार्थस्तु समवायः स्वसमवायिसमवेतत्वश्चेति। तयोरन्यतरसम्बन्धेनैव च प्रकृतमसमवायिकारण-लक्षणमभिप्रेतं प्राचाम्। तदुक्तं तत्रैव विश्वनाथेन—'क्वचित् समवायसम्बन्धेन क्वचित् स्वसमवायिसमवेतत्वसम्बन्धेनेति फलितोऽर्थः। इत्थञ्च कार्यैकार्थ-

**অনুবাদ**

কপালের রূপে ঘটরূপাত্মক কার্যের সামানাধিকরণ্য না থাকায় তথায় কারণ-সামান্যলক্ষণেরও সঙ্গতি হয় না। অতএব কারণৈকার্থ প্রত্যাসত্তিপদের 'স্বসমবায়িসমবেতত্ব' রূপ ফলিতার্থ স্বীকার করা হয়। উক্ত উদাহরণস্থলে উক্ত সম্বন্ধের ঘটক স্বপদের অর্থ কপালের রূপ, তাহার সমবায়ী কপাল, তৎসমবেতত্ব অর্থাৎ সেই কপালে সমবায়সম্বন্ধে বর্তমানত্ব ঘটে আছে। অতএব উক্তরূপ সম্বন্ধে কপালরূপাত্মক কারণ ঘটে থাকায় সমস্ত উপপন্ন হইল।

কার্যৈকার্থপ্রত্যাসত্তি ও কারণৈকার্থপ্রত্যাসত্তি এই পারিভাষিক পদদ্বয়ের অর্থ প্রদর্শনের জন্যই ঐ দুইটী পদের উক্তরূপ বিস্তৃত অর্থের উপন্যাস করা হইল। কারণ ঐ দুইটী পদ ন্যায়সম্প্রদায়ে ভূরি প্রচলিত। সিদ্ধান্ত মুক্তাবলী গ্রন্থে বিশ্বনাথ বলিয়াছেন, যথা—'এই স্থলে অর্থাৎ কারিকাবলী নিরুক্ত অসমবায়িকারণলক্ষণে সমবায়িকারণে যে অসমবায়িকারণের প্রত্যাসত্তির কথা বলা হইয়াছে উহা দুই প্রকারে হয়—কার্যৈকার্থপ্রত্যাসত্তি ও কারণৈকার্থ-প্রত্যাসত্তি দ্বারা'। ঐ দুইটী পদের ফলিতার্থ কিন্তু যথাক্রমে সমবায় এবং স্বসমবায়িসমবেতত্ব। এবং ঐ দুইটী সম্বন্ধের অন্যতর যে কোনও এক একটী সম্বন্ধেই বিভিন্নস্থলে অসমবায়িকারণ লক্ষণ পূর্বাচার্যগণের অভিপ্রেত। বিশ্বনাথ পূর্বোক্ত স্থলেই ঐ কথা বলিয়াছেন, যথা—'কোনও স্থানে সমবায় সম্বন্ধে এবং কোনও স্থানে স্বসমবায়ি সমবেতত্ব সম্বন্ধ (আসন্ন) ইহা ফলিতার্থ।

कारणैकार्थान्यतरप्रत्यासत्त्या समवायिकारणे प्रत्यासन्नं कारणं ज्ञानादिभिन्नं असमवायिकारणमिति सामान्यलक्षणं पर्यवसितम्'। इति। पटादिसमवायिकारणतावच्छेदक-तन्तुत्वादावतिव्याप्तिवारणाय कारणमिति। कारणतावच्छेदकतया तस्यान्यथासिद्धत्वेन अकारणत्वान्नातिव्याप्तिः। आत्मविशेषगुणानां क्वाप्यसमवायिकारणत्वाभावात्—ज्ञानादिभिन्नमिति।

असमवायिकारणस्थले कार्यं समवायेनोत्पद्यते, कारणं समवायेन स्वसमवायिसमवेतत्वेन वा सम्बन्धेन कारणतामापद्यते। अतस्तत्र कार्यता समवायसम्बन्धावच्छिन्ना, कारणता च क्वचित् समवायसम्बन्धावच्छिन्ना, क्वचिच्च स्वसमवायिसमवेतत्वसम्बन्धावच्छिन्ना। तदनुसारिण्या नव्यन्यायभाषया तदसमवायिकारणसामान्यलक्षणं यथा—समवायसम्बन्धावच्छिन्नकार्यतानिरूपितं समवायस्वसमवायि-

**অনুবাদ**

এতদবস্থায় কার্যৈকার্থপ্রত্যাসত্তি ও কারণৈকার্থপ্রত্যাসত্তি এতদন্যতর প্রত্যাসত্তিদ্বারা অর্থাৎ সমবায় এবং স্বসমবায়িসমবেতত্ব এতদন্যতরসম্বন্ধদ্বারা কার্যের সমবায়িকারণে সম্বদ্ধ হইয়া যাহা কারণ এবং জ্ঞানাদি আত্মবিশেষগুণভিন্ন তাহা অসমবায়িকারণ ইহাই অসমবায়িকারণের পর্যবসিত সামান্যলক্ষণ।

পটাদিকার্যের সমবায়িকারণতাবচ্ছেদকীভূত তন্তুত্বাদি ধর্মে অতিব্যাপ্তি বারণার্থ 'কারণ' এই বিশেষণ দেওয়া হয়। তন্তুত্বাদি ধর্ম কারণতাবচ্ছেদক বলিয়া উহা অন্যথাসিদ্ধ হওয়ায় উহা অনন্যথাসিদ্ধত্ব ঘটিত কারণলক্ষণাক্রান্ত নহে, অতএব উহাতে উক্ত লক্ষণের অতিব্যাপ্তি হয় না। আত্মার বিশেষগুণ জ্ঞানাদি কোথায়ও অসমবায়িকারণ হয় না, উহাতে অতিব্যাপ্তি বারণার্থ 'জ্ঞানাদিভিন্ন' এই বিশেষণ দেওয়া হয়।

অসমবায়িকারণস্থলে উহার কার্য সমবায়সম্বন্ধে উৎপন্ন হয়, কারণ সমবায়সম্বন্ধ অথবা স্বসমবায়িসমবেতত্বসম্বন্ধে কারণতা প্রাপ্ত হয়, অতএব তথায় কার্যতা সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং কারণতা কোথাও সমবায় এবং কোথাও স্বসমবায়িসমবেতত্ব এতদন্যতর সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন।

তদনুসারি-নব্যন্যায় পরিভাষায় অসমবায়িকারণ সামান্য লক্ষণ যথা—সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকার্যতানিরূপিতসমবায়-স্বসমবায়িসমবেতত্ব—এতদন্যতর সম্বন্ধ-বচ্ছিন্ন যে কারণতা জ্ঞানাদিতে বর্তমান হয় না তাহাই সামান্য অসমবায়িকারণতা, তদ্বৎ কারণ সামান্য অসমবায়িকারণ।

समवेतत्वान्यतरसम्बन्धावच्छिन्नम् आत्मविशेषगुणावृत्ति कारणत्वं असमवायिकारणत्वम्। अवयविस्वरूपं घटकार्यं प्रति कपाल—कपालिकाद्यवयवसंयोगस्य समवायसम्बन्धावच्छिन्नघटनिष्ठकार्यतानिरूपितसमवायसम्बन्धावच्छिन्नकारणतामादाय असमवायिकारणत्वम्। घटस्य रूपं प्रति कपालादिगतरूपस्य घटरूपनिष्ठसमवायसम्बन्धावच्छिन्नकार्यतानिरूपितस्वसमवायिसमवेतत्वसम्बन्धावच्छिन्नकारणतामादाय असमवायिकारणत्वम्। कार्यगतरूपादीनां कार्यसमवायिकारणगतरूपाद्यनुसारित्वेन तत्र तत्कारणत्वमवश्यमभ्युपेयम्। असमवायिकारणनाशे कार्यद्रव्यनाश इत्यादि तथ्यमप्यनुसन्धातव्यम्।

प्रसङ्गादन्यतरशब्दस्यार्थो निरूप्यते—अन्यतरशब्दस्यार्थः भेदद्वयावच्छिन्नप्रतियोगिताकभेदवान्। यथा—घटपटयोरन्यतर इत्यत्र 'घटो न, पटो न' इति भेदद्वयमेव प्रकृतभेदद्वयपदेन ग्राह्यम्। तादृशभेदद्वयं सम्भूय यत्र वर्तते स तादृशभेदद्वयवान्। स च घटभिन्नः सन् यः पटभिन्नः स एव। घटे घटभेदाभावात् पटे च पटभेदाभावात् तयोः क्वापि सम्भूय तादृशभेदद्वयस्यासत्त्वेन न तयोः कोऽपि घटो वा पटो वा

## অনুবাদ

অবয়বী ঘটরূপ কার্যের প্রতি কপাল-কপালিকাদি অবয়বের পারস্পরিক সংযোগের অসমবায়িকারণতা সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নঘটনিষ্ঠ-কার্যতানিরূপিত সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকারণতা অবলম্বন করিয়া। ঘটরূপস্বরূপ কার্যের প্রতি কপালাদিরূপের অসমবায়িকারণতা ঘটরূপনিষ্ঠ সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন কার্যতা নিরূপিত স্বসমবায়িসমবেতত্ব-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকারণতা আদান করিয়া। কার্যবস্তুগত রূপাদি সমবায়িকারণগত রূপাদি অনুসারেই হয় বলিয়া কার্যগত রূপাদির প্রতি সমবায়িকারণগত রূপাদির কারণতা অবশ্য স্বীকার্য। অসমবায়িকারণের নাশ হইলে দ্রব্যরূপ কার্যের নাশ হয় ইত্যাদি তথ্যও অনুসন্ধেয়।

প্রসঙ্গক্রমে 'অন্যতর' শব্দের অর্থ নিরূপণ করা হইতেছে—'অন্যতর' শব্দের অর্থ—ভেদদ্বয়াবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক ভেদবান্। যথা—'ঘট ও পট এই দুইটীর অন্যতর', এই স্থলে 'ঘটো ন' অর্থাৎ ঘট নয়, এবং 'পটো ন' অর্থাৎ পট নয়, এইরূপ দুইটি ভেদই প্রকৃতস্থলীয় ভেদদ্বয় পদে গ্রাহ্য। তাদৃশ দুইটি ভেদ যেখানে মিলিতভাবে থাকে, তাহাই উক্ত ভেদদ্বয়বান্, যাহা ঘটভিন্ন অথচ পটভিন্ন তাহাই উক্তরূপ পদার্থ। ঘটে ঘটের ভেদ না থাকায় এবং পটে পটের ভেদ না থাকায় ঘট ও পট এই দুইটির কোনটীতেই মিলিতভাবে তাদৃশ ভেদদ্বয়ের অসত্তাবশতঃ

तादृशभेदद्वयवान् भवति। अतः तादृशभेदद्वयवान् न इति भेदः तयोर्घटपटयोर्वर्तते। तादृशभेदद्वयावच्छिन्नप्रतियोगिताकभेदवत्त्वमेव घटपटान्यतरत्वम्।

प्रकृतासमवायिकारणलक्षणस्थले समवाय-स्वसमवायि-समवेतत्वान्यतरत्वन्तु 'समवायो न, स्वसमवायिसमवेतत्वं न' इति भेदद्वयावच्छिन्नप्रतियोगिताकभेदवत्त्व-रूपम्।

अन्यतरत्वस्य द्वयवृत्तित्वेऽपि न द्वयपर्याप्तद्वित्वादिवत् व्यासज्यवृत्तित्वम्। किन्तु अव्यासज्यवृत्तित्वम्। अतएव निरुक्तान्यतरसम्बन्धपदेन एकैकस्य लाभात् क्वचित् समवायसम्बन्धेन क्वचित् स्वसमवायिसमवेतत्वसम्बन्धेन समवायिकारणे प्रत्यासत्तिघटितं प्रकृतासमवायिकारणलक्षणं सुसङ्गच्छते।

एवमन्यत्र यथाप्रयोजनमन्यतमशब्दार्थोऽप्यनुसन्धेयः। अन्यतमत्वं हि भेदकूटावच्छिन्नप्रतियोगिताकभेदवत्त्वम्। बहूनां भेदानां समूहो भेदकूटपदार्थः। पदार्थत्रयादिस्थले सिंहव्याघ्रहरिणानामन्यतम इत्यादौ सिंहो न, व्याघ्रो न, हरिणो न इति भेदत्रयादिकमादाय प्रागुक्तरीत्यैव समन्वयः कार्यः।

**অনুবাদ**

ঐ দুইটীর মধ্যে ঘট বা পট কোনটীই তাদৃশভেদদ্বয়বান্ হয় না। অতএব তাদৃশ 'ভেদদ্বয়বান্ ন' ইত্যাকার ভেদ উক্ত ঘট ও পট এই দুইটীতে থাকে। তাদৃশ ভেদদ্বয়াবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাকভেদবত্ত্বই ঘট ও পট এই দুইয়ের অন্যতরত্ব।

প্রকৃত অসমবায়িকারণলক্ষণস্থলে 'সমবায়-স্বসমবায়িসমবেতত্ব-এতদন্যতরত্ব' 'সমবায়ো ন' অর্থাৎ সমবায় নয়, এবং 'স্বসমবায়িসমবেতত্বং ন' অর্থাৎ স্বসমবায়ি-সমবেতত্ব নয়, ইত্যাকার ভেদদ্বয়াবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাকভেদবত্ত্বরূপ। অন্যতরত্ব দুই পদার্থে থাকিলেও দ্বয়পর্যাপ্তদ্বিত্বাদির ন্যায় উহা ব্যাসজ্যবৃত্তি নহে, কিন্তু উহা অব্যাসজ্যবৃত্তি। অতএব নিরুক্ত অন্যতরসম্বন্ধপদে একৈক সম্বন্ধের লাভ বশতঃ কোনও স্থলে সমবায় সম্বন্ধে এবং কোনও স্থলে স্বসমবায়িসমবেতত্বসম্বন্ধে সমবায়িকারণে প্রত্যাসত্তিঘটিত প্রকৃত অসমবায়িকারণের লক্ষণ সুসঙ্গত হয়।

এইরূপ অন্যত্র প্রয়োজনানুসারে 'অন্যতম' শব্দের অর্থও অনুসন্ধেয়। অন্যতমত্ব—ভেদকূটাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাকভেদবত্ত্ব। বহুসংখ্যক (দুই হইতে অধিক সংখ্যক) ভেদের সমষ্টি ভেদ কূটপদার্থ। পদার্থত্রয়াদিস্থলে 'সিংহ ব্যাঘ্রও হরিণ ইহাদের অন্যতম' এইরূপ বাক্যে বা প্রতীতিতে সিংহ নয়, ব্যাঘ্র নয়, হরিণ নয়—এই আকারের ভেদত্রয়াদি আদান করিয়া পূর্বোক্ত রীতি অনুসরণ করিয়াই সমন্বয় করিতে হইবে।

असमवायिकारणविशेषलक्षणन्तु पूर्ववत् सामान्यलक्षणघटककार्यताकारणतयोः विशेषविशेषधर्मावच्छिन्नत्वादिकं निवेशैनैव करणीयम्। यथा—समवायसम्बन्धावच्छिन्नघटत्वावच्छिन्नकार्यतानिरूपित-समवायसम्बन्धावच्छिन्नकपालत्वावच्छिन्नकारणत्वं घटत्वावच्छिन्ननिरूपितकपाल-कपालिकादिसंयोगत्वावच्छिन्नासमवायिकारणत्वम्। एवमन्यत्रापि बोध्यम्।

अथ निमित्तकारणं निरूप्यते। निमित्तकारणसामान्यलक्षणं नाम—समवायसम्बन्धावच्छिन्नकार्यतानिरूपित-तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नकारणतारूपसामान्यसमवायिकारणताभिन्नं सत् समवायसम्बन्धावच्छिन्नकार्यतानिरूपितसमवायस्वसमवायिसमवेतत्वान्यतरसम्बन्धावच्छिन्नकारणतारूपसामान्यासमवायिकारणताभिन्नं यत् कारणत्वं तदेव सामान्यनिमित्तकारणत्वम्। तद्वदेव सामान्यनिमित्तकारणमिति। उदाहरणं यथा—घटनिष्ठया उत्पत्तिसम्बन्धावच्छिन्नकार्यतया निरूपितायाः स्वजन्यभ्रमिमत्त्वसम्बन्धावच्छिन्नकारणताया आश्रयो दण्डः। तद्गताया घटनिरूपितकारणतायाः प्रागुक्तसामान्यसमवायिकारणताभिन्नसामान्यासमवायिकारणताभिन्नकारणतावत्त्वात्।

## অনুবাদ

অসমবায়িকারণের বিশেষ বিশেষ লক্ষণ পূর্ববৎ সামান্যলক্ষণঘটক কার্যতা ও কারণতায় বিশেষ বিশেষ ধর্মাবচ্ছিন্নত্বাদি নিবেশ করিয়াই করিতে হইবে। যথা ঘটত্বাবচ্ছিন্ন সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকার্যতানিরূপিত সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকপাল-কপালিকাদিসংযোগত্বাবচ্ছিন্নকারণত্ব ঘটত্বাবচ্ছিন্ননিরূপিত কপালকপালিকাদি-সংযোগত্বাবচ্ছিন্নাসমবায়িকারণত্ব। এইরূপ অন্যত্রও বুঝিতে হইবে।

অতঃপর নিমিত্তকারণ নিরূপণ করা হইতেছে। সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকার্যতা-নিরূপিত তাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্নকারণতারূপ-সমবায়িকারণতাভিন্ন অথচ সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকার্যতানিরূপিত সমবায়-স্বসমবায়িসমবেতত্ব অন্যতর সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-কারণতারূপ অসমবায়িকারণতা হইতে ভিন্ন যে কারণত্ব তাহাই সামান্যনিমিত্ত-কারণত্ব, তাহার আশ্রয়ই সামান্য নিমিত্তকারণ। উদাহরণ যথা—ঘটনিষ্ঠ উৎপত্তি সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন কার্যের দ্বারা নিরূপিত যে, স্বজন্য ভ্রমিমত্ত্ব সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন কারণতা তাহার আশ্রয় দণ্ড। কারণ তদ্গত ঘটনিরূপিত কারণতা প্রাগুক্ত সামান্য সমবায়িকারণতা ও প্রাগুক্ত সামান্য অসমবায়িকারণতা হইতে ভিন্ন কারণতা। উক্ত লক্ষণে কারণতার বিশেষণরূপে পূর্বনিরুক্ত সমবায়িকারণতাও

न च कारणतायां निरुक्तसमवायिकारणत्व-निरुक्तासमवायिकारणत्वयोर्भेद-मनिवेश्य कारणांशे समवायिकारणासमवायिकारणभेदनिवेशेन निमित्तकारणसामान्य-लक्षणकरणे को दोषः। विश्वनाथेन तु 'आभ्यां परं तृतीयं स्यात्' इति कारिकावली मूलग्रन्थेन 'आभ्यां समवायिकारणासमवायिकारणाभ्यां परं भिन्नं कारणं तृतीयं निमित्तकारणमित्यर्थः'—इति सिद्धान्तमुक्तावलीग्रन्थेन च कारणांशे समवायिकारणा-समवायिकारणभेदनिवेशेनैव लक्षणस्योपदिष्टत्वादिति वाच्यम्। तथा सति एकं कार्यं प्रति समवायिकारणात्मके कार्यान्तरं प्रति च निमित्तकारणे तथा एकं कार्यं प्रति असमवायिकारणात्मके कार्यान्तरं प्रति च निमित्तकारणे अव्याप्तेः। प्रकृत-कार्यविशेषनिरूपितसमवायिकारणत्वासमवायिकारणत्वयोः भेदप्रतियोगितावच्छेदक-तया निवेशेन तद्दोषः शक्यपरिहार इत्यप्यविवेकविजृम्भितम्, तथा सति घटध्वंसादि-निमित्तकारणे दण्डादावव्याप्तेः, भावकार्यं प्रत्येव समवायिकारणत्वासमवायि-कारणत्वयोः सम्भवेन ध्वंसनिरूपितयोस्तयोरप्रसिद्धेः। तादृशलक्षणस्य तत्तत्कार्य-

অনুবাদ

পূর্বনিরুক্ত অসমবায়িকারণতার ভেদ নিবেশ না করিয়া কারণাংশে সমবায়িকারণ ও অসমবায়িকারণের ভেদ নিবেশ করিয়া লক্ষণ করিলে দোষ কি? বিশ্বনাথ ন্যায়পঞ্চানন 'আভ্যাং পরং তৃতীয়ং স্যাৎ' এই কারিকাবলীগ্রন্থাংশ এবং 'আভ্যাং সমবায়িকারণাসমবায়িকারণাভ্যাং পরং ভিন্নং কারণং তৃতীয়ং নিমিত্তকারণ-মিত্যর্থঃ' এই সিদ্ধান্তমুক্তাবলী গ্রন্থাংশদ্বারা কারণাংশে সমবায়িকারণ ও অসমবায়িকারণের ভেদ নিবেশ করিয়াই প্রকৃত লক্ষণের উপদেশ করিয়াছেন। এ কথা বলা যায় না; কারণ তাহা হইলে অর্থাৎ কারণাংশে উক্ত কারণদ্বয়ের ভেদ নিবেশ করিয়া নিমিত্তকারণের লক্ষণ করিলে যাহা এক কার্যের প্রতি সমবায়িকারণ কিন্তু অন্য একটী কার্যের নিমিত্তকারণ উহাতে এবং যাহা একটী কার্যের অসমবায়িকারণ কিন্তু অন্য কার্যের নিমিত্তকারণ তাহাতে লক্ষণের অব্যাপ্তিদোষ হয়। প্রকৃত কার্যবিশেষনিরূপিত সমবায়িকারণত্ব এবং প্রকৃত কার্যবিশেষনিরূপিত অসমবায়িকারণত্বকে বিশেষণীভূত ভেদের প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদকরূপে নিবেশ করিলে উক্ত দোষ পরিহার করা যায়—এই কথাও অবিবেকপ্রসূত। কারণ তাহা হইলে ঘটধ্বংসাদির নিমিত্তকারণ দণ্ডাদিতে অব্যাপ্তি হয়। কারণ ভাবকার্যের প্রতিই সমবায়িকারণত্ব ও অসমবায়িকারণত্ব সম্ভবপর বলিয়া ধ্বংসনিরূপিত সমবায়িকারণত্ব ও অসমবায়িকারণত্ব অপ্রসিদ্ধ।

विशेषघटिततया सामान्यलक्षणत्वायोगाच्च। एतत् सर्वमतिनिपुणबुद्ध्या विचार्यैव प्राचीनाचार्या विश्वनाथादुक्तिमपि यथाश्रुतार्थपरिहारेणान्यथैव व्याख्यातवन्तः। यथा—'ननु समवायिकारणासमवायिकारणभिन्नत्वे सति कारणत्वस्य निमित्तकारण-लक्षणत्वे पटनिमित्तकारणे तुरीतन्तुसंयोगे अव्याप्तिः, तस्य तुरीपटसंयोगासमवायि-कारणत्वेन तद्भिन्नत्वविरहात्। न च तत्कार्यसमवायिकारणासमवायिकारणभिन्नत्वे सति तत्कार्यकारणत्वं तत्कार्यं प्रति निमित्तकारणत्वमिति विशिष्यैव लक्षणं वक्तव्यम्, तथा च तुरीतन्तुसंयोगस्य पटसमवायिकारणासमवायिकारणयोर्भिन्नत्वेन न तत्र पटनिमित्तकारणत्वानुपपत्तिरिति वाच्यम्, तथा सति ध्वंसं प्रति निमित्तकारणे प्रतियोग्यादावव्याप्तेः। तस्य समवायिकारणासमवायिकारणयोरप्रसिद्धे'रित्याशङ्कां निराकुरुते 'अत्रेद' मित्यादिना (अत्रेदं बोध्यम् समवायिकारणत्वासमवायिकारणत्व-भिन्नकारणत्वमेव निमित्तकारणत्वमित्यन्तेन)। 'समवायिकारणत्वं समवायसम्बन्धा-

**অনুবাদ**

আরও দোষ এই যে উক্তরূপ লক্ষণ তত্তৎকার্যবিশেষঘটিত হওয়ায় সামান্যলক্ষণ হইতে পারে না।

প্রাচীন আচার্যগণ অতি তীক্ষ্ণ বুদ্ধির সাহায্যে ঐ সকল বিষয় বিচার করিয়াই বিশ্বনাথ প্রভৃতির উক্তিকেও যথাশ্রুত অর্থ পরিহারপূর্বক অন্যরূপেই ব্যাখ্যা করিয়াছেন। যথা ভাষাপরিচ্ছেদগ্রন্থে স্বকৃত রামরুদ্রীয়টীকায় রামরুদ্র বলেন, প্রশ্ন এই যে—যদি সমবায়িকারণ ও অসমবায়িকারণসামান্য হইতে ভিন্ন কারণই নিমিত্তকারণ এইরূপ নিমিত্তকারণের সামান্য লক্ষণ হয় তবে পটরূপ কার্যের নিমিত্তকারণ তুরীতন্তুসংযোগে অব্যাপ্তি দোষ ঘটে, কারণ উহা তুরীপট-সংযোগরূপ কার্যের অসমবায়িকারণ বলিয়া উহাতে প্রকৃত লক্ষণঘটক অসমবায়ি-কারণভিন্নত্বরূপ বিশেষণ নাই। ইহাও বলা যায় না যে, প্রকৃত কার্যের সমবায়িকারণ ও প্রকৃত কার্যের অসমবায়িকারণ হইতে ভিন্ন এমন প্রকৃত কার্যের কারণ প্রকৃত কার্যের নিমিত্তকারণ এইরূপ বিশেষ করিয়া লক্ষণ বলা যাইবে। তাহাতে তুরীতন্তুসংযোগ পটের সমবায়িকারণও অসমবায়িকারণ হইতে ভিন্ন হওয়ায় উহাতে পটের প্রতি নিমিত্তকারণত্বের অনুপপত্তি হয় না। কারণ ঐরূপ বলিলে ধ্বংসের প্রতি নিমিত্তকারণীভূত প্রতিযোগ্যাদিতে অব্যাপ্তি হয়। কারণ ঐ ধ্বংসরূপ কার্যের সমবায়িকারণ ও অসমবায়িকারণ অপ্রসিদ্ধ। এই আশঙ্কা (ভাষাপরিচ্ছেদ গ্রন্থে দিনকরীয়টীকাকার) 'অত্রেদং বোধ্যম্' ইত্যাদি

वच्छिन्नकार्यतानिरूपिततादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नकारणत्वम्, असमवायिकारणत्वञ्च समवायसम्बन्धावच्छिन्नकार्यतानिरूपित - निरुक्तान्यतरसम्बन्धावच्छिन्नकारणत्वमिति बोध्यम्' इति रामरुद्रीयव्याख्यानकृतः। अन्येऽपि बहव एवाचार्यास्तथैव व्याख्यानं कृतवन्तः। ध्वंसात्मककार्यस्थले ध्वंसनिष्ठकार्यतायाः समवायसम्बन्धावच्छिन्नत्वाभावात् तन्निरूपितकारणतायाः समवायसम्बन्धावच्छिन्नकार्यतानिरूपितकारणतात्मकसमवायिकारणत्व-समवायसम्बन्धावच्छिन्नकार्यतानिरूपित - कारणतात्मकासमवायिकारणत्वयोर्भेदवत्त्वस्यावश्यम्भावात् सर्वत्र लक्षणसमन्वयः। सर्वमन्यत् स्वयमनुसन्धेयम्।

## অনুবাদ

গ্রন্থদ্বারা নিরাস করিতেছেন। (ঐ সমগ্র গ্রন্থাংশের অর্থ যথা—'এখানে এই বুঝিতে হইবে যে সমবায়িকারণত্ব ও অসমবায়িকারণত্ব এই দুই কারণত্ব হইতে ভিন্ন কারণত্বই নিমিত্তকারণত্ব) সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন কার্যতানিরূপিত তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন কারণত্ব সমবায়িকারণত্ব, এবং সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন কার্যতানিরূপিত সমবায় ও স্বসমবায়িসমবেতত্ব এতদন্যতরসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন কারণত্ব অসমবায়িকারণত্ব'। অপরাপর বহু আচার্যও ঐ রূপই ব্যাখ্যা করিয়াছেন।

ধ্বংসরূপ কার্যস্থলে ধ্বংসনিষ্ঠ কার্যতা সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয় না বলিয়া তন্নিরূপিত কারণতায় সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন কার্যতানিরূপিত কারণতাত্মক সমবায়ি-কারণত্ব ও সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্নকার্যতানিরূপিত কারণতাত্মক অসমবায়িকারণত্বের ভেদবত্ত্ব অবশ্যম্ভাবী বলিয়া সর্বত্র লক্ষণ সমন্বয়। অন্য সকল বিষয় স্বয়ং অনুসন্ধেয়।

এতন্মাত্রং সমাসেন পরিশিষ্টং সমাহৃতম্।
তর্কাচার্যাভিধানেন শ্রীকালীপদশর্মণা॥

সমাপ্তমিদং পরিশিষ্টম্।

---

# A SHORT LIFE
# OF
## MAHĀMAHOPĀDHYĀYA MAHEŚA CHANDRA NYĀYARATNA, C. I. E.

MAHEŚA CHANDRA was born on the 22nd February, 1836, at the Village of Nārāt in the district of Howrah in Bengal. He belongs to the Bhaṭṭāchāryya family of Nārāt which has long been distinguished for the zealous cultivation of Sanskrit learning, and the number of learned Pandit it has produced. His father Harinārāyaṇa Tarkasiddhānta and his two uncles Guruprasād Tarkapañcānana and Ṭhākurdāsa Chūḍāmaṇi were eminent Pandits.

MAHEŚA CHANDRA'S first Sanskrit education began at the age of nine, at home, where he was taught his grammar (the Saṁkshiptasāra), and was made to commit to memory his Abhidhāna (the Amara-Kosha) by a Pandit employed to teach him and other young lads of the family. As Maheśa Chandra's aptitude at learning the Kosha by heart was but small, his teacher pronounced him an unpromising lad. When about twelve years of age, he left home for the village of Rasikganja in the Midnapur district, to receive his teaching in Sanskrit Grammar under Pandit Ṭhākurdāsa Chūḍāmaṇi, a famous grammarian. The instruction received here was, according to the custom of the country, gratuitous, the pupils being lodged and boarded, at the pandit's expense, at his own house. Maheśa Chandra's progress now was marked, and he became the favourite pupil of his teacher. The pupil had an occasion, too, for showing his devotion to the teacher. The Pandit's family came to be smitten with the small-pox, and Maheśa chandra and some of his fellow pupils were assiduous in their attentions to the sufferers all through the period of their sufferings.

A Pandit, who was a Professor of Logic, once visited Maheśa Chandra's teacher. The visitor was so much struck by Maheśa Chandra's intelligence and face and features that he observed that Maheśa Chandra was marked out by nature to be a logician.

MAHEŚA CHANDRA'S next move was to Calcutta in 1852, where it was intended, he should pursue his Sanskrit studies in the Government Sanskrit College there. The elementary course of Sanskrit studies that it was necessary at the outset to take up in the College did not, however, suit him. So instead of pursuing his studies in

the College, he studied special subjects with eminent specialists ; first of all, Nyāya with his uncle, Ṭhākurdāsa Chūḍāmaṇi and Smriti partly with his father and partly with his kinsman Durgādāsa Tarkavācaspati, and subsequently the same subjects and others with some of the professors of the College at their homes, the instruction received being gratuitous. It was thus that he studied Nyāya with the very eminent Pandit Jaynārāyaṇa Tarkapañcānana, rhetoric and other subjects with certain other professors of the College. Between Pandit Jaynārāyaṇa and his pupil Maheśa Chandra, there grew up a strong feeling of mutual regard and affection. Jaynārāyaṇa loved Maheśa Chandra with the affection of a father and Maheśa Chandra fully responded to the feeling. To the end of Jaynārāyaṇa's life, Maheśa Chandra was as a son to him.

His next tutor was a Pāñjābī ascetic, then in Calcutta, Paramahaṁsa Jyotisvarūpa, whose intellect was of the finest and whose learning was most profound. With him he read the Vedānta and the Khandana Philosophy of Śrīharṣa, which bears some kinship to the positive Philosophy of Comte, and which, though not unknown in Bengal was nowhere studied in the province. He next studied Astrology with the learned Pandit Kālinātha Tarkaratna, who was an Astrologer by caste. This was a departure from orthodoxy ; for no good Brāhmaṇa would ever learn from one belonging to the Astrologer caste.

Banaras was the place where Maheśa Chandra went through his final Course of studies under tutors. He began his studies there in 1861, and studied the Vedas (Upanishad) and the Pātañjala and Mīmāṁsā Darśana. Foremost among his tutors there was Daṇḍī Viśuddhānanda Svāmī, now the head of the Daṇḍī's of the place and the most learned scholar among them. Maheśa Chandra was a favourite pupil of the Daṇḍī, who, though an ascetic, still regards Maheśa Chandra with deep personal affection. At Banaras he became acquainted with the well-known Sanskrit scholar, Mr. Griffith, the Principal of the College there. Mr. Griffith gave him a highly complimentary certificate.

On his return to Calcutta from Banaras, in 1863, he setup a Chatuṣpāṭhī (Tol) for imparting gratuitous instruction, under the patronage of Mahārājā Kamalkrishna, grandson of Rājā Navakrishna of historic fame. Mahārājā Kamalkrishna took a lively interest in Maheśa Chandra's welfare since he first came to

know him as a boy. Maheśa Chandra set up his Chatuṣpāṭhī with very good credentials; for he had acquired fame as a pandit in several disputations with pandits of established reputation.

In 1864, he was appointed to an Assistant Professorship in the Government Sanskrit College in Calcutta on the recommendation of Prof. E. B. Cowell, who was then Principal of the College, and who knew of Maheśa Chandra's scholarship, having himself studied Hindu Philosophy with him. On receiving his appointment in the College, he began to learn English. From Assistant Professor he came to be a Professor of Rhetoric, of Hindu Philosophy and of Hindu Law in the College. In 1876 he was promoted to the Higher Bengal Educational Service, being the first and yet the only Pandit admitted to this class of appointments. In 1877 he was appointed to the Principalship of the College, an office which he still holds.

He is a Member of several learned bodies in India, namely, the Asiatic Society of Bengal, the Indian Association for the Cultivation of Science, the Calcutta University, the Board of Examiners, the Central Text Book Committee of Bengal, the Behar Sanskrit Samāj and the Anthropological Society of Bombay, and he has lately been elected a Foreign Member of the Hungarian Academy of Sciences at Buda Pest. He is also a Joint-Secretary of the Hindu Hostel Committee, a member of Bethune (Girls') College Committee, and a visitor of the Government Engineering College at Sibpur in the neighbourhood of Calcutta.

During the tenure of his principalship Maheśa Chandra has taken the the initiative in institution, by the Government of Bengal, of an examination, called the Sanskrit Title Examination, for the conferment of titles on meritorious students of special departments of Sanskrit learning. To this examination are admitted students from indigenous institutions (Called Chatuṣpāṭhīs or Tols) as well as from the special classes that have been organised in connection with the Sanskrit College. The Title Examination has been the means of stimulating in some measure, all over Bengal, the rather waning zeal for the cultivation of Sanskrit learning. Rewards are given by Government to teachers whose pupils succeed well at the examinations, and a number of private endowments and donations for award of rewards and scholarships to meritorious candidates have come forward. The

example of the Sanskrit Title Examination has led to the institution at Dacca and other places of Samāja which hold examinations similar to the Sanskrit Title Examination.

He convinced the Viceroy Lord Dufferin, in 1887, of the desirableness of Government conferring some mark of distinction upon native gentlemen distinguished for Oriental learning and the result was the creation of the titles of Mahāmahopādhyāya and Shams-ul-Ulama, the one intended for eminent Pandits and the other for eminent Maulavis.

Government has honoured Maheśa Chandra by investing him with the Companionship of the order of the Indian Empire in 1881, and with the literary title of Mahāmahopādhyāya in 1887, when the title was first created. In respect of literary work, he has edited with copious notes, the Kāvya Prakāśa, and under the patronage of the Asiatic Society of Bengal, the Mīmāṁsā Darśana and the Black Yajurveda. He has written also several pamphlets, such as Remarks of Dayānanda Sarasvatī's Veda-Bhāshya, Tulasi-dhāraṇa Mīmāṁsā. The Authorship of Mrichchhakaṭika, Lupta Samavatsara, etc.

In respect of works of practical beneficence, he has done a good deal, by pecuniary help and otherwise, in furtherance of famine relief, the promotion of education, and the opening out of means of communication. Relief to sufferers from famine in 1866 was his first act of beneficence. In the next year followed his co-operation towards the relief of sufferers from a destructive cyclone. To the Science Association of Calcutta he made a handsome donation in 1870. He maintains a Secondary School ( A High Anglo-Sanskrit School ) at his native village, and he has not only greatly improved the roads in and near about this village, but has ever taken a leading part in the opening out of good roads and tramways in his native Districts.

In matters of public interest generally, he has always taken a lively interest, and upon everything that he has had to put his hand to, he has brought to bear a keen and versatile intelligence, and an abounding energy and strength of will.

A FRIEND OF MAHEŚA CHANDRA.

November 7, 1889

# BRIEF NOTES ON THE MODERN NYĀYA SYSTEM OF PHILOSOPHY AND ITS TECHNICAL TERMS

The term Nyāya is composed of नि (with certainty) इ or अय (to go) and अ (by which), and means literally the method of coming with certainty (to a conclusion). As used in Hindu Philosophy it means the syllogism. Gotama is the earliest writer who treats of the syllogism; and his work, the Gautama-Sūtra (aphorisms of Gotama), and those of writers who discuss philosophical questions according to his method, whether they discuss the syllogism or not, make up the Nyāya system of philosophy.

Nyāya philosophy may be divided into ancient and modern. Ancient Nyāya treats not only of the syllogism, but discusses all sorts of questions, physical and metaphysical, applying, where necessary, the syllogistic method. Modern Nyāya, as regards the subjects of discussion, makes no departure from the ancient. Rather, it restricts itself to fewer subjects; but those it discusses, it discusses with a nicety and a minute precision unknown to ancient Nyāya. It lays particular stress on a strict definition of terms, and it aims at ascertaining precisely even the meanings of expressions in common use and so intelligible to all. For exmple, Gotama, in putting forth his aphorism, साध्यनिर्देशः प्रतिज्ञा (I. 1-2-3) does not think it necessary that he should attempt any elucidation of the meaning of the term प्रतिज्ञा। His earlier commentators too, Pakṣila Svāmin and others, make no such attempt. Gaṅgeśa Upādhyāya, the founder of the modern school of Nyāya, enters upon a lengthy discussion about the meaning of प्रतिज्ञा, remarking that साध्यनिर्देश is inadequate as a characteristic of प्रतिज्ञा, for साध्यनिर्देश might be understood as simply meaning,—naming the साध्य। He notices also other points. He puts forth the following as the characteristic of प्रतिज्ञा—

उद्देश्यानुमितिहेतुलिङ्गपरामर्शप्रयोजकवाक्यार्थज्ञानजनकत्वे सति उद्देश्यानुमित्यन्यूनानतिरिक्तविषयकशाब्दज्ञानजनकं वाक्यं प्रतिज्ञा।

Raghunātha Śiromaṇi improves upon the above thus :-

प्रकृतन्यायावयवत्वे सति प्रकृतानुमितिपक्षविशेष्यक-प्रकृतानुमितिसाध्यप्रकारकप्रकृतानुमितिपक्षविशेष्यतानिरूपितप्रकृतसाध्यप्रकारताविलक्षणविषयताशून्यशब्दज्ञानजनकं वाक्यं प्रतिज्ञा।

Then follows Gadādhara, who discusses the question at greater length than his predecessors, bringing out several nice points, and comes at last to the following conclusion :-

"पक्षतावच्छेदकावच्छिन्नविशेष्यतानिरूपितसाध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रकारताकानुमितिप्रयोजकन्यायावयवत्वे सति पक्षतावच्छेदकावच्छिन्नविशेष्यतानिरूपित साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रकारताकपक्षतावच्छेदकावच्छिन्नविशेष्यतानिरूपितसाध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रकारताशालिनिश्चयत्वावच्छिन्नानिवर्त्यसंशयनिवर्तकतावच्छेदकविषयताशून्यशाब्दज्ञानजनकं वाक्यं प्रतिज्ञा" ।

An old Nyāya work lays down अव्यभिचरितत्व or अविनाभाव (invariable connection) as the characteristic attribute of व्याप्ति ।

Gaṅgeśa Upādhyāya thinks this characterisation insufficient, and so he delivers himself as follows :-

"प्रतियोग्यसमानाधिकरणयत्समानाधिकरणात्यन्ताभावाप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नं यन्न भवति तेन समं तस्य सामानाधिकरण्यं व्याप्तिः" ।

Raghunātha Śiromaṇi improves upon Gaṅgeśa's elucidation thus :-

"निरुक्तप्रतियोग्यनधिकरणहेतुमन्निष्ठाभावप्रतियोगितासामान्ये यत्सम्बन्धावच्छिन्नत्व - यद्धर्मावच्छिन्नत्वोभयाभावस्तेन सम्बन्धेन तद्धर्मावच्छिन्नस्य व्यापकत्वं व्यापकसामानाधिकरण्यं व्याप्तिः" ।

He is followed by Bhavānanda, Mathurānātha, Jagadīśa and Gadādhara, each with some improvement of his own. Jagadiśa's conclusion is as follows :-

"स्वावच्छेदकताघटकसम्बन्धेन यादृशप्रतियोगितावच्छेदकतावच्छेदकावच्छिन्नानधिकरणं हेत्वधिकरणं तादृशप्रतियोगितासामान्ये यत्सम्बन्धावच्छिन्नावच्छेदकताकत्व-यद्धर्मावच्छिन्नावछेदकताकत्वोभयोभावस्तेन सम्बन्धेन तद्धर्मावच्छिन्नसामानाधिकरण्यं व्याप्तिः" ।

A hair-splitting subtlety in the discussion of meanings of terms is, thus, the distinguishing characteristic of modern Nyāya. Poverty of matter is its great drawback. Notwithstanding this drawback, however, it is an excellent training for the intellect, which, under its discipline, acquires a power of precise thinking that is beyond all price. Without a study of modern Nyāya it is impossible, again, to thoroughly understand certain Sanskrit works on Philosophy, Law, Rhetoric and even Grammar ; for example, the Chitsukhī, a commentary by Chitsukhācāryya on Nyāyamakaranda (a treatise on the Vedānta Philosophy by Ānandabodha), the Dāyabhāgaprabodhini, a commentary by Śrikṛṣṇa Tarkālaṅkāra on Dāyabhāga (a treatise on the Hindu Law of Inheritance), the Kāvyaprakāśādarśa, a commentary by

Maheśvara Nyāyālaṅkāra on Kāvyaprakāśa (a work on Rhetoric), and Paribhāṣenduśekhara and Mañjuṣā (works on Grammar) by Nāgeśa Bhaṭṭa.

The Sūtras of Gotama, the Bhāṣya of Pakṣila Svāmin, the Vārtika of Udyotakara Ācāryya, the Tātparyya-tikā of Vācaspati Miśra, the Tātparyya-tikā-pariśuddhi of Udayana Ācāryya fall under the head of ancient Nyāya. The works on Vaiśeṣika philosophy with the exception of a few, such as Muktāvalī, may also be included under the same head. All the works on Nyāya from Gaṅgeśa's, who lived probably in the 14th century, down to Gadādhara's, who lived in the latter end of the 17th century, come under the head of modern Nyāya.

Gaṅgeśa Upādhyāya was a native of Mithilā (north-eastern Behar). He founded the modern school of Nyāya. His great work is the Tattva-Cintāmaṇi of which the subject is प्रमाण (proof), one of the sixteen categories laid down by Gotama in his Sūtras. The system introduced by him received further development at the hands of his disciples, among whom was his own son Vardhamāna Upādhyāya, up to the time of Pakṣadhara Miśra, who flourished in the middle of the 15th century. He was the writer of a commentary called Āloka on Gaṅgeśa's Tattva-Cintāmaṇi. Down to the time of Pakṣadhara the study of modern Nyāya was almost exclusively confined to Mithilā, which became the resort of pupils from all parts of India. The literary activity of the Mithilā school began to decline after the time of Pakṣadhara, whose work called Āloka is the last standard work on modern Nyāyā. The school, however, continued to flourish, and it is not yet extinct in Mithilā. It may be noticed here incidentally that the works of Gaṅgeśa and his followers effected a revolution in the study of Nyāya and completely superseded the ancient Nyāya works, such as the Bhāṣya, the Vārtika etc. so much so that very few pandits of the present day possess even copies of these works.

From Mithilā the study of modern Nyāya spread to Navadvīpa (Nadīyā, the same as Nuddea), and the students who had studied the subject in Mithilā began to teach it to their pupils in the latter place. The name of the Pandit who first introduced the study of modern Nyāya into Navadvīpa can not be ascertained. Rāmabhadra Siddhānta-vāgīśa is the earliest Nadīyā writer on Nyāya of whom we have no certain knowledge. He wrote a commentary on the Kusumāñjali of Udayana Ācāryya. The image of the goddess Kāli, known as "Poḍā-

Mā" (burnt mother) in consequence of its having been burnt once and to which offerings are made by students on the eve of their departure from Navadvīpa after the completion of their studies there, is said to have been set up for worship by Rāmabhadra. After Rāmbhadra came Bāsudeva Sārvabhauma. He was the writer of a work on Nyāya which is now missing but is referred to in other works on Nyāya. Raghunātha Śiromaṇi, the writer of the celebrated 'Dīdhiti' which, though calling itself a commentary on the chapters on Anumāna (inference) in the Tattva-Cintāmaṇi, contains a great deal of valuable original matter, was a pupil of Bāsudeva Sārvabhauma, and according to tradition, a contemporary of Caitanya, the celebrated Vaiṣṇava reformer. In his hands the system of Gaṅgeśa received its fullest development, and from his time the fame of the Nadīyā school began to increase until at last the Mithilā's school was completely thrown into the shade, yielding thus to its rival the place which it formerly occupied. The Naiyāyikas of Nadīyā have ever since maintained this position—a position recognised by Pandits all over India. After Raghunātha came in succession Bhavānanda Siddhāntavāgiśa, Mathurānātha Tarkavāgiśa, Jagadiśa Tarkālankāra and Gadādhara Bhattachāryya. The descendants of the last have been distinguished Naiyāyikas, and the greatest living Professor of Nyāya at Nadiyā, Mahāmahopādhyāya Bhuvana Mohana Vidyāratna, is the sixth in descent from Gadādhara. Another Bengali Naiyāyika, Kṛṣṇadāsa Sārvabhauma, but whether of Nadiyā or not is not known, wrote a commentary on the 'Dīdhiti', named the 'Dīdhiti Prasāriṇī' of which a MS. copy written in Saṃvat 1672, corresponding to the year 1615 of the Christian era, exists in the Government Sanskrit College in Calcutta.

All these Nadiyā writers wrote commentaries on the 'Dīdhiti', Mathurānātha writing a full commentary on the Chintāmaṇi besides, and they enlarged the technical terminology of modern Nyāya. To give an example, the terms द्वि and द्वित्ववत् both imply duality, but while the former can never be predicated of a single individual, the latter can. We cannot say, "अयं द्वौ", but can say "अयं द्वित्ववान्" so that द्वौ and द्वित्ववान् cannot have the same meaning. A distinction between the two meanings is made thus : The idea of duality, as expressed by द्वि, requires for its completion (पर्याप्ति) an aggregate of two objects. Therefore द्वि cannot be predicated of a single object अयं। But the idea of duality, as expressed by द्वित्ववान् and meaning, 'belonging to an aggregate of two', and therefore, not requiring for its completion

the aggregate of two objects but requiring only one of them, can be predicated of a single object अयं । The former class of predication is based on what is called पर्याप्तिसम्बन्ध (relation of completion), and the latter on समवायसम्बन्ध (ordinary relation between object and attribute) ।

The technicalities of modern Nyāya have hitherto repelled students of Sanskrit from its study. The immemorial practice has been for Naiyāyikas to explain verbally to their pupils the meaning of each term as it turns up in the course of their teaching, and the explanations are after certain set formulâe. A book called the Nyāyakoṣa was brought out in Bombay by Bhimāchārya Jhalakikar in 1875, and this book is a Dictionary of the Technical terms used in Nyāya. The explanations it gives are, however, not full enough, and the work itself has not yet come to be generally known. I propose, therefore, in this paper to explain some of these technicalities, and this in simple Sanskrit, as I cannot hope to be able to make matters equally clear through the medium of English. My method of interpretation is not the orthodox one usually followed by Pandits, which I have thought proper to abandon as it is not one calculated to make matters quite intelligible, I have had very little time to spare for writing this paper, Dr. Leitner's request to me for a paper having come to me only on the 30th June last. With more time at my disposal I would have made my paper fuller. I have not been able even to look over the proof-sheets carefully, owing to the serious and, as it has now proved, fatal illness of my eminent and revered friends Dr. Rajendralāla Mitra and Pandit Iswara Chandra Vidyāsāgara.

* * * *

*CALCUTTA*
*Dated the 1st August,*
*1891.*

MAHEŚACHANDRA NYĀYARATNA.

[ Note: I have just learnt from an eminent Pandit of Navadvīpa that Rāmabhadra Siddhāntabāgiśa, the Commentator on *Kusumāñjali* was not the person who set up the Image of *Poḍāmā* alluded to in p. 4 (5), but that it was done by another person bearing the same name. There is no time now to ascertain the truth of the matter. ]

M. N.

## নব্যন্যায়দর্শন ও তাহার পরিভাষাবিষয়ে সংক্ষিপ্ত বিবৃতি

ন্যায়—এই পদটি নিশ্চয়ার্থক 'নি' এই উপসর্গ পূর্বক গমনার্থক 'ই' ধাতু বা 'অয়' ধাতুর উত্তর করণবাচ্যে 'অ' প্রত্যয়ের দ্বারা নিষ্পন্ন হইয়াছে, এবং ইহা নিশ্চিতরূপে (কোনও সিদ্ধান্তে) উপনীত হইবার প্রণালীকে বুঝাইয়া থাকে। হিন্দুদর্শনে এই ন্যায়-পদটি অনুমিতির অবয়ব সমূহকে বুঝাইয়া থাকে। গোতমই প্রাচীনতম গ্রন্থকার যিনি এই ন্যায় বা অবয়ব সমূহের আলোচনা করিয়াছেন। তাঁহার রচিত গৌতমসূত্র, এবং যে সকল গ্রন্থকারগণ দার্শনিক বিষয় সকল তাঁহার প্রদর্শিত প্রণালীতে আলোচনা করিয়াছেন তাঁহাদের গ্রন্থ সকলই ন্যায়দর্শন নামে পরিচিত।

ন্যায়দর্শন প্রাচীন ও নব্য এই দুই ভাগে বিভক্ত। প্রাচীন ন্যায় কেবলমাত্র ন্যায়াবয়বের আলোচনাই করেন নাই, সর্বপ্রকার দার্শনিক ও প্রাকৃতিক সমস্যারও আবশ্যকমত ন্যায় প্রয়োগের দ্বারা আলোচনা করিয়াছেন। নব্যন্যায়ও আলোচ্য বিষয় সম্পর্কে প্রাচীনের সহিত অবিরুদ্ধ; তবে নব্যন্যায় তাহার আলোচনাকে ন্যূনসংখ্যক বিষয়ে সীমিত করিয়াছে; কিন্তু যেসকল বিষয়ে আলোচনা করিয়াছে তাহা এরূপ নিপুণতা ও সূক্ষ্ম যথাযথতার সহিত করিয়াছে, যাহা প্রাচীন ন্যায়ে অজ্ঞাত। নব্যন্যায় পদার্থ সকলের নির্দোষ লক্ষণ নির্ণয়ের উপর বিশেষ জোর দিয়াছে, এবং যে সকল পদ সর্বদা ব্যবহৃত ও অনায়াসবোধ্য হইয়া থাকে তাহাদেরও সম্যক অর্থ নির্ধারণে ব্যাপৃত হইয়াছে। দৃষ্টান্তরূপে বলা যাইতে পারে যে, 'সাধ্যনির্দেশঃ প্রতিজ্ঞা' (১.১-২-৩) এই ন্যায়সূত্রে গোতম প্রতিজ্ঞা-শব্দের আর অধিক ব্যাখ্যা প্রয়োজন বোধ করেন নাই। পক্ষিলস্বামী ও তাঁহার অন্যান্য প্রাচীন টীকাকারগণও ঐরূপ কোনও ব্যাখ্যানের চেষ্টা করেন নাই। কিন্তু নব্যন্যায়ের প্রতিষ্ঠাতা গঙ্গেশোপাধ্যায় 'প্রতিজ্ঞা' শব্দের অর্থ বিষয়ে বিস্তৃত আলোচনায় ব্যাপৃত হইয়াছেন। তিনি মন্তব্য করিয়াছেন যে 'সাধ্যনির্দেশ' এইটুকুমাত্র প্রতিজ্ঞার নির্দোষ লক্ষণ হইতে পারে না; কারণ 'সাধ্যনির্দেশ' বলিতে কেবলমাত্র একটি সাধ্যের নামোল্লেখমাত্র বুঝাইতে পারে। অন্যান্য বিষয়ের দিকেও লক্ষ্য রাখিয়া তিনি 'প্রতিজ্ঞা'র নিম্নলিখিত লক্ষণ নির্ধারণ করিয়াছেন—
'উদ্দেশ্যানুমিতি·········প্রতিজ্ঞা।'

রঘুনাথ শিরোমণি ইহার উপরেও (লক্ষণের) উন্নতি সাধন করিয়া বলিয়াছেন—
'প্রকৃতন্যায়াবয়বত্বে সতি········ প্রতিজ্ঞা।'

পরবর্তীকালে গদাধর পূর্ববর্তিগণ অপেক্ষা অধিকতর বিস্তৃতরূপে ঐ প্রশ্নের আলোচনা করিয়া কয়েকটি সূক্ষ্ম বিষয় আবিষ্কার করিয়া নিম্নলিখিত সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছেন—
'পক্ষতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন·······প্রতিজ্ঞা।'

একখানি প্রাচীন ন্যায়ের গ্রন্থ 'অব্যভিচরিতত্ব' বা 'অবিনাভাবকে'ই ব্যাপ্তির লক্ষণ বলিয়া অভিহিত করিয়াছেন। গঙ্গেশোপাধ্যায় এই লক্ষণকে পর্যাপ্ত নহে বিবেচনা করিয়া নিম্নলিখিতরূপে স্বীয়মত প্রকাশ করিয়াছেন—'প্রতিযোগ্যসমাধিকরণ…ব্যাপ্তিঃ'।

রঘুনাথ শিরোমণি গঙ্গেশের পরিষ্কারেরও উন্নতি সাধন করিয়া বলিলেন—'নিরুক্ত প্রতিযোগ্যনধিকরণ ব্যাপ্তিঃ।'

এইরূপে প্রত্যেক পদের অর্থের সূক্ষ্মতম বিচার ও আলোচনাই নব্যন্যায়ের বৈশিষ্ট্য। বিষয়বস্তুর অল্পতা ইহার ত্রুটি। এই ত্রুটিসত্ত্বেও ইহা বুদ্ধিবৃত্তির শ্রেষ্ঠ শিক্ষা যাহার অভ্যাসের দ্বারা বুদ্ধি যথাযথ চিন্তা করিবার অমূল্য শক্তিলাভ করে। নব্যন্যায় অধ্যয়ন ব্যতিরেকে দর্শন, স্মৃতি, অলঙ্কার, এমনকি ব্যাকরণেরও সংস্কৃতে রচিত কতকগুলি গ্রন্থের অর্থ সম্যগ্‌রূপে অবধারণ করা অসম্ভব। দৃষ্টান্ত-স্বরূপ আনন্দবোধকৃত বেদান্তদর্শনের গ্রন্থ ন্যায়-মকরন্দের চিৎসুখাচার্যকৃত টীকা 'চিৎসুখী', হিন্দুর উত্তরাধিকারবিষয়ক স্মৃতিগ্রন্থ দায়ভাগের শ্রীকৃষ্ণতর্কালঙ্কারকৃত টীকা 'দায়ভাগপ্রবোধিনী,' অলঙ্কারশাস্ত্রের গ্রন্থ কাব্যপ্রকাশের মহেশ্বর-ন্যায়ালঙ্কারকৃত টীকা 'কাব্যপ্রকাশাদর্শ', এবং নাগেশভট্টকৃত 'পরিভাষেন্দুশেখর' ও 'মঞ্জুষা' নামক ব্যাকরণ গ্রন্থ।

গোতমের ন্যায়সূত্র, পক্ষিলস্বামীর ভাষ্য, উদ্যোতকরাচার্যের বার্তিক, বাচস্পতি মিশ্রের তাৎপর্যটীকা, উদয়নাচার্যের তাৎপর্যটীকা-পরিশুদ্ধি প্রাচীনন্যায়ের অন্তর্ভুক্ত। মুক্তাবলী প্রভৃতি স্বল্পসংখ্যক গ্রন্থব্যতিরেকে বৈশেষিকদর্শনের সকল গ্রন্থই এই শ্রেণীভুক্ত করা যাইতে পারে। আনুমানিক চতুর্দশ শতাব্দীতে আবির্ভূত গঙ্গেশোপাধ্যায় হইতে আরম্ভ করিয়া—সপ্তদশ শতাব্দীর অন্তভাগে জীবিত গদাধর পর্যন্ত রচিত ন্যায়ের সকল গ্রন্থ নব্যন্যায়ের অন্তর্ভুক্ত।

গঙ্গেশোপাধ্যায় উত্তর-পূর্ব-বিহারের মিথিলার অধিবাসী ছিলেন। তিনিই নব্যন্যায় সম্প্রদায়ের প্রতিষ্ঠাতা। তাঁহার বিরাট গ্রন্থ 'তত্ত্ব-চিন্তামণি',—যাহাতে গোতমসূত্রে প্রতি-পাদিত ষোড়শপদার্থের অন্যতম প্রমাণপদার্থ-বিষয়রূপে গৃহীত হইয়াছে। তিনি যে ধারা প্রবর্তন করিয়াছিলেন তাহা তাঁহার শিষ্যগণের হস্তে পঞ্চদশশতাব্দীর পক্ষধর মিশ্র পর্যন্ত অধিকতর পরিবর্ধিত হইয়াছিল। ইঁহাদের মধ্যে তাঁহার পুত্র বর্ধমানোপাধ্যায়ও ছিলেন। পক্ষধর মিশ্র গঙ্গেশের 'তত্ত্বচিন্তামণির' 'আলোক'-নামক টীকা রচনা করিয়াছিলেন। পক্ষধরের সময় পর্যন্ত নব্যন্যায়ের আলোচনা মিথিলাতেই সীমাবদ্ধ ছিল, এবং তথায় সর্বভারতের ছাত্রগণের সমাবেশ ঘটিয়াছিল। মিথিলার এই সম্প্রদায়ের বিদ্যাচর্চা পক্ষধর মিশ্রের উত্তর-বর্তিকাল হইতেই ক্রমশঃ অবনতির দিকে চলিল। পক্ষধর মিশ্রের 'আলোক'ই নব্যন্যায়ে এই সম্প্রদায়ের শেষ আদর্শ গ্রন্থ। তথাপি মিথিলায় নব্যন্যায়ের আলোচনা চলিতে লাগিল, এবং ইদানীংও বিলুপ্ত হয় নাই। প্রসঙ্গক্রমে বলা যাইতে পারে যে, গঙ্গেশ ও তাঁহার শিষ্যগণের গ্রন্থসমূহ ন্যায়ের অধ্যয়নে সম্পূর্ণ বিপ্লব আনয়ন করিল, এবং ভাষ্য, বার্তিক প্রভৃতি

প্রাচীনন্যায়ের গ্রন্থসমূহের স্থান এরূপভাবে অধিকার করিয়া বসিল যে ইদানীন্তন পণ্ডিতগণের নিকট প্রাচীনন্যায়ের গ্রন্থও খুব কমই পাওয়া যায়।

মিথিলা হইতে নব্যন্যায়ের আলোচনা নবদ্বীপে ( নদীয়া ) প্রসারিত হইল। যে সকল বিদ্যার্থিগণ মিথিলায় নব্যন্যায় অধ্যয়ন করিয়াছিলেন তাহারাই নবদ্বীপে স্বশিষ্যগণকে নব্যন্যায় শিক্ষা দিতে লাগিলেন। যিনি সর্বপ্রথমে নবদ্বীপে নব্যন্যায়ের অধ্যাপনা আরম্ভ করিয়াছিলেন সেই পণ্ডিতপ্রবরের নাম নির্ণীত হয় নাই। তবে নবদ্বীপের প্রথম ন্যায়গ্রন্থকার শ্রীরামভদ্রসিদ্ধান্তবাগীশের সম্পর্কে আমরা নিশ্চিতরূপে কিছু জানি। তিনি উদয়নাচার্যের 'কুসুমাঞ্জলির' একটি টীকা রচনা করিয়াছিলেন। 'পোড়া মা' ( বিদগ্ধজননী ) নামক কালীমূর্তি নবদ্বীপে রামভদ্র কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। কোনও সময়ে একবার অগ্নিদগ্ধ হওয়াতেই জননীর ঐরূপ নাম হইয়াছিল। নবদ্বীপের ছাত্রগণ তাহাদের বিদ্যাশিক্ষা সমাপনান্তে নবদ্বীপ পরিত্যাগের পূর্বে এই 'পোড়ামা'র পূজা দিতেন। রামভদ্রের পরবর্তিকালে শ্রীবাসুদেব সার্বভৌমের আবির্ভাব ঘটিয়াছিল। তিনিও ন্যায়ের গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন, যাহা অধুনা বিলুপ্ত হইলেও অন্যান্য ন্যায়ের গ্রন্থে উল্লেখিত হইয়াছে। বিখ্যাত 'দীধিতি'র লেখক শ্রীরঘুনাথ শিরোমণি এই বাসুদেব সার্বভৌমের ছাত্র ছিলেন। এই 'দীধিতি'কে যদিও তিনি তত্ত্বচিন্তামণির অনুমানখণ্ডের টীকা বলিয়া অভিহিত করিয়াছেন, তথাপি ইহাতে অনেক মূল্যবান্ মৌলিক বিষয় আলোচিত হইয়াছে। প্রবাদ অনুসারে রঘুনাথ শিরোমণি বিখ্যাত বৈষ্ণব সংস্কারক ( ধর্মাচার্য ) শ্রীচৈতন্যদেবের সমসাময়িক ছিলেন। তাঁহার দ্বারাই গঙ্গেশের নব্যন্যায় চরম পরিপুষ্টি লাভ করিল, এবং তাহার সময় হইতেই নদীয়ার নৈয়ায়িক সম্প্রদায়ের খ্যাতি ক্রমশঃ এত বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইল যে মিথিলার সম্প্রদায়কে ম্লান ও অজ্ঞাত করিয়া তুলিল।

সেই হইতেই নবদ্বীপের নৈয়ায়িকগণ তাঁহাদের সেই উচ্চ স্থান রক্ষা করিয়া আসিতেছেন, যাহা ভারতের সকল পণ্ডিতগণের স্বীকৃত। রঘুনাথের পরে যথাক্রমে ভবানন্দ সিদ্ধান্তবাগীশ, মথুরানাথ তর্কবাগীশ, জগদীশ তর্কালঙ্কার, এবং গদাধর ভট্টাচার্য আবির্ভূত হইলেন। গদাধর ভট্টাচার্যের বংশধরগণ প্রসিদ্ধ নৈয়ায়িক হইয়াছিলেন, এবং নবদ্বীপে অধুনা জীবিত শ্রেষ্ঠ নৈয়ায়িক অধ্যাপক ভুবনমোহন বিদ্যারত্ন গদাধরেরই ষষ্ঠ পুরুষ। কৃষ্ণদাস সার্বভৌম নামক অপর একজন বাঙ্গালী নৈয়ায়িক—যিনি নবদ্বীপের ছিলেন কিনা জানা যায় না—'দীধিতিপ্রসারিণী' নামক দীধিতির একটি টীকা রচনা করিয়াছিলেন। ১৬৭২ সম্বতে ( ১৯১৫ ) লিখিত তাহার একটি হস্তলিখিত প্রতিলিপি কলিকাতা রাষ্ট্রীয় সংস্কৃত কলেজে বিদ্যমান।

নবদ্বীপের এই সকল গ্রন্থকারগণ দীধিতির টীকা রচনা করিয়াছিলেন, কিন্তু মথুরানাথ 'তত্ত্বচিন্তামণি'র সম্পূর্ণ টীকা রচনা করিয়াছিলেন। তাঁহারা নব্যন্যায়ের পরিভাষারও বৃদ্ধি ও উন্নতি সাধন করিয়াছিলেন। দৃষ্টান্ত স্বরূপ বলা হইতেছে। দ্বি এবং দ্বিত্ববৎ—এই দুইটি পদই দুই সংখ্যাযুক্ত পদার্থকে বুঝায়; প্রথমটি ( দ্বি ) কোনও একটি পদার্থে প্রযুক্ত হইতে পারে না,

কিন্তু দ্বিতীয়টি ( দ্বিত্ববৎ ) একটি পদার্থে প্রযুক্ত হইতে পারে। আমরা এইরূপ বলিতে পারি না যে—ইহা দুই ( অয়ং দ্বৌ ), কিন্তু আমরা বলিতে পারি—ইহা দ্বিত্ববিশিষ্ট ( অয়ং দ্বিত্ববান্ )। সুতরাং দ্বৌ এবং দ্বিত্ববান্—এই দুই পদের অর্থ তুল্য নহে। দুইটি পদের অর্থের এইরূপে পার্থক্য করা হইয়াছে—দ্বি-পদের অর্থ যে দ্বিত্ব তাহার সমাপ্তির জন্য দুইটি বস্তু থাকা প্রয়োজন। অতএব ইহা ( অয়ং ) রূপ একটি পদার্থে দ্বি-পদের বিধেয়রূপে প্রয়োগ হইতে পারে না। কিন্তু দ্বিত্ববান্ এই পদের অর্থ যে দ্বিত্ব—তাহা দুই পদার্থেই থাকিতে পারে, তাহার পর্যাপ্তির জন্য উভয়কেই থাকিতে হয় না। সুতরাং এই দ্বিত্ব দুইয়ের প্রত্যেকেই থাকে বলিয়া একটি পদার্থেও ইহা ( অয়ং ) দ্বিত্ববান্ এইরূপ প্রয়োগ হইতে পারে। প্রথম স্থলে যে দ্বিত্বের বিধেয়রূপে প্রয়োগ তাহা পর্যাপ্তি সম্বন্ধে, এবং দ্বিতীয়স্থলে দ্বিত্বের প্রয়োগ সমবায় সম্বন্ধে অভিপ্রেত।

নব্যন্যায়ের পারিভাষিক জটিলতা এতকাল সংস্কৃতের ছাত্রগণকে নব্যন্যায়ের অধ্যয়ন হইতে বিরত রহিয়াছে। নৈয়ায়িকগণের চিরন্তন প্রথা ( বা অভ্যাস ) এই যে, অধ্যয়নকালে পদগুলি উপস্থিত হইলে মৌখিকভাবে তাহা ছাত্রগণকে বুঝাইয়া দেওয়া হয় এবং সেই ব্যাখ্যাগুলিও কতকগুলি নির্দিষ্ট প্রণালীকে অবলম্বন করিয়া দেওয়া হয়। ১৮৭৫ খৃষ্টাব্দে ভীমাচার্য ঝালকিকর কর্তৃক বোম্বাই প্রদেশে 'ন্যায়-কোশ' নামক একখানি গ্রন্থ মুদ্রিত হইয়াছিল, এই গ্রন্থখানি ন্যায়ের পারিভাষিক শব্দের অভিধান। তথাপি, ইহাতে প্রদত্ত ব্যাখ্যা সকল যথেষ্ট সম্পূর্ণ নহে এবং এই গ্রন্থ এখনও সকলের নিকট সুপরিজ্ঞাত হয় নাই। সেইজন্য আমি এই নিবন্ধে সেই সকল জটিল পরিভাষার কতকগুলি ব্যাখ্যা করিবার উদ্দেশ্য গ্রহণ করিয়াছি ; এবং যেহেতু ইংরাজি ভাষায় ঐ সকল বিষয় তুল্যরূপে পরিষ্কার করিতে আশা করিতে পারি না, তাই সরল সংস্কৃতেই তাহা করিব। তবে আমার ব্যাখ্যার প্রণালী পণ্ডিতগণের সাধারণতঃ অনুসৃত প্রাচীন প্রণালী নহে ; কারণ তাহা দ্বারা বিষয়সমূহ ভালরূপে বুঝা যায় না—মনে হওয়াতে তাহা পরিত্যাগ করা উচিত মনে করিয়াছি। এই নিবন্ধ লিখিবার অনুরোধ ডক্টর লিটনারের নিকট হইতে গত ৩০শে জুলাই মাত্র পাইয়াছি ; সুতরাং ইহা লিখিবার জন্য আমি অতি অল্প সময়ই প্রাপ্ত হইয়াছি। বেশী সময় পাইলে নিবন্ধটি আরও সম্পূর্ণ করিতে পারিতাম। আমার শ্রদ্ধাস্পদ বন্ধু ডক্টর রাজেন্দ্রনাথ মিত্র এবং পণ্ডিত ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগরের গুরুতর; এবং পরে মারাত্মক বলিয়া প্রমাণিত অসুস্থতা নিবন্ধন আমি ইহার প্রুফ পত্রগুলিও দেখিয়া দিতে পারি নাই।

M. N.

অনুবাদক—

**শ্রীদীনেশ চন্দ্র শাস্ত্রী**

২৭।৪।৭০

## नव्यन्यायदर्शनम्-
## तदीयपरिभाषासम्बन्धिनी संक्षिप्तविवृतिश्च

( आङ्गलभाषामयभूमिकायाः संस्कृतानुवादः )

'न्याय' इति पदं 'नि' इत्युपसर्गपूर्वक-गमनार्थक-'इ' धातोः 'अय' धातोर्वा करणवाच्ये विहितेन 'अ' प्रत्ययेन ( घञ् प्रत्ययेन ) निष्पन्नम्। इदञ्च निश्चितरूपेण क्वचित् सिद्धान्ते समुपस्थितेः पद्धतिं बोधयति। हिन्दुदर्शने ( प्राच्यदर्शने ) न्यायपदमिदं अनुमितेः ( परार्थानुमितेः ) साधकम् अवयवसमूहं विज्ञापयति। गौतम एव स प्राचीनतमो ग्रन्थकारः, यः किलैतदवयवसमूहात्मकन्यायं विचारयामास। तदुपनिबद्धं गौतमसूत्रं तत्प्रदर्शितां पद्धतिमवलम्ब्य दार्शनिकतत्त्वसमूहं विचारयतां ग्रन्थकृतां ग्रन्था एव सर्वे न्यायदर्शननाम्ना परिचीयन्ते।

न्यायदर्शनं प्राचीनं नवीनञ्चेति प्रकारद्वयेन भिद्यते। प्राचीनन्यायदर्शनं न केवलं न्यायावयवानामेव विचारञ्चकार। ( किन्तु ) सर्वविधानां दार्शनिकानां प्राकृतानाञ्च प्रश्नगोचरीभूतानां वस्तूनामपेक्षानुसारं न्यायप्रयोगेण समालोचनां विदधे। नव्यन्यायोऽपि विचारगोचरेषु वस्तुषु प्राचीनन्यायेन समं विरोधं न पुष्णाति। तावतापि नव्यन्यायः स्वकीयं विचारं न्यूनसंख्यकेषु विषयेषु सीमितञ्चकार। किन्तु आलोचितेषु विषयेषु विचारस्तथा नैपुण्येन सूक्ष्मयाथातथ्येन च तेनोपन्यस्तो यथा प्राचीनन्याये नोपलभ्यते।

नव्यन्यायेन पदार्थसमूहस्य निर्दोषलक्षणविधान एव सातिशयं प्रयत्नं प्रवर्तयामास, तथा यानि पदानि नित्यं व्यवह्रियन्ते, ( अविशेषेण च ) गृहीतार्थानि भवन्ति, तेषामपि ( विशेषेण ) अर्थनिर्धारणे व्यापृतो बभूव। दृष्टान्तविधया तावदिदं शक्यमभिधातुं यत्—'साध्यनिर्देशः प्रतिज्ञे'ति ( १-१-३३ )। न्यायसूत्रे गोतमः 'प्रतिज्ञा' शब्दस्य उक्तस्वल्पव्याख्यानादधिकव्याख्यानस्य प्रयोजनं नोपलेभे। पक्षिलस्वामी ( न्यायसूत्रभाष्यकारवात्स्यायनः ) तथा परे प्राचीनटीकाकृतः तादृश-व्याख्याने न प्रयत्नं विदधिरे। किन्तु नव्यन्यायस्य प्रवर्तको गङ्गेशोपाध्यायः प्रतिज्ञाशब्दस्यार्थमधिकृत्य विस्तृतालोचनायां प्रववृते। स स्वीयां मतिं वर्णयामास यथा—'साध्यनिर्देशः' इत्येतन्मात्रं प्रतिज्ञाया निर्दोषं लक्षणं भवितुं नार्हति। यतः

'साध्यनिर्देश' इत्युक्तया केवलमेकस्य साध्यस्य नामोल्लेखः प्रतिपत्तुं शक्यते। एवमन्ये-ष्वपि विषयेषु दृष्टिं रक्षता तेन प्रतिज्ञायाः पुरो-निर्दिश्यमानरूपं लक्षणं निर्धारयामास।

यथा—'उद्देश्यानुमितिहेतुलिङ्गपरामर्शप्रयोजकवाक्यार्थज्ञानजनकत्वे सति उद्देश्यानुमित्यन्यूनानतिरिक्तविषयकशाब्दज्ञानजनकं वाक्यम् (प्रतिज्ञा)'। रघुनाथ-शिरोमणिरतः परमपि लक्षणस्य समुत्कर्षं साधयित्वा प्राह—'प्रकृतन्यायावयवत्वे सति...वाक्यं प्रतिज्ञा'। परस्मिन् काले च गदाधरभट्टाचार्यप्रभृतयः पूर्वसूरि-गणापेक्षया समधिकविस्तरेण तद्वस्तुनः समालोचनां विधाय कतिपयसूक्ष्मतत्त्वानि आविष्कृत्य वक्ष्यमाणं सिद्धान्तं समासेदुः। यथा—पक्षतावच्छेदकावच्छिन्न... प्रतिज्ञा'।

क्वचित् प्राचीनन्यायग्रन्थे 'अव्यभिचरितत्वं अविनाभावो वा व्याप्तिलक्षण-मुक्तम्। गङ्गेशोपाध्यायो व्याप्तिलक्षणमिदमपर्याप्तं विचार्य वक्ष्यमाणरूपेण स्वसम्मतं व्याप्तिलक्षणं प्रकाशयामास, यथा—'प्रतियोग्यसमानाधिकरणयत्समानाधिकरणात्यन्ता-भावप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नं यन्न भवति तेन समं तस्य सामानाधिकरण्यं व्याप्तिः'। इति।

अथ रघुनाथशिरोमणिः गङ्गेशकृतनिष्कृष्टव्याप्तिलक्षणमपि समुत्कर्षं साधयित्वा प्राह—'प्रतियोग्यसमानाधिकरणयद्रूपविशिष्टसमानाधिकरणात्यन्ताभाव-प्रतियोगितानवच्छेदको यो धर्मः तद्धर्मावच्छिन्नेन येन केनापि समं सामानाधिकरण्यं तद्रूपविशिष्टस्य तद्धर्मावच्छिन्नयावन्निरूपिता व्याप्तिरिति'।

एवं रीत्या प्रतिपदार्थसम्बन्धि सूक्ष्मतमं विचारणमालोचनञ्चैव विशेषो नव्यन्यायस्य। प्रतिपाद्यस्य वस्तुनः स्वल्पमात्रतैवास्य दोषः। अस्मिन् दोषे सत्यपि अस्य शिक्षणं बुद्धिवृत्तेः श्रेष्ठं शिक्षणम्, यस्याभ्यासेन बुद्धिः यथायथं चिन्ताया अमूल्यां शक्तिं समासादयति। नव्यन्यायशास्त्रस्याध्ययनमन्तरेण दर्शनस्मृत्यलङ्कारग्रन्थानां किंबहुना व्याकरणसम्बन्धिनामपि कतिपयग्रन्थानां संस्कृतभाषानिबद्धानामर्थाः सम्यक्तयावधारयितुमशक्याः। अत्र दृष्टान्तभूताः—आनन्दबोधकृत-न्यायमकरन्दा-ख्यस्य वैदान्तिकग्रन्थस्य चित्सुखाचार्यकृता चित्सुखीत्याख्या टीका, हिन्दु-पदवेद्यानामुत्तराधिकारविषयकस्मृतिग्रन्थस्य दायभागस्य श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृता दायभागप्रबोधिनीसमाख्या-टीका, अलङ्कारशास्त्रग्रन्थस्य काव्यप्रकाशस्य महेश्वरन्याया-लङ्कारकृता काव्यप्रकाशादर्शनाम्नी टीका, नागेशभट्टकृतः परिभाषेन्दुशेखरनामकः मञ्जूषानामकश्च व्याकरणग्रन्थ इत्येते।

महर्षि-गोतमस्य न्यायसूत्रम्, पक्षिलस्वामिकृतं तद्भाष्यम, उद्द्योतकराचार्यकृतं तद्वार्त्तिकं, वाचस्पतिमिश्रकृता तात्पर्यटीका, उदयनाचार्यकृता तात्पर्यपरिशुद्धि-टीका, इत्येते ग्रन्थाः प्राचीनन्यायान्तर्गताः।

मुक्तावलीप्रमुख-कतिपयग्रन्थव्यतिरेकेण वैशेषिकदर्शनस्य सर्वं एव ग्रन्था एतद्वर्गान्तर्गताः कर्तुं शक्यन्ते।

अनुमानगम्यचतुर्दशशतकप्रादुर्भूत-गङ्गेशोपाध्यायात् प्रभृति सप्तदशशत-कान्तिमभागे जीवितं गदाधरं यावत् सकलग्रन्थकारविरचिता न्यायग्रन्था नव्यन्याय-शास्त्रान्तर्गताः। गङ्गेशोपाध्यायो विहारप्रान्तीयोत्तरपूर्वांशगतमिथिलापत्तनाधिवासी आसीत्। स एव नव्यन्यायसम्प्रदायस्य प्रवर्तकः। तस्य ग्रन्थरत्नं तत्त्वचिन्तामणि-र्नाम। यत्र गौतमसूत्रप्रतिपादितषोड़शपदार्थान्यतम-प्रमाणपदार्थः प्रतिपाद्यवस्तुरूपेण पर्यगृह्यत। तेन या पद्धतिः प्रवर्तिता सा तदीयशिष्यनिवहेषु पञ्चदशशतककालीन-पक्षधरमिश्रपर्यन्तेषु समधिकां बृद्धिं लेभे। तेषु तस्य ( गङ्गेशोपाध्यायस्य ) पुत्रो बर्धमानोपाध्यायोऽप्यवर्तिष्ट। पक्षधरमिश्रः श्रीगङ्गेशकृतस्य तत्त्वचिन्तामणिग्रन्थस्य आलोकनाम्नीं टीकां रचयामास। पक्षधरस्य समयपर्यन्तं नव्यन्यायस्य समनुशीलनं मिथिलानगर्यामेव नियमितमासीत्। तत्रैव च सर्वभारतीयनव्यन्यायशिक्षार्थिनः समवेता बभूवुः। मिथिलानगर्यास्तत्सम्प्रदायसिद्धविद्यानुशीलनं पक्षधरमिश्रोत्तर-कालादेव क्रमेण अवनतिं गन्तुमारेभे। पक्षधरमिश्रकृत आलोकग्रन्थ एव नव्यन्याय-सम्बन्धिनः तत्सम्प्रदायस्य ( मैथिलनव्यन्यायसम्प्रदायस्य ) अन्तिम आदर्शग्रन्थः। तथापि मिथिलायां नव्यन्यायस्यानुशीलनं प्रचलद्रूपमवर्तत। नाद्यापि च तद्विलोप-मवाप।

प्रसङ्गतः शक्यमिदमभिधातुम् यत् गङ्गेशस्य तदनुयायिनाञ्च ग्रन्थनिवहाः न्यायानुशीलने महान्तं विप्लवं जनयामासुः। भाष्यवार्त्तिकादि-प्राचीनन्यायग्रन्थानां स्थानञ्च तथा समधिचक्रुः येन वर्तमानविदुषां सकाशे प्राचीनन्यायतन्त्रस्य ग्रन्था अपि सुतरामल्पमात्रा एव समुपलभ्यन्ते।

मिथिलापत्तनाद् नव्यन्यायस्यालोचना नदीयाप्रान्तगते नवद्वीपे प्रससार। ये विद्यार्थिनो मिथिलायां नव्यन्यायमधिजगिरे त एव नवद्वीपे स्वकीयशिष्यवर्गं नव्यन्यायमध्यापयितुमारेभिरे। सर्वतः प्रथमं येन नवद्वीपे नव्यन्यायतन्त्रस्याध्यापना प्रारब्धा तस्य पण्डितप्रकाण्डस्य नाम नावधारितमभूत्। किन्तु नवद्वीपसम्बन्धिनः प्रथमन्यायग्रन्थप्रजापतेः श्रीरामभद्रसिद्धान्तवागीशस्य किञ्चन वृत्तं वयं निश्चित-

मुपलभामहे। स उदयनाचार्यकृत-'कुसुमाञ्जलि' ग्रन्थस्य टीकामेकां रचयामास। 'पोड़ा मा'-( विदग्धजननीं ) नामविश्रुता कालीमूर्तिः श्रीरामभद्रेण नवद्वीपधाम्नि प्रतिष्ठिताभूत्। एकदा वह्निदग्धतया ( तस्याः ) मातुः 'पोड़ा मा' इति ( प्राकृतं ) नाम समजनि। नवद्वीपपरित्यागात् पूर्वं तस्याः 'पोड़ा मा' समाख्याया नियमेन पूजां समपादयन्।

श्रीरामभद्रात् परतः श्रीवासुदेवसार्वभौमस्य प्रादुर्भावः समघटत। सोऽपि न्यायशास्त्रीयग्रन्थं रचयाञ्चक्रे। यस्याधुना सत्यपि विलोपे न्यायशास्त्रीयग्रन्थान्तरेषु समुल्लेखो वर्तते।

सुप्रसिद्धाया दीधितिटीकाया रचयिता श्रीरघुनाथशिरोमणिस्तस्य वासुदेव-सार्वभौमस्य (साक्षात्) शिष्य आसीत्। स यद्यपि दीधितिमिमां तत्त्वचिन्तामणिग्रन्थस्य टीकात्वेन व्यपदिष्टवान् तथाप्यत्र तेन अनेके स्वतन्त्रा उत्कृष्टा विषया विचारिताः।

प्रवादसिद्धमिदम्—यद् रघुनाथशिरोमणिः सुविश्रुतवैष्णवधर्माचार्यस्य श्रीचैतन्यदेवस्य समकालीन आसीदिति। तेनैव गङ्गेशप्रवर्तितो नव्यन्यायश्चरमां परिपुष्टिं लेभे। तस्यैव समयाच्च नदीयागतनैयायिकसम्प्रदायस्य ख्यातिस्तथा क्रमशो वृद्धिमाससाद यथा स मिथलायाः सम्प्रदायं परिम्लानमज्ञातमिव च प्रकर्तुं प्रववृते। ततः प्रभृत्येव नवद्वीपसम्बन्धिनो नैयायिकास्तेषां तदुन्नतस्थानस्य परिरक्षणपरा वर्तन्ते, यद्भारतीयानामखिलविदुषां सम्मतमस्ति।

रघुनाथात् परं क्रमेण भवानन्दसिद्धान्तवागीशः, मथुरानाथतर्कवागीशः, जगदीशतर्कालङ्कारः, गदाधरभट्टाचार्यश्च प्रादुर्बभूवुः। गदाधरभट्टाचार्यस्य वंशधराः सुप्रसिद्धनैयायिकाः अभवन्। नवद्वीपे सम्प्रति जीवितः प्रधान-नैयायिकाध्यापकः श्रीभुवनमोहनविद्यारत्नो गदाधरभट्टाचार्यात् प्रभृति गणनया षष्ठः पुरुषः।

कृष्णदाससार्वभौमो नामापरः कश्चिद् वङ्गीयो नैयायिकः, यो नवद्वीपसम्बन्धी स्थितो न वेति न शक्यते ज्ञातुम्, सः दीधितिप्रसारिणीं नाम दीधितेरेकां टीकां रचयामास। १६७२ संवद्वर्षे ( खृः १६१५ ) हस्तेन लिखिता तस्या एका प्रतिलिपिः कलिकातास्थ-राष्ट्रियसंस्कृतमहाविद्यालये विद्यते।

प्रागुक्ता ( भवानन्दप्रमुखाः ) नवद्वीपग्रन्थकाराः दीधितेः व्याख्यां रचयामासुः। मथुरानाथस्तु तत्त्वचिन्तामणिग्रन्थस्य निःशेषां टीकां प्रणिनाय। त एते नव्यन्यायस्य परिभाषाया अपि वृद्धिम् उत्कर्षञ्च संसाधयामासुः। तत्रोदा-हरणमुदाह्रियते यथा—द्विशब्दः द्वित्ववत् शब्दश्चेति द्वयमेव द्वित्वसंख्यायुक्तपदार्थं

बोधयति। तत्र प्रथमः शब्दः (द्विशब्दः) कमप्येकं पदार्थमुद्दिश्य न प्रयुक्तो भवितुमर्हति। किन्तु द्वितीयः शब्दः (द्वित्ववत्शब्दः) कमप्येकं पदार्थमुद्दिश्य प्रयुक्तो भवितुमर्हति। न वयमेवं प्रयोक्तुमर्हामो यत् 'अयं द्वाविति'। (दृश्यमानः एकः पदार्थो द्वाविति) किन्तु वयमर्हामः प्रयोक्तुम् 'अयं द्वित्ववानिति (दृश्यमान एकः पदार्थो द्वित्वविशिष्ट इति)। अतः 'द्वौ' इति पदस्य द्वित्ववानिति पदस्य च नार्थः सर्वथा तुल्यः। उक्तपदद्वयस्य पारस्परिकमर्थगतं पार्थक्यमेवं सम्पादितमस्ति। तथाहि द्विशब्दस्यार्थो यत् द्वित्वं तस्य पर्याप्त्यर्थं द्वयोर्वस्तुनोः स्थितिरपेक्षिता। अतएव एकमात्रे 'अयं' पदार्थे द्विपदार्थ-द्वित्वस्य विधेयतया प्रयोगो भवितुं नार्हति। किन्तु द्वित्ववत्पदस्यार्थो यत् द्वित्वं तत् द्वयोः पदार्थयोरेव (प्रत्येकमपि) स्थातुमर्हति। तस्य पर्याप्तिसम्पादनाय नोभयेन स्थातव्यम्। अतः एतत् (द्वित्ववत्पदप्रतिपाद्यं) द्वित्वं द्वयोः प्रत्येकमेव तिष्ठतीति कृत्वा एकमात्रं पदार्थमुद्दिश्यापि 'अयं द्वित्ववान्' इत्येवं प्रयोगो भवितुमर्हति। प्रथमस्थले ('द्वौ' इत्येवं द्विशब्देन द्वित्वप्रतिपादनस्थले) यो विधेयतया द्वित्वस्य प्रयोगः स पर्याप्तिसम्बन्धेन। द्वितीयस्थले (द्वित्ववत्पदेन द्वित्वस्य प्रतिपादनस्थले) द्वित्वस्य प्रयोगः समवायसम्बन्धेनाभिप्रेतः।

नव्यन्यायस्य परिभाषागतं दुरूहत्वं एतावत्कालं यावत् संस्कृतविद्यार्थिनः नव्यन्यायशास्त्राध्ययनान्निवर्तयामास। नैयायिकानां चिरन्तनीयं रीतिर्यदध्ययनकाले पदेषु समुपस्थितेषु सत्सु मौखिकभावेन तानि विद्यार्थिनो बोधयति। तच्च बोधनं कतिपयनिर्दिष्टपद्धतिमाश्रित्यैव। १८७५ पञ्चसप्तत्युत्तराष्टादशशततमखृष्टाब्दे भीमाचार्यझालाङ्किकरमहोदयेन मुम्बयीप्रदेशे न्यायकोशाभिधान एको ग्रन्थो मुद्रापितोऽभूत्। ग्रन्थोऽयं न्यायसम्बन्धि-पारिभाषिकशब्दानामभिधानग्रन्थः। किन्तु तत्र निहितानि व्याख्यानानि न प्रकामं पर्याप्तानि। ग्रन्थश्चायं नाद्यापि सर्वैः सुपरिज्ञातोऽस्ति। अतोऽहमेतस्मिन् निबन्धे तेषां दुरूहपारिभाषिकशब्दस्तोमानां मध्ये कतिपयशब्दानां व्याख्यानं कर्तुमैच्छम्। यतश्च आङ्गलभाषया विषयाणां तेषां सर्वेषां याथातथ्येन परिष्करणं नार्हामि सम्भावयितुं ततः सुगमसंस्कृतभाषयैव तत् करिष्यामि। परं मदीयव्याख्यानपद्धतिः न साधारणपण्डितगणानुसृता प्राचीनपद्धतिः, यतः तया प्राचीनपद्धत्या प्रतिपाद्यविषयाः सुष्ठु नोपलभ्यन्ते इति मत्वा तस्याः प्राचीनपद्धतेः परित्यागः समुचित इति मनस्यकरवम्। एतन्निबन्धरचनार्थमनुरोधः डाः लिटनार सकाशात् व्यतीते जुलाइ मासस्य त्रिंशदिवस एव मया लब्धः। अतः एतत्प्रणयनाय मया स्वल्पमात्रक एव कालः परिप्राप्तः। यद्येतदपेक्षया किञ्चिदधिकं समयं प्राप्स्यं,

तदा निबन्धमिममितोऽप्याधिक्येन पूर्णतां लम्भयितुमपारयिष्यम्। मम परमश्रद्धेय-मित्रस्य डाः राजेन्द्रलालमित्रस्य तथा पण्डितप्रवरस्य ईश्वरचन्द्रबिद्यासागरस्य गुरु-तरेणास्वास्थ्येनान्ते मारात्मकतया प्रमाणितेन नाहमस्य प्रुफपत्राणामपि यथायथं संशो-धनं कर्तुमपारयम्।

अनुवादकः
श्रीकालीपदतर्काचार्यः

M. N.

———

## OPINIONS

"I have now completed the reading of the works published in the Calcutta Sanskrit College Series of Texts and Studies. All the works break new ground, are models of industry and research and are creditable performances."

*Mm. Dr. P. V. Kane.*

**Chandogya Brahmana**

"A brilliant success worthy of emulation."

*Mm. Dr. Gopinath Kaviraj.*

"We had to wait for an epoch to get a critical edition of this treatise. The edition is correct and well presented."

*Louis Renou.*

**Studies in the Upapuranas**

"The work is a literature of painful research."

*Louis Renou.*

"It is a scholarly work. The author has carefully brought out the important date. His discussion of their chronology is masterly in character."

*Ramesh Chandra Majumdar.*

**Paippaladasamhita**

I consider the happy discovery of the Orissa manuscripts of this Samhita as *one of the greatest events in Indology.*

*Prof. Dr. Ludwig Alsdorf.*
**Universitat Hamburg.**

The discovery of the manuscript of the text is a major event in the history of Vedic Studies in recent years.

*Dr. Sukumar Sen.*

I want to revise my work on the AV after studying your scholarly edition.

*N. F. Shende.*

**The Audumbaras**

The plates and the map at the end are highly useful. The booklet is a welcome addition to the list of original works on early Indian tribes.

*The Hindu, dated May 15, 1966*

**Our Heritage**

"This journal has brought out many valuable studies and articles."

*Dr. V. Raghavan*

"A high class journal."

*Dr. Umesh Mishra.*

"The articles are the best that I have seen in any journal of Indian Studies for a long time."

*Prof. Daniel H. H. Ingalls, U. S. A.*